फुलझड़ी

जनवरी 1996 अंक 1

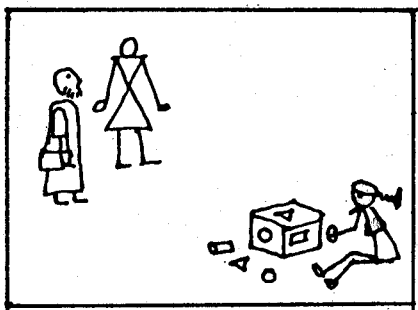

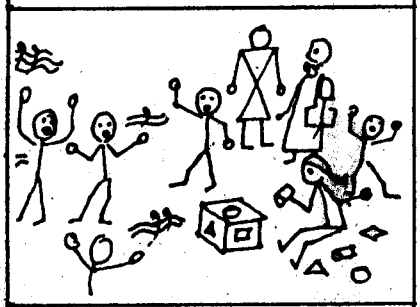

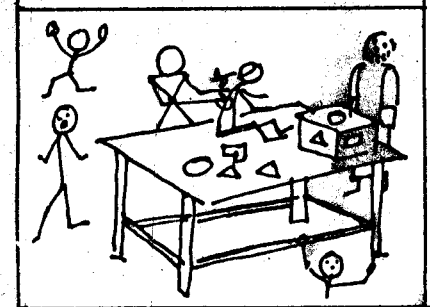

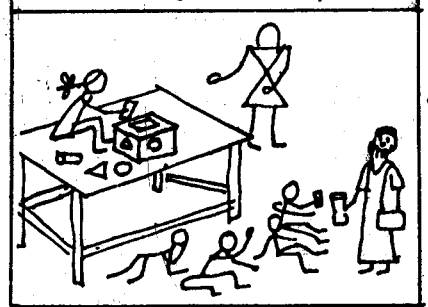

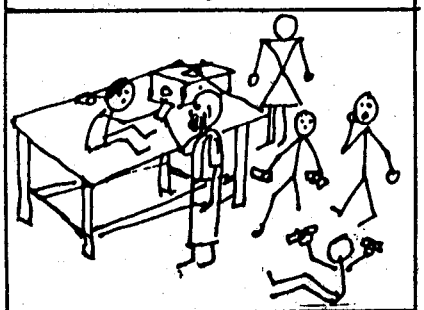

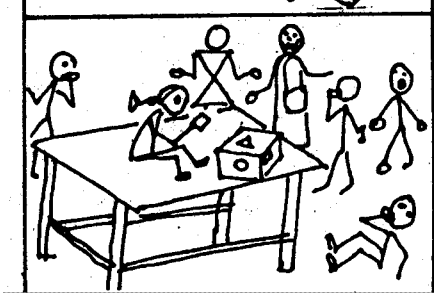

आँखों की चमक

मरिया मांटेसरी दुनिया की जानी-मानी शिक्षाविद थीं। उन्होंने 'पोस्टबाक्स' नाम का एक खिलौना बनाया था। इसमें बन्द डिब्बे की हरेक सतह पर अलग-अलग आकार की एक खिड़की कटी होती है। कोई खिड़की तिकोनी होती है, तो कोई गोल। बच्चे को सही गुटके को खिड़की में पोस्ट करना होता है।

एक दिन एक पादरी स्कूल में आए। मांटेसरी उन्हे एक कोने में ले गयीं। वहाँ एक चार साल की लड़की पोस्ट बाक्स से खेल रही थी। वह खेल की दुनिया में एकदम खो गयी थी। आसपास बच्चे ज़ोर-ज़ोर से गाना गा रहे थे। पर वह बच्ची अपने खेल में मस्त थी। वह बाकी दुनिया से एकदम बेखबर थी। मांटेसरी ने उसे उठा कर मेज़ पर बिठा दिया। बच्ची फिर अपने खेल में रम गई। पादरी उस दिन एक बिस्किट का डिब्बा लाए थे। उन्होंने बच्चों में बिस्किट बाँटे, इस बच्ची को भी दिया। बच्ची ने अनमने भाव से बिस्किट लिया। उसने झट से आयत की शक्ल वाले बिस्किट को आयताकार खिड़की में डाल दिया।

बच्चे लालच और रिश्वतों से नहीं सीखते। वह इसलिए सीखते हैं क्योंकि वह दुनिया में नये हैं और दुनिया को समझना चाहते हैं। सभी बच्चों की आँखों में उस चार वर्ष की बच्ची जैसी चमक होती है। बाद में यह चमक कहाँ खो जाती है?

हँसी का जादू

यह कहानी एकदम सच्ची है। अफ्रीका में गाँव का एक स्कूल था। एक दिन स्कूल का एक बच्चा शिक्षक की किसी हरकत पर अनायास ही हँस पड़ा। उसे देख कर दूसरे बच्चे भी हँस पड़े। थोड़ी ही देर में शिक्षक समेत क्लास के सभी बच्चे ठहाके मार-मार कर हँस रहे थे। कुछ देर बाद पूरा का पूरा स्कूल ही खिलखिला कर हँस रहा था। जब हँसते-हँसते बच्चे घर पहुँचे, तो उन्हें देख उनके माँ-बाप भी ठहाके मार कर हँसने लगे। हँसी ने किसी को नहीं छोड़ा। चन्द मिनटों में सारा का सारा गाँव ही ठहाके मार कर हँस रहा था। गाँववाले हँसते-हँसते इतने लोट-पोट थे, कि अगले दिन कोई भी काम पर या स्कूल नहीं जा पाया। दो हफ्ते के अन्दर हँसी का यह प्लेग, आसपास के सभी गाँवों में फैल गया था। अंत में जब लोग हँसते-हँसते थक के पस्त होकर गिरने लगे, तब रेड क्रास को डाक्टरी सहायता के लिए बुलाया गया।

बच्चे दिन में औसतन 400 बार मुस्कुराते हैं, जबकि बड़े केवल 15 बार ही। बच्चे दिन में 150 बार हँसते हैं, परन्तु बड़े होते-होते यह संख्या केवल छः रह जाती है। हँसी का जादू गज़ब का होता है। सरकारें भी हँसी से डरती हैं। इसका कारण साफ है। हँसते लोगों को काबू में रखना बेहद मुश्किल होता है, जबकि रुआँसे लोगों पर आसानी से नियंत्रण रखा जा सकता है।

उड़ती मछली

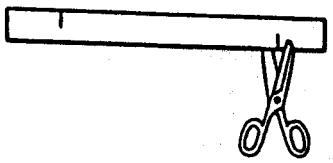

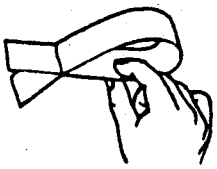

कागज की यह मछली उड़ान की मस्ती में गोल-गोल चक्कर खाती हुई नीचे आती है। पुराने अखबार की दो सेंटीमीटर चौड़ी एक पट्टी काटो। पट्टी के दोनों सिरों को चित्र में दिखाए तरीके से आधी दूरी तक काटो। इन कटे हिस्सों को एक दूसरे में फंसा दो। अब मछली को हवा में उछाल कर छोड़ दो। मछली गोल-गोल चक्कर लगाती, घूमती और मंडराती हुई नीचे आयेगी।

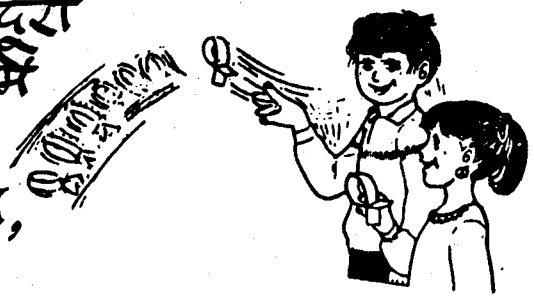

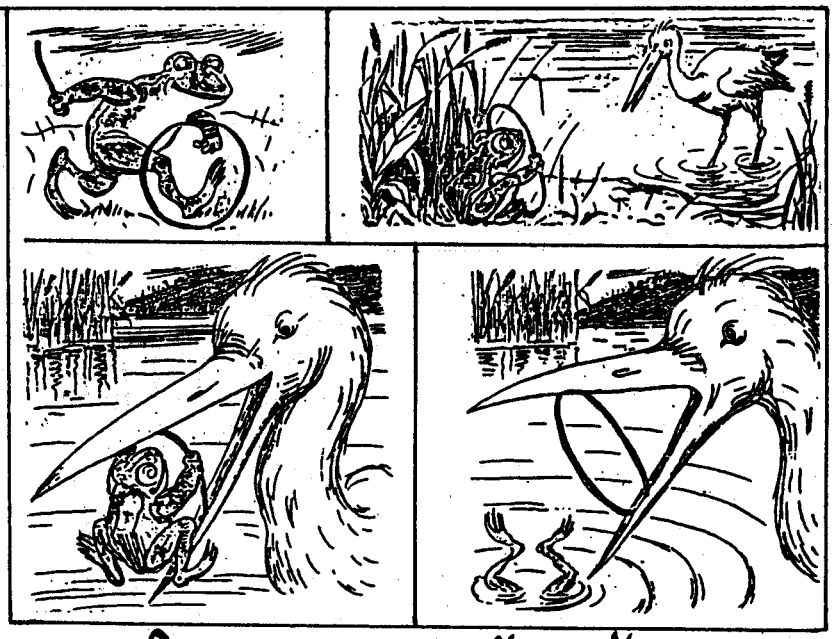

सचित्र कहानियां रूसी लेखक निकोलाई रादलोव की एक नायाब पुस्तक है। यह पुस्तक 1960 में पहली बार छपी थी। इसमें 40 सचित्र रंगीन कहानियां हैं। चित्रों के नीचे एक-दो लाइनें भी लिखी हैं। परन्तु अगर वह न भी होतीं तो भी इस किताब की सुन्दरता में कुछ फर्क नहीं पड़ता। चित्र लाजवाब हैं, और कहानियां बेमिसाल हैं। किताब में बस मजा ही मजा है। देश भक्ति, नैतिकता के उपदेश इसमें नहीं हैं। मैंने अपने बचपन में इस किताब को पढ़ा था। आज भी मेरे दिमाग में इसकी याद तरोताज़ा है। पिछले तीस साल में मैंने सैकड़ों बच्चों को इस पुस्तक का आनन्द लेते देखा है। क्या आप इसे नहीं पढ़ेंगे? आप इसे जरूर-जरूर पढ़ें और बच्चों को भी अवश्य पढ़वायें।

किताबें कुछ कहना चाहती हैं

सफ़दर हाशमी

किताबें
करती हैं बातें
बीते ज़मानों की
दुनिया की, इंसानों की
आज की, कल की
एक एक पल की।
खुशियों की, गमों की
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियां चहचहाती हैं
किताबों में खेतियां लहलहाती हैं।
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं।
किताबों में रॉकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है।
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

चित्र: बिंदिया थापर आभार: सहमत

संकलन: अरविन्द गुप्ता चित्रकार: अविनाश देशपांडे
प्रकाशक: लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

फरवरी 1996 अंक 2

खुशियों का स्कूल

सत्तर बरस पहले इंगलैंड में ए. एस. नील ने समरहिल नाम का स्कूल शुरू किया था। शायद यह दुनिया का पहला मुक्त स्कूल था। यहाँ बच्चों पर कोई निर्देश और अंकुश न था। समरहिल में यूनीफार्म, प्रार्थना, घंटी, हाजिरी, पाठ्यक्रम, गृहकार्य और परीक्षायें नहीं थीं। बच्चों को बहुत छूट थी। वह चाहते तो क्लास में जाते, नहीं तो मजा करते, खिलौने बनाते और तितलियाँ पकड़ते। कुछ बच्चे वर्कशाप में ठोका-पीटी करते। सचमुच समरहिल, खुशियों का स्कूल था।

यहाँ शरारती और ऊधमी बच्चे ही ज्यादा आते। एक बार आठ साल का लड़का आया। उसे पिछले स्कूल से निकाल दिया गया था। वह अब किसी भी स्कूल में जाना नहीं चाहता था। पिता उसे जबरदस्ती लाए थे। लड़का बेहद गुस्से में था। उसने रोष में आकर एक पत्थर से खिड़की का काँच तोड़ डाला। नील पास ही में खड़े थे। वे कुछ न बोले। लड़के ने काँचों को फोड़ना जारी रखा। नील ने उसे नहीं रोका। ग्यारह काँच फोड़ने के बाद लड़का एकदम पस्त हो गया। वह नील का चेहरा ताकने लगा। नील ने अब एक पत्थर उठाया और बारहवां काँच खुद फोड़ दिया। उपदेश के बिना ही नील ने उस लड़के का दिल जीत लिया। नील बार-बार यही कहते "अच्छे शिक्षक हो, तो बच्चों को उपदेश मत दो। बच्चों का पक्ष लो और उन्हें प्यार दो"।

समझ के लिए तैयारी - लेखक कीथ वारेन

(यूनीसेफ, 73, लोदी इस्टेट, नई दिल्ली 110003 से मुफ्त उपलब्ध)

विज्ञान की दुनिया में प्रवेश करते समय यह जरूरी है कि बच्चों के पहले अनुभव सुखद हों। इसके लिए बच्चों को विज्ञान की भारी-भरकम परिभाषाओं और शब्दों से बचाना चाहिए। बच्चों को उनके रोजाना के अनुभवों से सीखने का मौका दिया जाए। इन अनुभवों के लिए पत्थर, मिट्टी, पत्ती, टहनी जैसी प्राकृतिक चीजें ही सबसे अच्छी हैं।

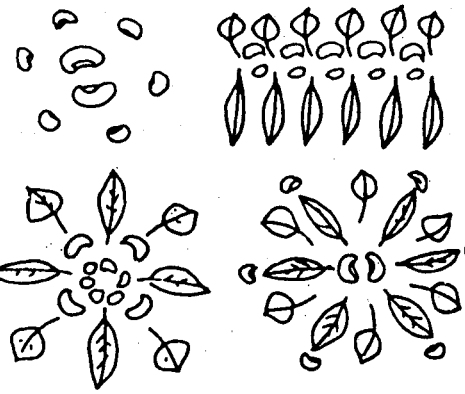

बच्चे, छोटी और बड़ी पत्तियों को छाँटकर अलग-अलग कर सकते हैं। वह दाल के दानों, बीजों और पत्तियों को सजा कर अलग-अलग किस्म के नमूने और डिजायन भी बना सकते हैं।

इसमें बिना खर्चे के कई रोचक प्रयोग हैं। गाँव में टूटे कुल्हड़, प्यालों, मटकों को फेंक दिया जाता है। बच्चे मटके के टुकड़ों को गीली मिट्टी से जोड़ सकते हैं। इसमें उन्हें मजा भी आएगा और बहुत कुछ सीखने को भी मिलेगा।

एक खेल में, वह एक ही वजन की मिट्टी की चार गोलियों से अलग-अलग दिखने वाली चीजें बनाते हैं। अब अपने दोस्तों से पूछते हैं कि इनमें से कौन सी आकृति अधिक भारी है। सभी चक्कर में पड़ जाते हैं।

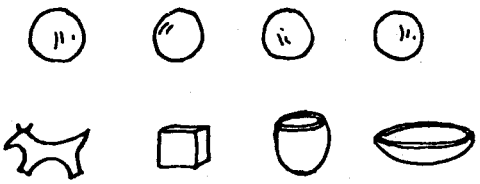

विज्ञान की समझ बढ़ाने के लिए यह एक अनूठी किताब है। इसके सहारे, बच्चे आस-पास की दुनिया में क्रम और नियम खोज सकते हैं। इससे उन्हें इस दुनिया को समझने में मदद मिलेगी। इसे पढ़ कर आपको ऐसा लगेगा कि गाँव में जो भी चीजें मिलती हैं उनसे भी विज्ञान के बारे में बहुत कुछ सीखा जा सकता है। यह आपके हाथ मजबूत करेगी और बच्चों की आँखों में चमक लायेगी।

माचिस की रेल

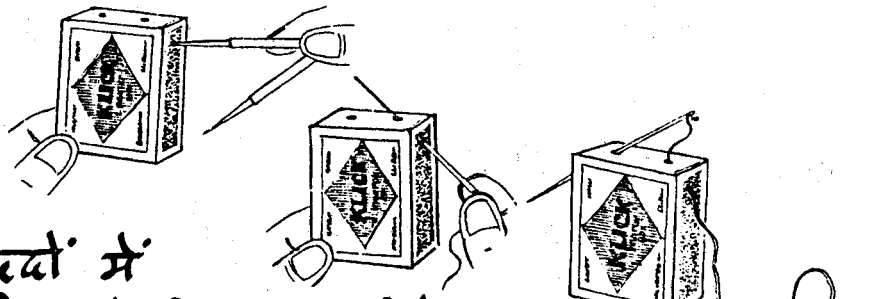

एक गत्ते वाली माचिस में चार छेद करो। इन छेदों में डेढ़ मीटर लम्बा धागा, चित्र में दिखाए तरीके से पिरो दो। अब दोनों हाथों से डोर को पकड़ो और बायें हाथ को फुर्ती से आगे-पीछे चलाओ। माचिस की डिब्बी, डोर की रेल पर बायीं ओर चलेगी। अगर माचिस पर तुम एक खरगोश का चित्र चिपका दोगे तो उसे कूदता हुआ देख कर तुम्हें बड़ा मज़ा आएगा। यह सरल सा खिलौना घर्षण पर आधारित है।

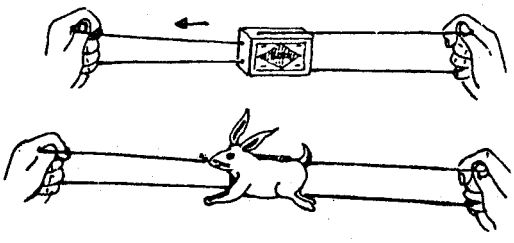

आशा के बीज

ट्रेन तेज रफ्तार से भागी जा रही थी। खिड़की के पास एक बूढ़ा आदमी बैठा था। वह बार-बार अपनी जेब में से बीज निकाल रहा था, और उन्हें बाहर खेतों में फेंक रहा था। यह देख एक छोटी बच्ची ने पूछा 'बाबा आप यह क्यों कर रहे हैं?'

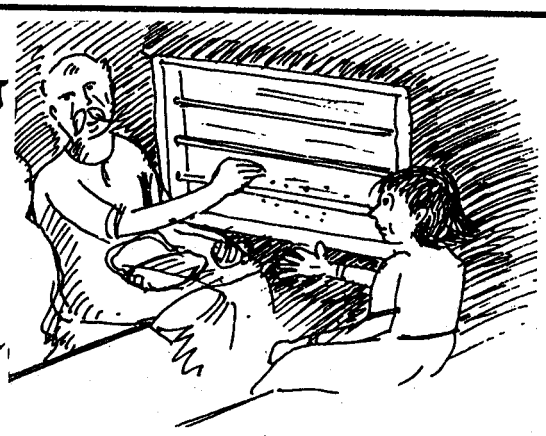

बूढ़े ने कहा 'इनमें से कुछ बीज जड़ पकड़ लेंगे और एक दिन बड़े पेड़ बन जायेंगे।'

बच्ची बोली 'पर पेड़ बनने में तो इन्हें बहुत समय लगेगा। आप तो उनके फल नहीं खा पायेंगे।'

बूढ़ा हँसा और बोला 'मेरे बाबा ने जो आम के पेड़ लगाए थे, उनके फल मैंने खाए। जो पेड़ मैं अब लगा रहा हूँ, उनके फल तुम खाना।'

दामोदर अग्रवाल की कवितायें

बद्दड़ा बोला गाय से -
दूध नहीं पीना मुझको
काम चलेगा चाय से

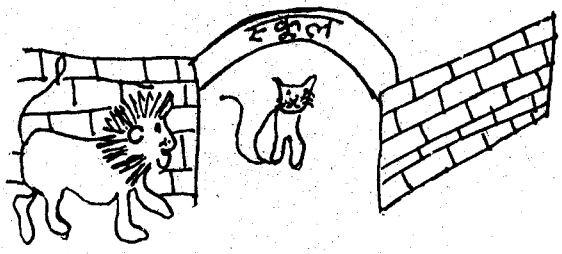

बिल्ली बोली शेर से -
ठीक समय पहुँचो स्कूल
क्यों आते हो देर से

बन्दर बोला भेड़ से -
मामा अगर कहा मुझको
कूद पड़ूंगा पेड़ से

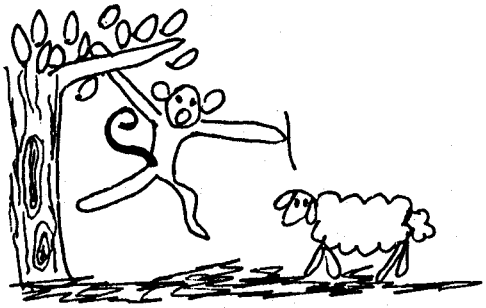

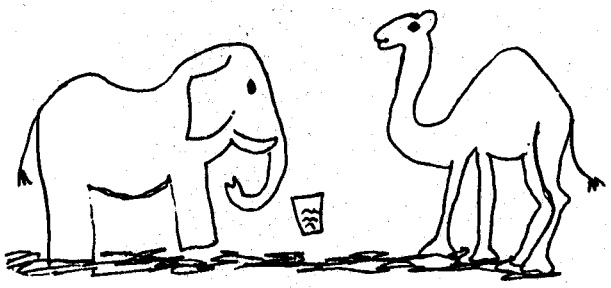

हाथी बोला ऊँट से -
प्यास बुझाऊं मैं कैसे
पानी की दो घूंट से

चंदामामा

चंदामामा कहो तुम्हारी शान पुरानी कहाँ गई
कात रही थी बैठी चरखा, बुढ़िया नानी कहाँ गई
सूरज से रोशनी चुराकर, चाहें जितनी भी लाओ
हमें तुम्हारी चाल पता है, अब मत हमको बहलाओ
है उधार की चमक-दमक, यह नकली शान निराली है
समझ गए हम चंदा मामा, रूप तुम्हारा जाली है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक: लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

मार्च 1996 अंक 3

कहानियों का जादू –

मास्टर लक्ष्मीशंकर परेशान थे। बच्चे दिन भर ऊधम मचाते और उनकी कोई बात न सुनते। शांति के खेल में भी बच्चों ने कुत्ते-बिल्ली की आवाज़ें निकालीं। मैं क्या करूं ? कैसे बच्चों के मन को जीतूं ? चलो इन्हे एक कहानी सुनाता हूँ, मास्टरजी ने सोचा। कहानी शुरू हुई। तीन घंटे चुटकी मारते ही बीत गए। बच्चे मुँह बाए कहानी सुनते रहे। स्कूल की छुट्टी की घंटी बज गई। परन्तु बच्चों ने घर जाने का नाम ही न लिया। उन्हे कहानी में बड़ा मज़ा आया। अगले दस दिन लक्ष्मीशंकर ने बच्चों को सिर्फ कहानियाँ ही सुनायीं। बच्चे मन्त्रमुग्ध हो अपने आप गोले में बैठते। कोई फालतू का शोर न करता। ग्यारहवें दिन भी बच्चों ने कहानियों की माँग की। लक्ष्मीशंकर ने कहा " सच तो यह है, कि मेरी सारी कहानियों का खज़ाना तो तुमने पहले ही लूट लिया। पर जरा देखो तो, हमारे क्लास में चालीस बच्चे हैं और हरेक के पास वही पाठ्य-पुस्तकें हैं। यह कितनी गलत बात है। तो तुम इस बार यह किताबें मत खरीदना। उनके पैसे मुझे दे देना। उन पैसों से मैं हरेक बच्चे के लिए तीन अलग-अलग कहानियों की किताबें लाऊंगा। उन्हे पढ़कर तुम्हे आनन्द आयेगा "। इस तरह लक्ष्मीशंकर ने कक्षा में ही पुस्तकालय शुरू किया। तीन स्कूली किताबों की बजाए बच्चों को सौ से भी ज्यादा कहानी की किताबें पढ़ने का मौका दिया।

आप भी अपने गाँव के किसी बड़े-बूढ़े व्यक्ति को कहानी और लोकगीत सुनाने के लिए स्कूल में बुलायें। इससे आपका गाँव में सम्पर्क बढ़ेगा और बच्चों को कहानियाँ सुनने को मिलेंगी।

दुनिया गोल - पढ़ भूगोल

दुनिया गोल है, फिर भी हमें आस-पास के मैदान सपाट क्यों नज़र आते हैं? इस बात का अनुभव बच्चों को कैसे करायें। इसके लिए बच्चों से एक टूटा मटका लाने को कहें। अब माचिस की डिब्बी के लगभग आधे नाप का मटके का टुकड़ा लें और उसे गौर से देखें। छोटा टुकड़ा देखने में चपटा लगेगा। वह ऊपर और नीचे से लगभग समतल होगा। लेकिन यह टुकड़ा तो गोल मटके का है, तो फिर यह समतल कैसे हो सकता है?

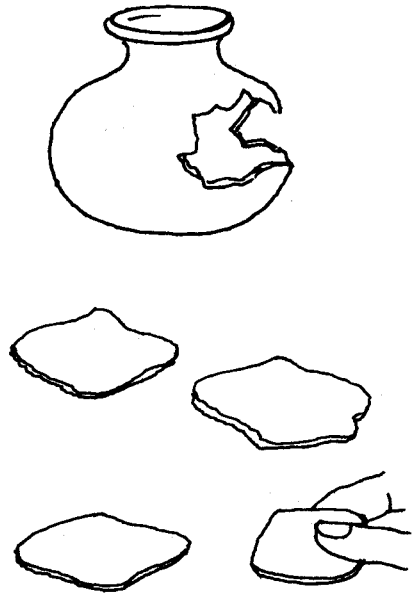

हमें मैदान चपटे और सपाट इसलिए नज़र आते हैं क्योंकि वह हमारी इस विशाल धरती का एक छोटा सा भाग हैं।

बबूल की फली - मोतियों की लड़ी

बच्चे मोतियों की माला से आसानी से गिनती सीखते हैं। परन्तु कई बार माला आसानी से मिलती नहीं है। पर बबूल की फलियाँ तो बड़ी आसानी से मिल जाती हैं। बबूल की फली प्रकृति की अपनी मोतियों की माला जैसी लगती है। किसी फली में तो चौदह-पंद्रह मोती भी होते हैं। बच्चों से ढेर सारी फली लाने को कहें। उन्हे छोटे टुकड़ों में तोड़ कर एक से दस तक मोतियों की लड़ें तैयार करें। इनको मिला कर एक ढेर बनायें। अब बच्चों से अलग-अलग अंक की ढेरियाँ छाँटने को कहें।

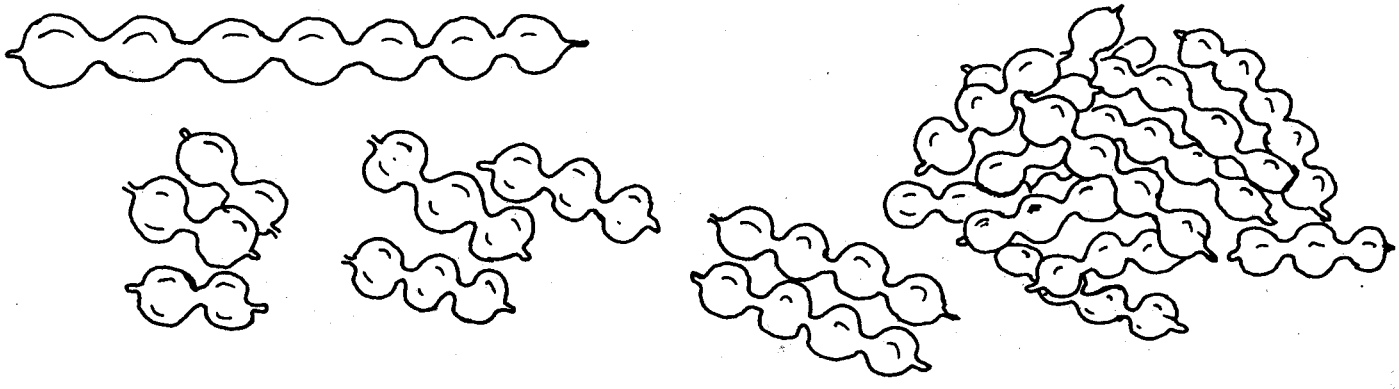

पिरनी

यह पिरनी का खिलौना सरल और बेहद मज़ेदार है। इसे बनाने में कोई खास सामान भी नहीं लगता है। करीब अस्सी सेंटीमीटर लम्बा धागा लो और उसके दोनों सिरों पर एक-एक माचिस की तीली बाँध दो। अब धागे को दोहरा करके उसे धागे की खाली रील में पिरो दो। धागे के इस छल्ले को एक उंगली से लटका दो। अब एक तीली को नीचे खींचने पर रील ऊपर उठेगी। इसका असली मज़ा तभी है जब यह प्यारा सा खिलौना हरेक बच्चे के हाथ में हो।

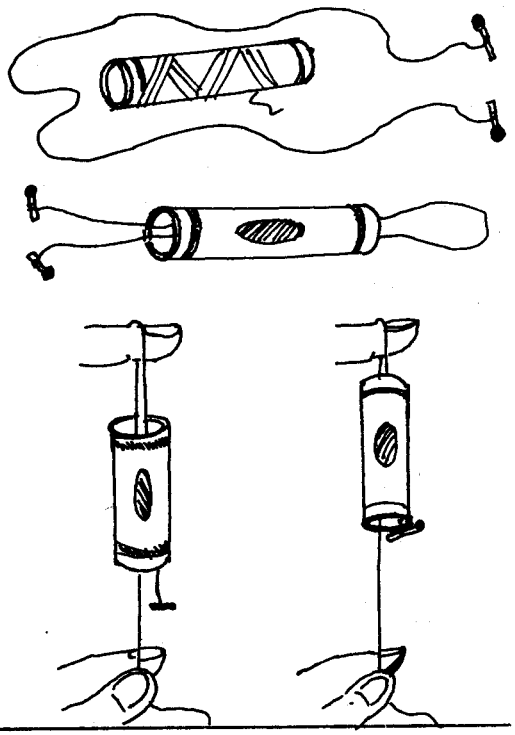

चीजों पर लेबिल

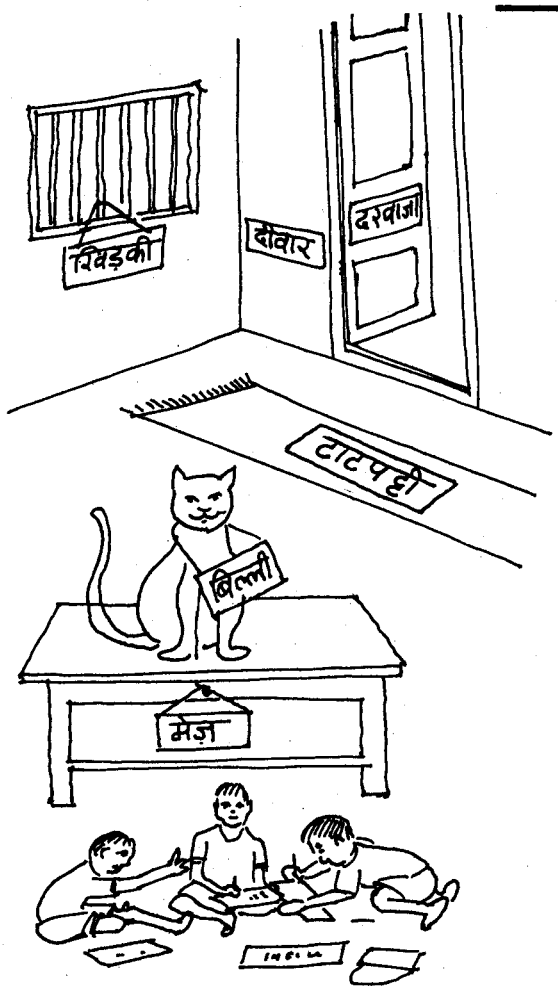

शहर के बच्चों को तमाम लिखी चीजें पढ़ने को मिलती हैं। बसों पर लिखे बोर्ड, दुकानों के नाम, दीवारों पर इश्तहार और पोस्टर आदि। गाँव में लिखी सामग्री का अभाव होता है। इस कमी को दूर करने का एक सरल सा तरीका है। क्लास में जो भी चीज़ें हैं, उन पर उनके नाम के लेबिल लिख कर चिपका दें। उदाहरण के लिए बोर्ड, चाक, मेज़, कुर्सी, दीवार, खिड़की, दरवाज़ा, मटका, टाटपट्टी, लालटेन, कापी, चार्ट आदि चीजें। बच्चे जब इन जानी-पहचानी चीजों के नामों को बार-बार देखेंगे तो वह उन्हे आसानी से पढ़ पायेंगे। लिखे शब्दों का कुछ मतलब होता है, यह बात बच्चे समझेंगे।

पर्यावरण और आत्मनिर्भरता फ्रेंच आर्किटेक्ट योना फ्रेडमॉ की पहली पुस्तक है जो हिन्दी में आई है। योना एक लम्बे अर्से से गरीबों को आत्मनिर्भर बनाने वाली बुनियादी कुशलताओं के बारे में सोचते रहे हैं। महज़ जानकारी हासिल कर लेने से आदमी ज्ञानी नहीं बन जाता। अगर ऐसा होता तो ज्ञान-विज्ञान की अथाह जानकारी ने दुनिया को कब का बीमारी और भूख से मुक्त कर दिया होता। विज्ञान आगे बढ़ा है, पर इंसान का विवेक एकदम पिछड़ गया है। इस खूबसूरत किताब में ऐसी तमाम छोटी-छोटी तकनीकें हैं, जिन्हे पढ़ कर आम आदमी खुद अपने पैरों पर खड़ा होकर कुछ नया रच सकता है।

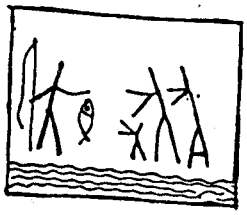

लाओत्से कहते थे :
भूखे को मछली देने
से अच्छा है,

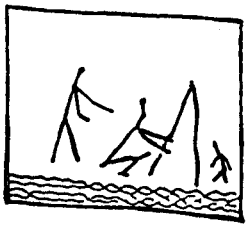

कि तुम उसे मछली
पकड़ना सिखाओ।

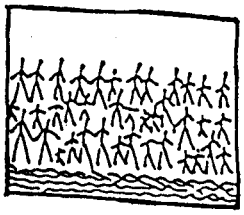

पर जब लाखों-
करोड़ों भूखे हों
तब क्या करें?

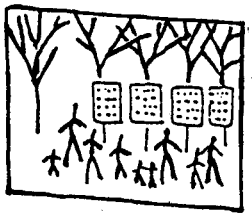

तब सबसे अच्छा
यही होगा कि हम
उन्हे अनाज उगाना
सिखायें।

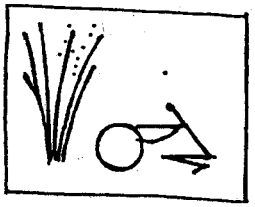

हम ऐसे तरीके अपनायें
जिससे लोग बिना पैसा
खर्च किए अपनी
आजीविका चला सकें।

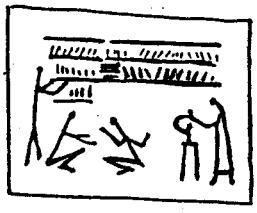

इसके लिए परम्परागत
जानकारी और विज्ञान
दोनों को अपनायें।

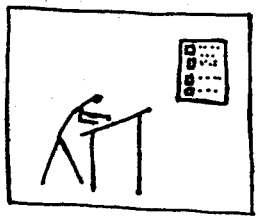

ऐसी जानकारी के लिए
हम सरल चित्र और
कम शब्द अपनायें।

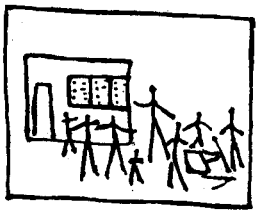

इस जानकारी को हम
पर्चों, पोस्टरों, अखबारों
द्वारा लोगों तक पहुँचायें।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अप्रैल 1996 अंक 4

गणित का मज़ा

गणित में रटना नहीं, समझना ज़रूरी है। यह कहानी महान फ्रेंच गणितज्ञ गौस के बचपन की एक घटना पर आधारित है। जब वह दूसरी क्लास में थे, तो एक दिन उनके शिक्षक ने सभी बच्चों से एक से सौ तक गिनती लिखने को कहा। बाद में उन्होंने सभी अंकों को जोड़ने को भी कहा।

सौ तक गिनती लिखने के बाद सभी बच्चे उन्हे जोड़ने में लग गए। शुरू के अंकों को तो जोड़ना आसान था। पर जैसे-जैसे बड़े नम्बर आते गए वैसे-वैसे जोड़ने की चाल धीमी पड़ती गई। गौस सभी अंको को टकटकी लगाए बहुत ध्यान से देखते रहे। उन्हे उन अंकों में एक अनोखा नमूना नज़र आया।

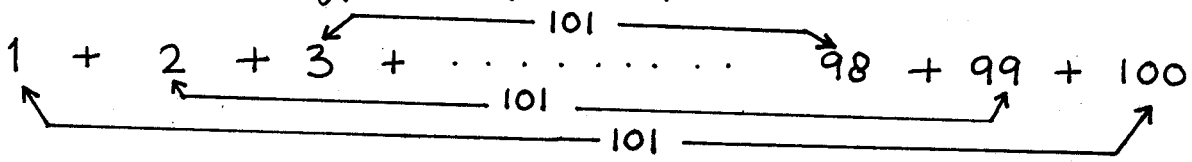

उन्हे लगा कि 1 और 100 की जोड़ी का जोड़ 101 है। उसी तरह 2 और 99 की जोड़ी, 3 और 98 की जोड़ी का योग भी 101 है। सौ तक की गिनती में इस प्रकार की केवल 50 जोड़ियाँ ही होंगी। उन्होने झट से उत्तर $50 \times 101 = 5050$ अपनी स्लेट पर लिख दिया। शिक्षक उनकी प्रतिभा देख कर दंग रह गए। गणित को रटने से उसका सारा मज़ा ही किरकिरा हो जाता है। बच्चे अंकों में नमूने देखें यह ज़रूरी है।

घिरनियाँ

कुँऐ पर जो घिरनी लगी होती है वह केवल बल की दिशा बदल देती है। इस प्रकार हम अपने शरीर का भार भरी बाल्टी खींचने के लिए उपयोग कर सकते हैं। पर इस चित्र में दिखाए प्रयोग से आप एक भारी पत्थर को कम बल का उपयोग किए आसानी से उठा सकते हैं।

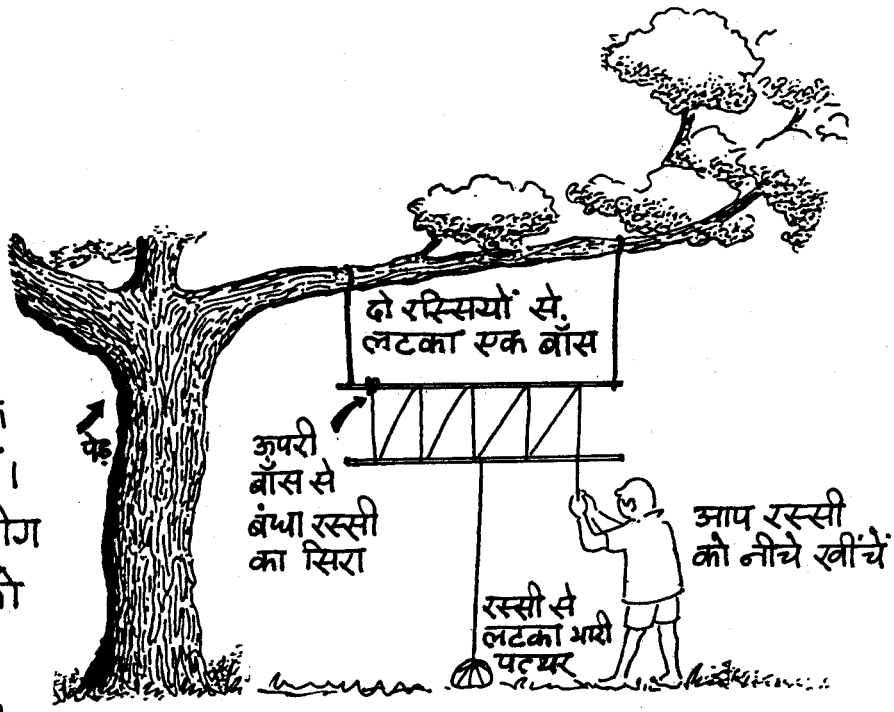

तीलियों का खेल

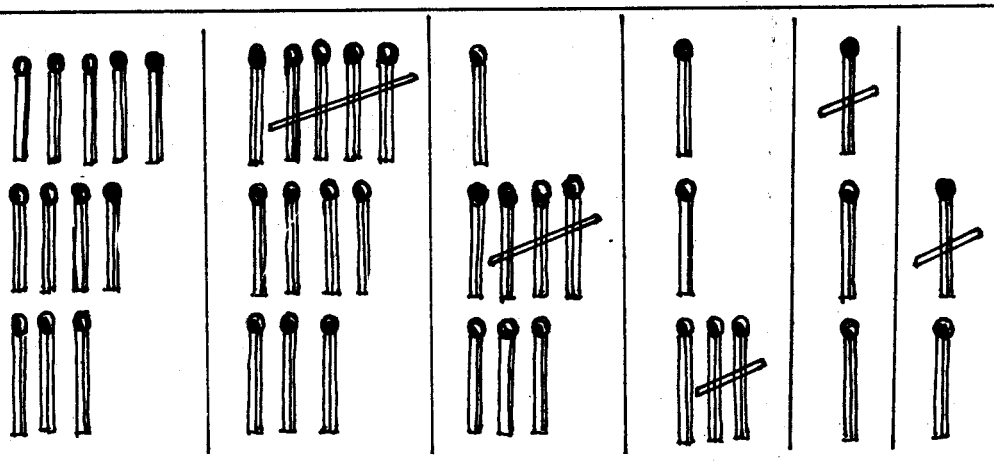

इस खेल के लिए बारह माचिस की तीलियाँ लो। उन्हे तीन लाइनों में रखो। पहली लाइन में 5, दूसरी में 4, और तीसरी लाइन में 3 तीलियाँ रखो। इस खेल में दो लोगों को बारी-बारी से तीलियाँ उठानी हैं। अपनी चाल में आप जितनी चाहें उतनी तीलियाँ उठा सकते हैं, परन्तु वह सभी एक ही लाइन की होना चाहिए। इस खेल में यही कोशिश करें कि दूसरा खिलाड़ी आखिरी तीली उठाए। जो आखिरी तीली उठायेगा, वही खेल हारेगा।

तीलियों का एक और खेल है। इसमें 15 तीलियों को मेज़ पर जैसे मर्ज़ी चाहो सजा दो। जिसकी बारी आए वह खिलाड़ी 1, 2 या 3 तीलियाँ उठा सकता है। इसमें जो खिलाड़ी आखिरी तीली उठायेगा, वही हारा माना जायेगा।

सुदर्शन चक्र

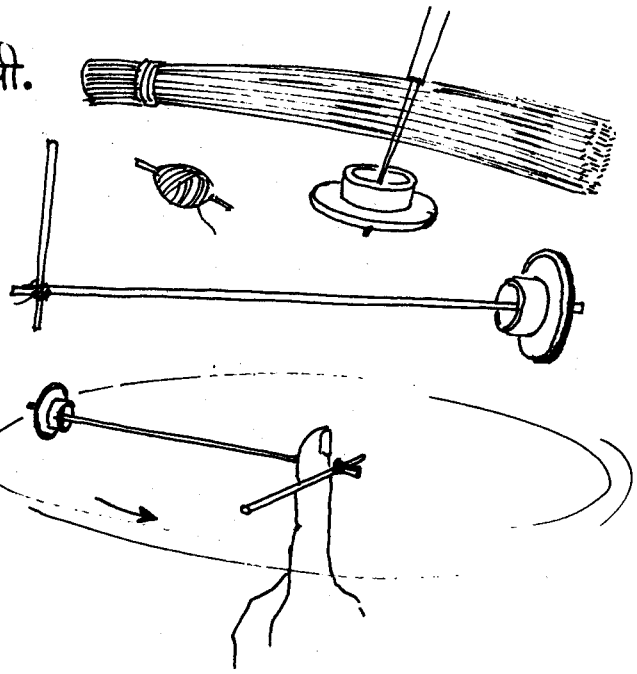

एक 15 सें.मी. लम्बी और दूसरी 6 सें.मी. लम्बी झाड़ू की सींक लो। उन्हे चित्र में दिखाए तरीके से कस कर बाँधो। एक रबड़ के ढक्कन में छेद करो। इस ढक्कन को लम्बी सींक के सिरे में घुसा दो। अब सींकों के जोड़ को एक उंगली पर रख कर संतुलित करो और दिखाई दिशा में घुमाओ। इस खिलौने को तुम जितना तेज़ घुमाओगे वह उतना ही अधिक संतुलित रहेगा।

चित्र बिन्गो

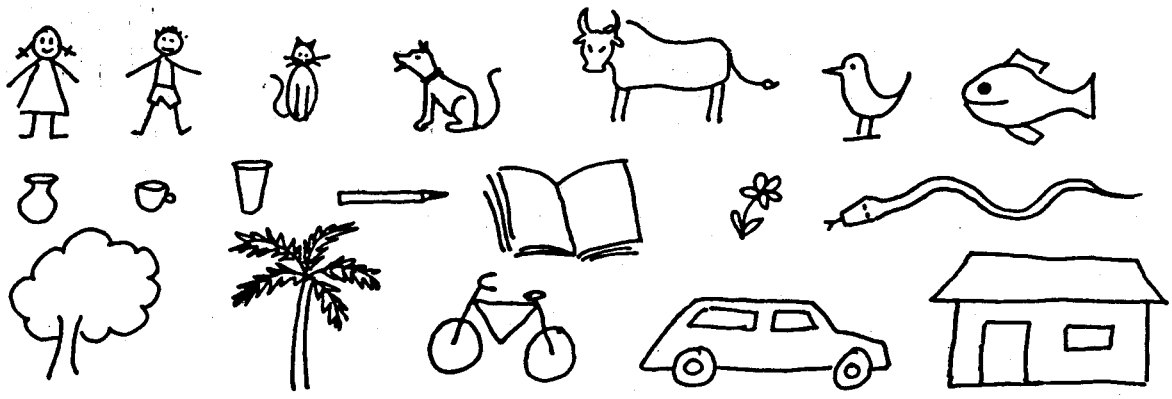

यह एक मज़ेदार खेल है। बच्चों से कहें कि वह इन बीस चित्रों में केवल छह चित्र अपनी स्लेट या कापी पर उतारें। हरेक बच्चे को छह बीज दें। आप किसी चित्र का नाम पुकारें। जिस बच्चे ने वह चित्र उतारा हो वह उसे बीज से ढंक दे। मिसाल के लिए आपके द्वारा 'किताब' पुकारे जाने पर बच्चे किताब वाले चित्र को बीज से ढंक दें। आप सभी पुकारे हुए चित्रों का हिसाब रखें। जिस बच्चे के छहों चित्र पहले ढंक जायें, वह अपना हाथ ऊपर उठाए। वही जीता माना जाएगा। इस खेल को चित्रों के अलावा अंकों से भी खेला जा सकता है।

ब्लैकबोर्ड की किताब - लेखिका एलिनेर वॉटस

हमारे देश में साधनों की कमी है। स्कूलों की इमारतें टूटी हैं और बच्चों के बैठने के लिए टाटपट्टियों की कमी है। पर जो शैक्षणिक साधन हैं भी उनका भी हम पूरा और सही इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं। ब्लैकबोर्ड इसका एक जीता-जागता उदाहरण है। ब्लैकबोर्ड के सही उपयोग से पढ़ाई को बहुत रोचक बनाया जा सकता है। बच्चे शब्दों में नहीं बल्कि चित्रों में सोचते हैं। अगर आपको बच्चों का मन जीतना है तो आपको सरल चित्रों की भाषा सीखनी होगी। थोड़े से अभ्यास के बाद आप आस-पास की तमाम चीजों और अनुभवों को चित्रों द्वारा दिखा सकेंगे। इस किताब का इस्तेमाल कर एक साधारण सा शिक्षक भी भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास और भूगोल जैसे विषयों को बहुत रोचक बना सकता है।

संगीत सभा

बच्चों के खेल
गेंद, गुब्बारा
ढोलक, गुड़िया →

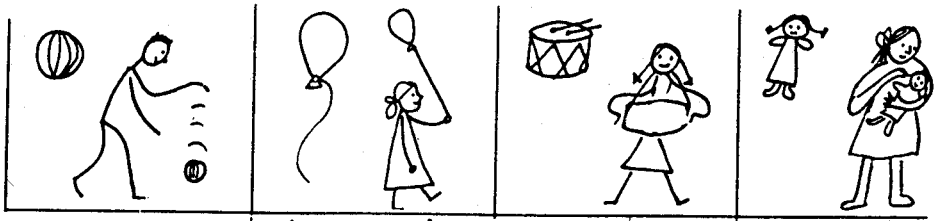

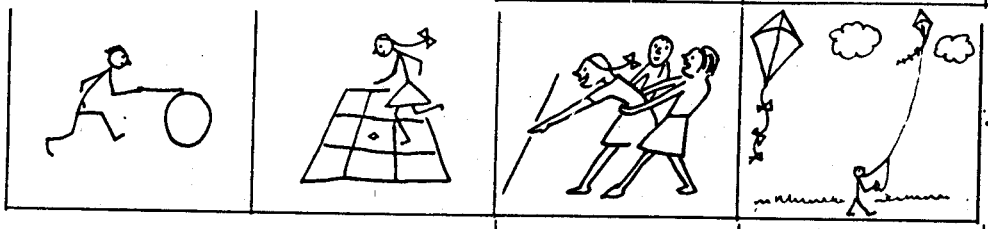

बच्चों के खेल
पहिया, इक्कड़-दुक्कड़,
कबड्डी, पतंग ←

कुछ आम बीमारियाँ
फुंसी, टूटा-हाथ,
टूटा-पैर, चेचक →

कुछ आम बीमारियाँ
जुखाम, दस्त
सिर-दर्द, बुखार ←

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 5 मई 1996

हम कब सीखेंगे ?

अब युद्ध से लोग तंग आ चुके हैं। सारी दुनिया अब शांति की ओर बढ़ रही है। विश्वस्तर पर युद्ध और हथियारों पर खर्च घटा है। इज़राइल और फिलिस्तीन जैसे कट्टर दुश्मन भी अब आपस में दोस्ती कर रहे हैं। इस सब के बावजूद दुनिया के दो गरीब मुल्क - भारत और पाकिस्तान, हथियारों पर हर साल 7000 करोड़ रुपये बहा रहे हैं। क्या यह शर्म की बात नहीं है ? दोनों ही देशों में गरीबी और भुखमरी है। यहाँ पर करोड़ों लोग सड़कों पर सोने को मज़बूर हैं। फिर भी हम लड़ाकू जैट-विमानों और पनडुब्बियों पर पैसे फूंक रहे हैं। विदेशी कर्ज़ लेकर आधुनिक हथियार खरीदे जा सकते हैं। परन्तु जब तक लोग भूखे और अनपढ़ रहेंगे, तब तक कोई देश ताकतवर नहीं हो सकता है।

किसी देश के भौतिक साधन - खनिज, जंगल, कारखाने, सड़कें आदि उसकी कुल दौलत का मात्र 36 प्रतिशत होते हैं। देश की बाकी 64% दौलत उसके लोग होते हैं। लोगों की शिक्षा पर हम बहुत कम खर्च करते हैं। दक्षिण कोरिया में हरेक व्यक्ति की शिक्षा पर सालाना 4500 रुपये खर्च होते हैं। जबकि भारत में 315 रुपये, पाकिस्तान में 105 और बंगलादेश में केवल 70 रुपये खर्च होते हैं। इराक, सोमालिया और निकरागुआ ने रक्षा पर बेहिसाब खर्च किया। परन्तु जंग छिड़ने पर इनमें से कोई भी अपनी सीमा की रक्षा न कर सका। कोस्टा-रिका ने 1948 में सेना को रद्द कर सारा रक्षा खर्च खत्म कर दिया। यह देश अपनी आय का एक तिहाई भाग शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करता है। आज मध्य-अमरीका में यही एक खुशहाल प्रजातंत्र है। हमें हरेक साल रक्षा खर्च कम करके उस पैसे को लोगों की शिक्षा, स्वास्थ्य आदि बुनियादी ज़रूरतों पर लगाना चाहिए।

अक्षर चित्र

बच्चे अक्षरों को बार-बार लिखते लिखते थक जाते हैं, ऊब जाते हैं। वर्णमाला उन पर बोझ बन जाती है। रेखाओं से बना हुआ अक्षर तो केवल एक कंकाल की तरह होता है। क्या हम उसमें किसी प्राणी या वस्तु की कल्पना कर सकते हैं।? अगर अक्षरों के साथ खेला जाए, मतलब उन्हे चारों ओर घुमाकर, उलट-पलट कर उन्हे निहारा जाए, तो उनमें छिपे हुए चित्रों को हम ढूंढकर पहचान सकते हैं। अगर बच्चे अक्षरों में जानवर, फल, लोग और चीजें खोजने लगेंगे, तब वर्णमाला याद होने के साथ-साथ उनके लिए खुशी का एक नया संसार खुल जायेगा।

यहाँ पर इंदौर के गुरुजी विष्णु चिंचालकर द्वारा बनाए कुछ बेहद रोचक अक्षर-चित्र दिए गए हैं।

आम की गुठली, नारियल की नट्टी और मकई के भुट्टे से भी अनेकों सुन्दर खिलौनें और कलाकृतियाँ बन सकती हैं।

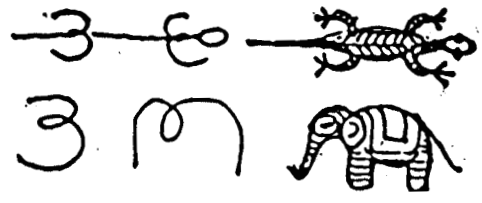

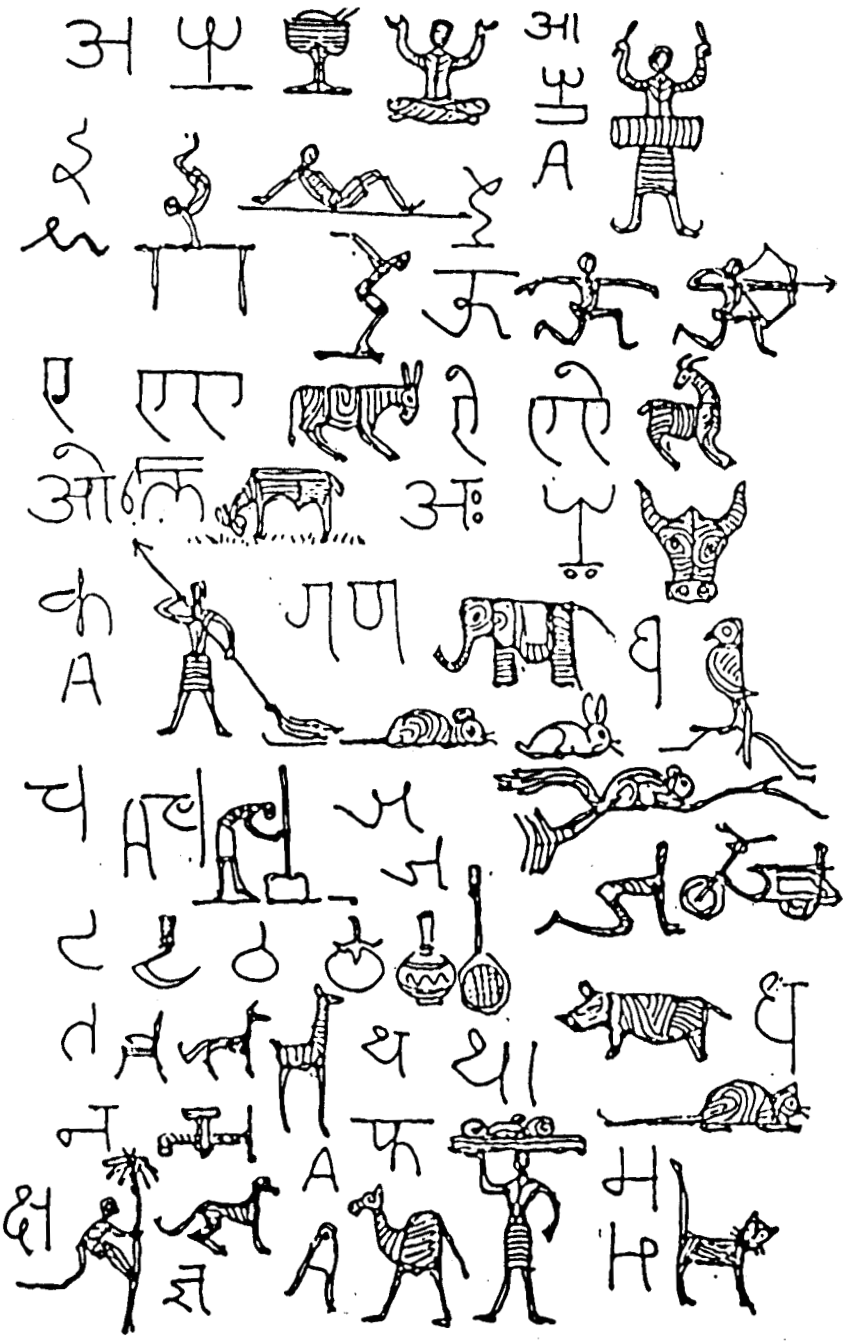

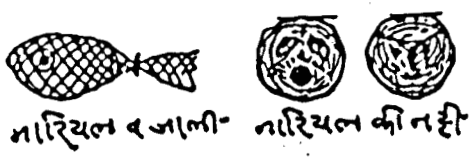

झटका पम्प

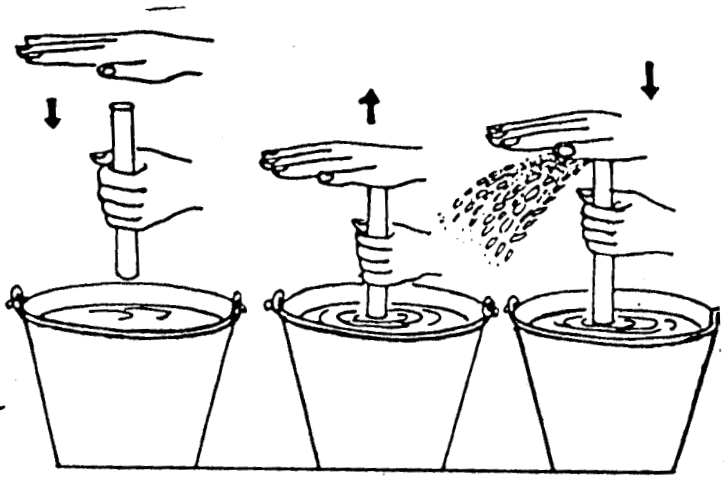

यह दुनिया का सबसे सरल पम्प है। इसके लिए 18 इंच लम्बा खोखला बाँस, प्लास्टिक पाइप या पपीते के पेड़ की पोली डंठल लें। पाइप को बायें हाथ में पकड़ कर उसे पानी से भरी बाल्टी में तेजी से डुबायें और फिर बाहर निकालें। साथ-साथ अपनी दाहिनी हथेली से पाइप का मुँह बन्द करें और खोलें। कुछ ही देर में पाइप में से पानी बाहर निकलेगा। पाइप को झटके से ऊपर-नीचे करने से उसमें पानी ऊपर चढ़ता है। दाहिनी हथेली एक वाल्व का काम करती है। यह बिना खर्च का एक मजेदार पम्प है।

अंकों का हाथी

यह हाथी एक से दस तक के अंकों से बनाया गया है। क्या आप इन नम्बरों को खोज सकते हैं? आज से साठ साल पहले 'खिलौना' नाम की बाल-पत्रिका निकलती थी। पहली बार यह हाथी उसमें छपा था।

चिट्ठी अवश्य लिखें

फुलझड़ी का यह पाँचवा अंक है। आपको फुलझड़ी कैसी लगती है? इसके कौन से लेख आपको पसन्द आए? आप फुलझड़ी में किस तरह के लेख चाहते हैं? आपके पत्रों से हमें फुलझड़ी को अच्छा बनाने में मदद मिलेगी। कृपा अपने पत्र इस पते पर भेजें:-

अरविन्द गुप्ता
सी 7-167, एस. डी. ए., नई दिल्ली 110016

महके सारी गली गली हिन्दी की 57 बाल कविताओं का एक अनूठा संकलन है। इन कविताओं को निरंकार देव सेवक और कृष्ण कुमार ने बड़ी सूझ-बूझ से चुना है। कई कवितायें तो पचास साल पुरानी हैं, फिर भी लाजवाब हैं। आप इन कविताओं को बच्चों को अवश्य सुनायें। बच्चे इन्हे सुन कर मंत्र-मुग्ध हो जायेंगे। जगदीश जोशी के खूबसूरत चित्रों ने पुस्तक में चार चाँद लगा दिए हैं। इस अनूठी पुस्तक को मात्र सात रुपये में छापने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट को हार्दिक बधाई।

क्यों

पूछूं तुमसे एक सवाल
झट पट उत्तर दो गोपाल
मुन्ना के क्यों गोरे गाल ?
पहलवान क्यों ठोके ताल ?
भालू के क्यों इतने बाल ?
चले सांप क्यों तिरछी चाल ?
नारंगी क्यों होती लाल ?
घोड़े के क्यों लगती नाल ?
झरना क्यों बहता दिन रात ?
जाड़े में क्यों कांपे गात ?
हफ्ते में क्यों दिन हैं सात ?
बुड्ढों के क्यों टूटे दांत ?
ढम ढम ढम क्यों बोले ढोल ?
पैसा क्यों होता है गोल ?
मीठा क्यों होता है गन्ना ?
क्यों चम चम चमकीला पन्ना ?
लल्ली क्यों खेल रही गुड़िया ?
बनिया बांध रहा क्यों पुड़िया ?
बालक क्यों डरते सुन हौआ ?
कांव कांव क्यों करता कौआ ?
नानी को क्यों कहते नानी ?
पानी को क्यों कहते पानी ?
हाथी क्यों होता है काला ?
दादी फेर रही क्यों माला ?
पक कर फल क्यों होता पीला ?
आसमान क्यों नीला नीला ?
आंख मूंद क्यों सोते हो तुम ?
पिटने पर क्यों रोते हो तुम ?

—श्रीनाथ सिंह

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 भालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 6 जून 1996

एक अनूठा प्रयोग

चौबिस साल तक सिलविया एश्टन वार्नर ने न्यूजीलैण्ड में मावरी जनजाति के बच्चों को पढ़ाया। शिक्षा पर उनके अनुभव 'अध्यापक' नाम की लाजवाब किताब में छपे हैं। बच्चों के पहले शब्द बहुत महत्व रखते हैं। इन आत्मीय 'मूलशब्दों' का बच्चों की भावनाओं से गहरा सम्बन्ध होता है। इन शब्दों में बच्चों के माहौल की खुशबू भी होती है और उनके जीवन का दर्द भी।

सिलविया बच्चों से पूछतीं "आज तुम्हें कौन सा शब्द चाहिए?" बच्चे कहते 'भूत' 'साँप' 'छिपकली' आदि क्योंकि सभी बच्चे एक डर के साये में जीते हैं। सिलविया उनके शब्दों को एक मोटे कागज की पर्ची पर लिख देतीं। बच्चे उन शब्दों को लिखा देखते और उन्हें कभी न भूलते, क्योंकि वह तो उनके अपने ही शब्द थे। अगले दिन सिलविया बच्चों से 'भूत' की कहानी सुनाने को कहतीं। बच्चों की कल्पना उड़ान भरती और उनके दिल से कहानी फूट पड़ती। सिलविया, उस कहानी को, बच्चों के अपने ही शब्दों में सिर्फ लिख भर देतीं। क्योंकि वह कहानी बच्चों की अपनी थी, जिसमें उनके ही शब्द थे, इसलिए बच्चे उसे झट से पढ़ने लगते। वह इन कहानियों पर सुन्दर चित्र बनाते। इस तरह छः महीनों में बच्चों ने साठ सचित्र कहानियाँ लिखीं। यह कहानियाँ बच्चों के सपनों और अनुभवों के ताने-बाने से बुनी हुई थीं।

सिलविया के ही तरीके को बाद में ब्राजील के शिक्षाविद पौलो फ्रेरे ने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी सफलता के साथ अपनाया। इस तरीके के उपयोग से अनपढ़ लोग बहुत जल्दी लिखना पढ़ना सीख गए। सिलविया मानती थीं कि बच्चे के अन्दर तो ज्वालामुखी है। उसे प्यार से बस छूने भर की देरी है। फिर बच्चे की सृजनता बाहर फूट निकलेगी। उन्होंने बच्चों के अनुभवों को पाठ्यक्रम का एक अंग बनाया।

तकली

1. यह दुनिया के सबसे अच्छे खिलौनों में से एक है। इसे बनाना सरल है और खेलने में तो बस मज़ा ही मज़ा है। 80 सेंटीमीटर लम्बे दो धागे लो। इनके सिरों में गाँठ लगाकर दो छल्ले बनाओ। एक बाँस की 6 सें. मी. लम्बी डंडी लो। डंडी के दोनों सिरों को 'V' आकार में काटो। इन कटे हिस्सों में धागा फंसा रहेगा।
2. अब एक धागे के छल्ले को अपने पैरों के अंगूठों में फँसा लो।
3. अब डंडी के कटावों को छल्ले के बीच फंसा लो। डंडी को गोल-गोल घुमाओ जिससे धागे में कुछ बल पड़ जायें। डंडी को ज़रा सावधानी से पकड़ो, जिससे बल खुल न जायें।
4. डंडी को संभाल कर पकड़ो और चित्र में दिखाए अनुसार दूसरे छल्ले को फंसाओ।
5. डंडी को अब हल्के से छोड़ो जिससे वह थोड़ा सा उल्टी दिशा में घूमे। इस तरह दूसरे छल्ले पर भी कुछ बल पड़ जायेंगे।
6. दूसरे छल्ले के दोनों सिरे खुले होने चाहिए।
7. अब दूसरे छल्ले के सिरों को एक-एक हाथ से पकड़ कर हल्के से खींचों और ढील दो। इससे डंडी गोल-गोल घूमेगी। इसका घूमना हाथ से चलने वाली पुरानी खराद मशीन से मिलता-जुलता है। खींचने और ढील देने से यह खराद मशीन लगातार गोल-गोल घूमती रहेगी।

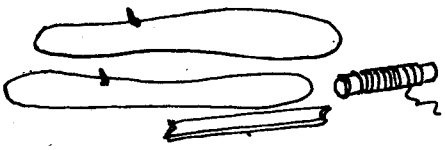

1

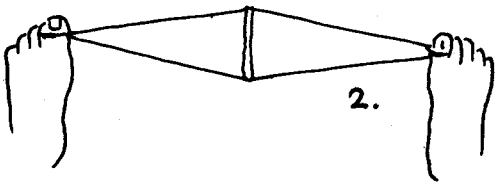

2.

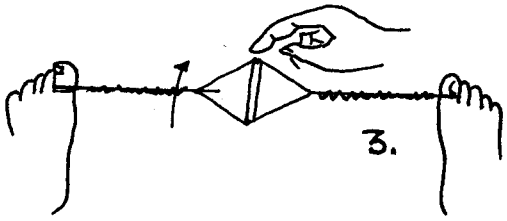

3.

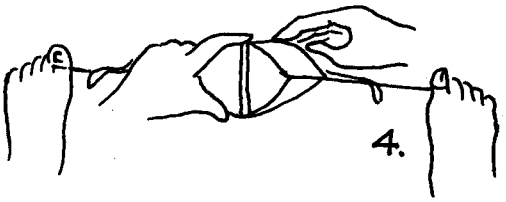

4.

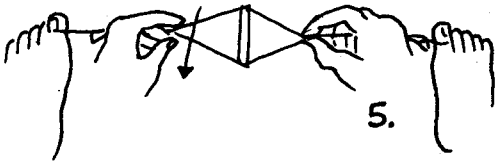

5.

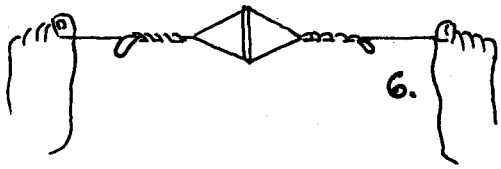

6.

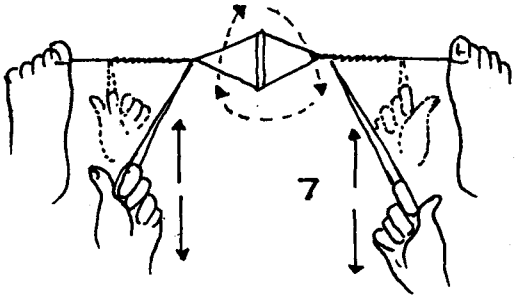

7

बिजली से

दामोदर अग्रवाल

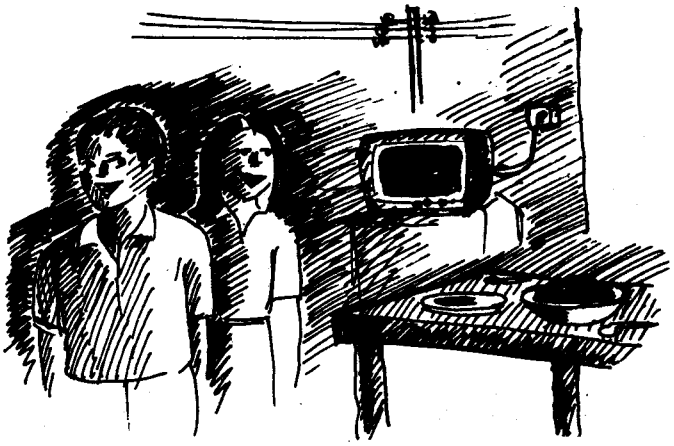

बड़ी शरम की बात है बिजली
बड़ी शरम की बात !

जब देखो गुल हो जाती हो
ओढ़ के कम्बल सो जाती हो
नहीं देखती हो यह दिन है, या यह काली रात है बिजली
बड़ी शरम की बात!
बड़ी शरम की बात है बिजली, बड़ी शरम की बात !

हम गाना गाते होते हैं,
या खाना खाते होते हैं,
पता नहीं चलता थाली में, किधर दाल औ' भात है बिजली
बड़ी शरम की बात !
बड़ी शरम की बात है बिजली, बड़ी शरम की बात !

जाओ, मगर बता के जाओ
कुछ तो शिष्टाचार दिखाओ,
नोटिस दिए बिना चल देना, तो भारी उत्पात है बिजली
बड़ी शरम की बात !
बड़ी शरम की बात है बिजली, बड़ी शरम की बात !

कितनी भेड़ ?

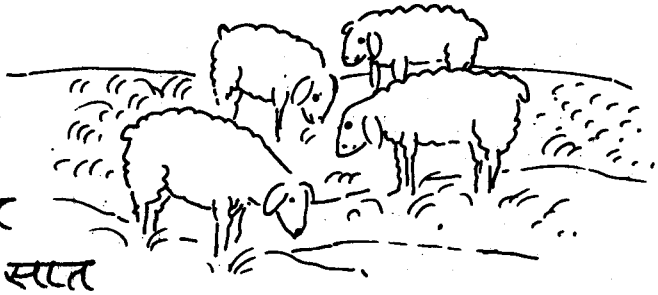

गडेरिए ने कहा "अगर मैं अपनी भेड़ों की दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, पाँच-पाँच या छः-छः की जोड़ियाँ बनाता हूँ तो हर बार एक भेड़ बच जाती है। पर जब उनकी सात-सात की जोड़ियाँ बनाता हूँ, तो एक भी भेड़ नहीं बचती। अब आप ही बतायें कि उसके पास कुल कितनी भेड़ थीं? (उत्तर:- 301)

प्रिय पिचि

लेखिका : सिमरन कौर (सी.बी.टी. मूल्य 18 रुपये)

इस पुस्तक में एक नन्ही सी गिलहरी के जीवन की एक अत्यन्त संवेदनशील और मार्मिक कहानी है। लेखिका अपने पति के साथ कुल्लू जा रही थीं। वह लोग रास्ते में नाश्ते के लिए रुके। वहीं पर लेखिका को नन्ही पिचि की आवाज़ सुनाई पड़ी। पिचि चन्द घंटो पहले ही जन्मी थी। उसकी माँ मर गई थी। लेखिका नन्ही पिचि का लालन-पालन करती है। वह रुई की बाती बनाती है और उसको दूध में डुबो कर पिचि को दूध पिलाती है। पिचि दुबक कर लेखिका की हथेली पर ही सो जाती है। थोड़ा बड़ा होने पर वह लेखिका के हाथ से मूंगफली के दाने ले-लेकर खाती है।

इस सुन्दर पुस्तक में एक गिलहरी के जीवन, रहन-सहन, खाने-पीने आदि का बेहद रोचक और सजीव वर्णन है। यह किताब अंग्रेजी में लगभग दस वर्ष पहले छपी थी, लेकिन हिन्दी में इसी वर्ष आई है। इस तरह की पुस्तकों का हिन्दी में बहुत अभाव है।

प्रिय पिचि आप अवश्य पढ़ें। यह कहानी आपके दिल को छू जायेगी।

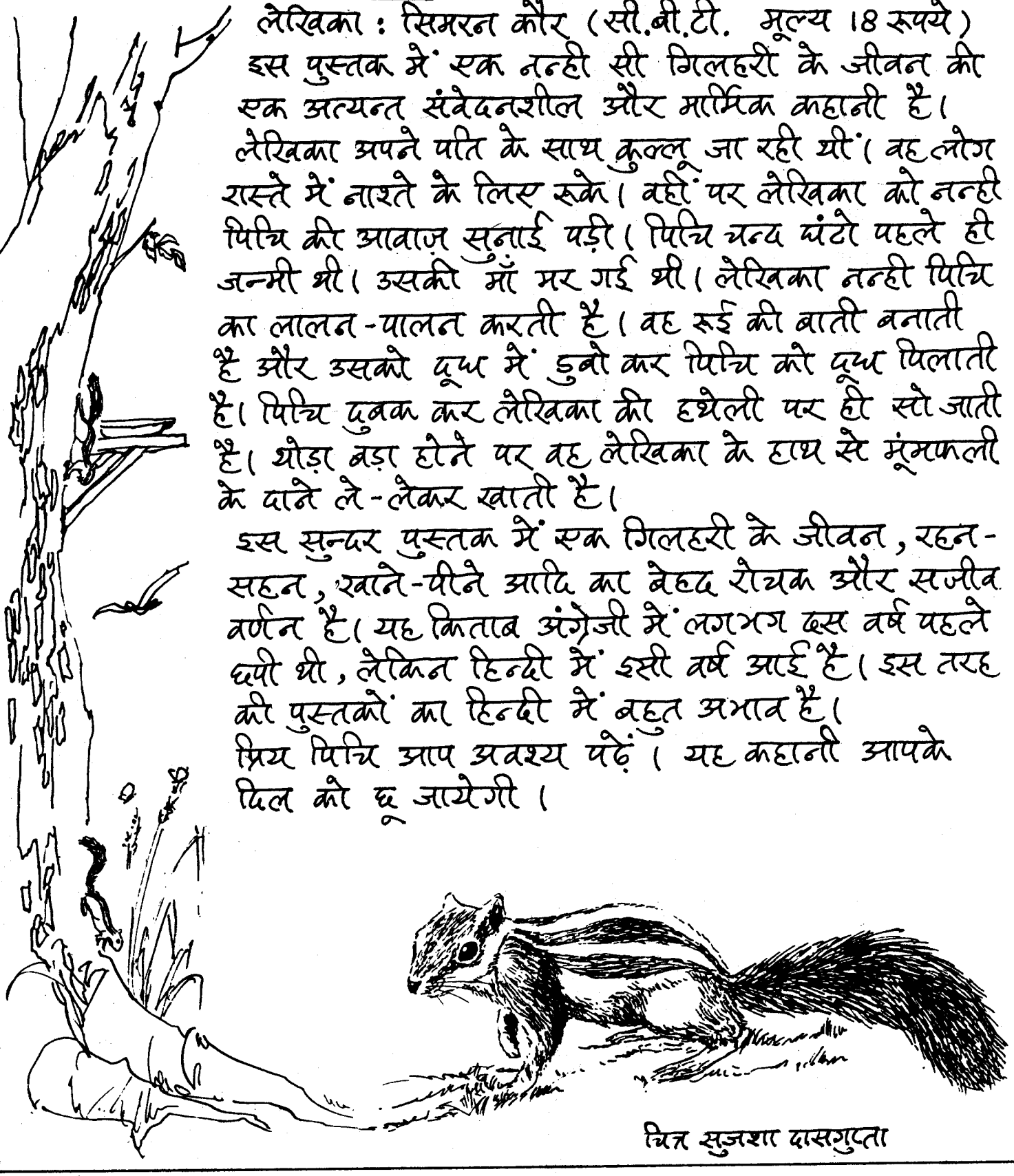

चित्र सुजाता दासगुप्ता

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 7, जुलाई 1996

बच्चों का बाग - नीलबाग

बंगलौर के पास एक स्कूल था - नीलबाग। इसे डेविड हौसब्रो नाम के अंग्रेज ने शुरू किया था। स्कूल की इमारत स्थानीय लाल मिट्टी की बनी थी। स्कूल में आस-पास के गाँवों के ही बच्चे आते थे। दो साल से बीस साल तक के बच्चे एक ही लम्बे से कमरे में पढ़ते थे। अगर बच्चों को कुछ समझ में नहीं आता तो वह अपने से बड़े बच्चों से पूछ लेते। स्कूल में पढ़ाई कम होती, पर सीखना अधिक होता। स्कूल में न तो हाजिरी ली जाती और न ही कभी परीक्षा होती। इसलिए बच्चों के कभी पास-फेल होने का सवाल ही नहीं पैदा होता था। यहाँ बच्चे केवल सफल होते थे।

बच्चे अपनी योग्यता के अनुसार अपनी पढ़ाई की रफ्तार तय करते। कुछ बच्चे चार साल का कोर्स एक ही साल में खत्म कर देते। तो कुछ एक साल की पढ़ाई दो साल में पूरी करते। बच्चे एक साथ तीसरी की गणित, चौथी की अंग्रेजी और छठवीं की गणित सीख सकते थे। स्कूल में बच्चे पाँच भाषायें सीखते। स्थानीय तेलगु और कन्नड भाषाओं के साथ-साथ वह अंग्रेजी, हिन्दी और संस्कृत भी सीखते। स्कूल में अलग-अलग विषयों पर सात हजार किताबें थीं।

स्कूल में हाथ से काम करने पर बहुत ज़ोर था। बच्चे मिट्टी के खिलौने और कलाकृतियाँ बनाते। लकड़ी की वर्कशाप में बच्चे तमाम शैक्षणिक साधन और दैनिक प्रयोग की चीजें बनाते। डेविड मानते थे कि मिट्टी और लकड़ी का काम बच्चों को विज्ञान और गणित सीखने में सहायक होता है। नीलबाग अपने जैसा एकमात्र स्कूल था। बच्चे स्कूल शुरू होने से घंटे भर पहले ही वहाँ आ धमकते थे। स्कूल की छुट्टी होने के बाद भी वह वहीं जमे रहते थे। नीलबाग जैसी मजेदार और खुशी की जगह उनके लिए और कहीं न थी। अंत में डेविड उनके साथ गाना गाता हुआ उन्हे गाँव छोड़ आता था।

नीलबाग था। अब नहीं है। लेकिन उसकी खुशबू अभी भी रूह से चिपकी है।

कैसे-कैसे नाम

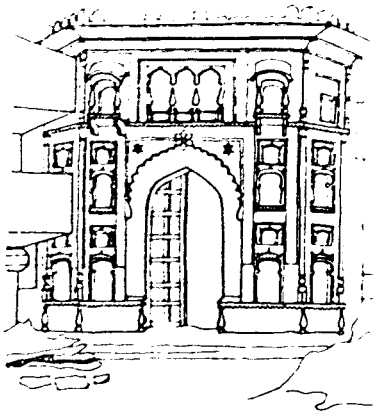

शहरों और गाँवों के नाम कैसे पड़े? सरल सी बात है। जहाँ ज्यादा पीपल के पेड़ थे, उस जगह को लोग पिपरिया कहने लगे। नीम से नीमच, जामुन से जमुही और आम से अम्बेगाँव का नाम पड़ा। पलासी के युद्ध को पलाश के पेड़ ने ही अमर किया।

किसी भी शब्द के पीछे अगर 'पुर' की दुम लग जाए, तो वह एक शहर बन जाता है। जयपुर, नागपुर, उदयपुर इसके उदाहरण है। कहीं-कहीं पर 'पुर' की जगह 'पुरी' और 'पटनम' भी लगने लगा।

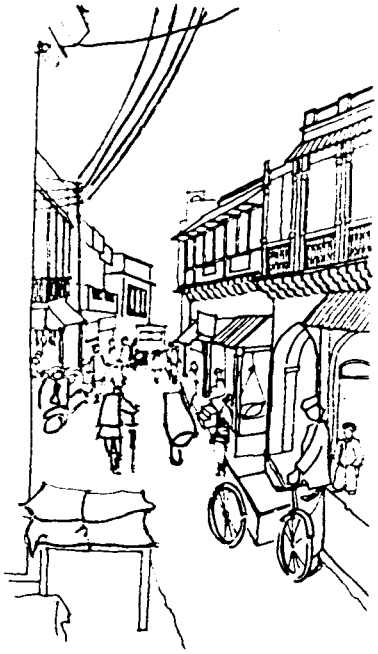

नगर तो शहर होता ही है, जैसे विजयनगरम यानि जीत का शहर। अगर नाम के पीछे 'कोट' या 'गढ़' लगा हो वहाँ ज़रूर कोई किला रहा होगा जैसे लालकोट, किशनगढ़, जूनागढ़ आदि। 'हट्टी' या 'हाट' का अर्थ है दुकानें या बाज़ार जैसे गुवाहाटी (गुवा के मतलब पान) यानि पान बाज़ार।

'गंज' का मतलब है गोदाम। रानीगंज, पहाड़गंज जैसी जगहों में ज़रूर गोदाम रहे होंगे।

'सर' संस्कृत का शब्द है, जिसका मतलब है, सरोवर या तालाब। अमृतसर तो अपने ताल के लिए प्रसिद्ध है। शायद लूनकरनसर में भी कभी कोई बड़ा तालाब रहा हो।

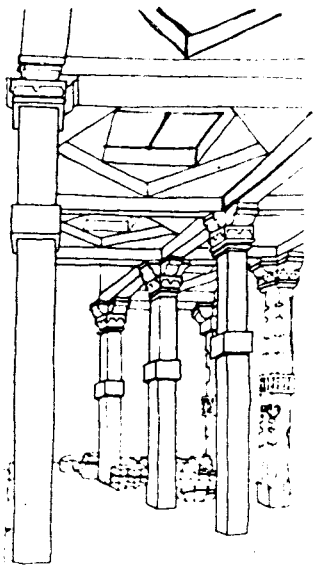

'आबाद' का मतलब है रहने का स्थान, जैसे उस्मानाबाद, जहाँनाबाद आदि। रायपुर, राजगढ़ जैसे नाम निश्चित रूप से किसी शासक के सम्मान में रखे गए होंगे।

'तिरु' या 'त्री' भी संस्कृत के 'श्री' से लिया गया है। तिरुशिरापल्ली का अर्थ है 'पवित्र पत्थर वाला शहर'।

हरेक गाँव या शहर के नाम के पीछे आपको एक कहानी छिपी मिलेगी। अगर आप उसे खोजेंगे तो भूगोल की पढ़ाई अधिक जीवन्त और रोचक बन जायेगी।

पंचभुजी केंकड़ा

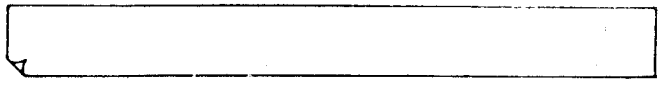

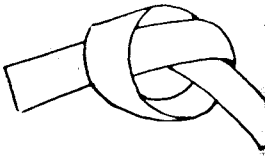

कागज की एक लम्बी और समान चौड़ाई की पट्टी लो। इसके दोनों सिरों को लेकर एक गाँठ मार दो।

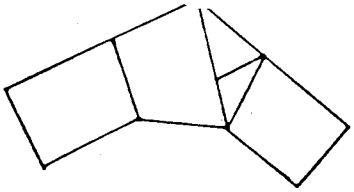

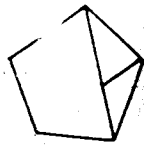

गाँठ के दोनों सिरों को हल्के-हल्के खींचो। गाँठ की आकृति एक नियमित पंचभुज जैसी बन जायेगी।

गाँठ के दोनों ओर निकली भुजायें एक बराबर की काट लो। चित्र के अनुसार दायीं-बायीं भुजाओं को पाँच बराबर भागों में काटें और सभी को बिन्दीदार रेखाओं से ऊपर की ओर मोड़ें। बाद में पंजे और पैर मोड़ें।

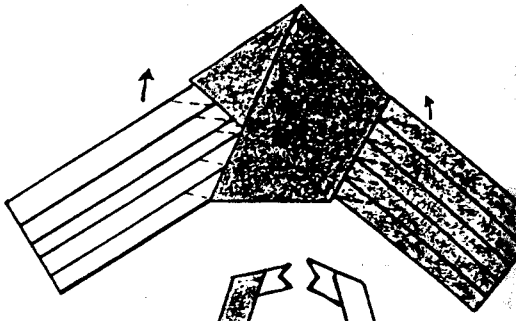

इस तरह एक सुन्दर पंचभुजी केंकड़ा बन जायेगा।

उछलता रबड़ बैंड

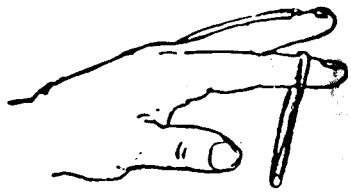

एक रबड़ का छल्ला लो। उसे अंगूठे के पास वाली तर्जनी उंगली में डालो।

अब छल्ले को दूसरे हाथ से पकड़ कर खींचो। उसे बीच वाली उंगली के नीचे से निकालकर वापिस पहले वाली उंगली में फंसा दो।

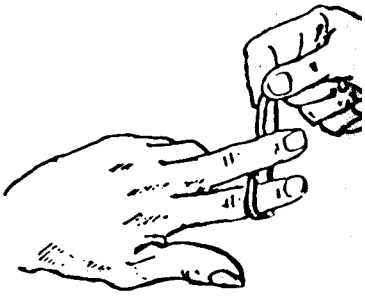

अब अपने दोस्तों से कहो कि तुम छल्ले को तर्जनी उंगली से उछाल कर बीच वाली उंगली पर ला सकते हो।

जादू को अधिक रोचक बनाने के लिए किसी मित्र से अपनी तर्जनी का सिरा पकड़ने को कहो। इससे जादू में और मज़ा आयेगा।

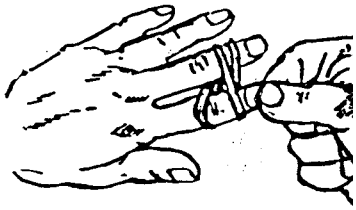

अब झट से अपनी बीच वाली उंगली मोड़ लो। इससे छल्ला छूटेगा और वह तर्जनी उंगली पर से निकल कर बीच वाली उंगली पर आ जायेगा।

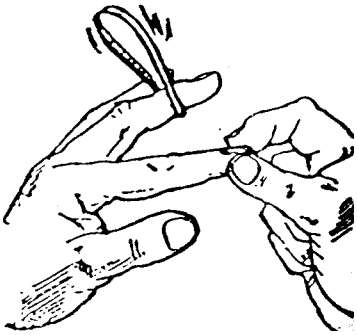

बताओ, मैं क्या कर रहा हूँ!

(प्रकाशक एन. बी. टी., मूल्य रु 21/-)

यूनेस्को के सहयोग से छपी यह पुस्तक बच्चों के लिए बेहद मनमोहक है। यह मन करता है, कि इसके सुन्दर रंगीन चित्रों को बस टकटकी लगाए निहारते रहो। अन्दर के दोनों कवरों पर 5। अलग-अलग देशों के बच्चे अपनी भाषा में आपका अभिवादन करते हैं। अगर चिली के बच्चे 'सालुडोस' कह कर नमस्ते कहेंगे, तो कोलम्बिया में 'होला' कहेंगे। किताब में दुनिया के अलग-अलग क्षेत्रों को वहाँ के एक साधारण बच्चे के माध्यम से पेश किया गया है। मिसाल के लिए पूर्वी अफ्रीका को ही लें। वहाँ कल्लू नाम का लड़का रहता है। उसके पिता मिट्टी के बर्तन बनाते हैं। बच्चों को कल्लू की तस्वीर देखकर उसे चित्र में खोजना है। मजेदार बात यह है कि हरेक पाठ में बच्चों को कुछ ढूंढना है या कुछ बनाना है। कभी बच्चे कठपुतली बनाते हैं तो कभी भूल-भुलइया में से रास्ता खोजते हैं। चित्र इतने खूबसूरत हैं कि अलग-अलग देशों की तस्वीर आँखों के सामने तैरने लगती है। यह बच्चों की एक मनपसन्द किताब है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक: लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अगस्त 1996 अंक 8

लक्ष्मी आश्रम

अल्मोड़ा के थोड़ा आगे है कौसानी - एक छोटा मगर खूबसूरत पहाड़ी कस्बा। यहाँ पर बर्फ से ढके हिमालय के पर्वतों का नज़ारा देखते ही बनता है। यहीं पर स्थित है लक्ष्मी आश्रम। इसकी स्थापना गाँधीजी की प्रेरणा से कोई सत्तर वर्ष पहले मीरा बहन ने की थी। मीरा बहन मूलत: जर्मन थीं, परन्तु उनके माता-पिता इंग्लैण्ड में बस गये थे।

लक्ष्मी आश्रम में गढ़वाल के गाँवों से आई अलग-अलग उम्र की लड़कियाँ रहती हैं। यहाँ जिन्दगी जीने की कुशलतायें हासिल करने पर अधिक ज़ोर है, किताबें पढ़ने पर कम। लड़कियाँ सुबह पाँच बजे उठ कर लकड़ी लाती हैं और पानी भरती हैं। कुछ गाय-भैंसों की सानी-पानी करती हैं, तो कुछ सब्जी की क्यारियाँ सींचती हैं। कुछ पेड़ों से नाशपातियाँ तोड़ती हैं। गांधी जी की बुनियादी तालीम की एक सच्ची झलक आज भी यहाँ दिखती है। आश्रम आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा हो, यहाँ इसी बात की कोशिश है। बाद में कुछ लड़कियाँ चरखा कताई/बुनाई में लग जाती हैं, तो कुछ चूल्हा जला कर दोपहर का खाना बनाती हैं। भोजन के बाद बर्तन माँज-धो कर रखने के बाद ही दोपहर दो बजे स्कूल शुरू होता है। कुल तीन घंटे ही स्कूली पढ़ाई होती है। पाँच बजे के बाद फिर शाम के खाने की तैयारी शुरू हो जाती है।

आश्रम में लड़कियाँ वो सब तो करती ही हैं जो शायद वह गाँव में रह कर अपने घर में करतीं। उसके साथ-साथ वह अपने समाज और पर्यावरण के बारे में भी बहुत कुछ सीखती हैं। आश्रम का संचालन मेगसेसे पुरस्कार विजेता राधा भट्ट करती हैं। गढ़वाल के जंगलों को बचाने के लिए शुरू हुआ चिपको आन्दोलन आज जग प्रसिद्ध है। चिपको की तमाम कर्मठ और सचेतन महिला कार्यकर्ता लक्ष्मी आश्रम से ही निकली हैं। विमला बहुगुणा उसकी एक सच्ची मिसाल हैं।

हेलीकाप्टर

यह एक मज़ेदार खिलौना है। इसके लिए एक कागज़ की पट्टी लो। पट्टी की लम्बाई चौड़ाई से चार गुनी होनी चाहिए। पहले चित्र में दिखाए अनुसार पट्टी को एक-एक तिहाई काट कर अन्दर मोड़ो। अब ऊपर से आधे में काट कर पंख को मोड़ो। आखिर में तीन तहों वाली पट्टी को गोल-गोल कर लगभग आधी दूरी तक कस कर मोड़ो। अब मुड़े हिस्से को हवा में उछालो। हेलीकाप्टर गोल-गोल घूमता नीचे आयेगा।

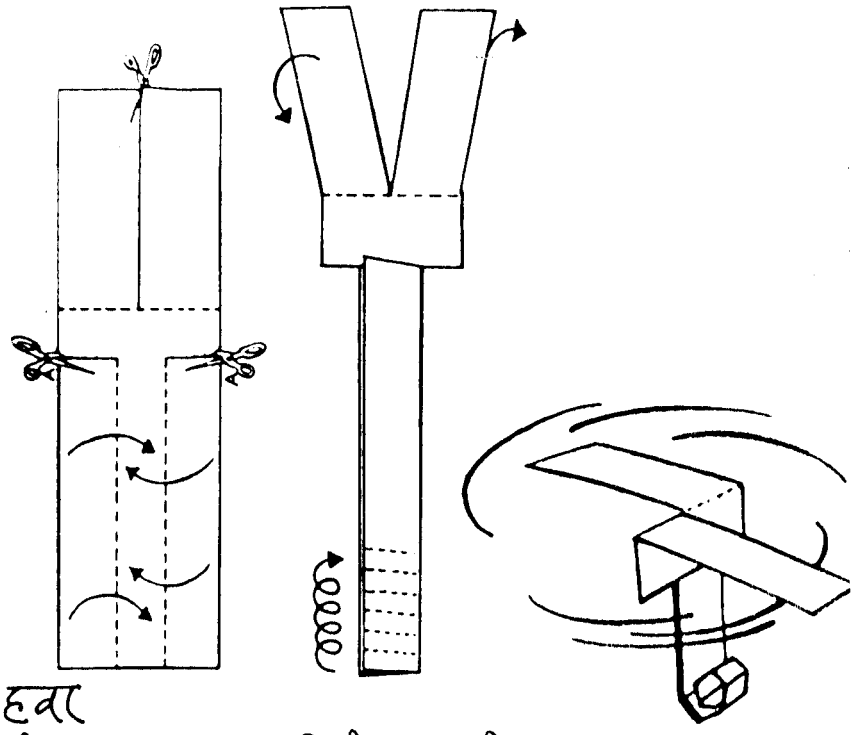

बटन फिरकी

यह खिलौना वैसे तो बहुत पुराना है, पर इसे बनाना सरल है। इसमें एक बड़ा बटन और एक मीटर धागा लगेगा। धागे को बटन के एक छेद में से पिरोकर उसे सामने वाले छेद में से निकालो। अब धागे के सिरों में गाँठ लगा कर एक छल्ला बनाओ। छल्ले को हाथों की दो-दो उंगलियों में पकड़ कर पहले थोड़ा घुमाओ, फिर खींचो और ढील दो। फिरकी खूब मज़े में घूमेगी।

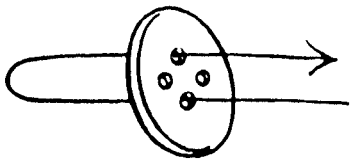

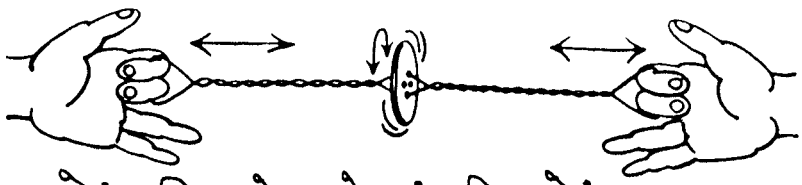

माचापच्ची

इस सवाल में तीन संख्याएँ जिनका जोड़ करना है, तुम्हे भरनी हैं। हाँ, यह तुम्हे बता दें कि यह तीनों संख्याएँ 1 से 9 तक के अंकों का सिर्फ़ एक-एक बार इस्तेमाल करके बनती हैं।

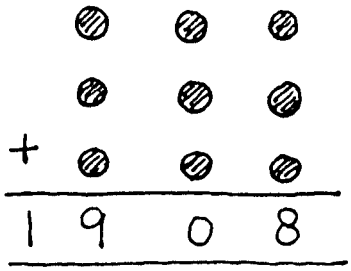

जोड़-घटाना

ब्लैकबोर्ड की एक अच्छी बात यह है कि आप उस पर जोड़-घटाने का पूरा तरीका अच्छी तरह समझा सकते हैं। पहले आप बोर्ड पर तीन पत्तियाँ बनायें
बच्चे उन्हें गिनें। अब अगर आप एक पत्ता और जोड़ेंगे तो
3 + 1 = 4 हो जायेगा 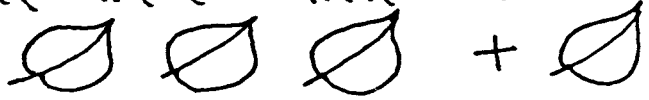

इसी तरह से आप घटा भी सकते हैं। आप सिर्फ एक पत्ती को मिटा कर चार में से एक घटा सकते हैं। गणित की समझ तभी पुख्ता होती है, जब हम सवाल का चित्रमयी चित्र बना पाते हैं। ब्लैकबोर्ड इसमें बहुत सहायक हो सकता है।

अक्षर चित्र

अक्षरों को गौर से देखने पर हमें उनमें अनेकों चित्र छिपे मिलेंगे। ज़रा 'फ' की ही जाँच-पड़ताल करें। पहले इस अक्षर को एक खास तरीके से लिखें। बाद में बिन्दु वाला हिस्सा मिटा दें। इस तरह ऊँट का ढाँचा बन जायेगा।

हम दो अलग-अलग अक्षरों को मिला कर भी चित्र बना सकते हैं। पहले उल्टा 'प्र' लिखें और फिर उसमें 'र्फ' जोड़ दें। इन दोनों से मिल कर घोड़े के चित्र का ढाँचा बन जायेगा।
इसी तरह 'घ' और 'ग' को मिला कर हाथी का सुन्दर चित्र बन सकता है।
देखो, ऊँट, घोड़ा और हाथी इन तीनों पर सवारी करने के बाद अब मशीनी सवारी कर लें। ज़रा 'ज' बनाओ और देखो यह स्कूटर में कैसे बदलता है।
(साभार: खुलते अक्षर खिलते अंक - विष्णु चिंचालकर)

फुलझड़ी

अक्टूबर 1996, अंक 10

गोर्की कालोनी

अंतोन मकारंको रूस के महान शिक्षाविद थे। 1917 की रूसी क्रांति में हजारों लोग मारे गए। हजारों बच्चे बेघर हो गए। उनकी देखभाल करने वाला कोई न था। माँ-बाप का साया उठ जाने के बाद इन अनाथ बच्चों ने आवारागर्दी का रास्ता अपनाया। छोटे-छोटे बच्चे भी जेबकतरी और चक्कूबाज़ी में उस्ताद हो गए। जो ज्यादा तेज थे वह लूटपाट और चोरी करने लगे। जब आतंक बहुत बढ़ गया तो सरकार के आग्रह पर मकारंको ने गोर्की कालोनी नाम का एक सुधारघर शुरू किया। इसमें, पहली बैच के बच्चे अलग-अलग जेलों से आए।

एक चौदह बरस का लड़का कई बार जेल की हवा खा चुका था। उससे जेल के अफसर भी डरते थे। जब मकारंको उसे लेने गए तब जेल के अफसरों ने राहत की साँस ली। मकारंको ने उस लड़के के कंधे पर हाथ रखा। उन्होंने उसे 200 रूबल और एक सामान की सूची दी और कहा "घोड़ा-गाड़ी लो, और यह सामान खरीद कर कालोनी पहुँचो। आगे की बात वहीं करेंगे।"

लड़का अविश्वास से मकारंको को घूरता रहा। सारी दुनिया उसे चोर-लफंगा कह रही थी। गालियाँ दे रही थी। परन्तु मकारंको ने उस पर विश्वास किया। घोड़ा-गाड़ी और इतने सारे रूबल तक उसे सौंप दिए। लड़का घोड़ा-गाड़ी लेकर चला। परन्तु उसके दिल में डर था — "अगर किसी चोर ने रास्ते में यह पैसे मुझ से छीन लिए, तो मैं मकारंको को क्या मुँह दिखाऊंगा। उसने झटपट सामान खरीदा। परन्तु कालोनी पहुँचते-पहुँचते वह पसीने से भीग गया था।

बच्चों के हालात ही उन्हें चोर-उचक्का बनाते हैं। मकारंको का विश्वास था कि सही माहौल में बच्चे सुधरेंगे और सोवियत संघ के अच्छे नागरिक बनेंगे। गोर्की कालोनी में उन्होंने अपने इस सपने को पूरा कर दिखाया।

फिरकी

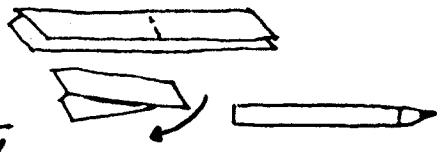

कागज की तीन पट्टियों से बनी यह फिरकी हवा की मदद से घूमती है, जबकि घरों में छत के पंखे बिजली से चलते हैं।

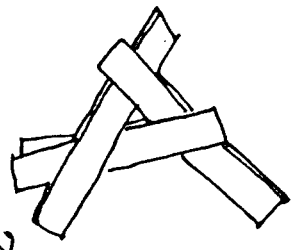

इस तीन पंख वाली फिरकी को बनाना काफी आसान है। किसी पुरानी कापी या पत्रिका में से 20 सें.मी. लम्बी और 2 सें.मी. चौड़ी, तीन पट्टियाँ काट लो। पट्टियों को बीच से मोड़ लो।

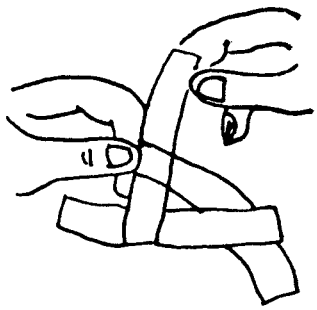

अब चित्र में दिखाए अनुसार पट्टियों को आपस में फंसाओ। तीनों पट्टियों के ठीक से फंसने के बाद बीच में एक कटोरी जैसा गड्ढा बन जायेगा।

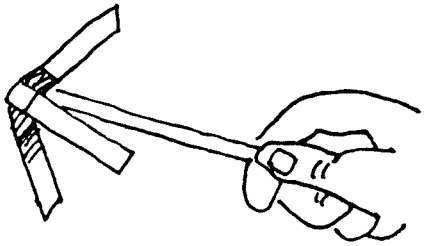

इस फिरकी को अब पेंसिल की मोटी नोक पर टिकाओ और दौड़ो।
फिरकी तेज़ी से गोल-गोल घूमेगी।

नैन मटक्को

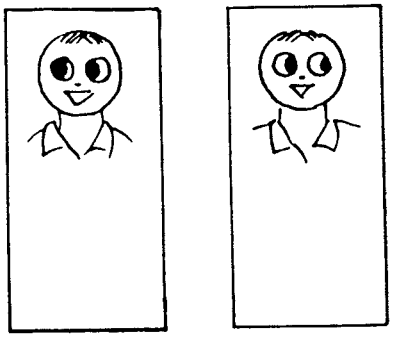

एक कागज की पट्टी को बीच में मोड़ कर दोहरा करो। अब बालपेन को थोड़ा दबा कर ऊपर की पट्टी पर एक चेहरा बनाओ। निचली पट्टी पर भी तुम्हे चेहरे का निशान दिखाई देगा। इसी निशान पर बालपेन से दूसरा चेहरा बनाओ। दोनो कागजों पर चेहरे एकदम ऊपर-नीचे होंगे।

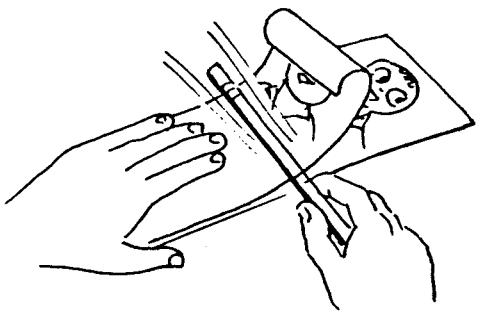

दोनों चेहरों में केवल एक अंतर होगा। अगर ऊपरी चेहरे पर पुतलियाँ बायीं ओर होंगी, तो निचले पर दायीं ओर होंगी।
ऊपर की पट्टी को थोड़ा गोल मोड़ लो। अब पेंसिल से ऊपरी पट्टी को तेज़ी से आगे-पीछे करो। इससे तुम्हे ऊपर-नीचे की दोनों तस्वीरें दिखेंगी। तुम्हे लड़का अपनी आँखे बायें-दायें मटकाता दिखेगा।

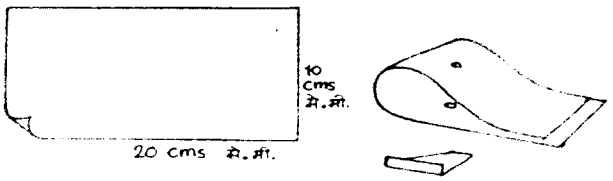

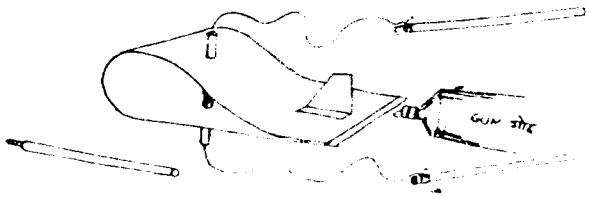

हवाईजहाज़ का पंख

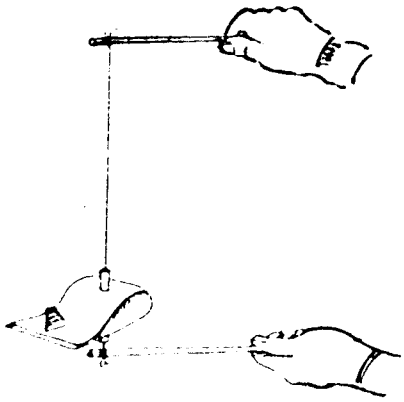

हवाईजहाज़ कैसे उड़ता है? उसके पंख को ऊपर उठने का बल कैसे मिलता है? इसे समझने के लिए एक हवाईजहाज़ का पंख बनायें। एक आयताकार कागज लो और उसे दोहरा मोड़ कर दोनों छोटे सिरे चिपका दो। पंख का निचला हिस्सा सपाट और ऊपर का हिस्सा फूला रहे। पंख का मोटा सिरा 'शुरूवात का सिरा' और चिपका सिरा 'अंत का सिरा' होगा।

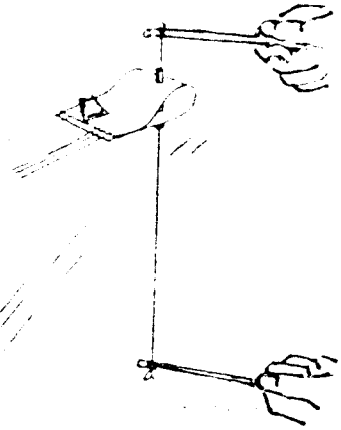

फूले घेर से 3 सें.मी. दूरी पर पंख के दोनो हिस्सों में एक छेद करो। इस छेद में खाली बालपेन की रीफिल का टुकड़ा घुसा कर चिपका दो। अंत के सिरे के बीचो बीच एक खड़े कागज की पूंछ चिपका दो। पूंछ पंख को डगमगाने से रोकेगी। रीफिल में से एक पतला धागा पिरो दो। धागे के दोनों सिरों में एक-एक डंडी बाँध दो।

डंडियों को दोनों हाथों में ऐसे पकड़ो कि धागा तन जाए। डंडियों को हवा में तेजी से लेकर दौड़ने से पंख धागे के ऊपर उठेगा। पंख का ऊपरी हिस्सा निचले सपाट हिस्से से लम्बा है। इसलिए हवा को ऊपरी हिस्से पर अधिक रफ़्तार से बहना पड़ता है। इससे ऊपरी हिस्से पर एक कम दबाव का क्षेत्र बनता है। इससे ही पंख को 'उठान' मिलती है।

साथापच्ची : दूधवाला दो लीटर का माप लाना भूल गया। उसके पास दो ही माप थे - एक तीन लीटर का और दूसरा चार लीटर का। बिना किसी और बर्तन के वह दो लीटर दूध कैसे नापेगा?

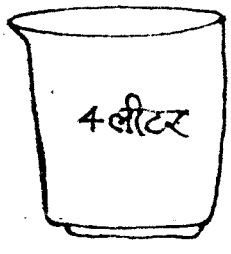

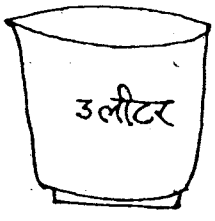

नन्हा राजकुमार - सैंतेक्ज़ूपेरी

किताब का नाम और उसके चित्र देख कर यह बच्चों की एक परीकथा जैसी लगती है। शायद है भी। परन्तु दुनिया के करोड़ो वयस्क लोगों ने भी इस सदाबहार पुस्तक का आनन्द लिया है। और क्यों नहीं? आखिर सारे वयस्क भी कभी बच्चे ही तो थे। पहली बार मैंने यह पुस्तक अपने कालेज के दिनों में पढ़ी। एक विलक्षण टीचर ने इसे अंग्रेजी की पाठ्य-पुस्तक बना दिया था। इस पुस्तक की अमिट छाप आज भी मेरे दिल में है। जब कभी मैं बहुत उदास होता हूँ, तो इस पुस्तक को एक बार दुबारा पढ़ जाता हूँ।

इसका लेखक दूसरे महायुद्ध का एक कुशल पायलेट था। एक उड़ान के दौरान उसका हवाईजहाज़ खराब हो जाता है और उसे सहारा रेगिस्तान में उतरना पड़ता है। लेखक भूख और प्यास से व्याकुल है। यहीं उसकी मुलाकात इस नन्हे राजकुमार से होती है। राजकुमार एक छोटे से उपग्रह बी 612 में रहता है। वहाँ से वह दिन में 44 दफा सूर्योदय और सूर्यास्त देख सकता है। एक दिन वह दुनिया की सैर को निकल पड़ता है। पुस्तक में उसके मार्मिक अनुभवों का सुन्दर वर्णन है। यह पुस्तक दुनिया की पचासों भाषाओं में छप चुकी है। हिन्दी का अनुवाद मूल फ्रेंच से किया गया है। इस पुस्तक को शुरू करने के बाद आप इसे खत्म करके ही छोड़ेंगे। यह दुनिया की एक महान अमर कृति है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर - 4

फुलझड़ी

नवम्बर 1996 अंक 11

उछलता सिक्का

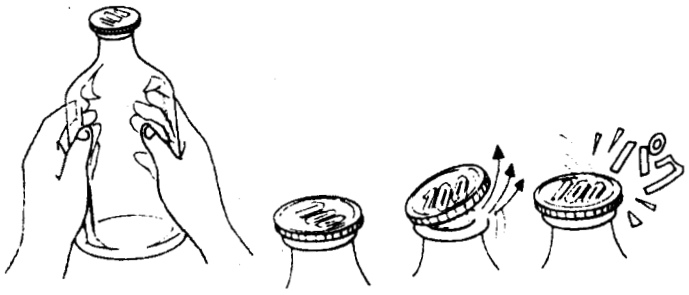

हवा गरम करने पर फैलती है। इसे एक सरल प्रयोग करके देखा जा सकता है। एक काँच की बड़ी बोतल लो। उसके मुँह को पानी लगाकर गीला करो। फिर मुँह को एक रुपये के सिक्के से पूरी तरह ढंक दो। पानी की तह और सिक्के के कारण बोतल का मुँह एक दम सील बंद हो जायेगा। अब अपने दोनों हाथों से बोतल को पकड़ो। थोड़ी देर तो कुछ नहीं होगा, परन्तु कुछ देर बाद सिक्का एक ओर से उठेगा और 'पिट्' की आवाज करके झट से बैठ जायेगा।

हाथ की गरमी से बोतल के अन्दर की हवा गरम होकर फैलती है। बोतल के अन्दर से बाहर निकलती हवा सिक्के को थोड़ा सा उछालती है।

खरगोश

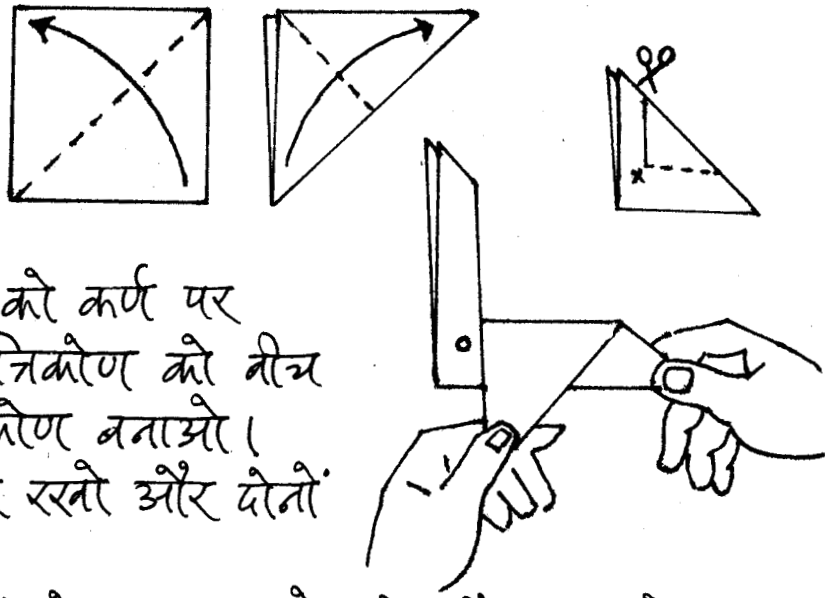

कागज के बने खिलौनों में शायद यह सबसे सरल और मज़ेदार खिलौना है। एक सादे कागज का चौकोर लो। चौकोर को कर्ण पर मोड़ कर त्रिकोण बनाओ। इस त्रिकोण को बीच में दुबारा मोड़ कर एक छोटा त्रिकोण बनाओ। छोटे त्रिकोण का खुला सिरा ऊपर रखो और दोनों तहों को × निशान तक काटो।

अब कटे हिस्सों को दायें-बायें मोड़ कर खरगोश के पैर बनाओ। खरगोश के पैरों को बायें हाथ में पकड़ कर दायें हाथ से दुम को आगे-पीछे हिलाओ। ऐसा करने से खरगोश बड़े मजे में अपने कान हिलायेगा। तुम चाहो तो खरगोश को रंग कर और सुंदर बना सकते हो।

एक अनोखा स्कूल

जूलिया वेबर गौईन अमरीका के एक दूर-दराज़ गाँव के स्कूल में पढ़ाती थीं। आज से साठ साल पहले वहाँ हालत काफी खराब थी। स्कूल में सिर्फ एक कमरा था। पैसों की बेहद कमी थी। खेलने और सीखने का अधिकतर सामान या तो बच्चों ने खुद बनाया था या फिर कहीं से उधार लिया था। मिस वेबर इस कमी और अभाव से फिर भी घबरायीं नहीं। पहली से आठवीं तक के स्कूल में वह एकमात्र टीचर थीं। कुछ बच्चे न केवल पढ़ाई में कमज़ोर थे पर मानसिक रूप से भी पिछड़े हुए थे। परन्तु मिस वेबर के लिए प्रत्येक बच्चा मायने रखता था। इसीलिए सभी बच्चे सीखते, आगे बढ़ते और प्रगति करते।

क्योंकि सरकार छोटे स्कूलों को शैक्षणिक सामग्री, विशेषज्ञ टीचर आदि नहीं दे पाती, इसीलिए वह सभी स्कूलों को कारखानों जैसा बड़ा और मंहगा बनाती है। इस स्कूल का अनुभव एकदम अलग था। एक ही महीने में इन गरीब बच्चों ने स्कूल का सारा माहौल ही बदल डाला। उन्होंने सस्ती स्थानीय चीजों और फेंकी हुई वस्तुओं से तमाम विज्ञान के प्रयोग रचे। कई उपकरण वह पास के हाई-स्कूल से माँग कर ले आए। उन्हे जब किसी चीज़ की जरूरत पड़ती वह उसे किसी संस्था या व्यक्ति से उधार ले आते। गाँव के बढ़ई की मदद से उन्होंने एक लकड़ी का घर और तमाम खेल का सामान बनाया।

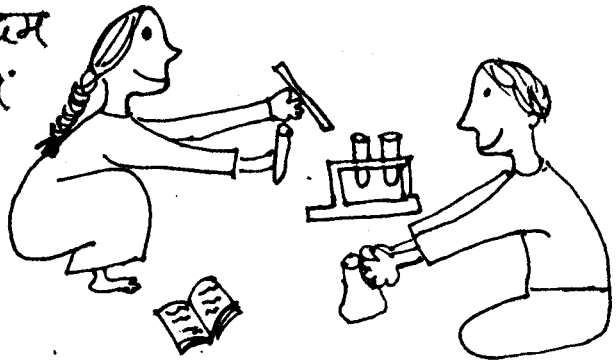

मिस वेबर की प्रेरणा से बच्चों ने डिस्ट्रिक्ट लाइब्रेरी से एक वर्ष में 700 पुस्तकें उधार लेकर पढ़ीं। यानि कि हरेक बालक ने 20 से अधिक पुस्तकें पढ़ीं। जबकि बड़े-बड़े आलीशान स्कूलों के पुस्तकालयों में किताबें अलमारियों में कैद सिसकती रहती हैं।

शिक्षा में हम हमेशा पैसे की कमी का रोना रोते हैं। पर कमी पैसे की नहीं हमारी दृष्टि की है। हम अर्थहीन व्यवस्था और

उबाऊ पाठ्य-पुस्तकों पर पैसा बहाते हैं। बच्चे तभी अच्छी तरह सीखते हैं जब उनका स्कूल एक बड़े समाज का अंग होता है। तब उनकी पढ़ाई स्कूल के बाहर के समुदाय को छूती है और उस पर असर करती है।

एक अच्छे टीचर को कई कुशलतायें आनी चाहिए। मिस वेबर की खासियत यह थी कि वह बहुत सारे हुनर जानती थी। वह हार्मोनियम बजातीं, लोक नृत्य करतीं, गाना गातीं, कठपुतलियाँ बनातीं, अंकों के खेल खेलतीं, कागज की फिरकी बनाती, चित्रकारी करतीं और कहानियाँ सुनातीं। वह लगभग सभी पेड़ों, पक्षियों और पत्थरों को पहचान सकती थीं। साथ में वह बच्चों को खाना पकाना, कपड़ा बुनना, मिट्टी के खिलौने आदि बनाना भी सिखाती। उन्हें कई चीजें नहीं आती थीं। पर वह बच्चों को उन्हें भी करने को प्रेरित करतीं। वह खुद बच्चों के साथ मिलकर चीजें बनातीं, गलतियाँ करतीं और उनसे सीखतीं।

दुर्भाग्य इस बात का है कि अधिकतर टीचर केवल शब्दों का प्रयोग जानते हैं। वह केवल पढ़ सकते हैं। उसके अलावा उनकी कुशलतायें बहुत सीमित होती हैं। मिस वेबर के बच्चे स्कूल की चारदीवारी के अन्दर कब जाते थे। उन्हें सबसे अधिक मज़ा पास के जंगल में पिकनिक मनाने या तालाब के किनारे खेलने में आता था। इसीलिए अक्सर बच्चों की क्लास स्कूल के बाहर ही होती थी। स्कूल में साधनों का अभाव अवश्य था, फिर भी बच्चे अपने प्रश्नों का जवाब कहीं न कहीं से खोज ही निकालते थे। मिस वेबर किसी केंद्रीय पाठ्यक्रम से नहीं बंधी थीं। वह बच्चों की रुचियों और रुझानों के अनुरूप ही पाठ्यक्रम को ढाल लेतीं। इस तरह वह हर साल वही बोझिल और उबाऊ पाठ्यक्रम पढ़ाने से बच जातीं।

स्रोत : माई कंट्री स्कूल डायरी — जूलिया वेबर गौडन

पत्तियों का चिड़ियाघर

प्रकृति की किताब चित्रों से भरी पड़ी है। हमें उसे संवेदना और प्यार से केवल देखने भर की देरी है। पेड़ों के पत्तों को ही ज़रा गौर से देखें। हम पायेंगे कि हरेक पत्ते का अपना एक आकार होता है। और अलग-अलग पेड़ों के पत्ते देखने में अलग-अलग होते हैं। यह जरूरी है कि हम पत्तों को पेड़ों से तोड़े नहीं। हाँ, नीचे गिरे पत्तों को उठा लें और उन्हें अखबार के बीच दबा कर रख दें। कुछ समय बाद हमारे पास तमाम तरह के पत्ते इकट्ठे हो जायेंगे। कुछ लम्बे होंगे तो कुछ छोटे। कुछ नुकीले होंगे तो कुछ चौड़े। इन पत्तों को अलग-अलग तरह से सजाकर तरह-तरह के जानवर बनाये जा सकते हैं। यहाँ पर नमूने के लिए केवल तीन जानवर और पक्षी ही दिखाए गए हैं। परन्तु इनसे तरह-तरह के और नमूने भी बनाना सम्भव है।

एक बार अगर बच्चे पत्तों के खेल में रम गए तो वह अपनी कल्पना से स्वयं नये-नये डिजायन और आकृतियाँ बनायेंगे। पत्तों की किताब बहुत सस्ती और रोचक है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

दिसम्बर 1996, अंक 12

पुस्तक परिक्रमा

वैसे तो केरल एक छोटा राज्य है। परन्तु साक्षरता के मामले में सबसे आगे है। इसके कई कारण हैं। आज से पचास वर्ष पूर्व वहाँ एक पुस्तकालय आन्दोलन चला था। गाँव-गाँव में पुस्तकालय खुले थे। इन पुस्तकालयों ने शिक्षा के फैलने में बहुत मदद दी।

हिन्दी भाषी राज्यों में इस तरह के आन्दोलन नहीं हुए। कुछ स्कूलों में पुस्तकालय हैं अवश्य, परन्तु वहाँ भी पुस्तकें अलमारियों में कैद रहती हैं। पहले सोवियत पुस्तक प्रदर्शनी छोटे-छोटे शहरों में घूमा करती थी। वह सुंदर और सस्ती पुस्तकें बच्चों को उपलब्ध कराती थी। परन्तु रूस के टूटने के बाद वह सब बंद हो गया है। लोगों में पढ़ने की, जानने की गहरी इच्छा है। इसी ललक को पूरा करने के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट और लोक जुम्बिश ने मिल कर राजस्थान के 25 विकास खंडों में पुस्तक परिक्रमा शुरू की है। इसके तहत एक बड़े स्कूल में छः दिन के लिए एक स्थायी पुस्तक प्रदर्शनी लगती है। उसके साथ-साथ एक सचल प्रदर्शनी रोज़ दो गाँवों में भी जाती है। सैकड़ों लोग किताबें पढ़ते हैं और खरीदते हैं। शिक्षकों के साथ चर्चा सत्र होता है और पाठक मंच भी बनाये जाते हैं।

यह पूरा महिना एक ऐतिहासिक महत्व का है। यह पुस्तक परिक्रमा राजस्थान के दूर-दराज़ के इलाकों में छः महीने तक लगातार चलती रहेगी। शिक्षा के प्रसार में अच्छी पुस्तकों का एक अहम रोल है। जैसे बीज को पोषण के लिए मिट्टी चाहिए, वैसे ही बच्चों को मानसिक पोषण के लिए पुस्तकें चाहिए। जब गाँव-गाँव, स्कूल-स्कूल में पुस्तकालय खुलेंगे और बच्चे पुस्तकें पढ़ेंगे तभी शिक्षा के प्रसार के लिए उपजाऊ मिट्टी तैयार होगी। तभी फूल खिलेंगे और बहार आयेगी। क्या आप इस यज्ञ में हाथ नहीं बटायेंगे ?

रेलगाड़ी

हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

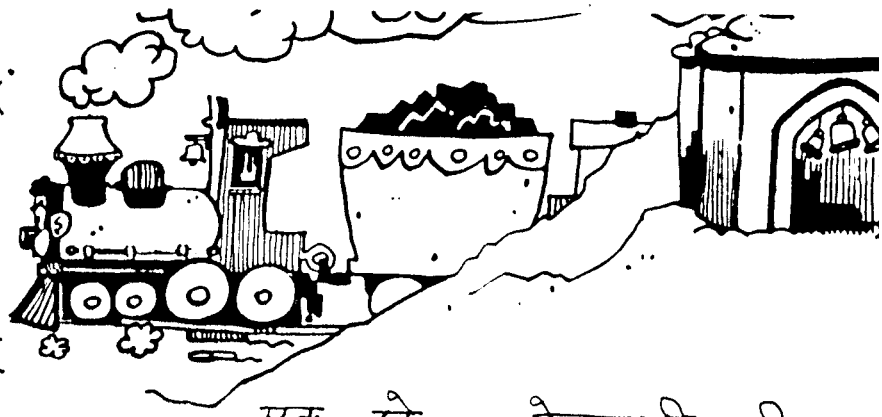

आओ बच्चों रेल दिखायें
धुक-धुक करती रेल चलायें
सीटी देकर सीट पे बैठो
एक दूजे की पीठ पे बैठो
आगे-पीछे, पीछे-आगे
लाइन से लेकिन कोई न भागे
सारे सीधी लाइन में चलना
आँखे दोनों नीची रखना
बंद आँखो से देखा जाए
आँख खुले तो कुछ न पाए
आओ बच्चों रेल चलायें

सुनो रे बच्चों, टिकट कटाओ
तुम लोग नहीं आओगे तो
रेलगाड़ी छूट जायेगी
आओ सब लाइन से खड़े हो जाओ
मुन्नी - तुम हो इंजन
छब्बू - तुम हो कोयले का डिब्बा
चुन्नू-मुन्नू, लीला-शीला
मोहन-सोहन, जाधव-माधव
सब पैसेन्जर, सब पैसेन्जर

एक, दो ... रेलगाड़ी, दो...
धुक-धुक, धुक-धुक, धुक-धुक, धुक-धु
बीच वाले स्टेशन बोले
रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रु
तड़क-भड़क, लोहे की सड़क
तड़क-भड़क, लोहे की सड़क
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ
यहाँ से वहाँ, वहाँ से यहाँ
धुक-धुक.....
फुलाए घाती पार कर जाती
बालू रेत, आलू के खेत
बाजरा धान, बुड्ढा किसान
हरा मैदान, मंदिर मकान, चाय की दुका
कुल्फों की डंडी, टीले पे झंडी
पानी का कुंड, पंछी का झुंड

झोपड़ी झाड़ी, खेती बाड़ी
बादल धुआँ, मीठ कुँआ
कुँऐं के पीछे, बाग-बगीचे
धोबी का घाट, मंगल की हाट
गाँव का मेला, भीड़ झमेला
टूटी दीवार, टट्टू सवार
रेलगाड़ी... पी....

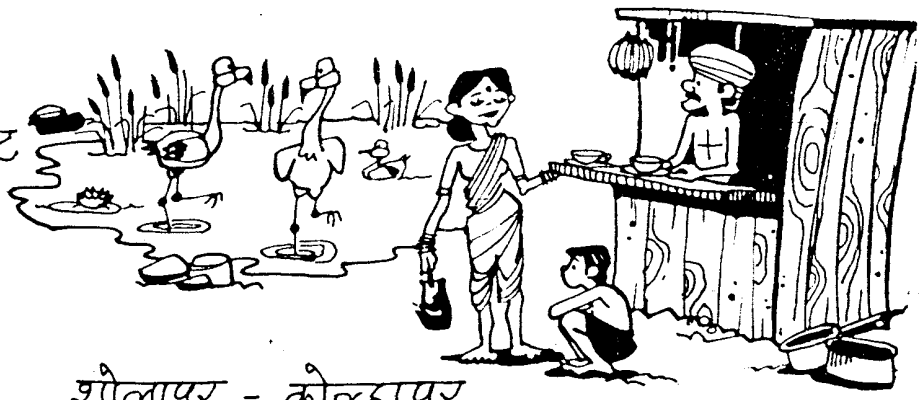

धरमपुर - करमपुर
करमपुर - धरमपुर
मांडवा - खांडवा
खांडवा - मांडवा
रायपुर - जयपुर
जयपुर - रायपुर
तलेगाँव - मलेगाँव
मलेगाँव - तलेगाँव
वेल्लोर - नेल्लोर
नेल्लोर - वेल्लोर

शोलापुर - कोल्हापुर
कोल्हापुर - शोलापुर
उत्कल - डिंडीगल
डिंडीगल - उत्कल
कोरेगाँव - गोरेगाँव
गोरेगाँव - कोरेगाँव
मेमदाबाद - अहमदाबाद
अहमदाबाद - मेमदाबाद
बीच वाले स्टेशन वाले
रुक-रुक, रुक-रुक...

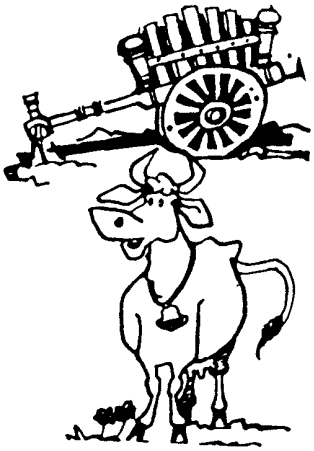

लूप ग्लाइडर

ग्लाइडर बिना इंजन का हवाईजहाज़ होता है। लूप ग्लाइडर बनाना आसान है।

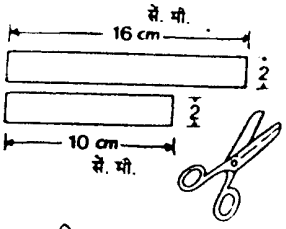

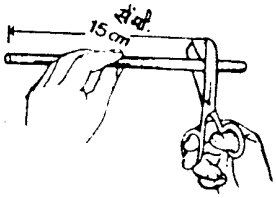

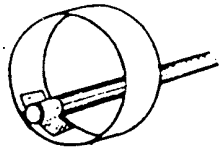

मज़बूत कागज़ की दो पट्टियाँ काटो - एक लम्बी, एक छोटी। पट्टियों को मोड़ कर चिपका कर चक्ले बनाओ। अब 15 सें.मी. लम्बी सिरकी के दोनों सिरों पर एक-एक चक्ला चिपका दो। दोनों चक्ले एक ही सीध में हों इस बात का ध्यान रखना। ग्लाइडर को उड़ाने के लिए उसका छोटा चक्ला आगे करके उसे हल्के से आगे को फेंको। लूप ग्लाइडर हवा को चीरता हुआ आगे जायेगा, और फिर हल्के-हल्के नीचे आयेगा। बंद कमरे में ग्लाइडर सबसे अच्छी तरह उड़ेगा।

मानव की कहानी - राहुल सांकृत्यायन

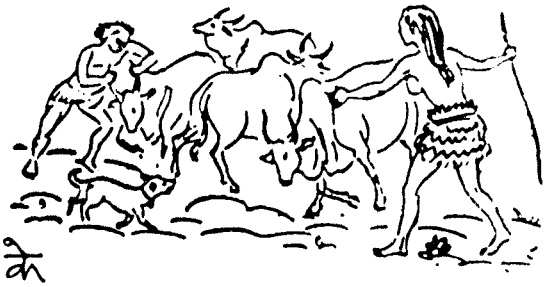

हमारे पुरखों - पूर्वजों का जीवन कैसा था? वह क्या खाते थे? वह कहाँ रहते थे? वह किस तरह के औज़ार बनाते थे? ऐसे सवाल बच्चे अक्सर करते हैं। इस पुस्तक में मनुष्य जाति के विकास की कहानी को बहुत रोचक रूप में लिखा गया है। इसे हिन्दी जगत के महान बुद्धिजीवी पंडित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है।

हजारों - लाखों साल पहले लोग गुफाओं में रहते थे। वह जंगल के कंद - मूल - फल खाते या कच्चा माँस खाते। मनुष्य एक मात्र ऐसा जीव है जो औज़ार बनाता है। लाखों साल तक लोग पत्थर के औज़ार बनाते। परन्तु उनकी धार जल्दी चली जाती।

एक दिन जंगल में आग लग गई। आग में कई जानवर जल कर मर गए। लोगों को पका माँस पसन्द आया। उसे चबाना आसान था। अब मनुष्य आग को गुफा में जलाए रखते। वह अब जलती हुई लकड़ी से बड़े - बड़े जानवरों को भी डरा सकते थे। अधिकतर समय लोग नंगे ही रहते। जाड़ों में वह अपने तन पर पेड़ों की छाल या जानवरों की खाल लपेट लेते। बारिश से बचने के लिए वह गुफा में छिप जाते।

धीरे - धीरे लोग जानवरों को पालने लगे। कुत्तों को पालने से उन्हें शिकार करने में मदद मिली। गाय पालन से उन्हें दूध मिला। लोग अब अनाज बोने लगे थे। वह अगर एक बीज बोते तो उन्हें खाने को सौ बीज मिल जाते। कभी शिकार न मिलता तो किसी पालतू जानवर को मार कर खा लेते।

पत्थर के बाद ताँबे का युग आया। ताँबे के औज़ार ज्यादा धारदार और टिकाऊ होते। लोहे के औज़ारों के बाद सभ्यता का विकास तेज़ हो गया। मनुष्य के विकास की कहानी रोचक भी है और रोमांचक भी है। इस पुस्तक को आप खुद पढ़ें और बच्चों को पढ़वायें।

लन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
शक : लोक जुम्बिश परिषद, बी - 10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी अंक 13, जनवरी 1997

मिस्टर डाक्टर

जानुज़ कोचार्क का जन्म पोलेंड के एक गरीब यहूदी परिवार में हुआ था। उनके घर में खाने तक को न था। अथक मेहनत और लगन से पढ़ कर कोचार्क डाक्टर बने। अपने बचपन की गरीबी को वह कभी भूले नहीं। उन्होंने गरीब बच्चों के लिए एक अनाथालय खोला। करीब सौ अनाथ बच्चे इसमें रहते। कोचार्क बच्चों के इलाज के विशेषज्ञ, एक प्रसिद्ध डाक्टर थे। इसीलिए सभी बच्चे उन्हे प्यार से मिस्टर डाक्टर कह कर बुलाते। मिस्टर डाक्टर भी बच्चों को अथाह प्रेम करते। वह बच्चों के पिता, टीचर, मित्र सभी कुछ तो थे। कोचार्क ने कई पुस्तकें लिखीं जैसे 'एक तितली की आत्मकथा' और 'मैं कब छोटा बनूंगा'। पुस्तकों के शीर्षक कोचार्क के संवेदनशील मन की एक अच्छी झलक हैं।

दूसरे महायुद्ध में हिटलर ने लाखों यहूदियों को गैस की भट्टी में झोंक दिया। एक दिन हिटलर की बर्बर पुलिस अनाथालय में भी आ धमकी। सभी बच्चों से एक कतार में गैस चेम्बर की ओर बढ़ने को कहा गया। पुलिस ने कोचार्क से खिसक लेने का आग्रह किया। परन्तु मिस्टर डाक्टर ने बच्चों का साथ न छोड़ा। बच्चे मिस्टर डाक्टर के साथ-साथ गाना गाते आगे बढ़े। बच्चों के दिल में कोई डर नहीं था। उनके चेहरे पर कोई शिकन न थी। उनके प्रिय डाक्टर जो उनके साथ थे। जब गैस की भट्टी आई तो कोचार्क उसमें सबसे पहले घुसे। बच्चे उनके पीछे-पीछे गए।

कोचार्क जैसे महान शिक्षक ने अंतिम क्षणों में भी बच्चों का साथ न छोड़ा। उन्होंने आखिरी दम तक बच्चों के आँसू पोंछे और उन्हे सहारा दिया। कोचार्क का एक नारा 'बच्चे दुनिया के सबसे पुराने सर्वहारा हैं' आज भी हमारे कानों में गूंजता है।

पंडिताइन की सूझ

बहुत समय पहले की बात है। किसी गाँव में एक पंडित जी रहते थे। वे बहुत अंधविश्वासी थे। सदैव छुआ-छूत और पाप-पुण्य की बातों में लगे रहते थे। उनकी पत्नी सरल स्वभाव की थीं। वह सबको बराबर मानती थीं। पंडित जी को भी समझाने की कोशिश करतीं। परन्तु पंडितजी उनकी बात न सुनते, बल्कि उन्हें डाँट देते थे। एक दिन पंडितजी ने पंडिताइन से पानी माँगा। घर में पानी नहीं था। पंडिताइन पड़ोस से पानी माँग कर लायीं। पंडित जी को बहुत प्यास लगी थी। वह गटागट पानी पी गए। फिर पूछा 'पानी कहाँ से लाई थी?'

'रामू कुम्हार के यहाँ से' पंडिताइन बोलीं।

सुनते ही पंडितजी आग-बबूला हो गए। पत्नी को खरी-खोटी सुनाई 'तुमने मेरा धर्म भ्रष्ट कर दिया। मुझे किसी दीन का न रखा।'

पंडिताइन बेचारी कुछ न बोलीं। पंडित जी की हरकतों से वह तंग आ चुकी थीं। उन्हें एक बढ़िया उपाय सूझा। शाम को जब पंडित जी ने खाना माँगा, तो पंडिताइन ने सूखी रोटी लाकर रख दी। पंडित जी चिल्लाए 'सब्जी क्यों नहीं पकाई?'

पंडिताइन बोली - 'फेंक दी।'

पंडित जी ने पूछा - 'फेंक दी। आखिर क्यों?'

पंडिताइन ने मुस्कराते हुए कहा - 'सब्जी कुमी के घर से आई थी। मैंने सोचा, आप खायेंगे नहीं। इसीलिए फेंक दी।' पंडित जी खिसिया कर रह गए। दूसरे दिन पंडितजी ने पंडिताइन से पहनने के लिए कपड़े माँगे तो पंडिताइन ने कहा 'मैंने तो कपड़ों को जला दिया।'

'क्यों?' पंडित जी गुस्से से तिलमिला उठे।

'अरे! धोबी के धुले कपड़े आप कैसे पहनते। इसीलिए मैंने जला दिए।' पंडिताइन की भी आवाज ऊँची हो गई।

पंडित जी परेशान हो गए। उन्हें लगा कि पंडिताइन सनक गई हैं। सब नष्ट कर चुकी। घर ही बचा है। उसे भी छुआछूत के चक्कर में जला न दे। क्योंकि घर भी तो .... । पंडित जी ने तब से छुआ-छूत छोड़ दी।

अंगूठा छाप

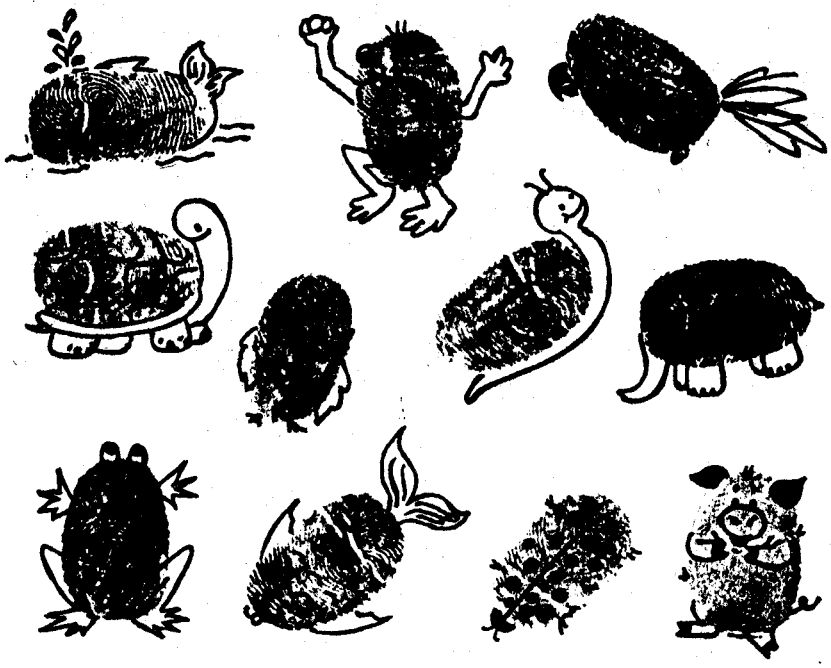

अंगूठे के अन्दर
छिपा एक बन्दर
उसका एक साथी
मोटा एक हाथी।

अंगूठे में सोता
हरा एक तोता
उससे खेले खेल
लम्बी एक व्हेल।

चित्र साभार कल्पवृक्ष

अंगूठे में ढूंढो
मिलेगा एक उल्लू
उसका मित्र कछुआ
नाम जिसका लल्लू।

अंगूठे में देखो
मिलेगा एक घोंघा
उसका दोस्त मेंढक
पास उसके होगा।

कौन सा डिब्बा बड़ा ?

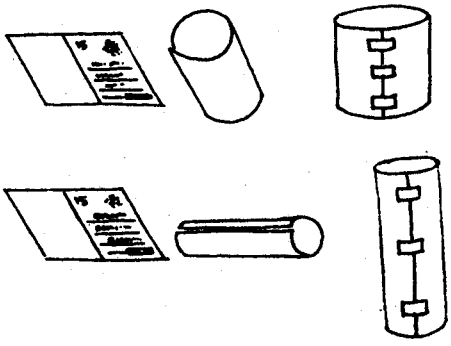

दो पुराने पोस्टकार्ड लो। उन्हें गोल लपेट कर बेलनाकार डिब्बे बनाओ। पर एक डिब्बे को चौड़ाई में मोड़ना और दूसरे को लम्बाई में। डिब्बों के जोड़ को गोंद लगे कागज से चिपका दो। एक डिब्बा मोटा और छोटा बनेगा, तो दूसरा लम्बा और सकरा होगा।

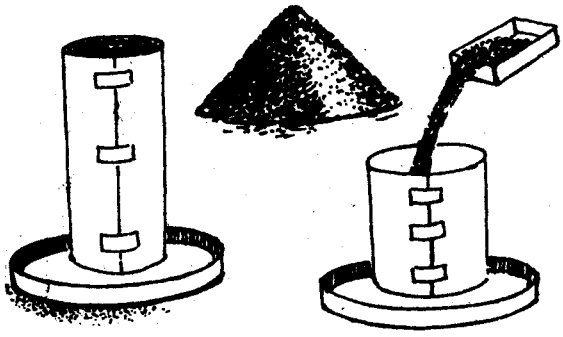

डिब्बों को दो ढक्कनो में खड़ा करो। अब सोच कर बताओ किस डिब्बे में अधिक रेत आयेगा? अब डिब्बों में रेत भर कर देखो। किस डिब्बे में ज्यादा रेत आई? क्यों? दोनों डिब्बों का सतही क्षेत्रफल तो एक बराबर है, फिर दोनों की क्षमता में इतना अंतर क्यों है?

महागिरी

लेखिका : हेमलता (सी. बी. टी.)

दिल को छू लेने वाली यह सुन्दर कहानी, महागिरी नाम के हाथी की है। सारा गाँव मेले की तैयारी में लगा हुआ था। मेले के लिए मंदिर के सामने झंडा लगना था। झंडा लगाने के लिए पेड़ का तना चाहिए था। गाँव वालों ने जंगल में एक ऊँचा सागौन का पेड़ काटा। तना बहुत लम्बा और भारी था। गाँव वाले उसे उठा नहीं सकते थे। इसलिए महागिरी को तना उठा कर लाना पड़ा। तने को गाड़ने के लिए जमीन में एक गड्ढा खोदा गया। महावत ने महागिरी को तने को गड्ढे में डालने का आदेश दिया। महागिरी गड्ढे के पास तक आया और वहाँ आकर रुक गया। महावत ने डंडे से हाथी को बहुत मारा। लेकिन महागिरी टस से मस न हुआ। लोग महावत को बुरा-भला कहने लगे। अंत में महावत को बहुत गुस्सा आया। उसने चाकू से महागिरी की गर्दन में कई बार वार किया। महागिरी दर्द से कराह उठा। उसने गुस्से में आकर तने को एक ओर फेंक दिया। महावत को दूसरी ओर गिरा दिया। लोगों ने समझा हाथी पागल हो गया है। वह डर कर भागे। महागिरी अकेला रह गया। उसने गड्ढे के पास घुटने टेके। फिर अपनी लम्बी सूंढ को गड्ढे में डाला और उसमें से एक बिल्ली को निकाला। बिल्ली गड्ढे में छिपी थी। दूर खड़े लोग यह नज़ारा देख रहे थे। अब उन्हें असलियत समझ में आई। वह महागिरी के पास दौड़े-दौड़े आये। अब महागिरी ने तने को गड्ढे में डाल दिया। लोगों ने प्यार से महागिरी को थपथपाया और उसे खूब मिठाइयाँ खिलायीं। उस दिन से महागिरी लोगों का लाडला बन गया। आज़ाद भारत के पचास सालों में शायद इतनी सुन्दर बाल पुस्तक कभी नहीं छपी। पुलक बिस्वास ने एकदम अनूठे चित्र बनाए हैं।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

फरवरी 1997 अंक 14

कबाड़ से जुगाड़

हम चीजों को इस्तेमाल करके फेंक देते हैं। पूरी उपभोक्ता संस्कृति अधिक खरीदो और अधिक फेंको के सिद्धांत पर टिकी है। इससे एक ओर कचरे के ढेर बढ़ रहे हैं तो दूसरी ओर पृथ्वी के सीमित साधनों का दुरुपयोग हो रहा है। चीजों को देखने का एक और भी नज़रिया हो सकता है। इस दृष्टिकोण के हिसाब से हरेक चीज़ की कई जिन्दगी होती हैं। एक जीवन समाप्त होने पर वही वस्तु नये रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकती है। इस कहानी में पर्यावरण के प्रति एक गहरी संवेदना की झलक है।

भगवान बुद्ध से जब एक भिक्षु ने नये अंगरखे की माँग की तो बुद्ध ने पूछा 'तुमने पुराने अंगरखे का क्या किया?'

'भगवन, वह तो बहुत पुराना हो गया था। मैंने उसे बिस्तर पर चादर जैसे बिछा दिया है' भिक्षु ने उत्तर दिया।

'फिर तुमने पहली वाली चादर का क्या किया?' बुद्ध ने पूछा।

'वह चादर तो घिस कर इतनी कट गई थी कि मैंने उससे तकिये का गिलाफ बना लिया है' भिक्षु ने कहा।

'फिर तुमने पहले वाले गिलाफ का क्या किया?' बुद्ध ने पूछा।

'वह पुराना गिलाफ तो इतना जीर्ण-शीर्ण हो गया था कि मैंने उसका पायदान ही बनाना ठीक समझा' भिक्षु ने कहा।

मामले की गहराई से तहकीकात करते हुए बुद्ध ने आखिरी बार पूछा 'अच्छा यह तो बताओ कि पुराने पायदान का तुमने क्या किया?'

भिक्षु ने नम्रता से उत्तर दिया 'भगवन पुराना पायदान तो फट कर एकदम तार-तार हो गया था। इसलिए मैंने उसके रेशों को बट कर बाती बनाई और उसे तेल में डुबो कर दिए में जला दिया।'

भगवान बुद्ध भिक्षु से खुश हुए। उन्होंने उसे नया अंगरखा दे दिया।

रोचक रंगाई

किसी भी बेलनाकार डिब्बे, बोतल, गिलास, सरकंडे, पेंसिल आदि से बड़े रोचक नमूने बन सकते हैं। इसके लिए पहले बेलन पर कुछ आकृतियाँ चिपकानी पड़ेंगी, फिर स्याही लगा कर इसे कागज़ पर दबा कर लुढ़काना होगा।

डिब्बे के ऊपर आड़ा-तिरछा धागा बाँधो।

बेलन के ऊपर साइकिल ट्यूब की आकृति चिपकाओ।

डिब्बे पर साइकिल ट्यूब के नमूने चिपकाओ

लकड़ी की गिट्टक पर खाँचे काटो। इससे गाड़ियों के आने-जाने की सड़क बन जायेगी।

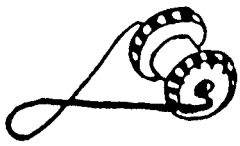

गोल बेलन पर धागे चिपका कर रेल की पटरी बनाओ।

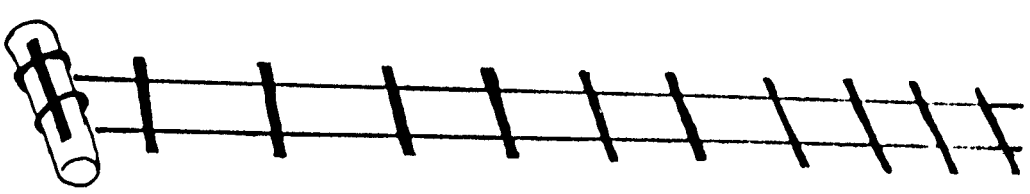

पेंसिल पर धागा लपेट कर एक रोचक नमूना बनाओ।

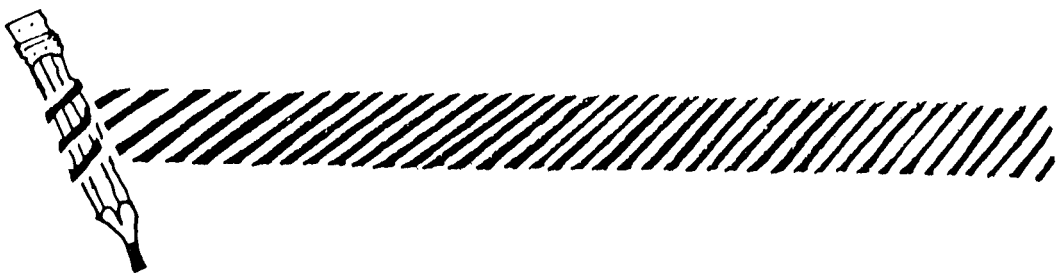

कछुओं की रेस

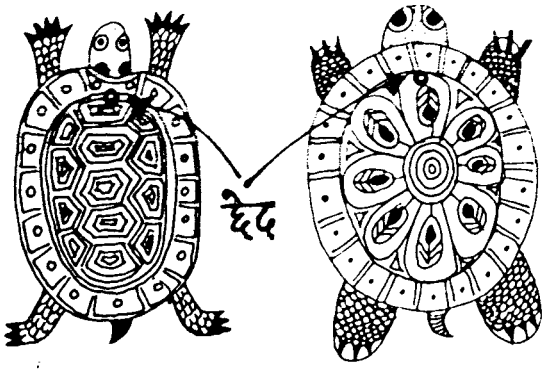

इस खिलौने को बनाना बहुत सरल है। इससे खेलने में भी बच्चों को बहुत आनंद आयेगा। पतले गत्ते या मोटी कार्डशीट का 20 सें.मी. व्यास का गोला बनाओ। अब इसमें सिर, पंद, हाथ और पैर भी बनाओ। कार्ड की दोनों ओर रंगों से सजाओ। अब कछुए का रेखाचित्र काटो। गर्दन के नीचे डोर पिरोने का धेद बनाओ। करीब 3 मीटर लम्बी डोर लो। डोर का एक सिरा किसी कुर्सी या मेज़ के पैर से बाँध दो, और उसके दूसरे सिरे को कछुए में से पिरो दो। डोर को खींचते ही कछुआ खड़ा हो जायेगा और ढीला छोड़ने पर आगे को लुढ़केगा।

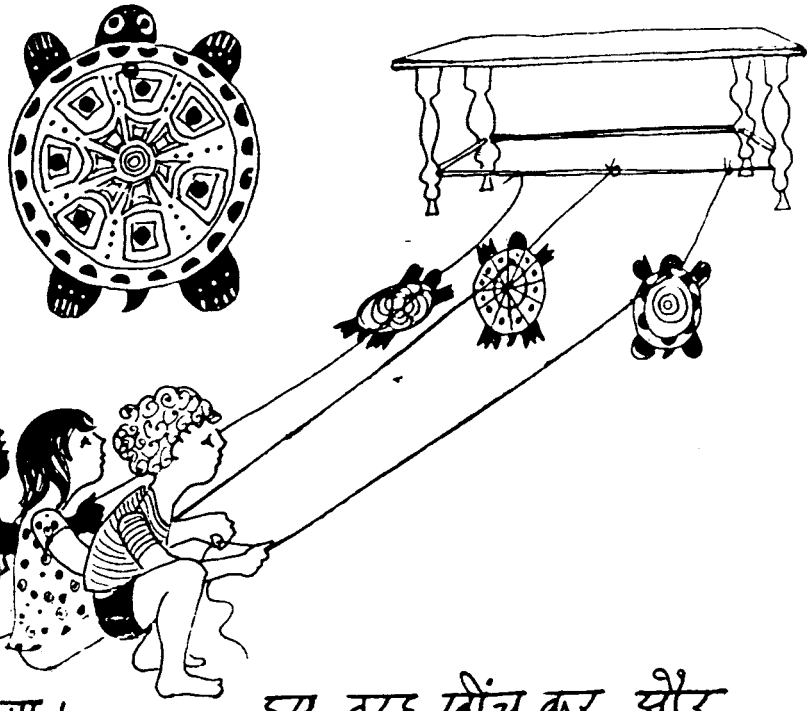

इस तरह खींच कर और ढील देकर कछुए को मेज़ तक ले जाओ। इस तरह के तीन कछुए बनाओ। अगर तुम्हे दो और मित्र मिल जायें तो उनके साथ कछुओं की रेस लगाओ।

पासों का खेल

इस खेल में दो खिलाड़ी खेलते हैं। हरेक के पास चित्र में दिखाई एक तालिका होती है। खिलाड़ी दो पासे इकट्ठे फेंकता है। पहले पासे का अंक इकाई और दूसरे पासे का अंक दहाई दर्शायेगा। खिलाड़ी पासों द्वारा दिखाई संख्या में भाग देने वाले किसी भी एक अंक को तालिका में बीज से टंक देता है।

3	8	1	6	1
2	4	8	2	5
7	10	5	3	9
2	7	4	9	3
1	4	6	7	12

उदाहरण के लिए अगर पासे 32 दिखाते हैं तो बीज को 1, 2, 4 या 8 किसी भी संख्या पर रखा जा सकता है। जिसकी तालिका पहले भरेगी, वही जीतेगा।

इस खेल को एक दूसरे तरीके से भी खेला जा सकता है। इसमें खिलाड़ी को पासों पर दर्शाए अंकों को जोड़ना या घटाना होता है और इस संख्या को तालिका पर टंकना है।

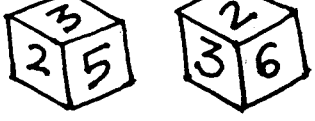

एक दोस्त साँप

गिरिजा रानी अस्थाना (प्रकाशक : सी. बी. टी, मूल्य दस रुपये)

साँपों को लेकर लोगों में बहुत अज्ञानता है। साँप को देखते ही लोग भय से त्रस्त हो जाते हैं और उसे लाठी से मारने को दौड़ते हैं। दरअसल साँपों की केवल कुछ ही प्रजातियाँ जहरीली होती हैं। अधिकतर साँप जहरीले नहीं होते। वह चूहे खाते हैं और चूहों की बढ़ती आबादी पर एक प्राकृतिक नियंत्रण रखते हैं।

यह कहानी एक दोस्त साँप की है। वह एक घने पेड़ की जड़ में अपना बिल बनाता है। उसे देख कर पेड़ के सभी पक्षी सहम जाते हैं। उन्हे लगता है कि साँप उनके अंडों को खा जायेगा। उल्लू दादा साँप पर कड़ी नज़र रखते हैं। इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं। साँप किसी को तंग नहीं करता। अब चिड़ियों का डर कुछ कम होता है। एक दिन जंगल कटाई के लिए ठेकेदार के लोग आते हैं। पेड़ के सभी पक्षी घबरा जाते हैं। हमारे घोसलों का क्या होगा? हमारे बच्चे कहाँ जायेंगे? पर जब मजदूर पेड़ को काटने आते हैं तो काला साँप फुंकारता हुआ उनकी ओर बढ़ता है। उसे देख मजदूर भाग जाते हैं और पेड़ बच जाता है। सभी पक्षी उस दोस्त साँप का आभार मानते हैं।

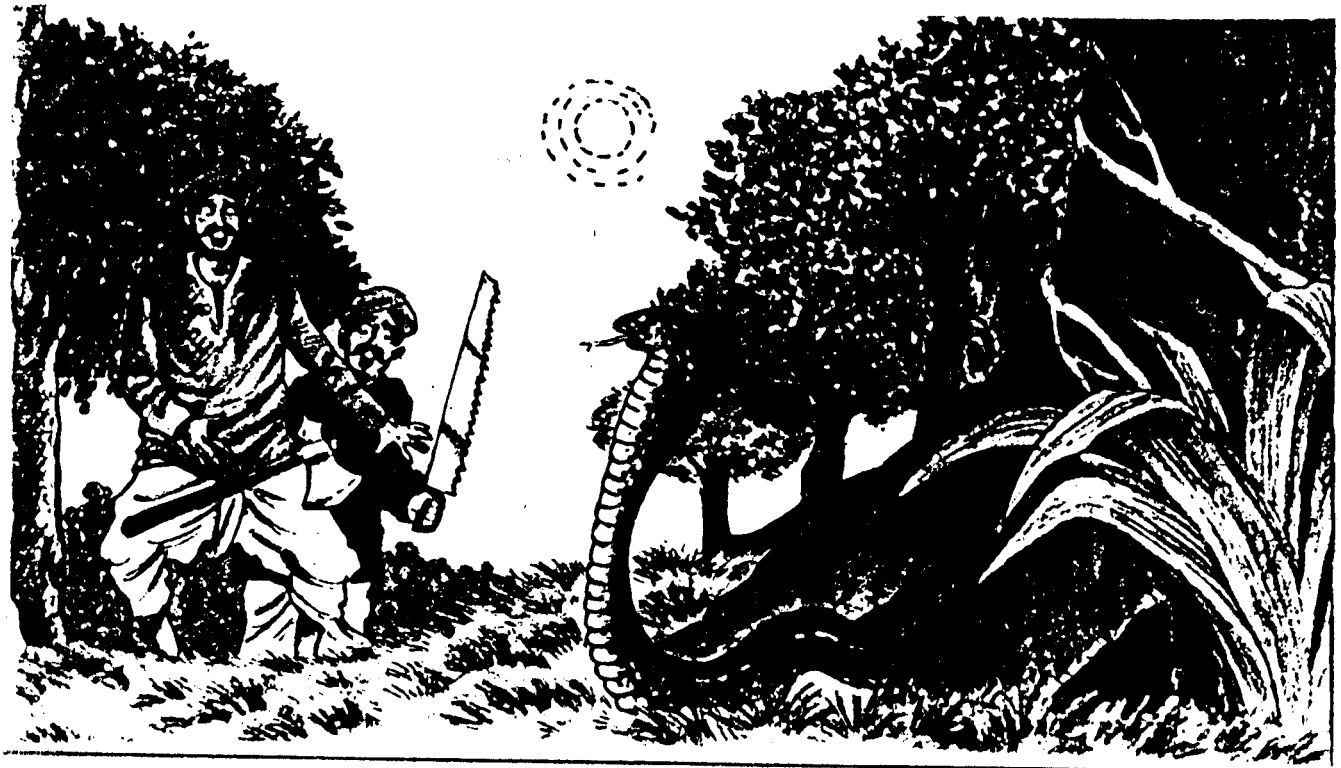

चित्र सितीश भट्टर्जी

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

मार्च 1997, अंक 15

डोर पर चढ़ती तितली

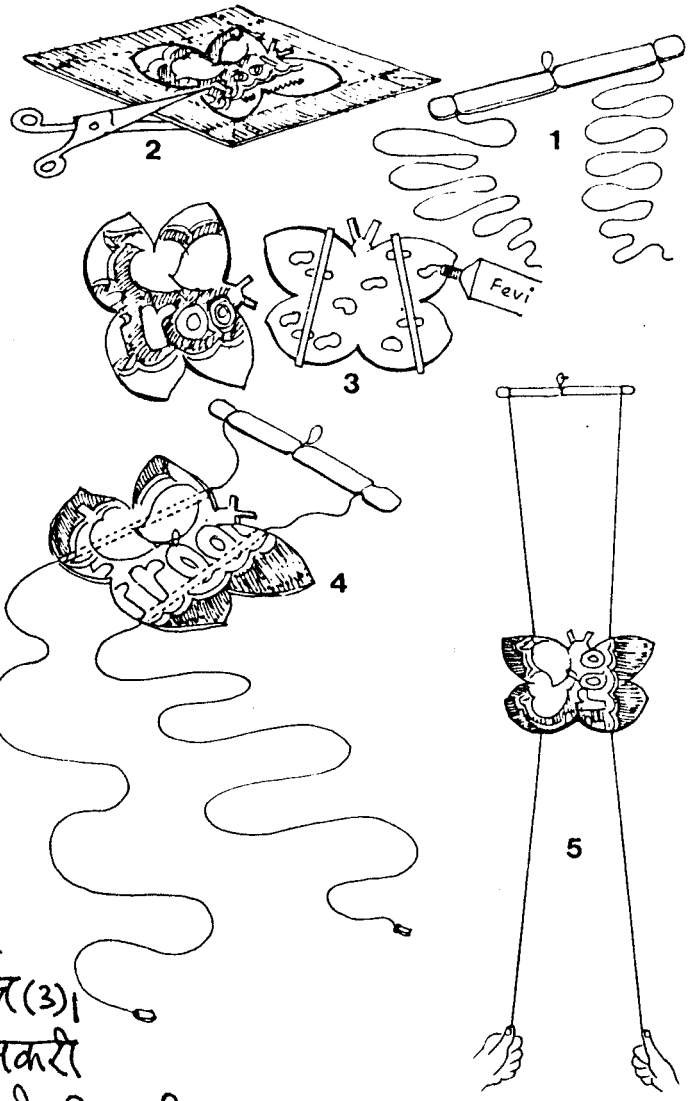

यह बिना लागत का एक रोचक खिलौना है। इसको बनाने के लिए आपको आसानी से मिलने वाली कुछ चीजें जुगाड़ करनी पड़ेंगी। खिलौने को बनाने में दस मिनट से अधिक समय नहीं लगेगा।

एक 10 सें. मी. लम्बा सरकंडा या डंडी लें और उसमें तीन खाँचे बनाएँ चित्र (1)। सिरे के खाँचों पर एक-एक मीटर लम्बी डोर बाँधें। बीच में एक धल्ला भी बाँधें चित्र (1)। किसी पुराने डिब्बे या पतले गत्ते के 5 × 8 सें. मी. नाप के दो टुकड़े लें। उन पर तितली का चित्र बना कर दोनों को एक साथ काटें चित्र (2)। बालपेन की खाली रीफिल के 6 सें. मी. लम्बे दो टुकड़े लें और उन्हे एक तितली पर तिरछा चिपका दें चित्र (3)। रीफिल थोड़ी तिरछी हों - ऊपर की ओर सकरी और नीचे की ओर चौड़ी। इसके बाद दूसरी तितली को पहली पर चिपका दें।

अब डंडी पर बंधे धागों को तितली में लगी रीफिलों के सकरे सिरों में से पिरो दें। डोर के सिरों पर अच्छी पकड़ के लिए एक-एक हैंडिल बाँध दें चित्र (4)।

डंडी के बीच के धल्ले को कील से लटका दें। अब तितली की दोनों डोरों को एक के बाद एक करके खींचें। आप तितली को डोर पर ऊपर चढ़ता पायेंगे चित्र (5)। डोर में ढील छोड़ते ही तितली अपने भार के कारण खुद ही सरक कर नीचे आ जायेगी।

इसे स्कूल कहना ज़रूरी है

'इसे स्कूल कहना ज़रूरी है। बच्चे तो स्कूल ही जाते हैं। अगर हमने इसे 'स्कूल' का नाम नहीं दिया, तो बच्चे यहाँ आयेंगे ही नहीं' एक शिक्षक ने कहा। इस स्कूल का नाम 'लिटिल न्यू स्कूल' है। यह कोपेनहेगन, डेनमार्क की एक बस्ती में स्थित है। यहाँ बच्चे एक दूसरे से मिलते हैं, दिन भर बातें करते हैं, चीजें बनाते हैं और खेलते हैं। यह अन्य स्कूलों से भिन्न है। यहाँ शिक्षा के नाम पर कोई पढ़ाई नहीं होती। स्कूल में कुल 85 बच्चे हैं, छह साल से चौदह बरस की उम्र के। इस प्यारे, रोचक स्कूल में बच्चे अपनी मर्जी के अनुसार जिन्दगी जीते हैं।

बच्चे यहाँ इसलिए आते हैं, क्योंकि उन्हे यहाँ बेहद मज़ा आता है। स्कूल में हाजिरी नहीं ली जाती। अगर कोई बच्चा स्कूल नहीं आता है तो बाकी बच्चे यही समझते हैं कि वह अवश्य किसी बेहद रोचक काम में व्यस्त होगा। स्कूल वापस आने पर सभी बच्चे उसे घेर कर बैठ जाते हैं और उससे उसके रोमांचक कारनामों के बारे में पूछते हैं।

स्कूल में एक बड़ा हाल और दो कमरे हैं। अन्य स्कूलों की तुलना में यह एक गरीब स्कूल है। न तो यहाँ विज्ञान की अच्छी प्रयोगशाला है और न ही गणित सीखने के मँहगे उपकरण। कुछ अच्छी किताबें, पहेलियाँ और खिलौने अवश्य हैं। एक पियानो (वाद्ययंत्र) और गिटार भी है। एक बड़े टैंक में मछलियाँ भी हैं। एक मेज पर कुछ बढ़ई के औज़ार हैं जिनसे बच्चे ठोका-पीटी कर सकें। यहाँ न तो कोई विषय है और न ही कोई पाठ्यक्रम। अगर कोई बच्चा दिन भर केवल सुनहरी मछलियों को निहारता रहे, तो यह भी स्कूल को मान्य है। इसके पीछे शायद यह सोच है कि बच्चे कभी खाली नहीं बैठते। वह हमेशा कुछ न कुछ करते ही रहते हैं। करने के दौरान ही वह दुनिया को समझते हैं और सीखते हैं। शिक्षकों का रोल बच्चों की खोजबीन में मदद करना है। स्कूल के शिक्षक बहुत कुशल हैं। वह बहुत से हुनर जानते हैं और उन्हे बाहर की दुनिया का अच्छा अनुभव है। पेशे से इनमें कोई भी टीचर नहीं है। कोई साइकिल मकेनिक है तो कोई नर्स। क्योंकि वह इतनी सारी चीजें बना सकते हैं, इसलिए बच्चे उनकी इज्जत करते हैं।

स्कूल में लगभग दो हजार लकड़ी की पेटियाँ हैं। पास के एक कारखाने ने इन्हे फेंक दिया था। बच्चे इन सभी क्रेटों को स्कूल

में ले आए थे। इन आयताकार लकड़ी के डिब्बों से बच्चे दिन भर खेलते रहते। वह इन्हे इंटों की तरह चुन-चुन कर दीवारें बनाते। उन्ही को जमा कर कुर्सी-मेज, अलमारी और शेल्फ बनाते। सुबह के समय सभी बच्चे आपस में मिल कर अपनी कक्षा का नक्शा और उसकी योजना तय करते। फिर स्कूल का सारा सामान ढो कर बाहर निकालते। अब नये सिरे से दीवारें बनाई जातीं। हाल को इन पेटियों के जरिए अलग-अलग कमरों में बाँटा जाता। एक कमरा नाच के लिए तो दूसरा संगीत के लिए बनता। इस काम में सभी बच्चे हाथ बँटाते, क्योंकि यह पूरी योजना भी तो उन्ही की थी।

दिन में एक बार कोई बच्चा ढोलक नुमा ड्रम पीटने लगता और बाकी बच्चे नाचने लगते। संगीत की मस्ती में बच्चे घंटो नाचते रहते। एक कोने में एक बच्चा अपने से छोटों को कहानी सुना रहा होता। कुछ बच्चे गैस वेल्डिंग कर रहे होते। एक बालक बार-बार लोहे की कील को गैस की लौ पर लाल गर्म करता और फिर उसे लकड़ी में ठोक देता।

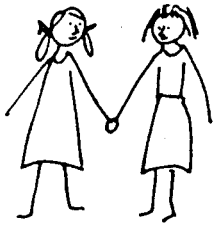

यहाँ बच्चे बिना रटे ही बहुत कुछ सीखते हैं। हफ्ते में एक-दो दिन स्कूल में ताला लगा कर सभी लोग स्थानीय बेकरी, बस-स्टैंड, डाकघर, स्टेशन आदि का चक्कर लगाते हैं। दिन भर बातचीत करने के कारण बच्चों की भाषा पर पकड़ बहुत मजबूत हो गई है। किसी भी घटना का विवरण करते समय वह शब्दों की मानो तस्वीर खींच देते हैं। इससे उनका आत्म-विश्वास भी बढ़ता है। इस स्कूल से निकले सभी छात्रों ने दूसरे स्कूलों में अच्छे अंक प्राप्त कर सुन्दर प्रदर्शन दिखाया।

स्कूल में शैक्षिक सामान, उपकरण बहुत कम थे। इसका एक कारण शायद यह था कि स्कूल में पैसों का अभाव था। परन्तु अगर उनके पास अधिक धन होता भी तब भी वह उसे फिजूल के सामान पर खर्च न करते। बच्चों को जंगल की सैर और पिकनिक मनाने में बहुत आनन्द आता। एक बार स्कूल के बच्चों के एक ग्रुप ने स्वीडन (पास के देश) की पैदल यात्रा करी। अगर पैसे होते तो स्कूल एक पुरानी बस खरीदता, जिससे कि स्कूल के सारे बच्चे दूर-दराज़ की पहाड़ियों और समुद्र-तट का सैर-सपाटा कर सकते। तो ऐसा है न्यू लिटिल स्कूल। एक गरीब, परन्तु अनूठा स्कूल।

संकट साँप का

लेखक : रस्किन बॉंड चित्र : मिकी पटेल प्रकाशक : एन. बी. टी.

अंग्रेजी भाषा में रस्किन बॉंड बच्चों के सबसे प्रिय लेखक हैं। सत्रह बरस की छोटी सी उम्र में लिखे उनके उपन्यास 'दी रूम आन दी रूफ' को एक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था। रस्किन बॉंड का जन्म 1934 में कसौली, हिमाचल प्रदेश में हुआ था। वह जामनगर, शिमला और देहरादून में पले-पढ़े। पिछले तीस वर्ष से वह मसूरी में रह कर बच्चों के लिए लिख रहे हैं। उनकी कहानियों में प्रकृति और इंसानों के प्रति एक गहरी संवेदना झलकती है। उनके प्रसिद्ध बाल उपन्यास 'रस्टी के कारनामे' पर एक लोकप्रिय टेलीविजन सीरियल भी बना है।

'संकट साँप का' एक बहुत ही रोचक कहानी है। लेखक का बचपना अपने दादा-दादी और उनके पालतू जानवरों के साथ देहरादून में बीता। दादा को जानवरों का बेहद शौक था और दादी को उनसे उतनी ही चिढ़ थी, खास कर रेंगने वाले जीवों से। एक दिन दादा एक अजगर खरीद लाए। यह उसी अजगर के करतबों की कहानी है। लखनऊ से आई रूबी मौसी साँप के खौफ के कारण जल्दी ही वापस लौट जाती हैं।

छुट्टियों में सभी लोग ट्रेन से लखनऊ जाते हैं। गलती से खाने की टोकरी की जगह अजगर वाली टोकरी उनके साथ चली जाती है। अजगर ट्रेन के ड्राइवर से लिपट जाता है। तब दादाजी ट्रेन चलाकर लखनऊ ले जाते हैं।

बच्चों को इस कहानी में बहुत आनन्द आयेगा।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

उदयाचल स्कूल

मुंबई का उदयाचल स्कूल देश के सबसे अच्छे स्कूलों में से एक है। इसे गोदरेज कम्पनी चलाती है। स्कूल की स्थापना श्रीमती वकील ने की थी। उन्होंने कई साल गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आश्रम शान्ति-निकेतन में काम किया था।

स्कूल में एक बालवाड़ी यानि प्री-स्कूल भी है। इसमें तीन वर्ष की आयु के बच्चे आते हैं और दिन भर अलग-अलग गतिविधियों में व्यस्त और मस्त रहते हैं। बच्चे घर से पुराने अखबार लाते हैं और इन्हें एक ड्रम में भिगो देते हैं। भीगने से कागज की लुगदी बन जाती है। सुबह के समय जब बच्चों में बहुत जोश होता है तब वो लकड़ी के हथौड़ों से लुगदी को जमीन पर पीट-पीट कर महीन बनाते हैं। इसमें उन्हें बड़ा मजा आता है। लुगदी में गोंद और मिट्टी मिलाकर बच्चे उससे अनेक जानवर और खिलौने बनाते हैं। सूखने के बाद खिलौने रंगे जाते हैं। लुगदी के बने खिलौने जल्दी टूटते नहीं हैं।

स्कूल में तीन सौ रुपए के ठप्पे हैं। इन्हें बहुत सस्ते में स्कूल में ही बनाया गया है। पुराने साइकिल के ट्यूब से पेड़, मोटर, घर आदि आकृतियाँ काटी जाती हैं और उन्हें सपाट लकड़ी या संगमरमर के टुकड़ों पर चिपका दिया जाता है। चार-पाँच बच्चे एक गोले में बैठते हैं। उनके बीच एक थाली में रंग से भीगा मोटा कपड़ा रखा होता है। बच्चे पुराने अखबारों पर ठप्पों से अनेकों सुन्दर और लुभावने चित्र बनाते हैं।

स्कूल में संगीत पर बहुत ज़ोर है। बच्चों ने चार-पाँच तरह के वाद्य-यंत्र बनाए हैं - जैसे खाली डिब्बे में कंकड़ भर कर झुनझुना, दो डिब्बों का मंजीरा, एक डिब्बे पर तार तान कर बना इकतारा। कुछ बच्चे बाजे बजाते हैं और बाकी बच्चे नाचते हैं। यहाँ बालवाड़ी में क, ख, ग लिखना या गिनती याद करना नहीं सिखाया जाता है। यहाँ खुशी-खुशी बच्चों को बचपना जीने दिया जाता है।

पदचिन्ह

एक रात मुझे एक सपना आया। मैं समुद्र के किनारे रेत पर चल रहा था। मेरे साथ-साथ भगवान भी चल रहे थे। अचानक मुझे अपनी बीती जिन्दगी एक फिल्म जैसी दिखाई देने लगी। मुझे रेत पर दो जोड़ी पदचिन्ह दिखाई दिए। एक जोड़ी मेरे थे और दूसरे भगवान के। अपने बीते अतीत पर निगाह डालते हुए मुझे सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ जब मुझे कई स्थानों पर केवल एक जोड़ी पदचिन्ह ही दिखाई दिए। यह मेरे जीवन के वह क्षण थे जब मैं सबसे अधिक दुखी और उदास था। मैंने भगवान से उसका कारण पूछा "आपने तो कहा था कि आप सदा मेरे साथ-साथ चलेंगे। परन्तु मैं देख रहा हूँ कि मेरे जीवन की सबसे कठिन घड़ियों में केवल एक ही जोड़ी पदचिन्ह बचे हैं। भगवन, जब मुझे आपकी सबसे अधिक जरूरत थी, तब आप मुझे छोड़ कर कहाँ चले गए थे।" भगवान ने कहा "मेरे प्रिय मित्र, मैं तुम्हे मुसीबत में छोड़ कर कहीं नहीं गया था। जहाँ तुम्हे केवल एक जोड़ी पदचिन्ह दिखाई दे रहे हैं, वहाँ मैंने तुम्हे गोद में उठा लिया था।"

मायापच्ची

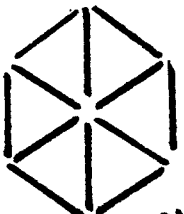

इस आकृति में छः त्रिभुज हैं। कम से कम कितनी और तीलियाँ इसमें जोड़नी या घटानी पड़ेंगी जिससे इस आकृति में छः वर्ग नजर आने लगें।

दस तीलियों से बनी इस कुर्सी का मुँह दायीं ओर है। कुर्सी का मुँह बायीं ओर करने के लिए कम से कम कितनी तीलियों की जगह बदलनी पड़ेगी?

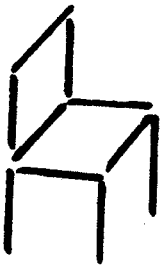

इस आकृति में आठ बराबर आकार के त्रिभुज हैं। अब केवल चार तीलियों को इस तरह हटाओ कि छः त्रिभुज कम हो जायें।

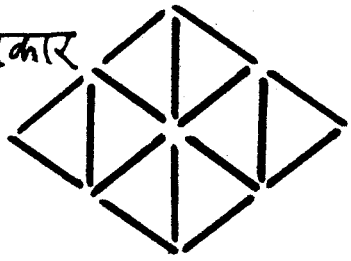

डिब्बे में ढक्कन

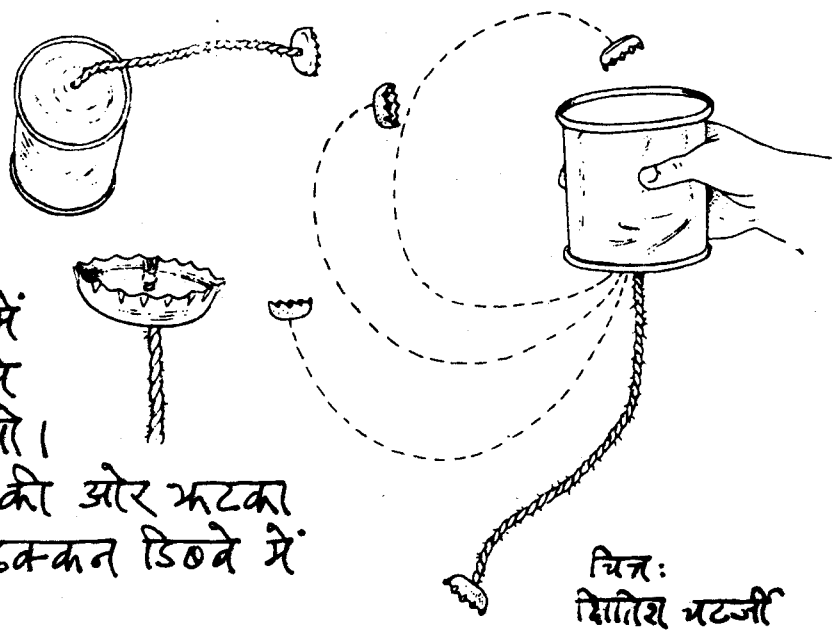

चित्र:
क्षितिश चटर्जी

एक खाली डिब्बे के पेंदे में छेद करो। एक सोडा-लेमन की बोतल के ढक्कन में भी छेद करो। अब चित्र में दिखाए अनुसार एक डोरी से ढक्कन को डिब्बे से लटकाओ। अब डिब्बे को जल्दी से नीचे की ओर झटका दो जिससे कि लटकता हुआ ढक्कन डिब्बे में आ गिरे।

कागज की झोपड़ी

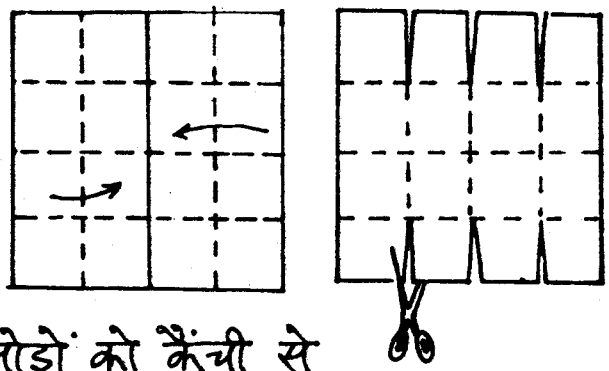

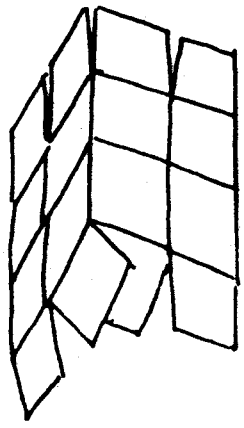

एक चौकोर कागज लो। उसे सोलह छोटे चौखानों में मोड़ो। सभी मोड़ एक ही दिशा में होने चाहिए। अब चौथाई दूरी तक छः मोड़ों को कैंची से काटो। बीच के दो कटे चौखानों को एक-दूसरे पर रख कर चिपका दो। दूसरी ओर भी ऐसा ही करो। इससे झोपड़ी की तिकोनी छत बन जायेगी। अब छोरों के दोनों चौखानों को भी चिपका दो। इससे झोपड़ी की दीवार बन जायेगी।

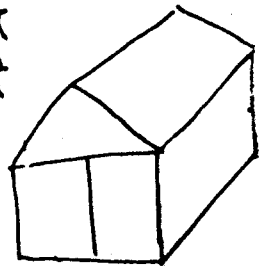

इस पूरी झोपड़ी के खोल को एक बड़े गत्ते पर रखो। अब झोपड़ी का बाहरी खाका गत्ते पर बनाओ। अब इस खाके में घर के अलग-अलग कमरे बनाओ, जैसे बैठक, रसोईघर, शयनकक्ष आदि। कागज के छोटे-छोटे पलंग, मेज-कुर्सी आदि से इन कमरों को सजाओ। रसोईघर के लिए मिट्टी के छोटे-छोटे बर्तन बनाओ और चूल्हे के पास इन्हे सजाओ। एक कमरे में डोर बाँधो और उस पर छोटे-छोटे कपड़े लटकाओ। झोपड़ी में एक दरवाजा और खिड़की बनाओ। अब झोपड़ी को घर के खाके के ऊपर रख दो। इस प्रोजेक्ट को बनाने में बच्चों को बड़ा आनंद आयेगा।

बतूता का जूता

लेखक : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना राधाकृष्ण प्रकाशन

यह अट्ठारह कविताओं का एक अनूठा संकलन है। यह कवितायें बच्चों के लिए लिखी नहीं गयीं। बल्कि यह समझिए कि यह बच्चों के साथ उठते-बैठते उन्हे खुश करने के लिए खेल-खेल में गढ़ी गई हैं। जो अच्छी थी वह याद रहीं और जबान पर बस गयीं। जिनमें मज़ा नहीं आया वह न जाने कहाँ पर खो गयीं। यह कवितायें इतनी ज़ोरदार हैं कि पिछले 25 वर्षों में इस पुस्तक के दस संस्करण छप चुके हैं।

पकौड़ी

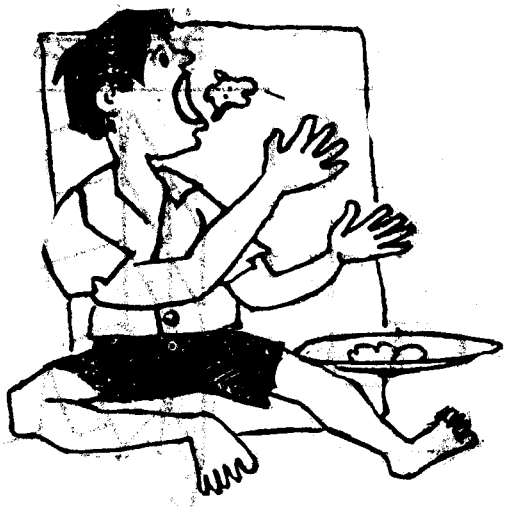

हाथ से उछली
मुँह में पहुँची,
पेट में जा
घबराई पकौड़ी।
दौड़ी - दौड़ी
आयी पकौड़ी।
मेरे मन को
भायी पकौड़ी।

दौड़ी - दौड़ी
आयी पकौड़ी।
छुन-छुन छुन-छुन
तेल में नाची,
प्लेट में आ
शरमाई पकौड़ी।
दौड़ी - दौड़ी
आयी पकौड़ी।

दिल्ली - दर्शन

एक, [illegible], तीन, चार
आओ [illegible]ें, कुतुब - मीनार।
पाँच, [illegible], सात, आठ
देखें [illegible] के राजघाट।
नौ, [illegible], ग्यारा, बारा
चलें [illegible]नी चौक फव्वारा।
तेरा, [illegible]दा, पन्द्रा, सोला
कनॉट [illegible]लेस में मुर्गा बोला।

संकलन रविन्द्र गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक क जुम्बिश परिषद, -10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

मई 1997 अंक 17

रेल - स्कूल

इस जापानी स्कूल का नाम था तोमोए। स्थापना वर्ष 1937। स्कूल केवल आठ साल चला। उसके हेडमास्टर कोबायाशी एक गजब के इंसान थे। स्कूल के क्लास ट्रेन के पुराने डिब्बों में लगते थे। इसमें एक डिब्बा पुस्तकालय भी था।

इस स्कूल के सुखद अनुभव 'तोत्तोचान' नाम की पुस्तक में छपे। 1980 में जब यह किताब छपी तो उसने शिक्षा जगत में एक तहलका मचा दिया। सोलह महीनों के अंदर - अंदर इसकी पचास लाख प्रतियाँ बिक गयीं। इस पुस्तक को नेशनल बुक ट्रस्ट ने 11 भारतीय भाषाओं में छापा है।

तोत्तोचान एक जिज्ञासू, कल्पनाशील और गर्मजोश लड़की है। उसे जिस चीज़ में मज़ा आता है वह झट से उसमें भिड़ जाती है। उसकी चंचल शरारतों के कारण उसे एक सामान्य स्कूल से निकाल दिया जाता है।

तोत्तोचान, रेल के डिब्बों वाला स्कूल खुद ही चुनती है। इस स्कूल में वह कई खासियतें पाती है। वह देखती है कि स्कूल का अपना कोई गीत नहीं है जिसे सबको रोज़ गाना ही हो। वहाँ किसी भी बच्चे को कुछ भी करने से रोका-टोका नहीं जाता। वहाँ के हेडमास्टर उसकी बातें लगातार चार-चार घंटों तक सुनते रह सकते हैं। वहाँ का काम पीरियड से बंधा हुआ नहीं है। बच्चे अपना काम अपनी इच्छा और सुविधा के अनुसार करते रह सकते हैं।

यहाँ शिक्षक खुद भाषण न देकर बच्चों को सीखने के अधिक से अधिक अनुभव उपलब्ध करवाते हैं। बच्चों को सैर के लिए ले जाया जाता है। उनकी गलतियों की शिकायत उनके माँ - बाप से नहीं की जाती। यहाँ बच्चे अपने हेडमास्टर की पीठ पर चढ़ जाते हैं, गोद और कंधों पर लद जाते हैं। जरूरत पड़ने पर वह हेडमास्टर से पैसे उधार माँग लेते हैं। उनकी असफलताओं का वहाँ मज़ाक नहीं उड़ाया जाता। डाँटा नहीं जाता।

यह एक ऐसे स्कूल की सच्ची कहानी है जहाँ बच्चे खुशी - खुशी जाते थे। तोत्तोचान नाम की यह पुस्तक आप के स्कूल के पुस्तकालय के लिए खरीदी गई है। इसे अवश्य पढ़ें।

शब्दों का खेल

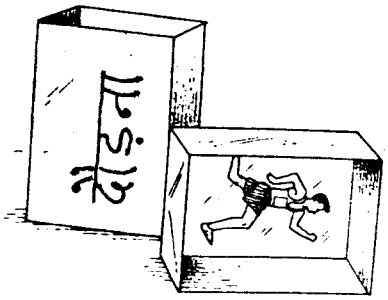

एक दर्जन माचिस की खाली डिब्बियाँ लें। उनके बाहरी खोखों पर कोई शब्द लिखें। अंदर की दराज़ पर उसी शब्द का चित्र चिपकायें। शुरू में आप बच्चों से माचिस पर लिखे शब्द को पढ़ने को कहें। उसके बाद आप दराज़ को बाहर सरका कर उस पर बना चित्र बच्चों को दिखायें।

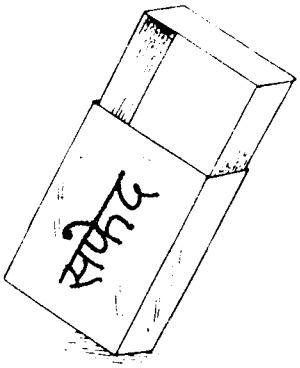

कुछ देर बाद आप माचिस के सभी खोखों और दराजों को मेज़ पर फैला दें। अब बच्चों से खोखों को उनकी सही दराज़ में डालने को कहें। इससे बच्चे शब्दों को उनके सही चित्रों से मिलाना सीखेंगे। आप बड़े बच्चों से माचिसों को वर्णमाला के क्रम में लगाने को कहें।

अंकों की जेबें

कपड़े की एक लम्बी पट्टी में दस जेबें सिलें। जेबों पर एक से दस तक के अंक लिखें। एक पुराने ताश की गड्डी लें और उसके पत्तों पर सफेद कागज़ चिपकायें। इन पत्तों पर एक से दस तक अलग-अलग चीजों के चित्र बनायें। बच्चों से कहें कि वह ताश के पत्तों पर बनी चीजों को गिनें। फिर चीजों की संख्या के अनुसार उन्हें जेबों में डालें।

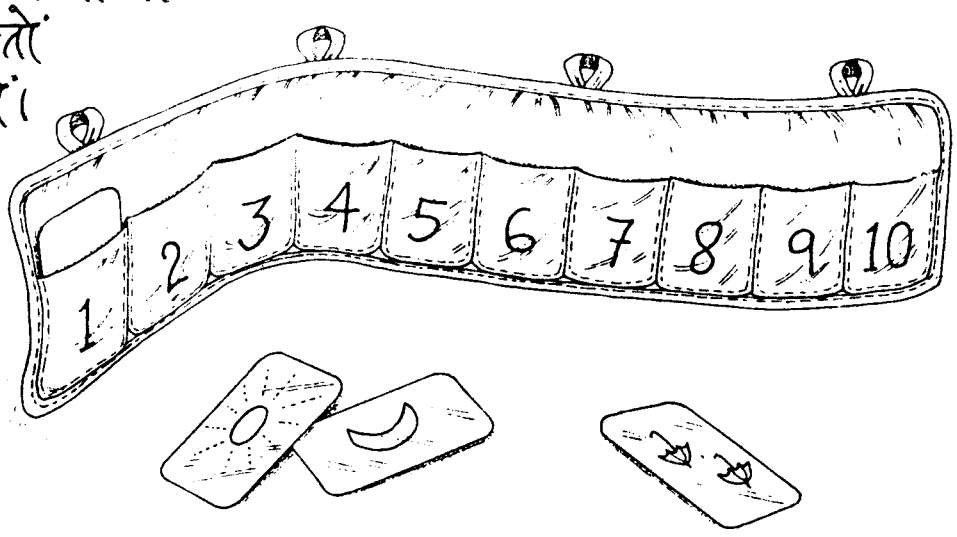

चित्र : क्षितिश चटर्जी

लड़कियाँ खेलें कौन से खेल — तसलीमा नसरीन

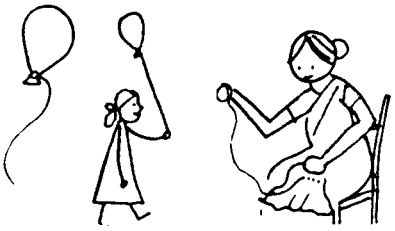

कौन सा खेल लड़कों का है और कौन सा लड़कियों का, इसका विभाजन किसने किया - यह जानने की मेरी बड़ी इच्छा होती है।

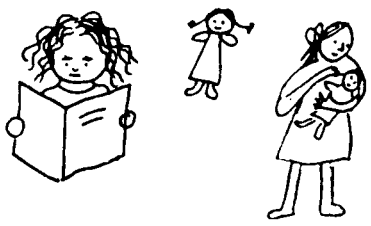

लड़के कंचे खेलेंगे, पतंग उड़ायेंगे, फुटबाल खेलेंगे, क्रिकेट खेलेंगे, गुल्ली-डंडा खेलेंगे और लड़कियाँ आँगन में मिट्टी की लकीरें खींच कर इक्कड़-दुक्कड़ खेलेंगी। वे गुड़ियों से खेलेंगी, गुड़ियों की शादी रचायेंगी, सुबह-शाम उनके जूते-कपड़े बदलेंगी और झूठमूठ की रसोई बनायेंगी।

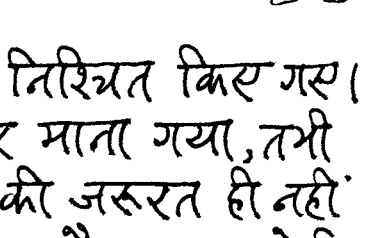

लड़कों के लिए शारीरिक शक्ति और गति के खेल निश्चित किए गए। लड़कियों को तन-मन से निहायत अपंग या कमज़ोर माना गया, तभी तो उनके लिए ऐसे खेल हैं, जिनमें बुद्धि या शक्ति की जरूरत ही नहीं है। उनके खेलने का स्थान घर का आंगन ही है, गली या मैदान का कोई हिस्सा उनके हिस्से में है ही नहीं। आसमान में उनके लिए कोई कोना नहीं है, क्योंकि वे पतंग नहीं उड़ा सकतीं। बारिश से भी उन्हे कुछ लेना-देना नहीं है, क्योंकि बारिशों में वे गलियों में छपछप करते हुए भीग नहीं सकतीं।

लड़कियों के खिलौनों में गुड़िया, चक्की, चकला-बेलन व बर्तन आदि हैं, जबकि लड़कों के लिए चाबी की कारें या बंदूक-पिस्टल जैसे खिलौने हैं। बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। खेल में भी लिंग भाव लाकर बच्चों के बचपन को दूषित नहीं करना चाहिए। लड़कियों को भी ऐसे खेल खेलने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिनमें शारीरिक क्षमता पर ज़ोर पड़ता हो। उन्हे भी खुले मैदान और घर की छतों का आनंद लेने दीजिए।

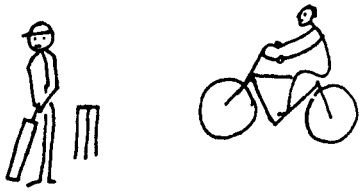

('लज्जा' नामक पुस्तिका की लेखिका सुश्री तसलीमा नसरीन बांग्ला देश की मशहूर लेखिका हैं।)

ननिहाल में गुज़रे दिन - शंकर

यह पुस्तक केरल के एक बच्चे - जिसका नाम राजा है, के जीवन की रोमांचपूर्ण घटनाओं की कहानी है। राजा अपनी माँ के स्वर्गवास के बाद अपने नाना-नानी के साथ रहता है। उसके कठोर नाना, कोमल स्वभाव के मामा, स्नेहमयी नानी और करुणा से भरी हरिजन नौकरानी, सभी का बेहद सजीव चित्रण है। कहानी को पढ़ कर केरल की एक साफ तस्वीर दिमाग में खिंच जाती है।

राजा के बचपन की घटनायें, उसकी चतुराई, उसका प्रकृति-प्रेम, उसकी दया, निडरता और सजा के डर को उभारती हैं। कड़े अनुशासन के बावजूद राजा को काफी आजादी भी है। उसके जीवन में गुरूजनों के प्रति आदर और ईश्वर का डर बहुत महत्व रखते हैं। पुस्तक में एक अनाथ बच्चे के जीवन का शब्दों और मनमोहक चित्रों में बड़ी सुन्दरता से वर्णन किया गया है। हाथी और मगरमच्छ, गिलहरी और गिद्ध, मंदिर और मंत्र फूंकने वाला - यह सब उस जीवन की यादों को जगाते हैं, जो अब तेजी से लुप्त हो रही हैं।

1965 में पहली बार छपी इस पुस्तक के अब तक पच्चीसों संस्करण छप चुके हैं। इसके लेखक शंकर ने ही बाद में चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट की स्थापना की। यह शंकर की सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तक है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 कालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004.

फुलझड़ी

जून 1997, अंक 18

सच्ची शिक्षा

गांधी जी ने आम जनता से कहा 'जब तक तुम झाड़ू और बाल्टी खुद अपने हाथ में नहीं उठाओगे, तब तक तुम्हारे शहरों में सफाई नहीं होगी'। एक बार गांधी जी ने माडल स्कूल के शिक्षकों से कहा 'आप का स्कूल आदर्श तभी बनेगा, जब आप बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ भोजन पकाना और शौचालय साफ करना भी सिखायेंगे। उनके आश्रम में अलग-अलग जाति-धर्मों के सभी लोग सफाई में हाथ बँटाते थे। सारा कचरा गड्ढों में भर दिया जाता था। हर फेंकी चीज का सदुपयोग होता था। सब्जियों की धोलन, बचे खाने और शौचालय के मल से खाद बनती थी। गंदा पानी खेत में सिंचाई के काम आता था।

गांधी जी की शिक्षण पद्धति को बुनियादी तालीम के नाम से जाना जाता है। इसमें दैनिक उपयोग की चीजें बनाने और हाथ के काम पर अधिक जोर है। यहाँ बच्चे स्कूल में तकली चलाना, खड्डी पर टाटपट्टी बुनना, चमड़े के जूते-चप्पल बनाना आदि कुशलतायें सीखते हैं।

गांधी जी का विश्वास था कि जब आम लोग अपनी जरूरत की चीज़े खुद बनायेंगे तभी देश आत्म-निर्भर होगा

आज साधारण आदमी खुद के जीवन पर नियंत्रण खो बैठा है। आज जब हमारा समाज सूत कातना, कपड़ा बुनना, खाना पकाना, पेड़ लगाना, सफाई रखना जैसे बुनियादी हुनर भूल रहा है, तो हमें एक बार फिर इन कुशलताओं को स्कूली पढ़ाई का एक हिस्सा बनाना होगा।

बादल

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

नहीं किसी से डरते बादल
बस शैतानी करते बादल
रात और दिन बरस-बरस कर
धरती का दुख हरते बादल
आसमान की गली-गली में
खूब कुलांचे भरते बादल
जितने सूखे ताल तलैये
सबमें पानी भरते बादल
बड़े दयालू इसी लिए तो
झर-झर-झर-झर झरते बादल

तितली रानी

हरवंश राय बच्चन

बड़ी सयानी
तितली रानी
फूल-फूल पर जाती है,
फूल-फूल से रंग चुराकर
अपने पंख सजाती है।
बड़ी सयानी
तितली रानी
मेरा मन ललचाती है,
जब मैं उसे पकड़ने जाता
इधर-उधर उड़ जाती है।
बड़ी सयानी
तितली रानी
फूल-फूल पर जाती है।

आवाज़ की डिब्बी

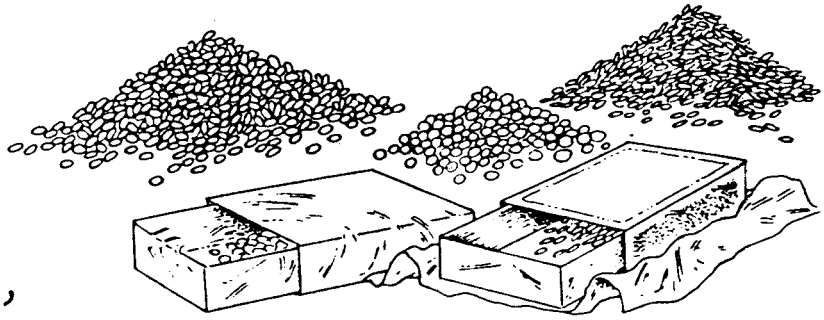

इस गतिविधि के लिए लकड़ी की बनी माचिस की कुछ खाली डिब्बियाँ इकट्ठी करें। इसके लिए गत्ते वाली डिब्बी ठीक नहीं रहेंगी, क्योंकि वह आवाज़ को सोख लेती हैं।
मुट्ठी भर अलग-अलग तरह के अनाज - जैसे गेहूँ, मक्का, बाजरा, चावल, दालें भी लें।
पहले बच्चों को अनाज दिखायें। अनाज के नाम, रंग, आकार, उपयोग और उससे बने भोजन के बारे में चर्चा करें। अनाजों को मिला कर उन का एक-एक चम्मच बच्चों को दें और उनसे अनाजों को अलग-अलग करने को कहें। एक माचिस को आधा गेहूँ से भरें और दूसरी को चावल से। दोनों को हिलायें और उनकी आवाजों को सुनें। अन्य अनाजों की आवाजों को भी सुनें। बच्चों से पूछें कौन सा अनाज सबसे तेज आवाज़ करता है और कौन सबसे धीमी?

शब्दों का पंखा

कुछ अक्षरों के मेल से ही कोई शब्द बनता है। इन्हे समझने के लिए शब्दों के पंखे बनाए जा सकते हैं। इसके लिए 3 सें.मी. × 8 सें.मी. नाप की मोटी कार्ड शीट की पट्टियाँ काटें। तीन या चार पट्टियों में एक ओर छेद कर उनमें चिमटी वाली पिन फँसा दें।
अब तीन अक्षरों का कोई शब्द लें और उसके हरेक अक्षर को एक-एक पट्टी पर लिखें। आखिरी पट्टी के पीछे उसका चित्र भी बनायें।
बच्चे प्रत्येक पट्टी पर लिखे अक्षरों को देख कर पूरा शब्द पढ़ सकते हैं और फिर पंखे को बंद करके उसके पीछे शब्द का चित्र भी देख सकते हैं।

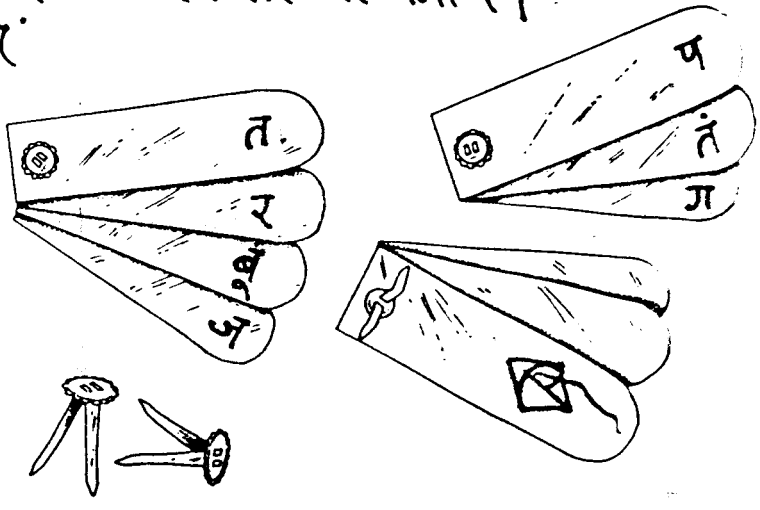

सुजाता और जंगली हाथी

लेखक शंकर (सी. बी. टी)

शंकर का नाम आज घर-घर में मशहूर है। वह एक कुशल और सफल व्यंग्य-चित्रकार थे। उन्होंने ही चिल्ड्रंस बुक ट्रस्ट की स्थापना करी। ट्रस्ट सचित्र, रंगीन और अच्छे बाल-साहित्य छापने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय बाल-कला प्रतियोगितायें भी आयोजित करती है।

यह कहानी बारह वर्ष की एक निडर लड़की सुजाता के बारे में है। सुजाता के पिता के देहान्त के बाद उसकी माँ चटाई बुन कर अपनी आजीविका चलाती है। सुजाता बचपन से ही माँ की मदद करती है और जंगल से घास काट कर लाती है। एक दिन अचानक एक जंगली हाथी आकर उसके सामने खड़ा हो जाता है। पहले तो सुजाता एकदम सहम जाती है, परन्तु तुरन्त साहस बटोर कर हाथी के सामने एक केला बढ़ा देती है। धीरे-धीरे दोनों में गहरी मित्रता हो जाती है। जब बीमारी के कारण सुजाता जंगल नहीं जा पाती है, तब हाथी ही उसे ढूंढता हुआ गाँव में पहुँचता है। गाँव वाले हाथी से भयभीत हो जाते हैं और उसको पकड़ने के लिए एक गड्ढा खोदते हैं। फंसने के बाद हाथी को बाहर निकाला जाता है और उसके चारों पैरों को मोटे रस्सों से बाँध दिया जाता है। सुजाता हाथी का कष्ट सह नहीं पाती है। रात में हँसिए से रस्सों को काट कर वह हाथी को आज़ाद कर देती है। हाथी जंगल में भाग जाता है। सुजाता को कुछ पहरेदार रस्सी काटते हुए देख लेते हैं। सुजाता और उसकी माँ को गाँव छोड़ना पड़ता है। वह जंगल के पास एक दूसरे गाँव में जाकर बस जाते हैं।

दो साल बाद वही हाथी वहाँ भी आता है। गाँव वाले हाथी से परेशान हैं। वह खेती नष्ट करता है। पर सुजाता को देख कर हाथी सहम जाता है और जंगल में वापिस चला जाता है। एक जंगली जानवर भी प्रेम का उत्तर प्रेम से देता है, फिर इंसान की बात ही क्या!

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी जुलाई 1997, अंक 19

चूहों की कथा, बच्चों की व्यथा

रार्बट रोज़नथाल अमरीका में मनोविज्ञान के प्रोफेसर थे। उन्होंने दो शोध छात्रों को 5-5 चूहे दिए और उनसे चूहों को एक भूलभुलइया में से निकलना सिखाने को कहा। पहले छात्र से उन्होंने चुपके से कहा "यह होशियार चूहे हैं। यह अवश्य सफल होंगे।' दूसरे छात्र के कान में उन्होंने फुसफुसाया "यह कमज़ोर दिमाग के चूहे हैं, फिर भी कोशिश करो।" यह अंतर केवल छात्रों के दिमाग में था। चूहे लगभग एक जैसे थे। परीक्षा वाले दिन 'होशियार' चूहे झटपट भूलभुलइया पार कर गए, जबकि 'कमज़ोर दिमाग' वाले चूहे अपनी जगह से हिले तक नहीं।

इन आश्चर्यजनक परिणामों के बाद रोजनथाल ने इस प्रयोग को एक स्कूल में दोहराया। मई 1964 में उनकी टीम सेन फ्रैंसिस्को शहर के एक गरीब प्राथमिक स्कूल में पहुँची। यहाँ गरीब मजदूरों और अल्पसंख्यकों के बच्चे आते थे। रोजनथाल ने झूठमूठ कहा कि वह हावर्ड विश्वविद्यालय से आये हैं और यह शोध नेशनल साइंस फाउंडेशन के लिए कर रहे हैं। इतने बड़े नाम सुनकर गरीब स्कूल के शिक्षकों ने अपने स्वागत द्वार खोल दिए।

रोजनथाल ने सभी बच्चों को एक स्टैंडर्ड IQ टेस्ट दिया। इसके परिणाम उन्होंने शिक्षकों को नहीं बताए। बाद में हाजिरी रजिस्टर को लेकर, बिना किसी आधार के उन्होंने हर तीसरे बच्चे को 'मंद या कमज़ोर' और हरेक चौथे बच्चे को 'होशियार' करार दे दिया। अब वह हर चौथे महीने आते और बच्चों को एक स्टैंडर्ड IQ टेस्ट देते। यह सिलसिला दो साल तक चला। इसके नतीजों ने सारी दुनिया को चौंका दिया। जो बच्चे शुरू में होशियार थे पर रोजनथाल द्वारा 'कमजोर' करार कर दिए गए थे, उनकी IQ वास्तव में गिर गई थी। जो बच्चे दरअसल कमज़ोर थे पर रोजनथाल द्वारा 'अक्लमंद' करार करे गए थे उनकी IQ पहले से कहीं अच्छी हो गई थी। शिक्षक इन बच्चों को अधिक प्रोत्साहन देने लगे थे, उनसे ज्यादा प्रश्न पूछने लगे थे।

इस प्रयोग में बस एक सबक है। अगर शिक्षक का विश्वास है कि बच्चा सफल होगा, तो वह बच्चा ज़रूर अच्छा करेगा। इसलिए बच्चे की सफलता में पूरा विश्वास रखें। यह सबसे सस्ता शैक्षिक सुधार होगा।

बच्चों के चित्र

आमतौर पर स्कूलों में छोटे बच्चे कला के नाम पर सेब और संतरों के रेखाचित्रों में रंग भरते हैं। चित्रों का मूल्यांकन इस आधार पर होता है कि रंग कितनी सफाई से भरे गए हैं। बड़ी कक्षाओं में शिक्षक कोई चित्र बनाता है और बच्चे उसकी नकल उतारते हैं।

नकल उतारा चित्र

क्या इसे सफल चित्रकला कहेंगे ? क्या चित्र जीता-जागता है और बच्चे के व्यक्तित्व, उसकी रुचियों, संस्कृति या समुदाय के बारे में कुछ बताता है ?

बच्चों को जब कोरे कागज पर चित्र बनाने को कहा जाए तो वह समझ नहीं पाते कि क्या करें। यदि उन्हे कहानी सुनाकर उसके बारे में चित्र बनाने को कहा जाए तो वह जल्दी प्रेरित होंगे। हमारे बच्चों के पहले-पहले चित्र उन फूलों के क्यों हों जिन्हे उन्होंने कभी देखा नहीं है ? यदि उन्हे घर का चित्र बनाना है तो, वह ऐसा घर क्यों हो जो उन्होंने कभी देखा नहीं ? क्या यह बात अधिक मायने नहीं रखती कि बच्चे वही चित्रित करें जो उनके अपने जीवन में महत्वपूर्ण है? बच्चों के चित्र बच्चों जैसे हों न कि बड़ों जैसे। मैं तो 6 वर्षीय बच्चे के मेज़ के चित्रण में एक जीती-जागती मेज़ देखना चाहूंगी, जिसकी चारों टाँगे भिन्न-भिन्न दिशाओं में हो, न कि ध्यानपूर्वक बनाई हुई 'सही लगने वाली मेज़'।

कला सीखने वाले बच्चों के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा है - नकल मत करो। किसी वास्तविक वस्तु जैसे खिलौना, फल और घर देख कर बनाओ। परन्तु वस्तु का चित्र देख कर उसकी नकल मत करो।

एक मशविरा शिक्षकों के लिए - बच्चों को खुद चित्र बनाने दें। बच्चों के चित्रों को कभी पूरा न करें। बच्चे आग्रह करें तो भी मना कर दें - हमेशा। बच्चों को चीजें देखने में मदद करें। माता-पिता बच्चों को बहुत सी सस्ती कला-सामिग्री दें और बच्चों को इच्छानुसार उसे इस्तेमाल करने दें। बच्चों को अपने चित्र बनाने की छूट दें। इसमें उन्हे बहुत मज़ा आयेगा।

कल्पनाशील चित्र

रंगों की जेबें

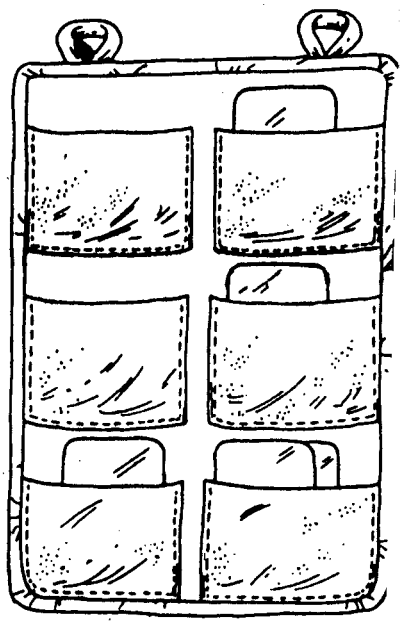

एक मजबूत कपड़े पर छः अलग-अलग रंगों की जेबें सिलें। एक पुराने तारा की गड्डी के पत्तों पर सफेद कागज चिपका दें। इन कार्डों पर काले पेन से अलग-अलग चीजों के चित्र बनायें। कार्डों की गड्डी बनायें जिससे चित्र नीचे रहें। अब बच्चे एक-एक करके पत्ता उठायें - उस पर बने चित्र का नाम बतायें, और कार्ड को उस चीज के रंग वाली जेब में डालें। उदाहरण के लिए पत्ते के चित्र वाला कार्ड हरी जेब में जायेगा। कार्डों पर चित्र बनाने के लिए कुछ सुझाव

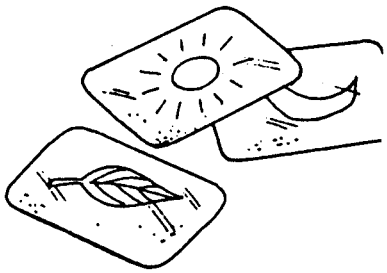

भूरा : पेड़ का तना, हिरन, बंदर, रस्सी
हरा : पत्ता, केले का पेड़, मटर, तोता, घास
पीला : सूरज, गेंदे का फूल, सूरजमुखी, पका केला
सफेद : दूध, चंद्रमा, तारे, गाय, अंडा, अखबार
काला : टायर, कौआ, बाल, भैंस
लाल : गुलाब, पोस्ट-बाक्स, टमाटर, बिन्दी

अनाज की आवाज़

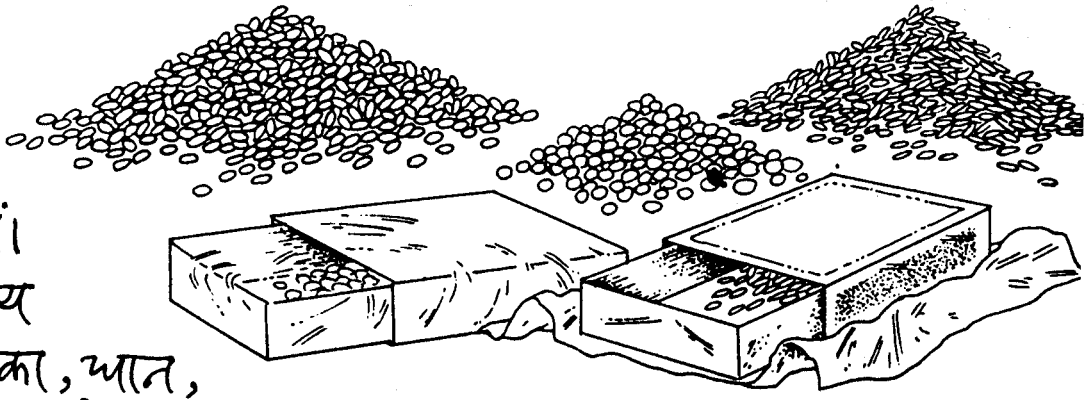

कुछ लकड़ी वाली खाली माचिस की डिब्बियाँ लें। एक-एक मुट्ठी स्थानीय अनाज जैसे गेहूँ, मक्का, धान, चना, बाजरा आदि लें। बच्चों को एक-एक करके अनाज दिखायें, उनका नाम पूछें और उनसे बनने वाले भोजन पर चर्चा करें।
अब सभी अनाजों को आपस में मिला दें और बच्चों से उन्हे अलग-अलग ढेरियों में बाँटने को कहें। अब माचिस की दराज में एक चम्मच कोई भी अनाज डालें। माचिस का खोखा चढ़ायें। माचिस को हिलायें और बच्चों को उसकी आवाज सुनने दें। कुछ अभ्यास के बाद बच्चे सिर्फ माचिस की आवाज सुनकर उसके अंदर के अनाज को पहचान लेंगे।

सुंदर सलोने भारतीय खिलौने - सुदर्शन खन्ना

(प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट, मूल्य साठ रुपये)

सदियों से भारत में खिलौने बनाने की एक जीवंत परम्परा रही है। इन खिलौनों में प्राय: बची-खुची या फेंकी हुई वस्तुओं का उपयोग होता था। मिसाल के लिए कपड़ों की कतरनों और चिंदियों से गुड्डे-गुड़िए बनाए जाते थे। यह खिलौने त्यौहारों के समय गाँव के मेलों में बिका करते थे। इन खिलौनों में एक ओर स्थानीय मिट्टी की खुशबू होती थी तो दूसरी ओर लोक-परम्पराओं और संस्कृति की झलक मिलती थी। खिलौने भी इतने सस्ते होते थे कि गरीब से गरीब बच्चा भी उन्हे खरीद सके। बढ़ते औद्योगिकरण के साथ फैक्ट्रियों में बने प्लास्टिक के खिलौनों का बाज़ार गर्म हुआ है और लोक हस्त-कलायें धीरे-धीरे खत्म हो रही हैं।

इस किताब में खाली माचिस, पालिश की डिब्बी, सिगरेट के पैकिट, बाँस, डोरा, धागे की रील आदि साधारण चीजों से लगभग 100 अलग-अलग खिलौने बनाना बताया गया है। लेखक ने दूर-दराज़ के ग्रामीण मेलों में से बहुत से खिलौने इकट्ठे किए हैं। यह एक ऐतिहासिक पुस्तक है जिसमें भारत के लुप्त होते परम्परागत खिलौनों को संकलित किया गया है।

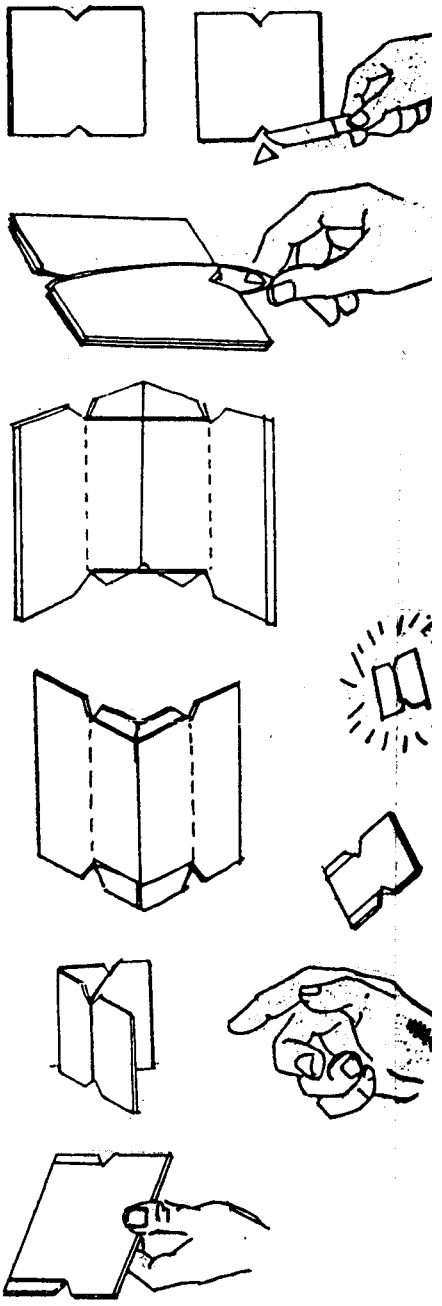

इन उछलने-कूदने वाले, आवाज करने वाले खिलौनों में न जाने कितने सारे विज्ञान के सिद्धांत छिपे पड़े हैं। अगर आप इस किताब के पन्नों को पलटेंगे तो आपको अपना बचपना याद आ जायेगा। इसमें कितने ही ऐसे खिलौने हैं जो खुद आपने स्वयं अपने स्कूल के दिनों में बनाये होंगे। क्या आप अपने बच्चों को इन खिलौनों की अनूठी दुनिया में नहीं ले जायेंगे ?

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अगस्त 1997 अंक 20

घर का अखबार

लेनिन विश्व के एक महान नेता थे। 1917 की रूसी क्रांति का उन्होंने नेतृत्व किया। इससे दुनिया के करोड़ों लोग दासता और गुलामी की बेड़ियों से मुक्त हो सके। लेनिन गरीब किसान और मजदूरों के नेता थे जबकि उन का जन्म एक समपन्न परिवार में हुआ था। घर में एक बौद्धिक माहौल था। पिता शिक्षा विभाग में ऊंचे पद पर थे। लेनिन के बड़े भाई ऐलिक्ज़ेंडर फिज़िक्स के छात्र थे। छोटी बहन स्कूल जाती थी और माँ घर पर ही रहती थीं।

लेनिन के घर में हर हफ्ते एक अखबार लिखा जाता था। अखबार के लिए घर के हरेक सदस्य को कोई लेख लिखना होता था। पिता स्कूलों के मुआयने के दौरान घटी किसी रोचक घटना के बारे में लिखते। माँ भोजन सम्बंधी लेख अथवा कविता लिखतीं। भाई क्योंकि विज्ञान के छात्र थे इसलिए वह नई वैज्ञानिक खोजों के बारे में लिखते। लेनिन अपने स्कूल के अनुभवों के बारे में लिखते और छोटी बहन अखबार के लिए चित्र बनाती। यह चार पन्ने का अखबार हाथ से लिखा जाता था। इतवार वाले दिन, नाश्ते की मेज पर अखबार को सामूहिक रूप से पढ़ा जाता था। अखबार पढ़ने के बाद ही सब लोग नाश्ता खाते थे।

बचपन के इन संस्कारों का लेनिन के जीवन पर गहरा असर पड़ा। बहुत साल देश से बाहर रहने के बाद जब लेनिन रूस वापिस लौटे तो सबसे पहले उन्होंने एक राष्ट्रीय अखबार शुरू किया। इस अखबार का नाम था 'इस्करा' यानि चिंगारी। इस अखबार ने रूस में अलग-अलग गुटों को एक सूत्र में बाँधा और रूसी क्रांति में एक अहम भूमिका निभाई

बचपन में पड़े अच्छे संस्कार ही इंसानियत की बुनियाद हैं। अगर बचपन में बच्चों को एक अच्छा, सरल और बौद्धिक माहौल मिलेगा, तो वह बड़े होकर अवश्य प्रतिभाशाली बनेंगे।

प्रेम के बीज

प्रेमजी भाई जिला राजकोट, गुजरात में रहते हैं। एक दिन उन्होंने एक ग्वाले की कहानी सुनी। इस ग्वाले ने अपना सारा जीवन पेड़ लगाते हुए बिताया। उसने 35 साल अथक मेहनत करी और 50 किलोमीटर लम्बा व 10 किलोमीटर चौड़ा एक घना जंगल खड़ा कर दिया। यह सच्ची कहानी प्रेमजी भाई के दिल को छू गई। उसी दिन से प्रेमजी ने अपने पूरे जीवन को पेड़ों की सेवा में लगा दिया। शुरू में वह अकेले ही गड्ढे खोदते और बीज बोते। लोग उन्हें सनकी और सिरफिरा कहते। लेकिन धीरे-धीरे प्रेमजी की बात लोगों को समझ में आने लगी। लोग उनके काम में हाथ बँटाने लगे। गाँव वाले और आस-पास की संस्थायें भी उनके काम में सहयोग करने लगीं।

जहाँ कभी बंजर, पथरीली जमीन थी और गर्म तेज लू भरी हवायें चलती थीं, वहाँ आज देसी बबूल, पलाश, आँवला, नीम, जामुन और अनेक फलों के पेड़ लहलहा रहे हैं। पेड़ों के नीचे घास और औषधी के पेड़ हैं। प्रेमजी ने अधिकतर पेड़ चारागाह, गाँव की बंजर जमीन, सड़कों के किनारे, रेल की पटरियों के दोनों ओर व खेतों की मेड़ों पर लगाए हैं। प्रेमजी जी जान से मेहनत करने के साथ-साथ इन पेड़ों पर पैंतीस लाख रुपये भी खर्च कर चुके हैं। वह अभी तक एक करोड़ पेड़ लगा चुके हैं।

प्रेमजी भाई अगर ग्वाले की कथा सुन कर इतने सारे पेड़ उगा सकते हैं तो क्या हम प्रेमजी भाई के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने घर व गाँव को हरा-भरा नहीं कर सकते? प्रेमजी भाई से आप इस पते पर सम्पर्क कर सकते हैं: प्रेमजी भाई पटेल, गाँव भायावदर, पोस्ट उमलेटा, जिला राजकोट (गुजरात)

साथ पच्ची

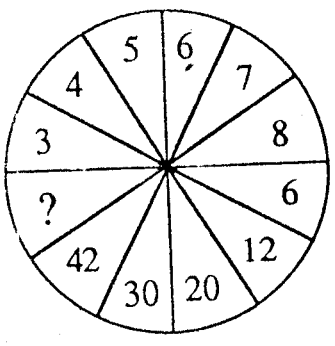

इस गोले में संख्याएँ एक खास क्रम में भरी गई हैं। उस क्रम को ढूँढो और बताओ कि प्रश्न-चिन्ह (?) वाले खाने में कौन सी संख्या आएगी?

चार गोटियाँ रखी हैं। किसी एक गोटी की जगह बदलकर ऐसा कुछ करो कि गोटियों से दो सीधी लाइन बनें। और हर लाइन में तीन गोटियाँ हों।

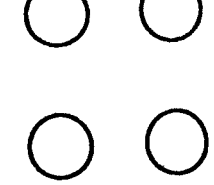

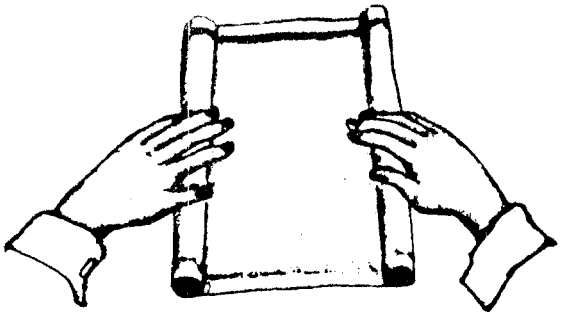
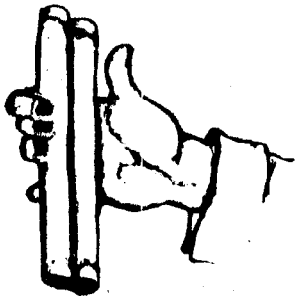
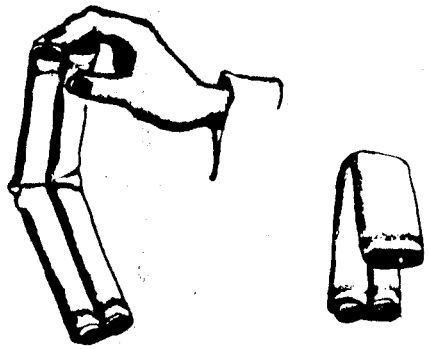

रूमाल की गुड़िया, आफत की पुड़िया

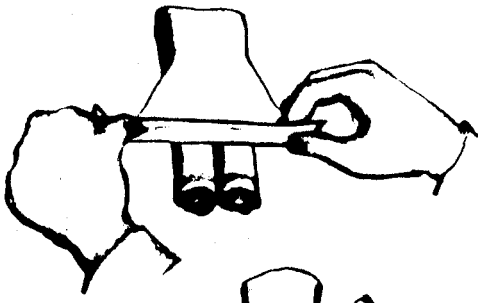
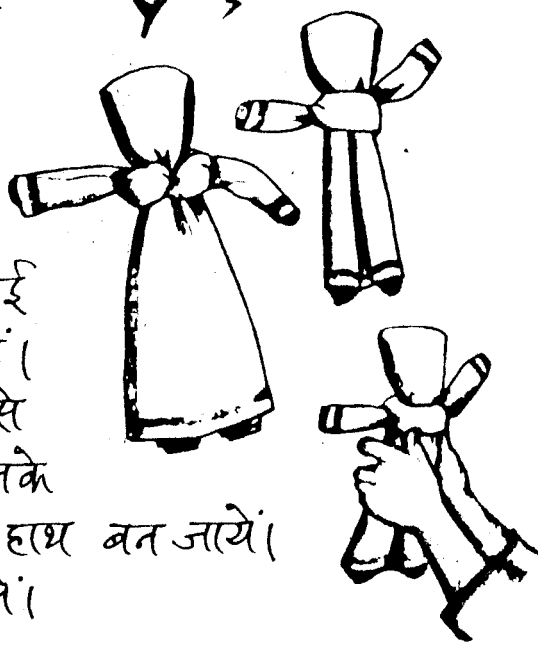

इस गुड़िया को बनाने में कैंची, गोंद आदि कुछ भी नहीं लगेगा। आपको केवल एक बड़े रूमाल की ज़रूरत पड़ेगी। अगर रूमाल न भी हो तो किसी पुरानी धोती या गमछे में से 30 सेंटीमीटर भुजा का एक चौकोर फाड़ लें।

पहले कपड़े को सपाट कर फर्श पर बिछा दें। अब दो विपरीत सिरों को गोल-गोल मोड़ते हुए उन्हें बीच तक लायें। इस तरह कपड़े की दो लम्बी लोई बन जायेंगी। इस कपड़े की बेलन को आधे में मोड़ें। इसके बाद ऊपर के हिस्से की कुछ तहें खोलें और उसे ऊपर की ओर मोड़ें। तहों को बस इतना खोलें कि उनके सिरों से नीचे गाँठ बंध जाए और उससे गुड़िया के हाथ बन जायें। अब इस प्यारी सी गुड़िया से आप मन भर कर खेलें।

स्थानीय मान का साँप

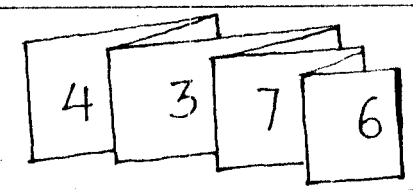

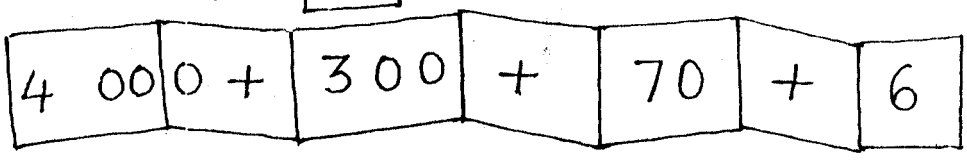

स्थानीय मान समझने में छोटे बच्चों को अक्सर मुश्किल आती है। कागज के बने इस साँप से स्थानीय मान की अवधारणा बच्चे आसानी से समझ जायेंगे।

एक कागज की पट्टी को चित्र में दिखाए अनुसार मोड़िए। पट्टी मोड़ने के बाद उसपर कोई संख्या जैसे 4376 लिखिए। पट्टी के पिछे भाग में स्थानीय मान के शून्य और जोड़ का चिन्ह (+) लिखिए। पट्टी बंद होने पर संख्या 4376 दिखेगी, पर उसे खोलने पर संख्या के सभी घटक - जैसे हज़ार, सैकड़ा, दहाई और इकाई स्पष्ट दिखाई पड़ेंगे।

दुनिया सबकी – सफ़दर हाशमी (प्रकाशक सहमत मूल्य 20/-)

एक ओर हिन्दी के कवि बच्चों को फौजी ड्रेस पहना कर, हाथ में बंदूक थमाकर 'वीर तुम बढ़े चलो' की धुन पर लेफ्ट-राइट करवाने से नहीं थकते। दूसरी ओर ईश्वर स्तुति, माता-पिता और गुरूजनों का आदर, देश प्रेम, मेरा भारत महान जैसे आदर्श ही बाल गीतों में भरे रहते हैं। बहुत कम लेखक बच्चों की दुनिया को समझते हैं।

सफ़दर हाशमी को बाल मन की गहरी समझ है। 'दुनिया सबकी' बच्चों की कविताओं का एक नायाब संकलन है। इतनी अच्छी बाल-कवितायें मैंने पहले कभी नहीं पढ़ीं। सफ़दर की भाषा भी बोल-चाल की हिन्दुस्तानी है। एक राजनैतिक कार्यकर्ता की हैसियत से उन्होंने समाज के तमाम तबकों को काफी करीबी से देखा था। इसमें 'किताबें' नाम की कविता तो निराली है। आज़ादी के 50 वर्ष बाद इस कविता का आनंद लीजिए।

आज़ादी

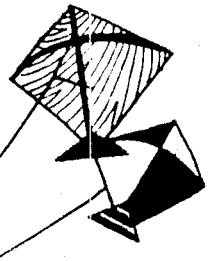

कल ही शाम को शर्माजी ने
टोपी नई खरीदी
घर पर टी.वी. देख रहे हैं
पापा, मम्मी, दीदी

सब ही कहते आज के दिन
आज़ाद हुआ था देश
आज के दिन ही अंग्रेजों का
राज हुआ था शेष

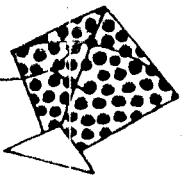

लालकिले के आसपास है
आजादी का मेला
सबसे ऊपर नाच रहा है
झंडा एक अकेला

अपनी तो कुछ समझ न आये
आजादी और देश
हम तो घर से देख रहे हैं
पतंग-पतंग के पेच

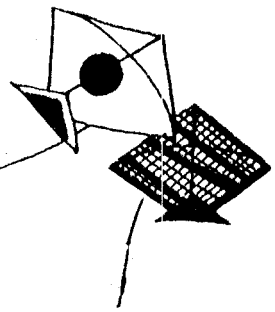

कदम मिलाते, बैंड बजाते
फौजी आते जाते
पूरे लान में बच्चे बूढ़े
चने मुरमुरे खाते

हम से कोई पूछे: "बच्चों
आज़ादी क्या होती है?"
हम कह देंगे, "उस दिन सबकी
पूरी छुट्टी होती है।"

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 21, सितम्बर 97

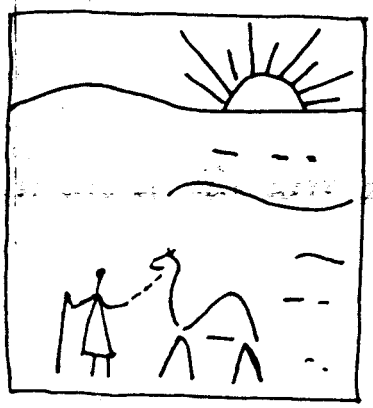

सबसे सस्ता सोलर-कुकर

आजकल लकड़ी, मिट्टी-तेल, ईंधन आदि की बहुत कमी है। परन्तु क्या हम सूरज की धूप से खाना नहीं पका सकते? और राजस्थान में धूप की क्या कमी?

इस सरल सूरज के चूल्हे को श्री सुरेश वैद्यराजन ने बनाया है। वह पिछले दो महीनों से रोज इस पर अपनी खिचड़ी पका रहे हैं। मैंने आज तक इतना सरल और सस्ता सोलर-कुकर कभी नहीं देखा।

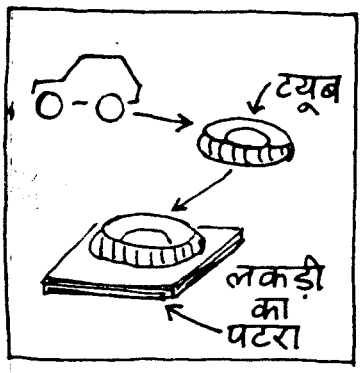

कहीं से मारुती कार का एक पुराना ट्यूब लायें। अगर उसमें पंचर हो तो जोड़ लें। ट्यूब में हवा भर कर उसे एक लकड़ी के पटरे पर रख दें। फिर एक बर्तन में (जो बाहर से काला हो) खिचड़ी का सारा सामान जैसे दाल-चावल-नमक-मसाले-पानी आदि डालें। बर्तन का ढक्कन बंद कर उसे ट्यूब के बीचोंबीच रख दें। अब ट्यूब को काँच के एक टुकड़े से पूरी तरह ढक दें। लगभग तीन घंटे धूप में रखने के बाद खिचड़ी अच्छी तरह से पक जायेगी।

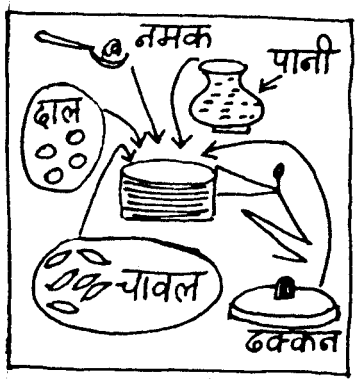

धूप की किरणें काँच में अंदर घुस कर कैद हो जाती हैं। इससे धीरे-धीरे तापमान बढ़ता है और खिचड़ी पकती है। अगर आप इस प्रयोग को स्कूल में करेंगे तो बच्चे सूर्य की ताकत के बारे में ठोस रूप में समझेंगे। यह न केवल एक अनूठा वैज्ञानिक प्रयोग है, परन्तु खाना पकाने और जिन्दा रहने का भी एक नायाब तरीका है।

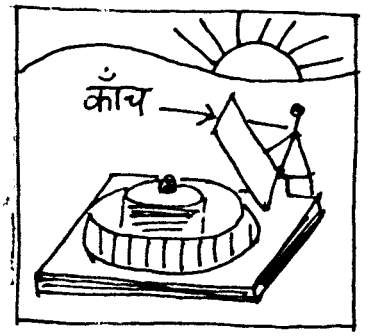

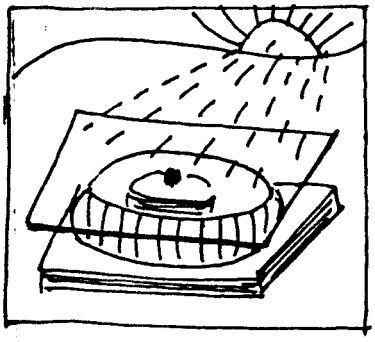

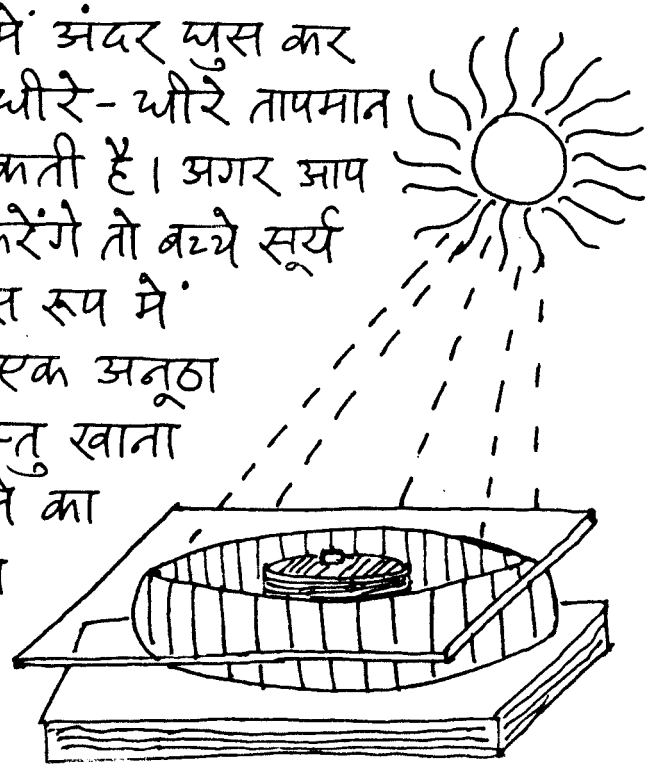

दानी पेड़

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखों से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ छिपा-छुली खेलता। जब वह थक जाता तो वह पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का भी पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का अब जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा 'मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?'

पेड़ ने कहा 'पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हे बाजार में बेंच दो। इससे तुम्हे पैसे मिल जायेंगे।'

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया।

पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। 'मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?' उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा 'घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखें काट कर उनसे घर बना लो'। युवक पेड़ की सब शाखें काट कर ले गया।

पेड़ का बस तना बचा रह गया।

पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अब अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था। एक दिन वह पेड़ के पास आया और बोला 'मुझे व्यापार करने सात-समुद्र पार जाना है। मुझे एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?'

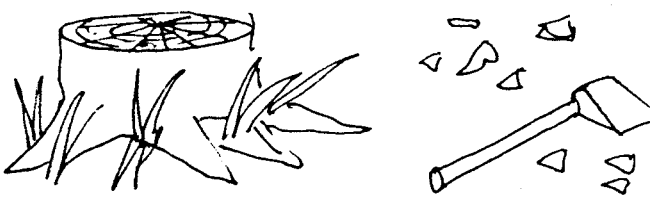

पेड़ ने कहा 'नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।'

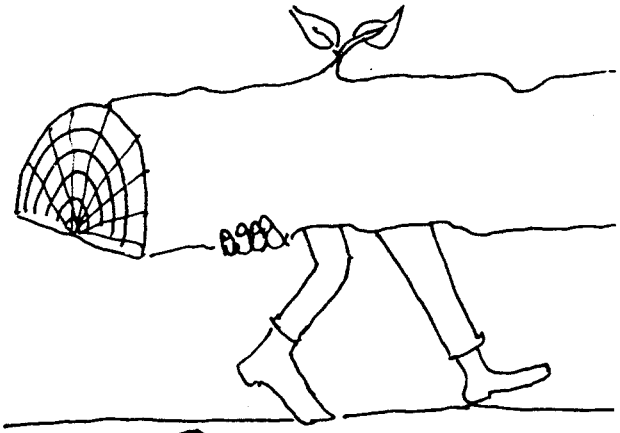

आदमी ने पेड़ का तना काट कर नाव बनाई
पेड़ अब भी खुश था।
पेड़ का अब केवल ठूंठ बचा था।
इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। वह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देख कर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा 'बेटा मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परन्तु अब मेरे पास बचा ही क्या है। मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखें नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूँ?'

बूढ़े ने कहा 'तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखों से झूलने की नहीं है। तने पर चढ़ने का दम अब मुझ में नहीं रहा। मैं बहुत थका हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।'

'तो फिर आओ और मेरे ठूंठ पर शांति से बैठो' पेड़ ने कहा।
बूढ़ा ठूंठ पर बैठ कर सुस्ताने लगा।
पेड़ अब भी बहुत खुश था।

(मूल कहानी 'दी गिविंग ट्री' शेल सिलवरस्टाइन)

माचिस के जानवर

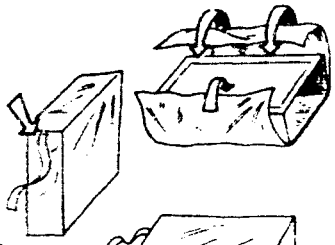

आप चाहें तो माचिस के अलग-अलग जानवरों का एक पूरा चिड़ियाघर बना सकते हैं।

एक खाली माचिस का खोखा लें और उस पर भूरा कागज चिपका दें। उसकी दराज से एक पूंछ जैसी पतली पट्टी चिपकायें। अब दराज को खोखे में डाल दें। खोखे की मसाले वाली सतह पर एक कील या कम्पास की नोक से चार छेद करें और उनमें पैरों के लिए चार माचिस की तीलियाँ फँसा दें। एक पतले कार्ड पर जानवर का दोहरा चेहरा बनायें। उसे आधे में मोड़ कर खोखे और दराज के बीच भिरी में फँसा दें। थोड़ा गोंद लगा दें जिससे कार्ड निकले नहीं

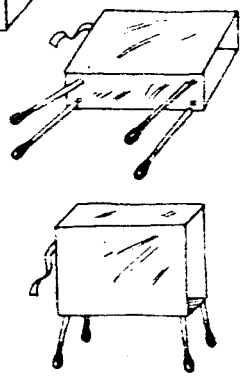

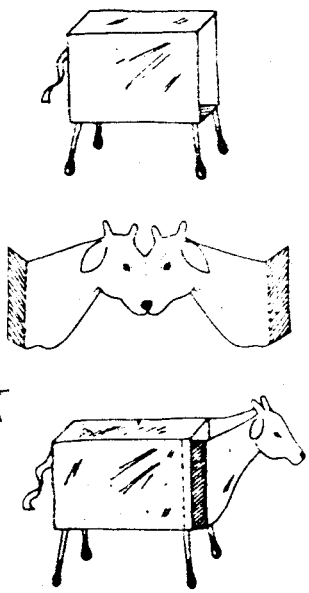

जानवर बनाते समय बच्चों के हस्त-कौशल का विकास तो होगा ही। साथ-साथ, माडल बनाने के दौरान वह जो कुछ कहेंगे उससे उनके वर्णन करने की क्षमता भी बढ़ेगी।

तीलियों के नमूने

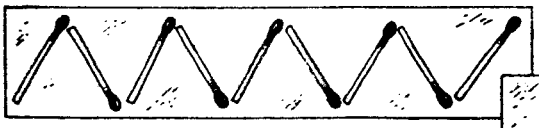

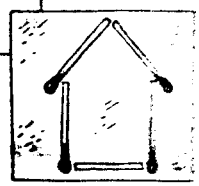

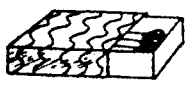

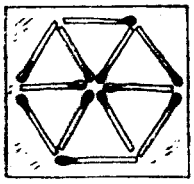

कुछ पुराने कार्ड लें। चित्र में दिखाए नमूनों के अनुसार उन पर माचिस की तीलियाँ सजायें और उन्हे फेवीकॉल से चिपकायें। नमूनों को सुरक्षित रखने के लिए उन्हे पारदर्शी प्लास्टिक की थैलियों में बंद कर दें।

अब बच्चा अपनी मन-मर्जी के अनुसार कोई भी नमूना चुने। फिर वह फर्श पर तीलियाँ सजा-सजा कर उस नमूने की नकल उतारे। बच्चों को नये-नये नमूने बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। इस क्रिया से बच्चों को अक्षर पहचानने और लिखने में आसानी होगी।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अक्टूबर 1997, अंक 22

प्रेस्टोली स्कूल

बात 1930 की है। टेडी ओनील 26 वर्ष के एक उत्साही शिक्षक थे। उनकी आँखों में अच्छी शिक्षा का एक सपना था। उन्हे इंग्लैण्ड में प्रेस्टोली नाम की एक मजदूर बस्ती के स्कूल में भेज दिया गया। वहाँ बेहद गरीबी थी और साधनों का बहुत अभाव था। न तो वहाँ किताबें थीं और न ही बच्चों के बैठने के लिए कोई बेंच-कुर्सी। बच्चों में भी जानने की कुछ इच्छा न थी। बड़ा ही नीरस वातावरण था।

टेडी को बढ़ईगीरी का शौक था। अगले दिन उसने अपने औज़ार निकाले और बच्चों के लिए किताबों की अलमारी बनाने बैठ गया। स्कूल के एक कमरे में पुराना फर्नीचर भरा था। उसने उन्ही को काट-पीट कर बच्चों के बैठने के लिए बेंच बनायीं। टेडी को काम करता देख बच्चे भी ठोका-पीटी में लग गए। किसी ने गुड़िया का घर बनाया किसी ने चिड़िया का पिंजड़ा, तो किसी ने खरगोश का घर बनाया। पढ़ाई की जगह कई दिनों तक लकड़ी के विभिन्न सामान बनाने का काम चलता रहा।

जब बच्चों की किताबों की अलमारी बन गई तब बच्चे किताबों की माँग भी करने लगे। कुछ बच्चों ने खरगोश के घर में सचमुच के खरगोश पाले। अब वह खरगोशों की जीवन चर्या और खान-पान के बारे में जानने को उत्सुक थे। जिन बच्चों ने पिंजड़े में चिड़ियें पाली थीं, वह चिड़ियों के बारे में और जानना चाहते थे। क्योंकि यह तमाम जानकारी किताबों में थी, इसलिए बच्चे अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के लिए किताबें पढ़ने लगे। किताबों में उन्हे अब बहुत आनंद आने लगा।

टेड ओनील एक क्रांतिकारी शिक्षक थे। उन्हे रट्टू-तोता स्कूलों से चिढ़ थी। 30 साल तक उन्होंने प्रेस्टोली के स्कूल में पढ़ाया। सारी दुनिया के लोग उस स्कूल को देखने आते थे। उनके काम से गतिविधियों पर आधारित शिक्षण पध्दति को बहुत बल मिला। उनके अनुभव एक अत्यंत रोचक पुस्तक में लिखे हैं। पुस्तक का नाम है 'इडियट स्कूल'।

विचारों का महत्व

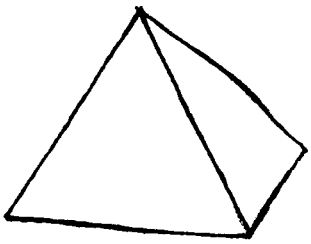

मिस्त्र की 5,000 साल पुरानी पिरामिड की खुदाई का काम चल रहा था। खुदाई के दौरान एक मुट्ठी गेहूँ के दाने पाये गए। जब उन बीजों को बोया गया तो उनमें से पौधे निकल आए। देखने वाले आश्चर्य से दंग रह गए।

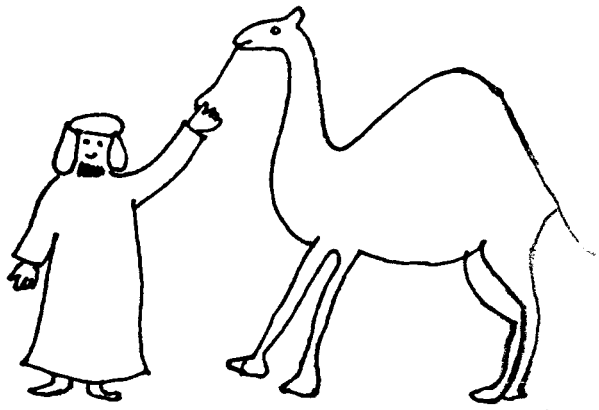

अच्छे विचार, बीजों की तरह ही, जीवन से भरे होते हैं। वह सैकड़ों सालों तक बीजों की तरह सोए रहते हैं। जब किसी संवेदनशील दिल में विचारों को जगह मिलती है, वह तुरंत पनप उठते हैं।
बहुत से विचारों को मैं मरा और निर्जीव समझता था।
गौर से देखने पर मैंने पाया कि मेरा दिल ही सूखा था।
फिर उसमें विचार कैसे जड़ पकड़ते ?

माचिस के लोग

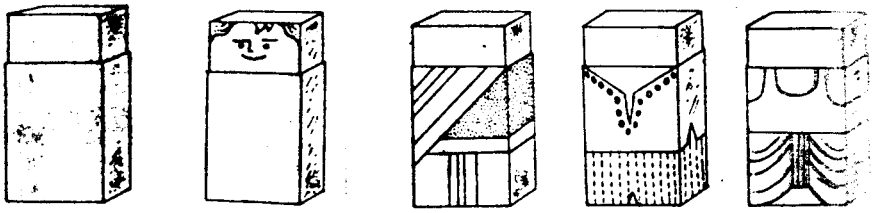

एक खाली माचिस लें।
उसकी दराज और खोखे को चित्र में दिखाए अनुसार गोंद से चिपकायें।
ऊपर की दराज पर एक हल्के रंग का कागज चिपकायें। उस पर चेहरा बनायें। बालों को काला रंगें या रंगीन कागज चिपकायें।

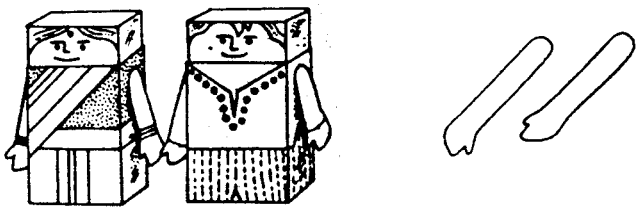

माचिस के खोखे पर रंगीन कागज चिपकायें। कपड़ों के लिए किसी दूसरे रंग के कागज के टुकड़े चिपकायें।
चेहरे के रंग वाले कागज के दो हाथ काटें और उन्हे माचिस के दोनों ओर चिपका दें।
चित्र में एक आदमी और औरत की जोड़ी दिखाई गई है।
आप इस तरह से बहुत से लोगों के माडल बना सकते हैं।

साभार : मेरी ऍन दासगुप्ता

गत्ते के जानवर

चित्र में दिखाए नमूनों को कापी के कवर वाले गत्ते पर बनायें और काटें। इन जानवरों को बनाने में कील-हथौड़ी की जरूरत नहीं पड़ेगी। पैरों के खाँचे शरीर में आसानी से फिट हो जायेंगे।

आप जब चाहें तब इन जानवरों के टुकड़ों को अलग-अलग कर सकते हैं और उन्हे चपटा करके एक प्लास्टिक की थैली में रख सकते हैं।

इसी प्रकार एक बिल्ली,
एक घोड़ा,
एक गाय भी
बनायें....

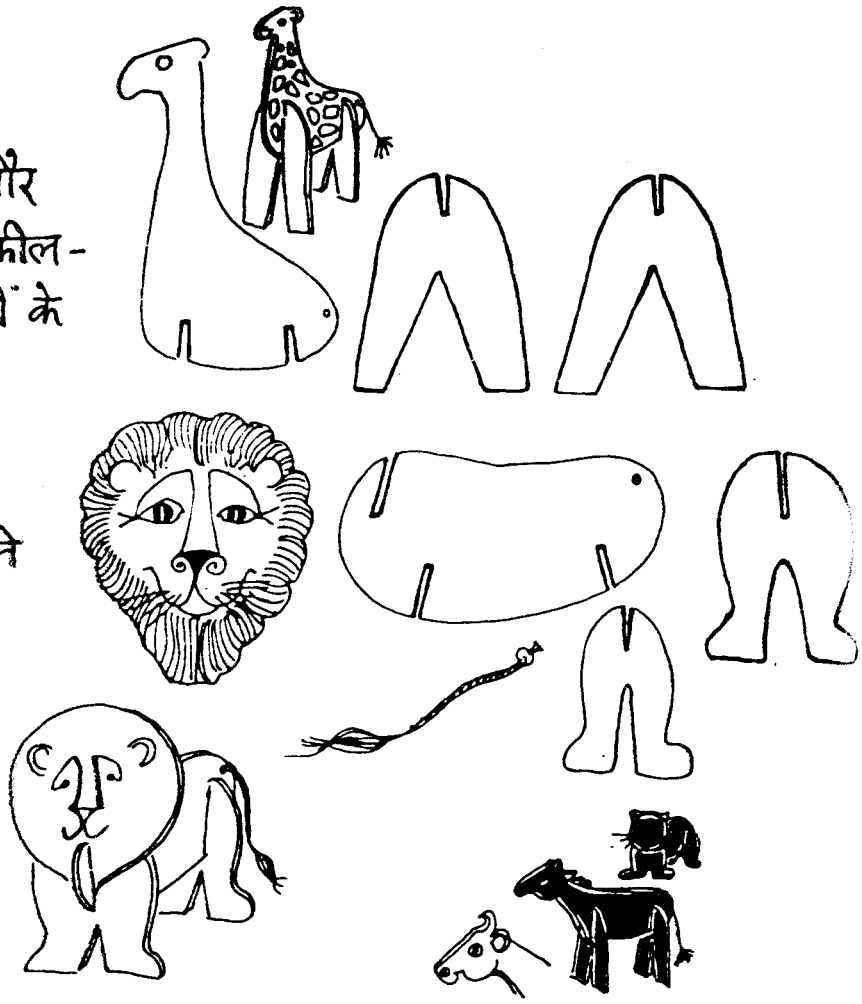

चलती-फिरती आँखें

एक मोटे कागज का चेहरा बनायें। आँखों के दोनों ओर कागज को काटें। अब एक कागज की पट्टी लें। आँखों के बीच की दूरी छोड़ कर पट्टी पर अलग-अलग तरह की आँखें बनायें।

इस पट्टी को चेहरे के कटे हिस्सों में से पिरो दें। पट्टी खींचने पर आपको चलती-फिरती आँखे दिखेंगी।

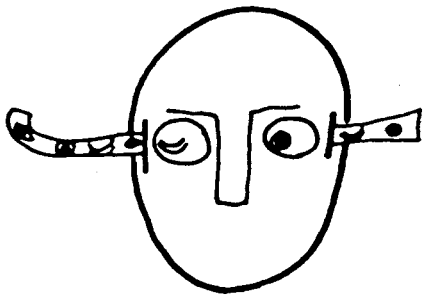

इसी प्रकार आप हँसता, रोता, मुस्कुराता हुआ मुँह भी बना सकते हैं।

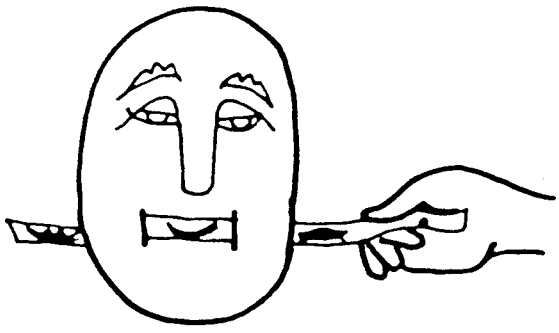

बच्चे की भाषा और अध्यापक

लेखक कृष्ण कुमार (एन.बी.टी. मूल्य 24/-)

यह एक महत्वपूर्ण किताब है। पिछले दस सालों में सैंकड़ों स्कूलों ने इसे स्वेच्छा से अपनाया है। भाषा संबंधी यह एक अनूठी पुस्तक है। सच कहूँ तो गागर में सागर है। सारी दुनिया में भाषा पर बहुत शोध हुआ है। बहुत से कर्मठ शिक्षकों ने भी भाषा को लेकर नये-नये प्रयोग किए हैं। इन सब का निचोड़ इस पुस्तक में बड़े सरल शब्दों, साधारण गतिविधियों और उदाहरणों के माध्यम से समझाया गया है। पुस्तक का एक अंश प्रस्तुत है:

घर के अंदर या गली में अकेले या टोली बनाकर खेलते, रस्सी कूदते, दौड़ते, उछलते, गेंद से टप्पा मारते हुए - बच्चे जो पंक्तियाँ दोहराते हैं सुनिए। अपने इलाके में बच्चों के पारंपरिक खेल-गीत इकट्ठे कीजिए। आपको जो खेलगीत मिलें, उन्हे तरतीब से लिख लीजिए। एक ही गीत के विविध रूपों को ढूँढिए और दर्ज कर लीजिए। उन्हे सुधारिए मत। बच्चों के खेल-गीत भाषा के बेहद रचनात्मक और ताकतवर इस्तेमाल के निराले स्रोत हैं और वह भाषा के कई बुनियादी कौशल (जैसे पढ़ना) सिखाने के बहुत उपयोगी साधन हैं। कुछ पारंपरिक खेलगीतों के नमूने हैं:

सूख-सूख पट्टी
चंदन गट्टी।
राजा आया
महल चुनाया।
झंडा गाड़ा
बजा नगाड़ा।
रानी गई रूठ
पट्टी गई सूख।

शान्ती मन भान्ती
कहना क्यों नहीं मानती
पंडित जी बुलाने आए
बस्ता क्यों नहीं बाँधती

'अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो
अस्सी नब्बे पूरे सौ
सौ में लगा धागा
चोर निकल के भागा।'

संकलन: अरविन्द गुप्ता चित्रकार: अविनाश देशपांडे

प्रकाशक: लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी नवम्बर 1997, अंक 23

खुशियों का स्कूल

वसीली सुखोम्लीन्स्की सोवियत रूस के प्रसिद्ध शिक्षाविद् थे। दूसरे महायुद्ध के दौरान प्राथमिक स्कूल के अध्यापक 23 वर्षीय वसीली मोर्चे पर लड़ने चले गए दुश्मन के कब्जे में आ गए इलाके में उनकी पत्नी वेरा रह गयीं। वह दुश्मन से लड़ने में छापामारों की मदद करती थीं। एक दिन फासिस्ट दरिंदों ने उन्हें धर पकड़ा। कैद में उन्हें बेटा हुआ। वेरा को तमाम अमानवीय यातनायें पहुँचाई जिससे व छापामारों का नाम उगल दें। लेकिन साहसी वेरा ने मुँह न खोला। तब जल्लादों ने माँ की आँखों के सामने उसके कुछ दिन के बच्चे को मार डाला और फिर वेरा की भ जान ले ली। वसीली लड़ाई में घायल होकर लौटे। उनकी छाती में धातु के टुकड़े धंसे थे और उनके हृदय में पत्नी और बच्चे की मौत का गहरा शोक था।

वसीली 29 साल तक अपने गाँव पाव्लिश में 'खुशियों का स्कूल' चलाते रहे। युद्ध के कारण बहुत से बच्चे अनाथ हो गए थे। बच्चों के दिल मुरझा गए थे वसीली ने अपनी निष्ठा और लगन से इन बच्चों के जीवन में दुबारा खुशी भर दी। वह हर बच्चे की पृष्ठभूमि और पारिवारिक जिंदगी को बहुत करीबी से जानते थे। स्कूल के प्रिंसिपल होने के बावजूद वह दिन भर बच्चों को पढ़ाते थे। बच्चों की संगत में उन्हें लगातार नई उर्जा मिलती थी।

संसार के अनेक प्रगतिशील शिक्षाविद् यह कहते आए हैं कि बच्चों की शिक्षा और उनका चरित्र-निर्माण, यह दोनों चीजें आपस में जुड़ी हैं। वसीली ने अपने व्यवहार और सिद्धांत में इस सपने को सच कर दिखाया। उनके अनुसार बच्चों को 'योग्य' या 'अयोग्य' करार दिए बिना भी उन्हें अच्छी शिक्षा दी जा सकती है।

सुखोम्लीन्स्की ने वैसे तो कई किताबें लिखीं परन्तु उनकी सबसे मशहूर पुस्तक है 'बाल हृदय की गहराइयां'। इसमें उन्होंने माँ-बाप और शिक्षकों से अंतरंग बातचीत की है। वह लिखते हैं "मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि स्कूल के पहले के कुछ साल तथा स्कूल के आरंभिक वर्ष ही बहुद हद तक इंसान का भविष्य निर्धारित करते हैं"।

"पहले-पहले जब बच्चे स्कूल में आते हैं तो उनके हृदय में कितनी उमंगे, कितना रोमांच होता है। अगर हम और आप बच्चों की आँखों में जिज्ञासा की चमक जगाए रख सकें, तो बच्चे अवश्य बड़े होकर अच्छे इंसान बनेंगे।

जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ?

(वार्या, चौथी कक्षा, वसीली सुखोम्लीन्स्की के स्कूल की छात्रा)

जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ? खदान मजदूर कहता है : सबसे आवश्यक है कोयला । अगर कोयला न हो तो मशीनें रुक जाएं, लोहा न बने, लोग ठंड से अकड़ जाएं।

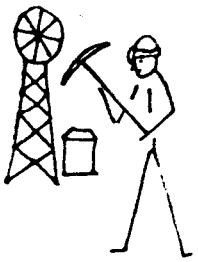

लोहार कहता है : सबसे आवश्यक है - लोहा। लोहे के बिना न कोई मशीन बन सकती है, न कोयला निकाला जा सकता है, न अनाज उगाया जा सकता है, न ही कपड़ा बनाया जा सकता है।

किसान कहता है : सबसे आवश्यक है रोटी । रोटी के बिना न खदान मजदूर काम कर सकता है, न लोहार, न पायलेट और न फौज का सिपाही ही।

किसकी बात सच है ? जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ? सबसे आवश्यक है श्रम - यानि मेहनत। श्रम के बिना न कोयला मिल सकता है, न लोहा और न रोटी ही।

माचिसों के नमूने

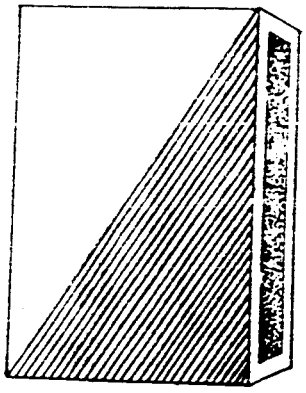

इसके लिए आपको एक जैसी 4 से 20 माचिस की खाली डिब्बियों की आवश्यकता होगी। माचिसों की लेबिल वाली सतहों पर सफेद कागज चिपका दें। फिर चित्र में दिखाए अनुसार सभी माचिसों को आधा रंग दें।

ऐसी चार माचिसों को अलग - अलग तरह से सजाकर आप कई मनमोहक नमूने बना सकते हैं।

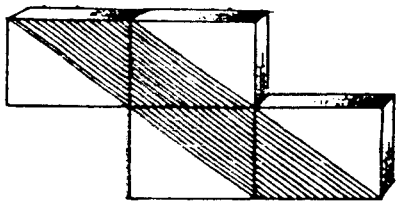

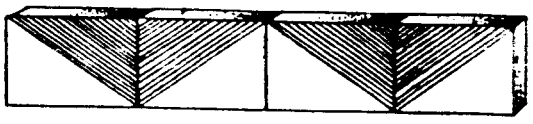

अगर अधिक डिब्बियाँ हों तो उनको विभिन्न तरीकों से सजाकर आप अनेक सुंदर नमूने बना सकते हैं।

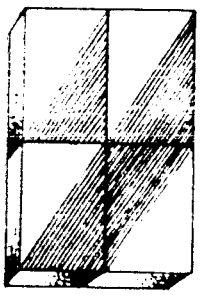

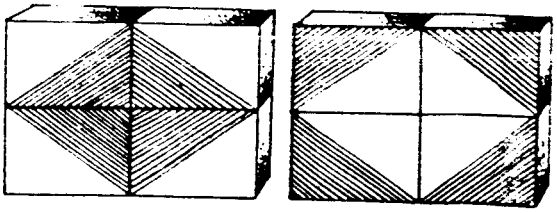

बच्चों से आप माचिसों को चित्रों में बने डिजायन के अनुसार सजाने को भी कह सकते हैं।

कागज का हैंगर

1. किसी भी नाप का एक वर्गाकार कागज लें।
2. पहले कागज का एक कोना उसके विपरीत कोने पर रखें। इस तरह एक त्रिकोण बनेगा। उसे एक बार दुबारा मोड़ कर छोटा त्रिकोण बनायें।
3. त्रिकोण का खुला मुँह नीचे रखें। अब भुजाओं से आधा सेंटीमीटर की दूरी छोड़ कर पेंसिल से एक छोटा त्रिकोण बनायें।
4. अब काटने वाली रेखाओं को पेंसिल से बनायें।
5. कैंची से काटते समय बायें से दायें निशान तक काटें और दायें से बायें निशान तक काटें। चित्र में यह साफ-साफ दिखाया गया है।
6. अब सभी मोड़ों को सावधानी से खोलें।
7. एक क्लिप और धागे से इस कागज की सुंदर झालर को किसी कील से लटका दें।

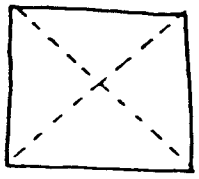

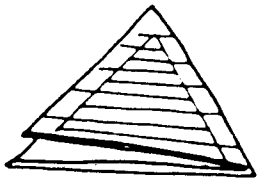

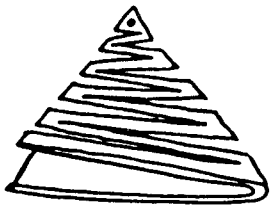

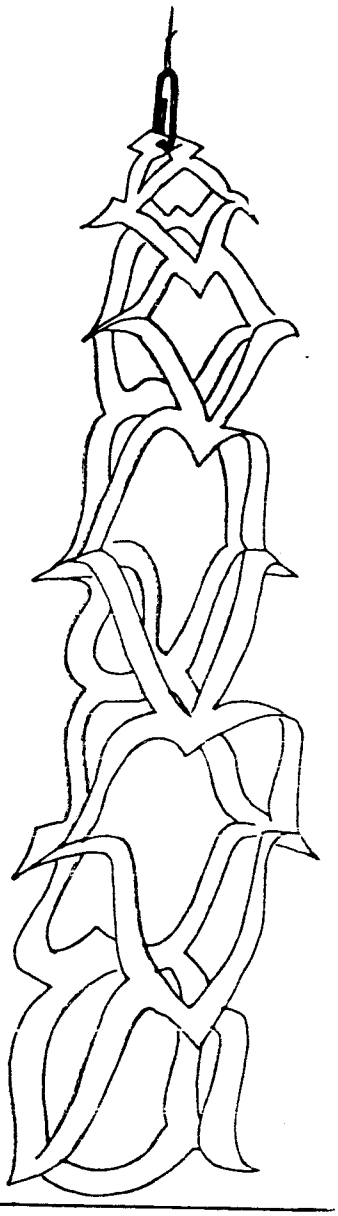

करो और समझो

मैं सुनता हूँ
तो भूल जाता हूँ

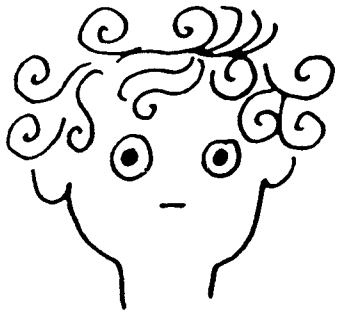

मैं देखता हूँ
तो मुझे याद रहता है

मैं करता हूँ
तो मुझे समझ
में आता है।

जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ?

(वार्या, चौथी कक्षा, वसीली सुखोम्लीन्स्की के स्कूल की छात्रा)

जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ? खदान मजदूर कहता है : सबसे आवश्यक है कोयला । अगर कोयला न हो तो मशीनें रुक जाएं, लोहा न बने, लोग ठंड से अकड़ जाएं।

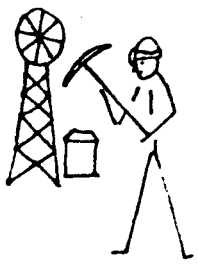

लोहार कहता है : सबसे आवश्यक है - लोहा। लोहे के बिना न कोई मशीन बन सकती है, न कोयला निकाला जा सकता है, न अनाज उगाया जा सकता है, न ही कपड़ा बनाया जा सकता है।

किसान कहता है : सबसे आवश्यक है रोटी । रोटी के बिना न खदान मजदूर काम कर सकता है, न लोहार, न पायलेट और न फौज का सिपाही ही।

किसकी बात सच है ? जीवन में सबसे आवश्यक क्या है ? सबसे आवश्यक है श्रम - यानि मेहनत । श्रम के बिना न कोयला मिल सकता है, न लोहा और न रोटी ही।

माचिसों के नमूने

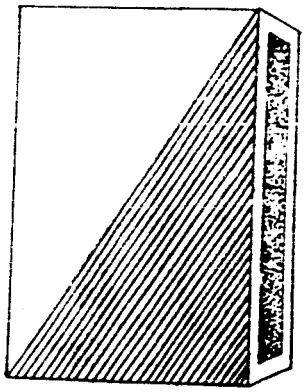

इसके लिए आपको एक जैसी 4 से 20 माचिस की खाली डिब्बियों की आवश्यकता होगी । माचिसों की लेबिल वाली सतहों पर सफेद कागज चिपका दें। फिर चित्र में दिखाए अनुसार सभी माचिसों को आधा रंग दें।

ऐसी चार माचिसों को अलग - अलग तरह से सजाकर आप कई मनमोहक नमूने बना सकते हैं।

अगर अधिक डिब्बियाँ हों तो उनको विभिन्न तरीकों से सजाकर आप अनेक सुंदर नमूने बना सकते हैं।

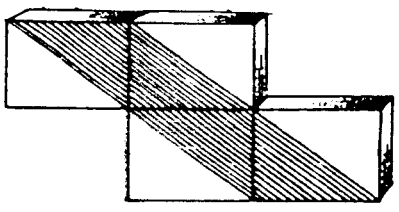

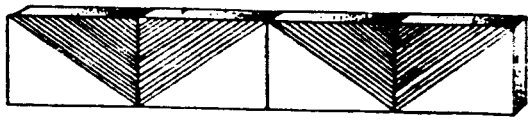

बच्चों से आप माचिसों को चित्रों में बने डिजायन के अनुसार सजाने को भी कह सकते हैं।

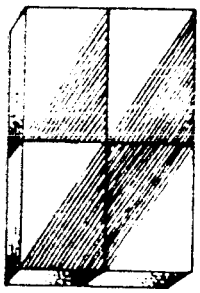

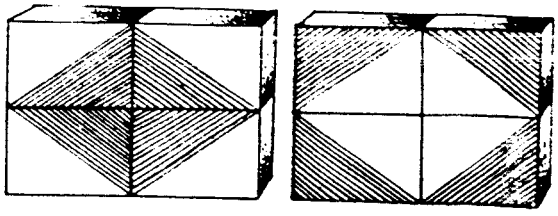

फुलझड़ी दिसम्बर 1997, अंक 24

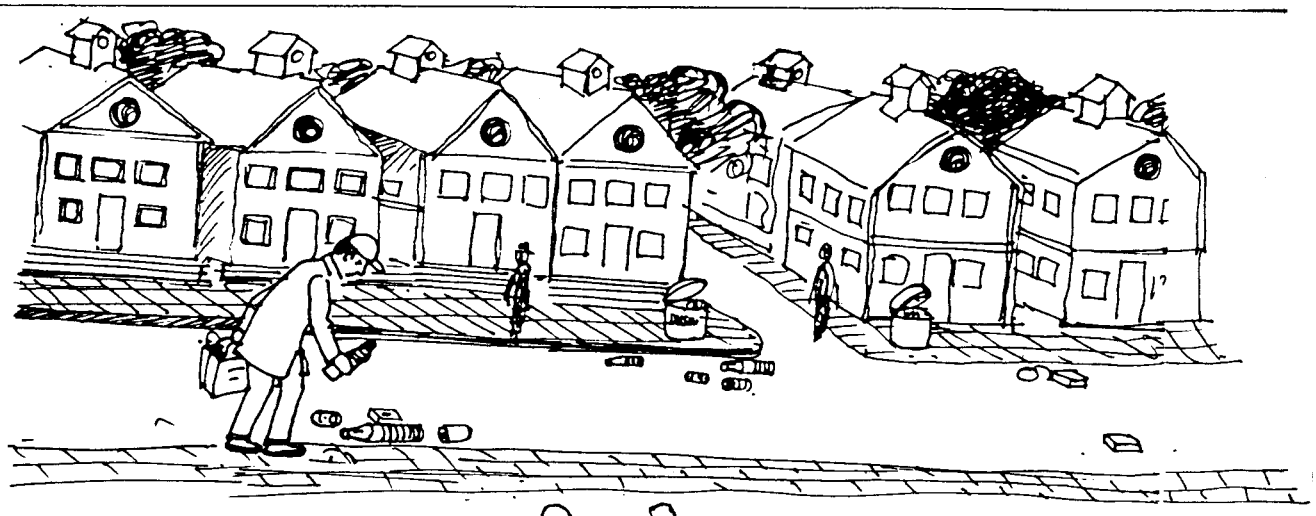

घुमक्कड़ शिक्षाविद

जॉन होल्ट दुनिया के जाने-माने शिक्षाविद थे। उन्होंने 10 पुस्तकें लिखीं। उनकी एक पुस्तक 'बच्चे असफल कैसे होते हैं' हिन्दी में भी छपी है।

तमाम लोग शिक्षक का पेशा इसलिए अपनाते हैं क्योंकि उनके पास और कोई चारा नहीं होता। दुनिया में ऐसे खुशनसीब कम ही हैं जो अपने शौक और सपनों के ज़रिए अपनी आजीविका चला पाते हैं। वे शायद बच्चों को इतनी संवेदना से इसलिए भी देख पाए क्योंकि वह पेशे से शिक्षक नहीं थे। उन्होंने तीन वर्ष अमरीकी जलसेना की पनडुब्बी पर काम किया। युद्ध से परेशान होकर उन्होंने वर्ल्ड गवरमेंट आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। चार साल उन्होंने एक स्कूल में पढ़ाया भी। वह क्लास के अपने अनुभव को एक डायरी में दर्ज करते जाते थे। उनकी पहली पुस्तक 'हाऊ चिलड्रन फेल' दरअसल उनकी डायरी का ही एक अंश थी। 1964 में छपी इस किताब से शिक्षाजगत में एक तहलका सा मचा। शिक्षा पर यह एक नायाब किताब थी - एकदम बेबाक और सुंदर। होल्ट की कलम में गजब का जादू था।

होल्ट सीधे-सादे स्वभाव के व्यक्ति थे। उन्हें अमरीकी उपभोक्ता संस्कृति से चिढ़ थी। पर्यावरण संरक्षण में उनकी बेहद रुचि थी। अपने जीवन में वे किफायत बरतते। वह एक बड़े प्लास्टिक के टब में खड़े होकर नहाते और बाद में सारे पानी को खाद के गड्ढे में डाल देते। इस खाद को वह शहर के बाग की क्यारियों में डाल आते। उन्हें अपने शहर न्यूयार्क से बहुत प्यार था। वह जब भी अपने फ्लैट से बाहर निकलते तब उनके हाथ में एक बड़ा प्लास्टिक का थैला होता। वह सड़क पर पड़ी प्लास्टिक और काँच की बोतलों को इकट्ठा करते। जब वह किसी कचरा पेटी के पास से गुजरते तो उसमें अपने थैले की बोतलें डाल देते।

1985 में कैंसर से उनकी मृत्यु हुई।

हाथ की परछाई

रात को जलती लालटेन या बल्ब की रोशनी के सामने हाथ रखने से उसकी परछाई दीवार पर पड़ती है। इन परछाईयों में न जाने कितने सारे जानवर छिपे हैं? अपने हाथों को घुमा फिरा कर इन काले जीवों का चिड़ियाघर बनाइये।

जिराफ

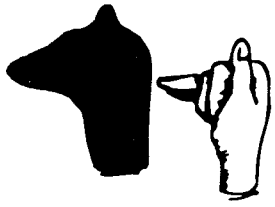

जंगली कुत्ता

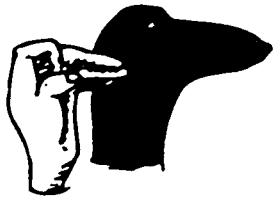

ऊँट

भालू

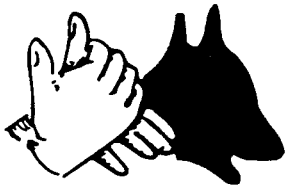

कुत्ता

भेड़िया

खरगोश

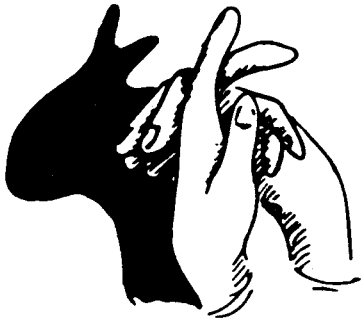

खरगोश

बकरी

हाथी

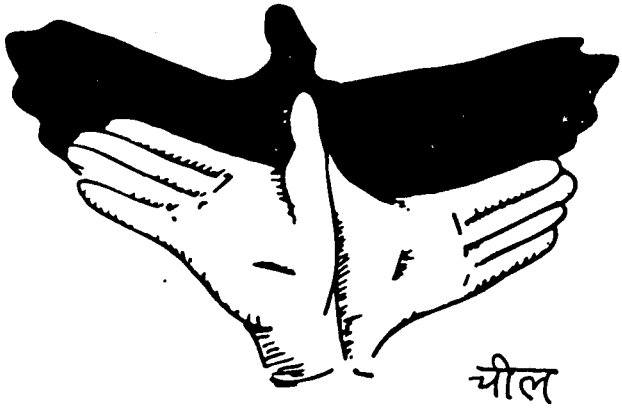

चील

गाँव का सजीव चित्र

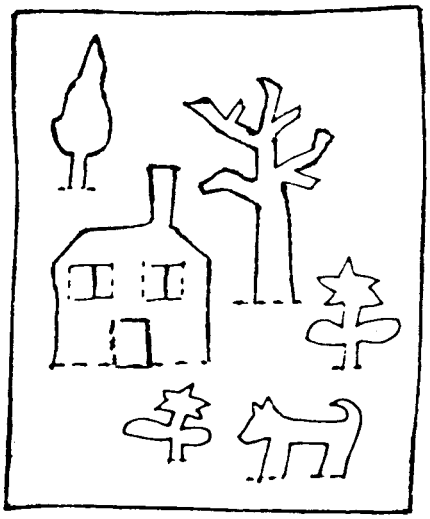

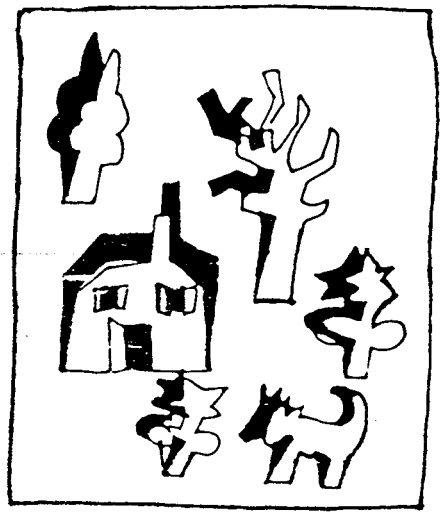

गाँव का सजीव माडल बनाने के लिए थोड़ा मोटा और रंगीन कागज इस्तेमाल करें।
अब नीचे दिए निर्देशों अनुसार बनायें

1. कागज पर गाँव का दृश्य बनायें। उसमें घर, पेड़, लोग, जानवर आदि बनायें। चित्रों के बीच में थोड़ी-थोड़ी जगह छोड़ें।
2. अब इस कागज को किसी पुरानी पत्रिका पर रखें। ठोस लाइनों को सावधानी से ब्लेड से काटें। बिन्दी वाली रेखाओं को मोड़ना है, इसलिए उन्हे मत काटें।
3. सभी आकृतियों को मोड़ कर खड़ा करें।

इस प्रकार गाँव का एक सजीव माडल बन जायेगा।
इस तरीके को इस्तेमाल करके आप अलग-अलग विषयों के कार्ड बना सकते हैं।

" अगर मुझे एक मछली दोगे
तो मैं एक दिन
खाना खा सकूंगा।

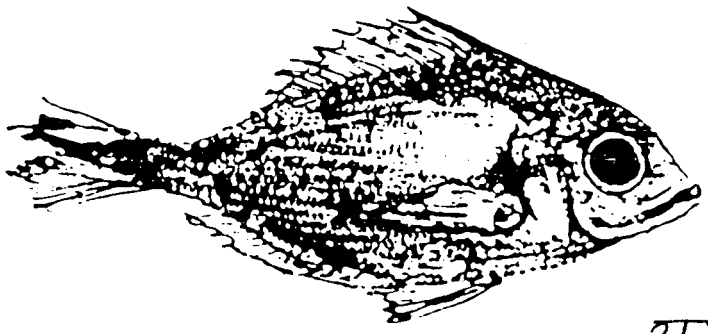

अगर मुझे मछली पकड़ना
सिखा दोगे
तो मैं सारी जिन्दगी
खाना खा सकूंगा।"

कजरी गाय झूले पर

लेखक जुज्जा और टोमस वाइजलैंडर

(प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट, मूल्य 25 रुपये)

स्कैंडिनेविया में बसा स्वीडिन देश अपने बाल-साहित्य के लिए विश्व विख्यात है। बरसों से स्वीडिन का बाल-साहित्य दुनिया की अलग-अलग भाषाओं में छपता रहा है। स्वीडिन में बच्चों की पुस्तकों की सबसे मशहूर लेखिका हैं- एसट्रिड लिंडग्रिन। स्वीडिन में शायद ही ऐसा कोई बच्चा हो जिसने उनकी पुस्तक 'पिपी लौंगस्टाकिंग' न पढ़ी हो। यह अत्यंत दुख की बात है कि यह श्रेष्ठ पुस्तक आजतक किसी भी भारतीय भाषा में नहीं छपी है। लोक जुम्बिश को इस अनूठी पुस्तक का अवश्य हिंदी अनुवाद छापना चाहिए।

'कजरी गाय झूले पर' हिंदी में छपने वाली शायद पहली स्वीडिश बाल पुस्तक है। कहानी एक मतचली गाय की है, जो दिन भर खलिहान में खड़े रह कर जुगाली करने की बजाए कुछ और करना चाहती है। वह बच्चों की तरह झूला झूलना चाहती है। वह एक दिन चुपके से आँख बचाकर खिसक लेती है और जंगल में साइकिल चलाती हुई जाती है। वहाँ पर उसका मित्र कौवा रहता है। पहले तो कौवा झूले की रस्सियों को पेड़ पर बाँधने से मना कर देता है। वह कहता है "कजरी गाय, तुम एक गाय हो। थोड़ी अलग तरह की गाय जरूर हो, फिर भी हो तो गाय ही। गायें भी कभी झूला झूलती हैं?" परन्तु कजरी की खुशामद के बाद कौआ झूला बाँध देता है। फिर कजरी गाय मस्ती में झूलती है। उसके दिल में उमंग है और जीने की असीम चाह है।

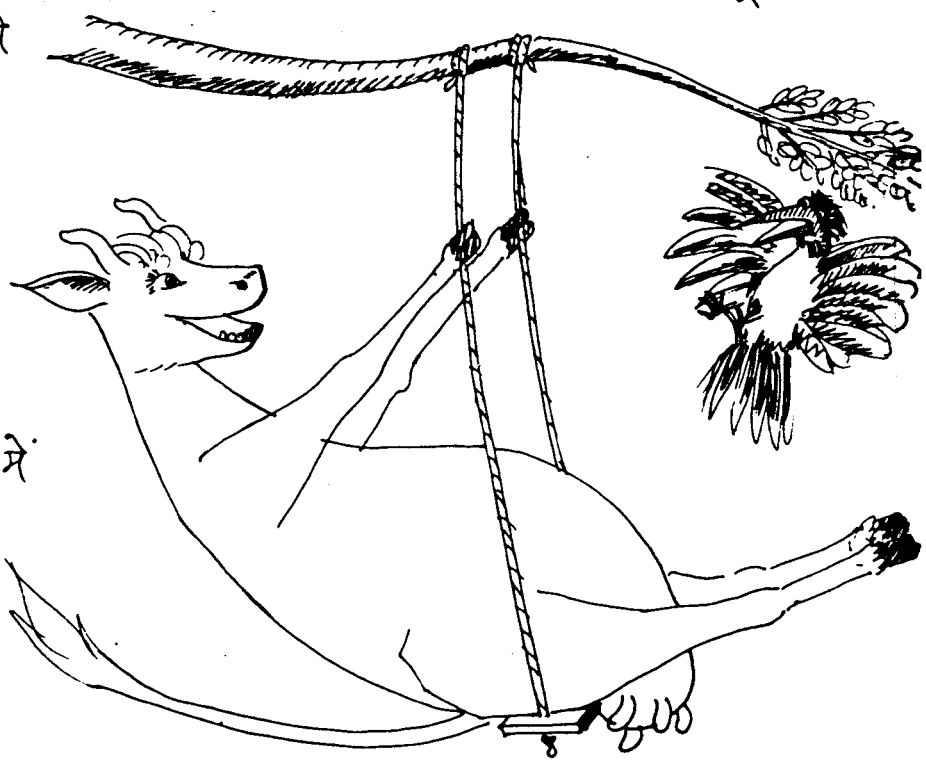

पुस्तक की कजरी मुझे भारत की उन असंख्यों नन्ही बालिकाओं की याद दिलाती हैं जो लिखना-पढ़ना और बहुत कुछ सीखना चाहती हैं। पर यह समाज उनके सपनों पर अंकुश लगाता है और उन्हे बचपन में ही चकनाचूर कर देता है।

पुस्तक के सुंदर चित्रों को स्वेन नोरडोविस्ट ने बनाया है। यह बढ़िया किताब बच्चों को बेहद पसन्द आयेगी।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 25, जनवरी 1998

मिराम्बिका

"शिक्षा का पहला सच्चा सिद्धांत यह है कि कोई किसी को कुछ सिखा नहीं सकता। शिक्षक मात्र एक सहायक होता है।" यह शब्द महर्षि श्री अरविन्द के हैं। उन्हीं के आदर्शों पर आधारित है दिल्ली में स्थित मिराम्बिका स्कूल। 15 वर्ष पहले इसे श्री अरविन्द के दो डच अनुयाइयों ने शुरू किया। मिराम्बिका सामान्य स्कूलों से भिन्न है। स्कूल पाँचवी कक्षा तक है। उसके बाद बच्चे अन्य स्कूलों में दाखिला लेते हैं। हर कक्षा में केवल 12-15 बच्चे हैं। साथ में 2-3 शिक्षक भी। अधिकांश शिक्षक अरविन्द आश्रम में ही रहते हैं। माँ-बाप भी स्कूल में काफी सहयोग देते हैं।

स्कूल किसी शैक्षिक बोर्ड, अथवा एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यक्रम से नहीं बंधा है। यहाँ शब्दों की अपेक्षा अनुभव पर अधिक बल दिया जाता है। यहाँ पर बच्चों को डाँट-डपट कर चुप नहीं किया जाता, परन्तु प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जाता है। स्कूल परम्परागत विषयों में नहीं बंधा है। बच्चे स्वयं निर्णय लेते हैं कि वह किस प्रोजेक्ट अथवा विषय पर काम करेंगे।

उदाहरण के लिए 'पक्षी' प्रोजेक्ट चुनने के बाद सबसे पहले बच्चे पुस्तकालय जाकर चिड़ियों से सम्बंधित सभी पुस्तकें ले आयेंगे। वे आश्रम के 26 एकड़ के कैम्पस में पक्षी-निरीक्षण करते हैं और पक्षियों की सूची बनाते हैं। वे दिल्ली के चिड़ियाघर जाकर वहाँ के निवासी पक्षियों की पहचान करते हैं। उन माता-पिताओं को खोजा जाता है जिन्हे पक्षी-निरीक्षण में रुचि है। उनके साथ बच्चे दिल्ली से 40 किलोमीटर दूर स्थित सुलतानपुर पक्षी अभ्यारण्य का दौरा करते हैं। 'पक्षी' प्रोजेक्ट में भाषा, गणित, विज्ञान, भूगोल, कला सभी विषय लिपट जाते हैं। बच्चे चिड़ियों पर कवितायें और निबंध लिखते हैं। कई पक्षी अन्य देशों से लम्बी उड़ान भर कर भारत आते हैं। बच्चे उड़ान के रास्ते को ग्लोब पर बनाते हैं। वह नक्शे में बर्ड-सैंक्टुरीज़ की स्थिति देखते हैं। वह कागज के वर्गों को मोड़-मोड़ कर कितने ही तरह की उड़ने वाली चिड़िए बनाते हैं। इस प्रकार बच्चों को पक्षियों के जीवन की रोचक और ठोस जानकारी मिलती है। इस प्रकार सीखने का आनन्द ही कुछ अनूठा है।

आसमाँ का दाम, मिट्टी का मोल

बात कोई 150 साल पुरानी है। तब अमरीका में मूल रेड-इंडियन आदिवासी रहते थे। गोरे उनकी ज़मीन हड़पना चाहते थे। इसको लेकर गोरों और रेड-इंडियनों के बीच लड़ाईयाँ छिड़ी। गोरों के पास बन्दूकें थीं। अपनी ज़मीन गोरों को बेचने से पहले आदिवासियों के सरगना चीफ़ सिएटल ने एक भाषण दिया था। पर्यावरण पर यह एक अनूठी टिप्पणी है।

तुम कैसे बेंच सकते हो आसमां को? चीफ सिएटल ने कहा
तुम हवा और पानी का कैसे खरीद-फरोख्त कर सकते हो?
मेरी माँ ने मुझ से कहा था
इस ज़मीन का कण-कण हमें पूज्य है।
पेड़ों का एक-एक पत्ता, हरेक रेतीला तट
ये सभी पवित्र हैं, पूज्य हैं,
और आदिवासियों की यादों और जीवन से बँधे हैं।
मेरे पिता ने मुझ से कहा था
कि पेड़ों की शिराओं में बहता रस
इंसानों की नसों में बहते खून के समान है।
हम सभी इस धरती का एक अंग हैं
और यह धरती हमारा एक हिस्सा है।
यहाँ के सुगंधित फूल हमारी बहनें हैं
जंगल के भालू, हिरण और चील हमारे भाई हैं।
ये पहाड़ों की चट्टानें और हरे-भरे मैदान
और ये घोड़े - सभी एक परिवार के हैं।
मेरे पूर्वजों की आवाज़ ने मुझ से कहा था
इन नदियों और झरनों में बहता निर्मल पानी
केवल जल नहीं - हमारे पुरखों का लहू है।
इस झील की हरेक लहर में छिपी है
आदिवासियों के जीवन की यादें और गाथायें।
पानी में कल-कल करती है मेरे पूर्वजों की आवाज़
नदियाँ हमारी दोस्त हैं। वह प्यास बुझाती हैं।
इसलिए यदि हम तुम्हें ज़मीन बेचते हैं
तो तुम उसे वही प्यार देना
जो तुम अपने सगे भाई को देते हो।

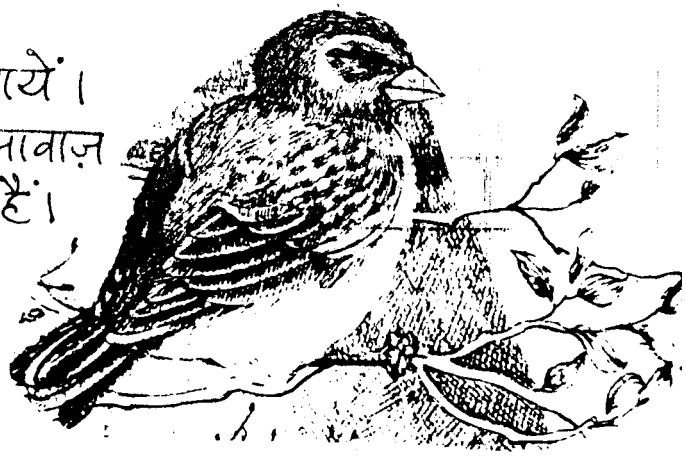

गोरे हमारे तौर-तरीकों को नहीं समझते,
उनके लिए सभी ज़मीन एक जैसी है।
ज़मीन उसकी दोस्त नहीं दुश्मन है,
जिसे जीत कर वो आगे बढ़ जाता है
और छोड़ जाता है पीछे पिता की समाधि।
अपने बच्चों से छीन लेता है धरती
इसकी भी उसे कोई परवाह नहीं।
माँ समान धरती और पिता समान आकाश
उसके लिए बेजान, बाजारू चीज़े हैं
जिन्हे वह भेड़ों या चमकते मोतियों की तरह
खरीदता - लूटता और बेंचता है।
एक दिन आयेगा जब उसकी विशाल भूख
सारी धरती निगल लेगी
और रह जायेगी सिर्फ, रेगिस्तान की बालू...।
और जो कुछ होगा पशुओं के साथ
वही मनुष्य भी भोगेगा एक दिन।
आखिर सभी कुछ तो जुड़ा है एक दूसरे के साथ।
अपने बच्चों को ज़रूर सिखाना
कि जिस ज़मीन पर वो चलते हैं
वो हमारे पुरखों की राख से बनी है।
उस ज़मीन का आदर करना सीखें।
इंसान ने नहीं बुना जीवन का ताना-बाना -
वह तो सिर्फ उसमें एक तिनका है।
उसके साथ वही होगा जो वो करेगा ताने-बाने के साथ।
इसलिए इस ज़मीन को और उसके हवा पानी को
संभाल कर रखना अपने बच्चों के लिए
और अपने बच्चों के बच्चों के लिए।
इस पृथ्वी को उतना ही प्यार देना
जितना हमने दिया है।

(मूल भाषा: चीफ सिएटल 1860, प्रस्तुति सरला मोहनलाल)

गोट्या

लेखक : ना. धो. ताम्हनकर

अनुवाद : सुरेखा पाणंदीकर

प्रकाशक : साहित्य अकादमी , मूल्य: पच्चीस रुपये

'गोट्या' एक प्रसिद्ध मराठी किशोर उपन्यास का सुन्दर हिन्दी अनुवाद है। कहानी, विश्वास नाम के एक अनाथ लड़के की है। गाँव के लोग उसे कंचा या गोट्या के नाम से बुलाने लगे। चाचा - चाची ने उसे बहुत कष्ट दिए और अंत में उसे एक होटलवाले - वसूकाका के हवाले कर दिया। वसूकाका बात - बात पर गोट्या को पीटता। एक दिन जब लेखक ने गोट्या को पिटते देखा तो वो उसे अपने घर ले आए।

लेखक ने गोट्या को अपने बच्चे जैसे पाला। घर का प्यार पाकर गोट्या की कुशाग्र बुद्धि में चार - चाँद लग गए। वह स्कूल जाने लगा और जल्द ही सब पाठ सीख गया।

उसने अपनी शरारती हरकतों से गाँव की शरारती मौसी का दिल जीत लिया। एक दिन एक काली बिल्ली मौसी के चौके में घुस गई तो गोट्या ने अपने मित्रों के साथ खिड़की में से बिल्ली पर पानी फेंका। बिल्ली तो बेचारी खिसक निकली परन्तु मौसी बेचारी एक दम भीग गयीं।

दूसरी कक्षा से सीधे चौथी कक्षा में प्रवेश पाने के लिए गोट्या की सिफारिश खुद मास्टर साहब की पत्नी ने की!

पहली बार जब गोट्या क्रिकेट का बल्ला लेकर मैदान में उतरा तो उसने क्या गुल खिलाए? उसने अपनी बहन सुमा को भैया - दूज पर अपनी मेहनत की कमाई से क्या उपहार दिया? अपना अंग्रेजी का ज्ञान झाड़ कर पड़ोसी भाईसाहब से इनाम में कैसे काउण्टेन - पेन प्राप्त किया? लेखक ने ऐसे अनेकों प्रसंगो को रख कर एक ऐसी नई दुनिया रच दी है - जिसमें से पाठकों को निकलने का जी ही नहीं करेगा।

सामाजिक हालत ही एक अनाथ बच्चे को होटल में नौकरी करने को विवश करते हैं एक ममता भरा माहौल ऐसे बालक का जीवन बदल देता है और उसकी प्रतिभाओं को निखार देता है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता

चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी - 10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004.

फुलझड़ी फरवरी 1998, अंक 26

जो देख कर भी नहीं देखते

कभी - कभी मैं अपने मित्रों की परीक्षा लेती हूँ यह परखने के लिए कि वह क्या देखते हैं। हाल ही में मेरी एक प्रिय मित्र जंगल की सैर करने के बाद वापिस लौटी। मैंने उनसे पूछा "आपने क्या - क्या देखा ?"

"कुछ खास तो नहीं" उनका जवाब था। मुझे बहुत अचरज नहीं हुआ क्योंकि मैं अब इस तरह के उत्तरों की आदी हो चुकी हूँ। मेरा विश्वास है कि जिन लोगों की आँखें होती हैं, वह बहुत कम देखते हैं।

क्या यह सम्भव है कि भला कोई जंगल में घंटा भर घूमे और फिर भी कोई विशेष चीज़ न देखे ? मुझे - जिसे कुछ भी दिखाई नहीं देता, को भी सैकड़ों रोचक चीजें मिल जाती हैं, जिन्हे मैं छू कर पहचान लेती हूँ। मैं भोजपत्र के पेड़ की चिकनी छाल और चीड़ की खुरदरी छाल को स्पर्श से पहचान लेती हूँ। वसंत के दौरान मैं टहनियों में नई कलियाँ खोजती हूँ। मुझे फूलों की पंखुड़ियों की मखमली सतह छूने और उनकी घुमावदार बनावट महसूस करने में अपार आनंद मिलता है। इस दौरान मुझे प्रकृति के जादू का कुछ अहसास होता है। कभी, जब मैं खुशनसीब होती हूँ तो टहनी पर हाथ रखते ही किसी चिड़िया के मधुर स्वर मेरे कानों में गूंजने लगते हैं। अपनी अंगुलियों के बीच झरने के पानी को बहते हुए महसूस कर मैं आनंदित हो उठती हूँ। मुझे चीड़ की फैली पत्तियाँ या घास का मैदान किसी भी मंहगे कालीन से अधिक प्रिय है। बदलते हुए मौसम का समां मेरे जीवन में एक नया रंग और खुशियाँ भर जाता है।

कभी - कभी मेरा दिल इन सब चीजों को देखने के लिए मचल उठता है। अगर मुझे इन चीजों को सिर्फ छूने भर से इतनी खुशी मिलती है, तो उनकी सुंदरता देख कर तो मेरा मन मुग्ध ही हो जायेगा। परन्तु, जिन लोगों की आँखें हैं, वह सचमुच बहुत कम देखते हैं। इस दुनिया के अलग - अलग सुंदर रंग उनकी संवेदना को नहीं छूते। मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता। वह हमेशा उस चीज़ की आस लगाए रहता है जो उसके पास नहीं है।

यह कितने दुख की बात है कि दृष्टि के आशीर्वाद को लोग एक साधारण सी चीज़ समझते हैं, जब कि इस नियामत से जिन्दगी को खुशियों के इंद्रधनुषी रंगों से भरा जा सकता है।

हेलन केलर - प्रसिद्ध अमरीकी लेखिका - जन्म से ही देख और सुन नहीं सकती थीं। (साभार वेन - आफ - लाइफ)

जीवन से रिश्ता रखने वाली गणित

डा. अभय बंग

" एक पानी की टंकी (हौद) में दो टोटियाँ लगी हैं। एक टोटी से टंकी में पानी भरता है और दूसरे से खाली होता है। अब यह बताओ कि टंकी कितनी देर में भरेगी?" इस प्रकार के बेसिर पैर के सवाल ही अक्सर गणित की किताबों में भरे होते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि गणित और असली जीवन के बीच कुछ सम्बंध है या नहीं? कोई भी होशियार व्यक्ति इस काल्पनिक सवाल को हल करने के लिए नीचे वाली टोटी बंद करेगा और इस प्रश्न से अपना पिंड छुड़ायेगा!

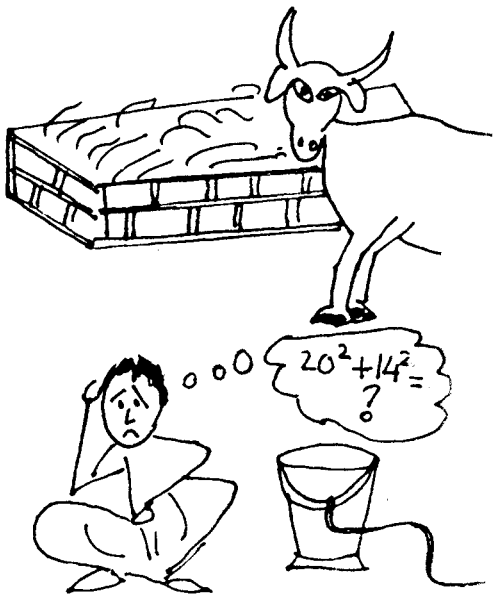

नई-तालीम विद्यालय, सेवाग्राम वर्धा में मैंने आयतन और गणित किस प्रकार सीखी इसका एक उदाहरण देता हूँ।

हर रोज़ हम लोगों के लिए तीन घंटे कोई उत्पादक कार्य करना अनिवार्य था। यहाँ की शिक्षा का यह एक अभिन्न अंग था। इसके पीछे गांधी जी की खुद श्रम करके खाना जुटाने की अवधारणा तो थी ही, साथ में समाज-उपयोगी कार्य द्वारा कुशलतायें हासिल करने की विनोबा की दृष्टि भी थी। इस कार्यक्रम के तहत मैं कुछ दिनों तक गोशाला में काम करने जाने लगा। नई गोशाला का निर्माण काम चालू था। मेरे शिक्षक ने मुझे एक समस्या का समाधान खोजने की जिम्मेदारी सौंपी।

" यह मालूम करो कि एक गाय रोज़ाना कितना पानी पीती है? इस प्रकार गोशाला की सभी गायों की प्रतिदिन पानी की आवश्यकता कितनी होगी? फिर एक ऐसी टंकी का निर्माण करो जिसमें उतना पानी आ सके। सबसे सस्ती टंकी का आकार कैसा होगा? टंकी में कितनी ईंट लगेंगी इसका हिसाब करके उन्हे खरीद कर लाओ।"

गणित की इस समस्या से मैं लगभग एक हफ्ते जूझता रहा। अलग-अलग आकार की टंकियों का आकार किस प्रकार नापें? बाल्टी का आकार एक तिरछी बेलन के समान होता है, उसे कैसे नापें? किस आकार की टंकी में सबसे कम ईंटे लगेंगी? टंकी का बाहरी सतही क्षेत्रफल किस प्रकार नापें?

इस अनोखी पद्धति से मैंने प्रत्यक्ष टंकी बना कर गणित का ठोस ज्ञान प्राप्त किया। अक्सर बच्चों को रेखागणित में परकार की सहायता से कापी पर गोले बनाने को कहा जाता है। बच्चे 4 या 6 सेंटीमीटर व्यास के गोले आसानी से बना लेते हैं। बच्चों से एक बार असली जीवन की एक समस्या पूछी गई " हमें 20 फीट व्यास का एक कुँआ खोदना है। उतना बड़ा गोला हम जमीन पर किस प्रकार बनायें? बच्चे इस वास्तविक समस्या का हल नहीं दे पाए। गणित को जिन्दगी से जोड़ना ज़रूरी है।

घोटी हथौड़ी

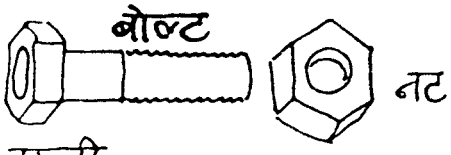

इसे बनाने के लिए 1 फुट लम्बी और 1 इंच मोटी लकड़ी या टहनी लें। उसे लगभग तीन-चौथाई दूर तक चीर कर उसमें एक बड़ा नट-बोल्ट फँसा दें। कील और सुतली से कटी लकड़ी को कस कर बाँधें जिससे बोल्ट बाहर न निकले। इस प्रकार बोल्ट और टहनी से एक घोटी हथौड़ी बन जायेगी।

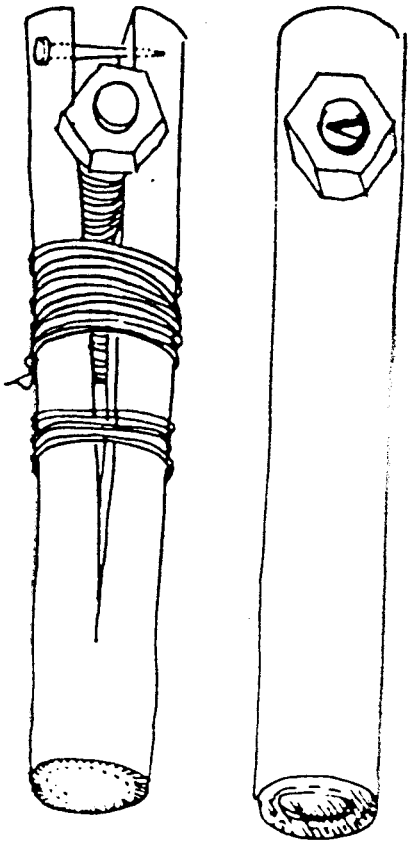

अगर आपके पास टहनी में छेद करने का साधन हो तो उसमें सीधे छेद कर नट-बोल्ट लगाया जा सकता है।

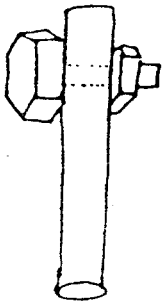

बटन की फिरकी

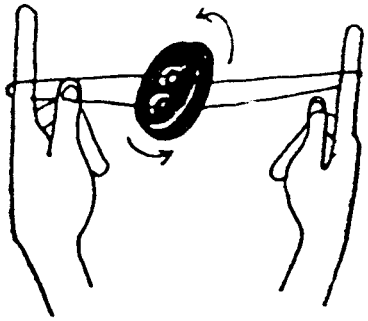

एक बड़ा कोट का बटन लेकर उसमें चित्र में दिखाए अनुसार धागा पिरो लें। फिर धागे को दोनों हाथों की एक-एक उंगली में फँसा कर धागे को गोल-गोल घुमायें जिससे कि उसमें खूब बल पड़ जायें। अब धागों को खींचने और ढील देने से बटन की फिरकी गोल-गोल घूमेगी।

हेलीकाप्टर

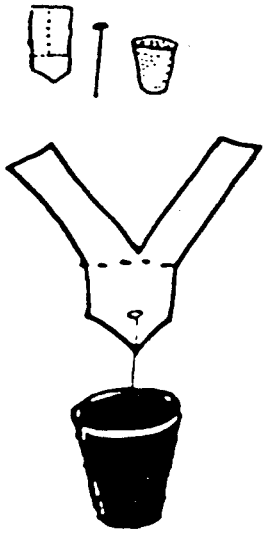

कागज की एक पट्टी, एक आलपिन और बोतल की कार्क से एक मजेदार हेलीकाप्टर बनाया जा सकता है। कागज की पट्टी को चित्र में दिखाये तरीके से काटें। फिर उसमें से एक पिन पिरो कर, उसे कार्क में घुसा दें। खिलौने को उछालने पर वह हेलीकाप्टर जैसे गोल-गोल घूमता नीचे की ओर आयेगा।

समझ के लिए तैयारी

लेखक कीथ वारन् (एन. बी. टी. 15/-)

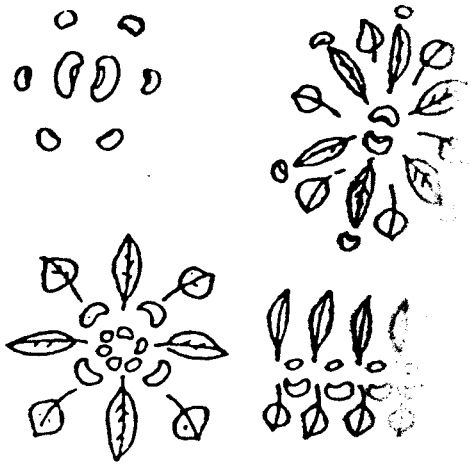

किसी भी बात को समझने से पहले बच्चों को अनुभव की जरूरत होती है। अनुभव में चीजों को देखना, छूना, सुनना, चखना, सूंघना, चुनना क्रमबद्ध रखना शामिल है। बच्चों के लिए ठोस चीजों से खेलना और प्रयोग करना अनिवार्य है।

पुराने जमाने की पढ़ाई में केवल शब्दों का इस्तेमाल होता था। पुराने शिक्षक बच्चों के किसी चीज़ को रट कर दोहरा पाने की क्षमता को ही समझदारी मानते थे। लेकिन अब इसके बारे में हमारी मान्यता बदली है। छोटे बच्चों को व्यवहारिक समझ सिखाने के लिए हमें अधिक श इस्तेमाल करने की जरूरत ही नहीं है। इस चरण की पढ़ाई को ठोस चीज़ों के शब्दहीन संवाद से ही होने दीजिए।

बच्चों को कभी-कभी नाकामयाबी भी महसूस करने दीजिए। इसके बाद उनको तसल्ली काम करने के लिए प्रोत्साहित करिए। जब बच्चे कोई सफलता हासिल करते हैं, तब वे बेहद खुश होते हैं।

बच्चे होशियार होते हैं। घुटपन में वे बहुत कुछ अपने आप ही सीख जाते हैं। बच्चे सरल और आस-पास मिलने वाली चीजों से ही सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। विशेष कर रोज़मर्रा की जिन्दगी में काम आने वाली वस्तुओं के बारे में पहले-पहले समझ बनाना बच्चों के लिए बहुत सहायक होगा। अगर बच्चे छोटी टोलियों में काम करेंगे तो उनमें आपसी सहयो की भावना पनपेगी।

यह पुस्तक खास तौर पर विज्ञान समझने के लिए तैयार की गई है। जिज्ञासा, प्रयोग, विश्लेषण, और अंत में खोज को बता पाना ही विज्ञान का आधार है। इस प्रक्रिया का मुख्य काम है वस्तुओं, क्रियाओं और विचारों को इस तरह सजाना जिससे एक नया क्रम या नमूना बन जाए। नये नमूनों को खोज पाना ही विज्ञान है। इस पुस्तक का उद्देश्य है कि बच्चे अपने हाथों, इंद्रियों और दिमाग की सहायता से अपने आस-पास के संसार में क्रम और नमूने खोजें।

इस पुस्तक में पत्थरों, पत्तों, टहनियों, बीजों, मिट्टी और बिना लागत की अन्य वस्तुओं से अनेकों सरल-सरल प्रयोग सुझाए गए हैं। कोई भी उत्साही शिक्षक इनका उपयोग करके बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि पैदा कर सकता है। इस पुस्तक के सहयोग से प्राथमिक विज्ञान को एक मजबूत आधार दिया जा सकता है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

मार्च 1998, अंक 27

खाना पकाने द्वारा शिक्षण

नई तालीम विद्यालय, सेवाग्राम में काम के ज़रिए सीखने पर अधिक ज़ोर था। काम के द्वारा विज्ञान-शिक्षण का मैं यहाँ एक उदाहरण दे रहा हूँ। छात्रों को बारी-बारी से खाना बनाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती थी। स्कूल के रसोईघर में रोज़ाना करीब 100 लोग खाना खाते थे। खाना पकाने का ज़िम्मा बारी-बारी से आठ लोगों की एक टोली को सौंपा जाता था। खाने पर प्रति माह कितना खर्च होना चाहिए उसका बजट टोली को पहले ही से बता दिया जाता था।

आहार-शास्त्र की दृष्टि से भोजन संतुलित हो, खाना सब को पसंद आए और उसका खर्चा बजट के अंदर हो, इसकी योजना बनाते-बनाते हमारे छक्के छूट जाते थे। आलू की सब्जी सबसे सस्ती अवश्य थी, परन्तु पौष्टिक तत्व के रूप में उसमें मुख्यतः स्टार्च था इसलिए उसे रोज़ खाना सम्भव न था। इंडियन काउंसिल फार मेडिकल रिसर्च द्वारा सुझाई न्यूनतम तेल की मात्रा से तो सारा बजट केवल तेल पर ही खर्च हो जाता। एक कुशल गृहणी के अनुभव से तो हम वंचित थे। हम आहार-शास्त्र और अर्थ-शास्त्र से जूझते, मशक्कत करते हुए कोई हल खोजने की चेष्टा करते। बहुत बार भोजन की बनाई हमारी योजना बहुत कागज़ी होती। वास्तव में उसे बना पाना सम्भव ही न होता। दाल को गलने में कितना समय लगेगा, इस हिसाब में भी हम अक्सर मात खा जाते थे। फिर रात को खाने के सारे बर्तन घिसते और माँज़ते हुए हम अपने आपको एक घायल सैनिक जैसा महसूस करते थे। अगले दिन का खाना पकाने की समस्या मुँह बाए खड़ी रहती थी।

लेकिन इस पूरी प्रक्रिया के दौरान हम तीन बातें अच्छी तरह सीख गए। वे थीं- आहार-शास्त्र, घर का अर्थ-शास्त्र और पाक-शास्त्र यानि खाना पकाना। धनिए के हरे पत्तों में विटामिन A की मात्रा 10,600 यूनिट होती है, यह मुझे तीस साल बाद, अभी भी अच्छी तरह याद है।

बचपन में जो चीजें मैंने कुछ दिनों में रसोईघर में काम करके सीखीं, वह मैं मेडिकल कालेज में दस साल बिता कर भी नहीं सीख पाया। रोज़मर्रा के जीवन की गतिविधियों से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

मूल लेखक : डा. अभय बंग, 'साम्ययोग' मराठी मासिक से अनूदित।

सृजना स्कूल

एलीनेर वाड्स एवं शिवराम

हमने एक नया स्कूल क्यों शुरू किया? इसलिए कि शिक्षा रोचक और रोमांचक हो। वह बच्चों को बोझिल या नीरस न लगे। ऐसी शिक्षा हो जो बच्चे के भविष्य के लिए व्यवहारिक और उपयोगी हो। शुरू में हमने 9 वर्ष की आयु के केवल 15 बच्चों को ही लिया।

दसवीं तक हमने कोई परीक्षा नहीं रखी क्योंकि परीक्षायें 'सीखने' में कतई सहायक नहीं होती हैं। हमारा 'सीखने' से अर्थ है - समझना और सोचना। स्कूल में इसका एकदम उल्टा होता है। बच्चा परीक्षा के लिए कुछ तथ्य रट लेता है - आग जलने के लिए आक्सीजन ज़रूरी है। समझ न पाने के कारण वह आगे चल कर उसे भूल जाता है। परन्तु इसी बात को वह एक सरल से प्रयोग द्वारा सीख सकता है - कि जलती हुई मोमबत्ती, काँच के गिलास के ढकने से बुझ जाती है। प्रयोग करने के बाद वह इस तथ्य को कभी नहीं भूलेगा। हम अपना पाठ्यक्रम बच्चों के वातावरण के आधार पर तैयार करते हैं। हम चाहते हैं कि हरेक विषय बच्चों के अपने जीवन और समाज से जुड़ा हो। मिसाल के लिए हम अपने गाँव को ही लें। यह आंध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले में स्थित है। विज्ञान के विषय में इस बात का अध्ययन करेंगे कि गाँव के मकान किस चीज़ और किस प्रकार बने हुए हैं, उन की दीवारें नीची क्यों हैं? उनकी छतें ढलवादार क्यों हैं? लोग अपने पशुओं को कहाँ बाँधते हैं और कहाँ काम करते हैं आदि। हम मंदिर, पोस्ट आफिस, पंचायत घर, स्कूल आदि के बारे में भी चर्चा करेंगे।

सभी बच्चे तेलगू जानते हैं इसलिए पहले साल हम अंग्रेजी में केवल मौखिक कार्य ही करते हैं। हम कई रोचक खेलों का प्रयोग करते हैं जिससे अंग्रेजी बड़े स्वभाविक रूप में सीखी जा सकती है। हम कई गीतों और नृत्यों का भी प्रयोग करते हैं, जिसमें गीत के अर्थ के साथ-साथ भाव-भंगिमायें भी आ जाती हैं। इससे बच्चे उन शब्दों का अर्थ तो सीख ही जाते हैं साथ में उस भाषा की लय को भी सीख जाते हैं। सरल नाटक और नकल उतारना भी अंग्रेजी सीखने के लिए उपयोगी हो सकता है। मातृभाषा ही विचारों को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम होती है। परन्तु दुर्भाग्य से अंग्रेजी भाषा की शिक्षा को हमारे यहाँ अधिक महत्व दिया जाता है और लोग इसे तेलगू भाषा से अच्छा समझते हैं।

हमने दो कारणों से अंग्रेजी को अपनाया

1. तेलगू भाषा में बच्चों के लिए बहुत कम पुस्तकें लिखी गई हैं, जबकि अंग्रेजी में ढ़ेर

सारी अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हैं।

2. अगर बच्चे शुरू से अंग्रेजी सीख लेंगे तो आगे चल कर उन्हे और भी अच्छी पुस्तकें पढ़ने को मिल सकेंगी।

गणित में जोड़ और घटाने को भी हम प्रयोगों के माध्यम से समझाते हैं। बच्चों को सचमुच के पैसे देकर उनकी पहचान कराई जाती है। फिर कक्षा में दुकान खोल कर उसमें सामान्य चीजें - क्राक, गिलास, बर्तन, गेंद आदि बेची जाती हैं। बच्चे उन पैसों से यहाँ सामान खरीदने आते हैं। इस में से एक व्यक्ति बेईमान दुकानदार बन जाता है जो बच्चों से धोखाधड़ी करने की कोशिश करता है। जो बच्चा इस धोखाधड़ी में फँस जाता है उसके लिए यह बहुत शर्म की बात होती है। इसलिए आगे से वह बड़ा सतर्क रहता है। जोड़ - घटाने की ठोस क्रियाओं से गणित रोचक बन जाती है।

हाथ से काम करने को हम बहुत महत्व देते हैं। इसके दो कारण हैं - एक तो इस से सुंदरता के प्रति बच्चों की भावना का विकास होता है, दूसरे इन गतिविधियों के माध्यम से हम अन्य विषयों को भी रोचक बना सकते हैं। उदाहरण के लिए कार्ड से त्रिभुज, वर्ग, आयत, गोले काट कर गणित को रोचक बनाया जा सकता है। हम बच्चों को अधिक से अधिक प्रकार की वस्तुओं से क्रियायें करने का मौका देते हैं जैसे - पेंटिंग, मिट्टी का काम, चित्रकला, धपाई, पेपर - कटिंग आदि। हम लकड़ी का कार्य भी शुरू करना चाहते हैं परन्तु इसके औज़ार आदि बड़े मंहगे पड़ते हैं। इसीलिए अभी तो यह कर पाने में असमर्थ हैं।

कृषि के बारे में बच्चे पहले ही से कुछ न कुछ जानते हैं। जब नई फसल बोयी जाती है तब हम उसके बारे में चर्चा करते हैं। जैसे उस फसल में कौन सी खाद डालनी चाहिए और अच्छी उपज के लिए क्या करना चाहिए। हमारे स्कूल में हरेक बच्चे के पास अपनी खेती है। बच्चे अपनी खेती का पूरा रिकार्ड रखते हैं।

हम चाहते हैं कि बच्चे नियमित रूप से स्कूल आयें। गरीब घर के लोग ऐसा नहीं कर पाते हैं क्योंकि फसल की बुआई, कटाई के समय छोटे बच्चों की देखभाल एवं घर के अन्य कामों के लिए इन बच्चों की आवश्यकता होती है। हम चाहते हैं कि पाठ्यक्रम पूरा होने तक बच्चे स्कूल में रहें। लेकिन हम वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ सकते। कई बच्चे बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं।

समूह बनाना

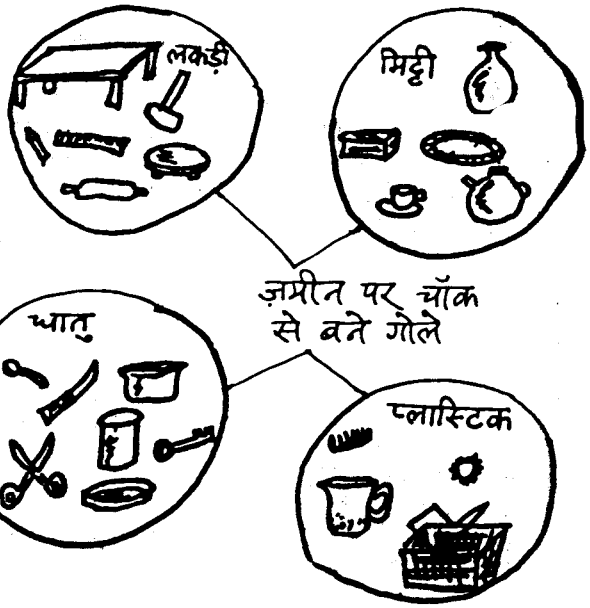

चीजों के गुणधर्म पहचान कर उन्हे अलग-अलग समूहों, या वर्गों में रखना वैज्ञानिक समझ विकसित करने में पहला कदम है। इसे एक सरल सी गतिविधि द्वारा किया जा सकता है।

इसके लिए अलग-अलग पदार्थों से बनी चीज़ें इकट्ठी करें और उनका एक ढेर बनायें। ज़मीन पर हर पदार्थ के लिए चॉक से एक गोला बनायें। अब बच्चों से ढेर की चीजों को उनके पदार्थ के आधार पर अलग-अलग समूहों में रखने को कहें।

इसमें कुछ चीज़े विवाद का विषय भी बन सकती हैं। जैसे चाकू - उसका फल धातु का बना है परन्तु हत्था लकड़ी का, या हथौड़ी - जिसका भारी हिस्सा लोहे का है परन्तु हैंडिल लकड़ी का। इन विषयों पर विस्तार से चर्चा करें।

चले अकड़ते कक्का

सूर्य कुमार पाण्डेय

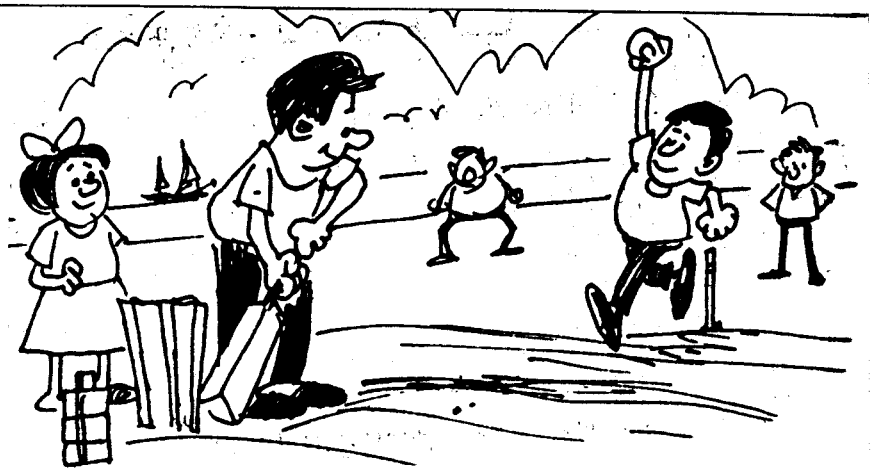

भीड़-भड़क्का
धक्कम-धक्का
क्रिकेट खेलने
पहुँचे कक्का

छक्का - चौका
चौका - छक्का
हुए बेचारे
हक्का-बक्का

जैसे एक
खिलाड़ी पक्का
चले अकड़ते
ऐसे कक्का

पीकर मट्ठा
खाकर मक्का
मैं खेलूंगा
बोले कक्का

गेंद लगी
हो गए मुनक्का
चौका भूले
छूटा छक्का

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

अंक 28, अप्रैल 1998

ऐसे सीखा वनस्पतिशास्त्र - डा. अभय बंग

बहुत से स्कूलों में वनस्पतिशास्त्र के विषय को किताबों में छपे चित्रों के ज़रिए पढ़ाया जाता है। पौधों की अलग-अलग प्रजातियों की जड़ों और पत्तों के जबड़ातोड़ तकनीकी नामों को बच्चे बड़ी कठिनाई से रटते हैं और इम्तहान के तुरन्त बाद उन्हे तुरन्त भूल जाते हैं। हमारी नई तालीम के स्कूल के आस-पास के बगीचों और खेतों में नाना प्रकार के पेड़ थे।

सबसे अच्छी बात तो यह थी कि हमारे शिक्षक सब बच्चों को लेकर इन बाग-बगीचों में घूमते थे। वहाँ पर पौधों का निरीक्षण-परीक्षण होता था। जो भी पेड़-पौधे दिखते थे, सबसे पहले उनके नाम से परिचय करवाया जाता था। फिर उनके पत्तों, फूलों, फलों का बारीकी से मुआयना किया जाता था। उसके बाद बेर, आँवले, करौंदों आदि फलों को तोड़ कर खाने की बारी आती थी। फल खाते-खाते हम आम और बेर की गुठलियों की समातना के बारे में चर्चा करते। इस प्रकार बाग-बगीचों का भ्रमण करके और समीप से प्रकृति का दर्शन कर हम वनस्पतिशास्त्र को काफी गहराई और बारीकी से समझ पाए। किताबों में जिन सिद्धांतों का बखान होता था, वह हमारे चारों ओर सुखद हरियाली के रूप में बिखरे पड़े थे। इसीलिए 'पामेट डायव्हर्जंट रेटिकुलेट' जैसे भारी-भरकम नाम मुझे अटपटे नहीं लगते। इसका कारण सरल था। मेरे एकदम पास, आँखों के सामने, पपीते के पेड़ का पत्ता जो था।

सातवीं की परीक्षा के लिए हमारे गुरुजी ने हमसे अलग-अलग पत्तों और फूलों की एक वैज्ञानिक एलबम बनाने को कहा। इसके लिए हमने अपने पास-पड़ोस का पूरा इलाका छान मारा। आज पच्चीस साल बीतने पर भी सेवाग्राम परिसर में कौन सा पेड़ कहाँ है यह मुझे अच्छी तरह मालूम है। ऐसा लगता है जैसे ये पेड़ अभी भी मेरी आँखों के सामने खड़े हों। कालेज में मैं वनस्पतिशास्त्र में सर्वप्रथम आया। जब मेरे प्रोफेसर मेरी प्रशंसा करने लगे तो मैंने अपने मन में यह बात कही "सर, वनस्पतिशास्त्र मैंने कालेज में नहीं सीखा। उसे तो मैंने अपने सेवाग्राम के स्कूल में सीखा था"।

विज्ञान शिक्षण - नई खोज का पहला कदम - एलीनर वॉटस

विज्ञान पढ़ाना एक मजेदार खेल है। लेकिन बड़े दुख की बात है कि बहुत कम प्राथमिक स्कूल हैं, जहाँ के बच्चे प्रयोगों के माध्यम से पढ़ने का अवसर पाते हैं, या स्वंय कुछ नई चीज़ खोजने का मौका पाते हैं। बस विज्ञान के पाठ उन्हे ज़ुबानी या किताबी ढंग से पढ़ा दिए जाते हैं।

ऐसा इसलिए भी है, क्योंकि अध्यापक यह समझते हैं कि प्रयोगों के माध्यम से पढ़ाना बड़ा मंहगा पड़ता है। अक्सर अध्यापक ही प्रयोग करके दिखा देते हैं और बच्चे बस उन्हे किसी तमाशे की तरह देख कर संतोष कर लेते हैं।

मैं इस बात की कोशिश करती हूँ कि बच्चों को स्वंय विज्ञान के प्रयोग करने के अधिक से अधिक अवसर दिए जायें। हमने कुछ ऐसी चीजों को इक्ट्ठा किया जो न डूबने वाली थीं न फिर तैरने वाली। बच्चों ने अपने अनुमान को एक तालिका में नोट किया। फिर उन चीजों को पानी में डाल कर प्रयोग किया। इसके परिणाम को नोट कर लिया और अनुमान वाली पहली तालिका से मिलाया।

हमने सुविधा के लिए हरेक वस्तु के बगल में चित्र भी बना दिया। हम प्रयोग से पहले बच्चों के अनुमान को ज़रूर नोट कर लेते हैं, क्योंकि विज्ञान की खोज में अनुमान लगाना एक आधार भूत प्रकिया होती है। इससे बच्चे समझेंगे कि हमेशा विज्ञान के बारे में सही भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है।

इस तरह दिखता था	मैंने सोचा	मैंने देखा
फूल	तैरेगा	तैरता है
धातु का चम्मच	डूब जाएगा	डूबता है
प्लस्टिक का चम्मच	डूब जाएगा	तैरता है
मोमबत्ती	डूब जाएगी	तैरती है
चॉक	डूब जाएगा	पहले तैरता है फिर डूबता है।
25 सिक्का	डूब जाएगा	डूबता है
नारियल	डूब जाएगा	तैरता है

हमारी कक्षा में एक कमज़ोर लड़का था। एक बार नारियल और अन्य चीजों के बारे में चर्चा के समय उसने कहा कि नारियल तैरेगा। उसकी बात पर सारे लड़के ठहाका लगा कर हँसने लगे, लेकिन जब प्रयोग करके देखा तो उस लड़के की बात सही निकली। सारे लड़के बड़े शर्मिंदा हुए। बच्चों को अपने अनुमान और अनुभव से सीखना चाहिए।

इसी प्रकार एक बार हमने एक दूसरे प्रयोग में एक बाल्टी में नमक का घोल और दूसरी बाल्टी में सादा पानी लिया। प्रयोग के दौरान यह पाया गया कि कुछ चीज़े जैसे आलू और मूंगफली नमक के घोल में तैरने लगे और सादे पानी में डूब गए। लड़कों को समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ? तभी उनमें से एक ने पानी चखा और कारण खोज निकाला। खुद करते के दौरान ही बच्चे चीजों को अच्छी तरह समझते हैं।

मज़ेदार बातें

सोचो कितना अच्छा होता
जा सकते यदि बादल पर।
जब हो जाता बन्द मदरसा
तब हम आते वापस घर॥

चलता अगर मगर पर बन्दर
मचती सड़कों पर हलचल।
हँसते-हँसते पेट फूलता
होता जंगल में मंगल॥

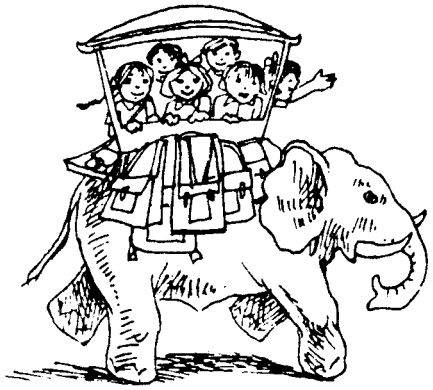

हाथी पर हम पढ़ने जाते
तो न मदरसे से डरते।
सच कहते हैं, सच कहते हैं
कभी नहीं नागा करते॥

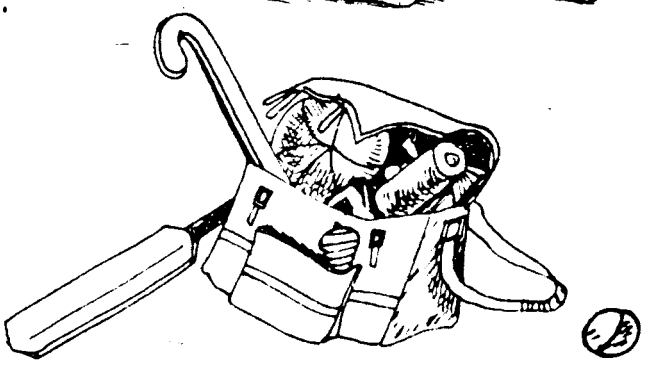

अगर किताबें एक न होतीं
होता खेल मदरसों में।
तो मैं उसे आज करता
जो करना है परसों में॥

(साभार 'बाल सखा जनवरी 1933)

हाँ, यह सचमुच 1933 की ही कविता है, लिखने की गलती नहीं। यह कविता शायद आपके दादा-दादी के बचपने में लिखी गई होगी। है न, सचमुच ही मजेदार बात।

चित्र कहानी

एक थी । एक दिन वह अपनी में एक का चित्र बना रही थी। तभी उसके से उसकी गिर पड़ी। लुढ़क कर वह एक के नीचे चली गई। उसे निकालने के लिए एक लेकर आई, पर वह पहुंचा ही नहीं। फिर वह एक लेकर आई लेकिन उससे घसीटते नहीं बना। तभी ने देखा कि उसकी से निकलकर एक आया। वह के नीचे गया और उसकी लाने के लिए घुसा। पर सबसे पहले निकली की एक पुरानी । फिर निकली एक और अंत मे निकली उसकी । बहुत हुई। उसने पूछा—मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूं? इस पर ने कहा—तुम मेरे बना सकती हो। और साथ ही मेरे । ने वैसा ही किया और चित्र पूरा हो जाने पर अपने दोस्त को जाने दिया।

कागज़ का शेर

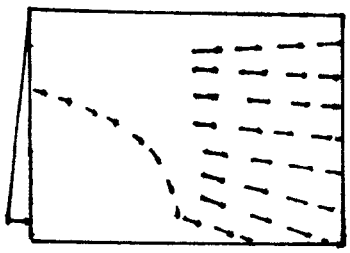

1. सिर के लिए एक आयताकार कागज़ को दो बराबर भागों में मोड़ें और बिन्दीदार रेखाओं को काटें।

2. शरीर व पूंछ के लिए एक दूसरे बड़े कागज़ (आयताकार) को दो बराबर भागों में मोड़ कर बिन्दीदार रेखाओं को कैंची से काटें।

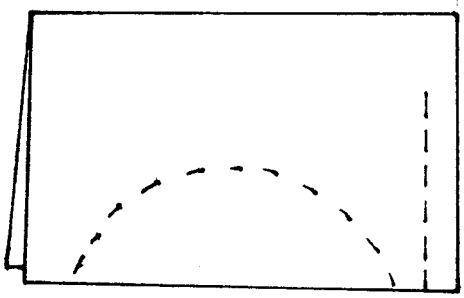

3. पहली आकृति को दूसरी पर चित्रानुसार चिपकायें। आँखें बनायें और शेर को खड़ा करें।

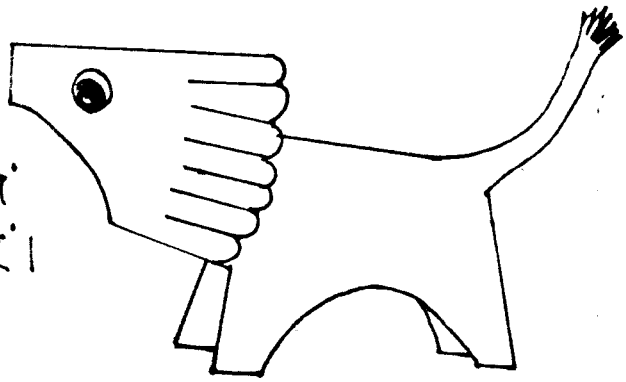

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी मई 1998, अंक 29

असफलता का क, ख, ग - जॉन होल्ट

अधिकांश बच्चे स्कूल में फेल होते हैं।
उनमें से ज्यादातर बच्चे तो पूरी तरह से फेल होते हैं। स्कूल में दाखिला लेने वाले चालीस प्रतिशत बच्चे स्कूली स्तर की शिक्षा पूरी नहीं कर पाते हैं। कालेज के स्तर पर, हर तीसरा छात्र बीच में ही पढ़ाई छोड़ देता है।
जो बच्चे आगे के क्लास में धकेल दिए जाते हैं, वह कुछ जानते हैं या नहीं यह कहना मुश्किल है। बच्चे अपने सीखने, समझने और रचने की अपनी जन्मजात और असीम क्षमता का केवल एक छोटा भाग ही स्कूलों में विकसित कर पाते हैं; जबकि पैदाइश के दो-तीन वर्षों में वे इसका भरपूर उपयोग करते हैं।
यह असफलता बच्चों में क्यों आती है ?
इसलिए क्योंकि वे डरते हैं, ऊबते हैं और भ्रमित रहते हैं।
उनके मन में सबसे बड़ा भय होता है अपने माँ-बाप, शिक्षकों आदि को नाराज़ करने का। इन व्यस्कों की असीम आशायें और अपेक्षायें बच्चों के सिरों पर बादलों की तरह गहराती हैं।
बच्चे ऊबते इसलिए हैं, क्योंकि जो कुछ उन्हे स्कूल में करने को दिया जाता है, वह सबका सब बेहद निरर्थक और नीरस होता है।
बच्चे भ्रमित इसलिए होते हैं क्योंकि उन पर हमेशा अर्थहीन शब्दों की बौछार होती रहती है। ये शब्द बराबर उस सब का खंडन करते रहते हैं जो बच्चों को पहले बताया गया था। इन शब्दों का बच्चों के खुद के अनुभवों से कुछ लेना-देना नहीं होता है।
अच्छे स्कूलों की दो विशेषतायें होती हैं।
अगर बच्चे स्कूल में कुछ नहीं सीखते हैं, तो इसकी जिम्मेदारी स्कूल खुद स्वीकार करता है। इसका दोष वह बच्चे और उसके परिवार पर नहीं लादता है।
दूसरे, अगर कक्षा में उपयोग किया कोई तरीका, या विधि कारगर होती नहीं लगती तो वह उसे त्याग कर और कोई तरीका अपनाने की चेष्टा करते हैं। अच्छे स्कूल हमेशा पद्धतियों और उपायों को असफल करार देते हैं, छात्रों को नहीं।

बच्चों का अपना अखबार

शहीद भगतसिंह पुस्तकालय, पिपरिया, मध्य प्रदेश में रविवार वाले दिन बच्चों का काफी जमघट इकट्ठा था। उस दिन एक भूरे कागज को दीवार पर चिपका दिया गया था। कागज पर लिखा था 'बच्चों का अखबार'। बच्चों से कहा गया कि वह अपनी मर्जी से जो चाहें लिखें, या चित्र बनायें और उन्हें भूरे कागज पर चिपका दें।

पहले तो बच्चों ने अपनी किताबों के कुछ अंशों को लिख कर चिपकाया या फिर चित्रों की नकल उतारी। काफी चर्चा के बाद ही बच्चों को यह समझ में आया कि उन्हें कुछ अपने आप लिखना है। पहली लिखी गई खबर थी 'कुऐं में गिरी बकरी' दूसरी थी 'नाले में गिरा कुत्ता'।

एक शाम स्थानीय सिनेमा-घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ। एक घंटे बाद जब बच्चे पुस्तकालय आए और उन्होंने भूरे अखबार पर लड़ाई की खबर पढ़ी तब उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उसके बाद से तो बच्चे सभी विषयों के बारे में लिखने लगे - खेल-कूद, छुट्टियाँ, सपने, समस्यायें आदि।

जल्द ही बच्चों द्वारा लिखा यह अखबार 'बाल चिरइया' के नाम से साइक्लोस्टाइल होकर छपने लगा। 1989-90 में इस अखबार की 1000 प्रतियाँ छपती थीं, जिन्हें बच्चे 25 पैसे में खरीदते थे। बच्चे अपने स्कूल की असलियत को अखबार के माध्यम से उजागर करने लगे। एक मास्टर अक्सर गैरहाजिर रहते थे, दूसरे क्लास में सोते रहते थे। हेड-मास्टर साहब बच्चों से मुफ्त में सब्जी मंगवाते थे। इन खबरों से कभी-कभी बच्चों को पिटाई भी सहनी पड़ती, परन्तु अखबार की लोकप्रियता बढ़ती रहती। कई बच्चे खबरों को अपनी स्थानीय भाषा बुंदेली में लिखते और अपने माता-पिता को पढ़ कर सुनाते।

आप भी आसानी से अपने स्कूल में एक भूरा कागज चिपका कर बच्चों को लिखने, चित्र बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। जब बच्चे अपने खुद के अनुभवों को लिखेंगे, तभी उनकी मौलिक लेखन की क्षमता बढ़ेगी। बच्चे लिखने से पहले अपने आस-पास की घटनाओं का बारीकी से अध्ययन करेंगे। यह कम-लागत का अखबार बच्चों की सुप्त प्रतिभा को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है।

गुणा का रोचक तरीका

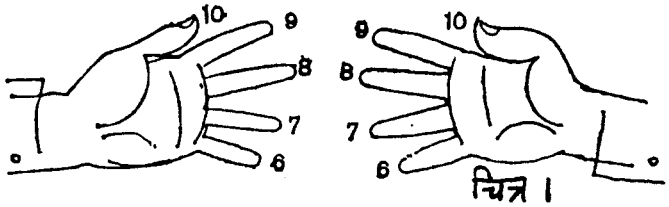

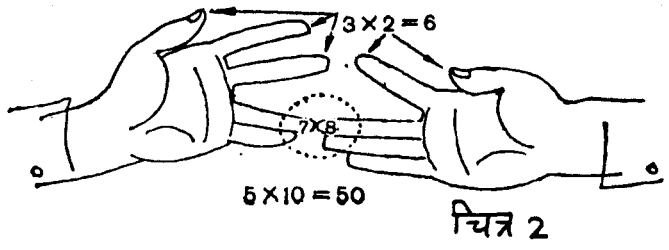

इस गुणा के तरीके में कागज और पेंसिल की जरूरत नहीं पड़ती है। रूस में क्रांति के बाद साधनों का बड़ा अभाव था। वहाँ पर इसका उपयोग गरीब बच्चों को गुणा सिखाने के लिए किया गया था। 6 से 10 तक के अंकों को गुणा करने का यह एक बेहद रोचक तरीका है। इसके लिए आप चित्र 1 में दिखाए अनुसार अपनी उंगलियों को 6 से 10 तक के अंक दें। अगर आप 7 को 8 से गुणा करना चाहते हैं तो एक हाथ की 7 वाली उंगली को दूसरे हाथ की 8 वाली उंगली से जोड़ें। मिली उंगलियों और उनके नीचे वाली हरेक उंगली का मान 10 होगा। यहाँ पर 10 वाली पाँच उंगलियाँ हैं जिनका योग 50 होगा। फिर आप बायें हाथ की बची उंगलियों को दायें हाथ की बची उंगलियों से गुणा करें। यहाँ पर इसका मान 3 × 2 = 6 होगा। इस संख्या को 50 में जोड़ने पर सही उत्तर 50 + 6 = 56 मिलेगा।

झटपट जोड़

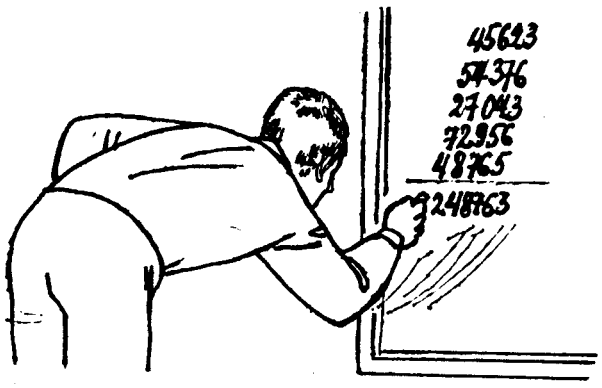

इस खेल में पाँच-पाँच अंकों की संख्याओं को कोई भी बच्चा बहुत तेजी से जोड़ सकता है। बस उसे इस खेल का रहस्य पता होना चाहिए।
अपने मित्र से ब्लैक-बोर्ड पर कोई भी पाँच अंकों की संख्या लिखने को कहें। फिर उसके नीचे आप अपनी पाँच अंको वाली संख्या लिखें। आप अपने अंकों को इस प्रकार लिखें, कि पहले अंक और आपके चुने हुए अंक का जोड़ 9 हो। उदाहरण के लिए

मित्र की संख्या 4 5 6 2 3
तो आपकी संख्या हो 5 4 3 7 6

आपका मित्र अब दूसरी पाँच अंकों की संख्या लिखे। इसके बाद आप चौथी संख्या लिखें। मित्र द्वारा पाँचवी संख्या लिखे जाने के बाद आप उसके नीचे एक लाइन बना कर उसका जोड़ लिख दें। आप इतनी जल्दी कैसे जोड़ पाते हैं?
आप पाँचवी संख्या में से 2 घटायें और उस 2 को अपने उत्तर के सामने लिख दें। उदाहरण के लिए - अगर पाँचवी संख्या 48765 है तो आप 248763 लिख दें।

खेलते बच्चे - सीखते बच्चे

(सीखना - सिखाना, खुशी - खुशी)
एकलव्य प्रकाशन, 10 रुपये

"खेलना बच्चों का काम है"
"उन्हे खेल में ही मज़ा आता है।"
आमतौर पर लोगों की यही धारणा होती है। इसीलिए हमारे लिए "खेलना" शब्द का मतलब "सीखना" नहीं है। और हम मानते हैं कि बच्चे के लिए पढ़ना ही सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है। और हम मानते हैं कि खेलना मात्र मनोरंजन है और इससे बच्चे कुछ भी नहीं सीखते हैं। खेलने और सीखने में इस खाई के कारण ही बच्चों को हमेशा टोक - टोक कर पढ़ने को बैठाया जाता है।

हमें अक्सर घरों में इस तरह की बातचीत सुनने को मिलती है "अब तक बच्चा खेल ही रहा था, बस अभी पढ़ने बैठा है।" जैसे कि खेलना खत्म करने के बाद, पढ़ना शुरू करने पर ही उसने सीखना शुरू किया है। क्या यह सही है? क्या खेलने और सीखने को इतने अलग - अलग दायरों में रखना उचित है?

बच्चों के लिए इधर - उधर की चीज़ें बटोरते रहना एक मजेदार खेल है। उदाहरण के लिए मरे कीड़े - मकोड़े, पत्ते, रंगीन - कागज़, रंगीन पत्थर, कंकड़, सीप, लकड़ी के टुकड़े आदि उन्हे आसानी से मिल जाते हैं। वह खेल - खेल में इन्हे छाँटते हैं, अलग - अलग ढ़ेरों में बाँटते हैं और उनसे अनेक प्रकार के नमूने बनाते हैं। इन क्रियाओं से बच्चों की अवलोकन शक्ति बढ़ती है। धीरे - धीरे वे चीज़ों के आकार, लम्बाई, मोटाई, रंग और अन्य गुणों के आधार पर अंतर और समानता पहचानने लगते हैं।

इस पुस्तक में भाषा, लिखाई, गणित को रोचक तरीके से सिखाने के बहुत सुन्दर तरीके दिए हैं। यह पुस्तक प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों के लिए क्रियाओं और गतिविधियों द्वारा सिखाने के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी जून 1998, अंक 31

रेत का एक कण

जवाहर लाल नेहरू

किसी भी भाषा - जैसे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी को पढ़ने से पहले उसके अक्षरों को सीखना पड़ेगा। इसी प्रकार प्रकृति की वर्णमाला को सीखने के बाद ही आप पत्थरों में रची प्रकृति की कहानियों को पढ़ पायेंगे। सभी लोग प्रकृति को थोड़ा - बहुत तो पढ़ना जानते ही हैं।

जब आप किसी गोल, चिकने पत्थर को देखते हैं तो वह आपको क्या बताता है? वह कैसे चिकना और चमकीला बना? उसके खुरदुरे किनारे और कोने कहाँ गए? अगर आप किसी भी बड़े पत्थर को छोटे टुकड़ों में तोड़ेंगे तो आप पायेंगे कि हरेक छोटा पत्थर नुकीला और खुरदुरा होगा। वह देखने में गोल, चमकीले, चिकने पत्थर जैसा बिलकुल नहीं लगेगा। पत्थर का नुकीला, खुरदुरा टुकड़ा कैसे गोल और चिकना बना?

अगर आप कान खोल कर सुनेंगे और आँखें खोल कर देखेंगे तो पत्थर आपको अपनी आत्मकथा अवश्य सुनायेगा। वह कहेगा कि लाखों-करोड़ों वर्ष पहले शायद वह भी वैसा ही पत्थर था जैसा आपने अभी तोड़ा है। वह भी नुकीला था और उसके कोने खुरदुरे थे। वह किसी पहाड़ी के ढलान पर पड़ा था। फिर ज़ोरदार बारिश आई और वह उसको बहा कर घाटी में ले गई। वहाँ एक पहाड़ी झरना उसे धकेल कर एक नदी तक ले गया। और छोटी नदी पत्थर को बड़ी नदी तक ले गई। पत्थर पूरे समय नदी की तलहटी में लुढ़कता रहा। इससे उसके नुकीले कोने गोल हो गए और खुरदरी सतह चिकनी हो गई।

यह वही गोल और चिकना पत्थर है जिसे आप देख रहे हैं। नदी ने उसे कहीं छोड़ दिया और आपने उसे उठा लिया। अगर पत्थर नदी के साथ बहता जाता तो उसका आकार छोटा होता जाता और अंत में वह रेत का एक कण बन जाता। उस रेत से बच्चे किले बनाते। प्रकृति सबसे अच्छी शिक्षक है।

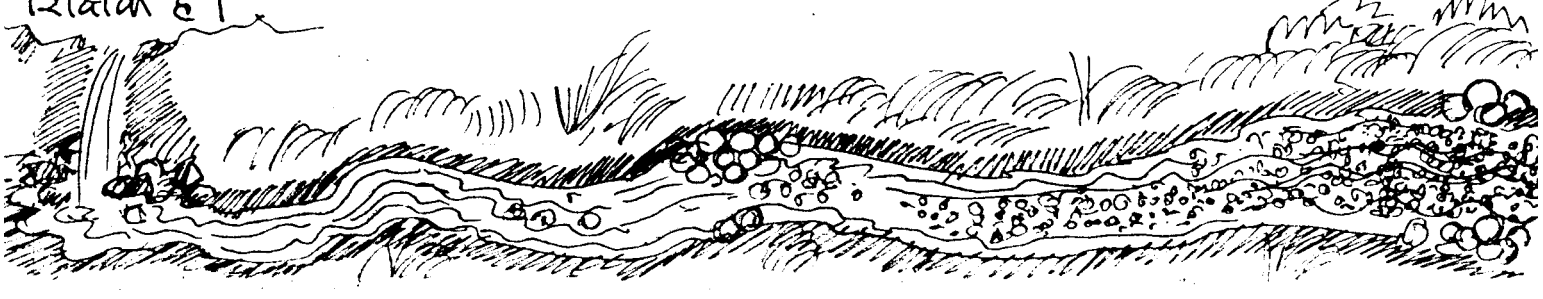

चिड़ियों की माला

दूसरे महायुद्ध में अमरीका ने जापान के दो नगरों - हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम-बम्ब गिराए। उससे बेइन्तहा तबाही हुई। लाखों लोग मरे। हज़ारों लोग सारी जिंदगी के लिए अपंग हो गए। सडाको उस समय दो साल की बच्ची थी। वह किसी तरह बच गई।

सडाको स्कूल जाने लगी। वह दौड़ने में बहुत तेज़ थी और अपने मित्रों की बड़ी चहेती थी। जब सडाको ।। साल की हुई तो एक दिन खेल के मैदान में वह दौड़ते समय ज़ोर-ज़ोर से हाँफने लगी। उसे तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरी जाँच में खून का कैंसर पाया गया। सडाको को यह रोग परमाणु-बम्ब की भयानक किरणों के कारण ही हुआ था।

सडाको के दोस्तों को इससे बहुत बड़ा धक्का लगा। अब वह स्कूल न जाकर अपना सारा समय सडाको के साथ अस्पताल में बिताते। जापान में लोगों की एक मान्यता है। चिरआयु के लिए वहाँ लोग कागज को मोड़ कर उनसे छोटी चिड़िए बनाते हैं। लोग मानते हैं कि इस प्रकार चिड़िए बनाने से उनकी उम्र लम्बी होगी। सडाको को मृत्यु से बचाने के लिए बच्चे दिन भर कागज की चिड़िए मोड़ते रहते थे। उन्होंने सौ, हज़ार, दस हज़ार चिड़िए बनायीं, पर फिर भी वह सडाको को नहीं बचा सके। इससे उन्हे बहुत दुख पहुँचा।

उन्होंने दुनिया के सभी देशों के बच्चों के नाम पत्र लिखे। दुनिया के बच्चों ने अपने गुल्लकों में से रूबल, सेंट, पेनी, पैसे निकाल कर भेजे। इन पैसों से सडाको की याद में एक मूर्ति स्थापित की गई। इसे "शान्ति स्थल" कहते हैं।

जब कोई राष्ट्र अध्यक्ष "शांति-स्थल" के दर्शन के लिए आते हैं, तो उनका स्वागत कैसे होता है? स्वागत माला एक हजार कागज की चिड़ियों को धागे में पिरो कर बनाई जाती है।

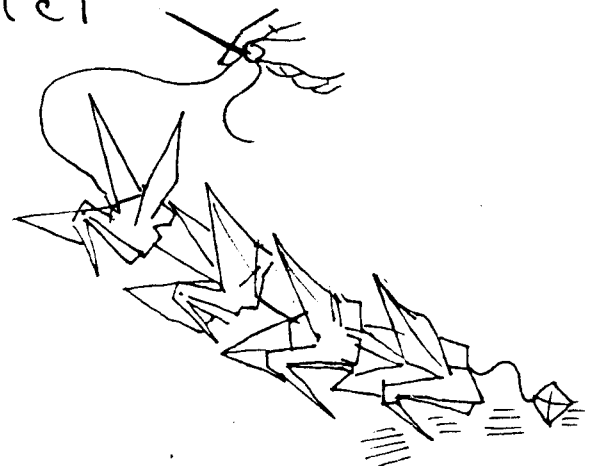

इसके पीछे संदेश है: "परमाणु बम्ब बनाना बंद करो" और "शांति से रहो"।

भारत और पाकिस्तान - दुनिया के दो गरीब देश हर वर्ष 5000 करोड़ रुपए का रक्षा खर्च करते हैं। यह दुख की बात है। यह पैसा लोगों की शिक्षा और सेहत पर खर्च होना चाहिए - हथियारों पर नहीं।

पंख फड़फड़ाती चिड़िया

पिछले पन्ने पर आपने जो कहानी पढ़ी, उसी चिड़िया को बनाइये।

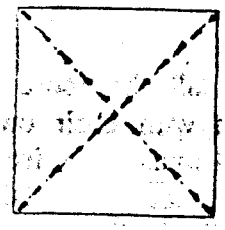

एक कागज का वर्ग लें।
वर्ग के विपरीत कोनों को मोड़ कर गुणा का चिन्ह बनायें।

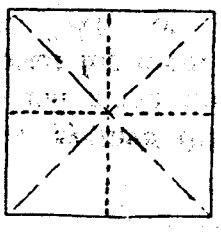

अब कागज पलटें।
फिर विपरीत सिरों को मोड़ कर धन का चिन्ह बनायें।

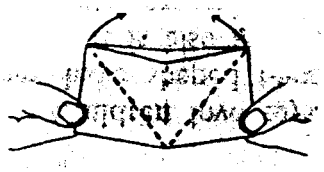

कागज को दबाने पर छोटा वर्ग बनेगा।

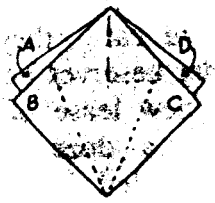

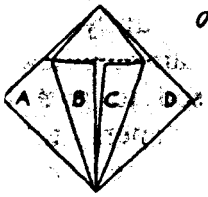

वर्ग का केंद्र ऊपर रखो।
B और C को बीच की रेखा तक मोड़ो।

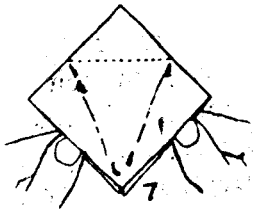

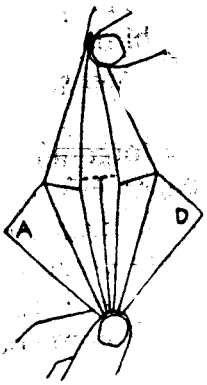

B और C को वापिस खोलो।
वर्ग में अब एक तिकोना मुड़ा दिखेगा।
अब कागज की एक तह लो और उसे मुकुट के आधार तक उठाओ।
इस प्रकार एक बर्फी-नुमा आकृति बनेगी।

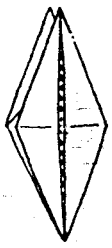

दूसरी ओर भी इसी प्रकार की बर्फी बनाओ। इसे पक्षी का मुख्य आधार कहते हैं।

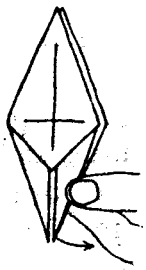

इसमें ऊपर की ओर दो पंख होंगे और नीचे की ओर दो कटे हुए हिस्से होंगे।

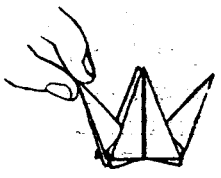

कटे हुए हिस्सों को पंखों के बीच उठा कर मोड़ें।
किसी भी एक तरफ नीचे मोड़ कर चिड़िया की चोंच बनायें।

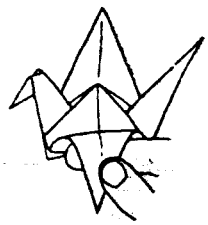

चिड़िया के दोनों पंखों को सावधानी से नीचे लचा दें।

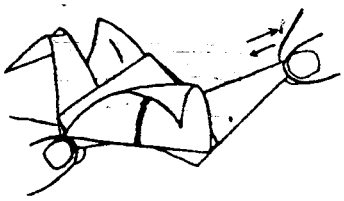

अब बायें हाथ से चिड़िया की गर्दन पकड़ें और दायें हाथ से उसकी पूंछ खींचें और ढील दें।
चिड़िया अपने पंख फड़फड़ायेगी।

गणित के कुछ रोचक प्रश्न

4 से 12 तक के अंकों को गोलों में इस प्रकार भरें, जिससे हरेक सीधी रेखा का जोड़ 24 हो।

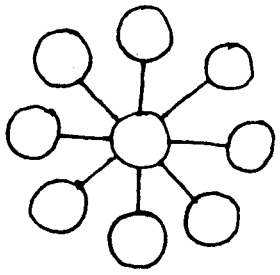

दो सीधी रेखाओं से घड़ी के डायल को तीन खंडों में इस प्रकार बाँटें जिससे हरेक खंड में अंकों का जोड़ एक समान हो।

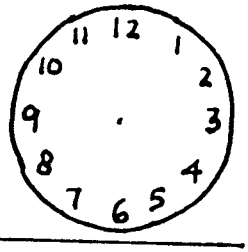

क्या आप पाँच 3 के अंकों से 13 बना सकते हैं?
एक तरीका यह हो सकता है : $3 \times 3 + 3 + \frac{3}{3} = 13$
अब आप खुद कुछ प्रश्न करें :

1. तेरह 1 के अंकों से 13 बनायें ?
2. तेरह 2 के अंकों से 13 बनायें ?
3. तेरह 9 के अंकों से 13 बनायें ?

एक किसान के पास कुछ बकरियाँ और मुर्गियाँ हैं। उनके कुल मिलाकर 9 सिर और 24 पैर हैं। बताओ उनमें कितनी बकरियाँ और कितनी मुर्गियाँ हैं?

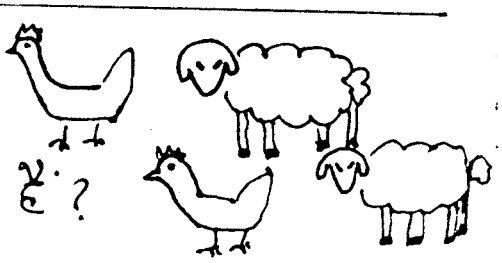

नीचे बनी आकृति में 1 से 8 तक के अंक भरें। परन्तु एक बात का ध्यान रखें। कोई भी रेखा पास के अंकों को न जोड़े। मिसाल के लिए अंक 3 को आप 2 या 4 से नहीं जोड़ सकते। इसी प्रकार 6 को 5 या 7 से नहीं जोड़ सकते।

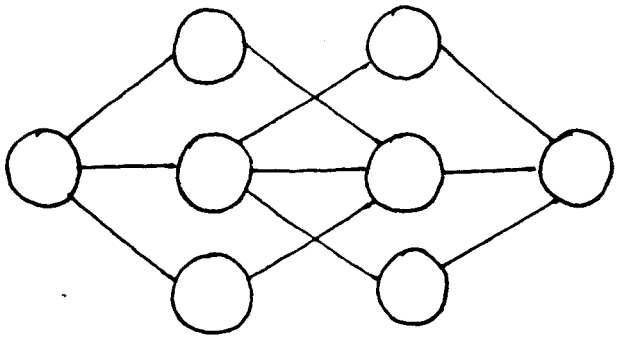

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी अगस्त 1998, अंक 32

विज्ञान आश्रम

पूना से करीब साठ किलोमीटर दूर, पाबल नाम के गाँव में विज्ञान आश्रम नाम की संस्था काम करती है। करीब 15 वर्ष पहले इसे डा. एस. एस. कालबाग ने शुरू किया था। उससे पहले उन्होंने हिन्दुस्तान लीवर कम्पनी में 25 वर्ष तक शोध कार्य किया था।

आजकल पढ़ाई रटने पर आधारित है। बच्चे ऐसे बहुत कम हुनर सीखते हैं, जिनसे कि समाज को कुछ लाभ हो। परंतु विज्ञान आश्रम में पाठ्यक्रम ठोस और समाज उपयोगी कुशलतायें सिखाते हैं। यहाँ पर आठवीं से धातु खराद मशीन का काम, वेल्डिंग, मोटर-पम्प की मरम्मत आदि सीखते हैं। हाई-स्कूल की परीक्षा में एक टेक्नीकल पेपर होता है, जिसमें कुशलता के आधार पर नम्बर मिलते हैं। अपने स्कूल की वर्कशाप में बच्चे गाँव में काम आने वाली बहुत सी चीज़ें बनाते हैं।

इस पूरे इलाके में पानी की बेहद किल्लत थी। कुँआ कहाँ खोदें? यह जानने के लिए पूना से विशेषज्ञ इंजीनियर को बुलाना पड़ता था। अब विज्ञान आश्रम के छात्र मिट्टी का प्रतिरोध नापकर खुद ही कुँए का सही स्थान निश्चित करते हैं। छात्रों की फीस मात्र 50 रुपये है, जबकि इंजीनियर उसके 1000 रुपये लेता था। इससे गाँव वालों को बहुत लाभ हुआ है।

आठवीं कक्षा की लड़कियाँ मल-मूत्र, खून आदि की जाँच करना सीखती हैं। यह लड़कियाँ गाँव के प्रत्येक घर में जाकर बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का सर्वेक्षण करती हैं। वह उनका वजन, आयु, ऊँचाई आदि आंकड़े नोट करती हैं। कमजोर बच्चों के खून की जाँच करके उसमें लोहे की मात्रा पता करती हैं। फिर वह उनकी माताओं को उपयुक्त और संतुलित आहार के बारे में सलाह देती हैं।

इस प्रकार विज्ञान आश्रम में बच्चे न केवल रोचक तरीके से विज्ञान सीखते हैं, परंतु वह वास्तव में समाज उपयोगी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इस तरह के ठोस वैज्ञानिक शिक्षण से बच्चों का आत्म-विश्वास भी बढ़ता है।

पुराने ट्यूब का खिलौना

टूथपेस्ट, दवाई की क्रीम या ऐसी ही किसी चीज़ के खाली ट्यूब का उपयोग आप खूबसूरती से कर सकते हैं।

ज़रा इस चित्र को देखें, एक बेकार ट्यूब पर कैंची से कुछ कट लगा कर एक गुड़िया तैयार हो गई है। इसका चेहरा बनाने के लिए रबड़ का गोल टुकड़ा या गत्ते का उपयोग करें।

अल्युमिनियम के खाली ट्यूब से बनी इस गुड़िया को आप चाहें तो बैठा सकते हैं, लिटा सकते हैं; दौड़ा सकते हैं।

इस आप अलग-अलग मुद्राओं में सजा सकते हैं।

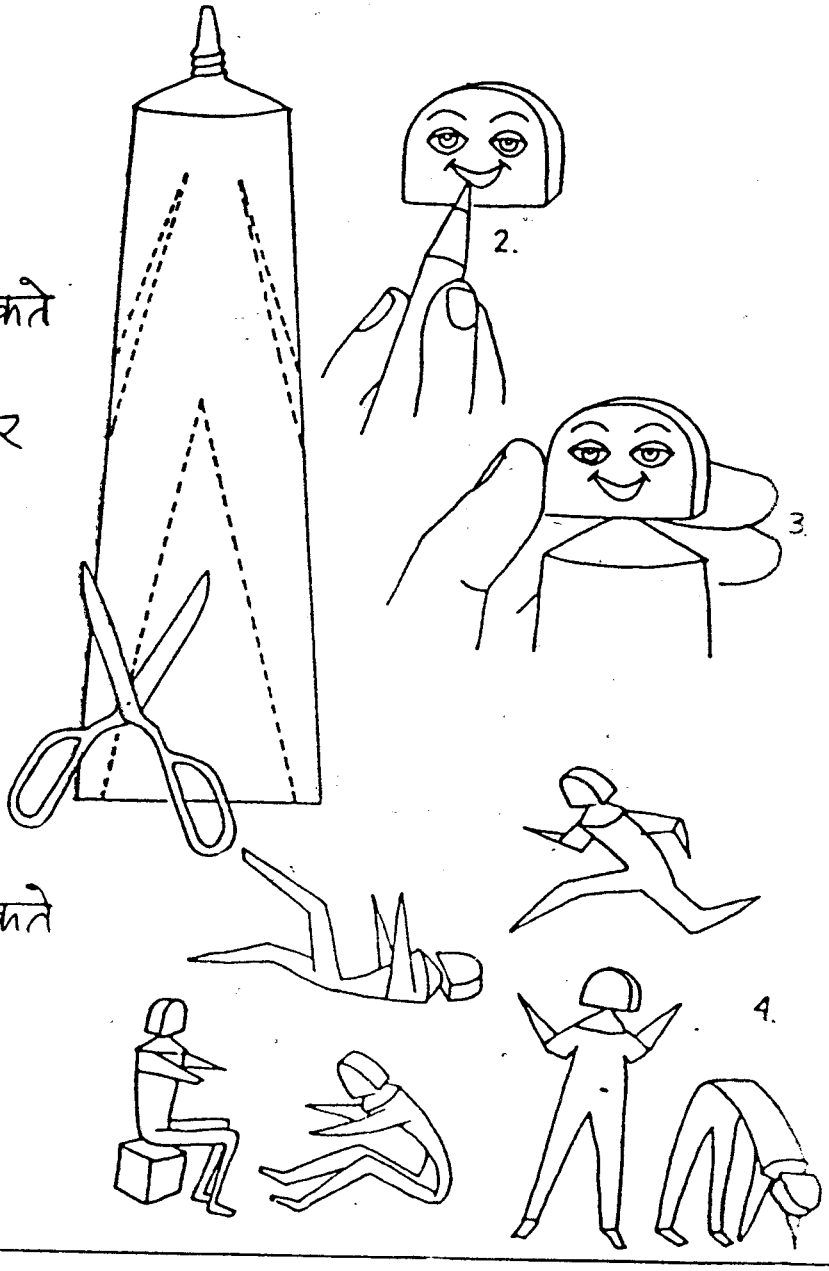

टिकटिकी

एक रबड़ के छल्ले, एक कमीज़ के बटन और 50 सेंटीमीटर लम्बे मोटे डोरे और एक सोडा-वाटर की बोतल के ढक्कन से आप यह खिलौना बना सकते हैं। डोरे में गाँठें 2-2 सें.मी. पर हों।

अब एक हाथ से ढक्कन पकड़ें और दूसरे हाथ के अंगूठे और पहली उंगली से डोरे को हल्के से दबायें और हाथ चलायें। टिक-टिक की आवाज़ निकलेगी।

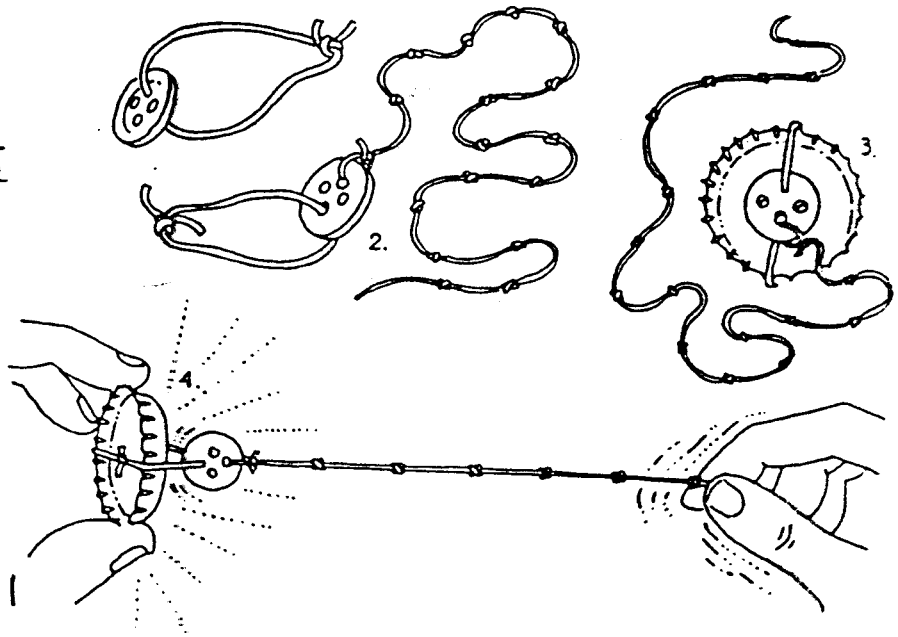

अगर हमें बंदूक मिले तो

- रमेश दवे

साभार 'चकमक'

अगर हमें बंदूक मिले तो
उसकी नली निकालें,
बना बाँसुरी खूब बजाएँ
गीत प्यार के गाएँ !

अगर हमें बंदूक मिले तो
खेतों पर ले जाएँ,
नली से खेतों को सींचें
फसलें हरी बनाएँ !

मैं तोड़ूँ बंदूक, फूँकनी
उसे बनाकर दूंगा,
अम्मा का चूल्हा जले हमेशा
ऐसा काम करूंगा !

मैं तोड़ूँ बंदूक, बना लूँ
नलियों से पिचकारी,
सारी दुनिया को रंग दूँगी
भर-भर कर किलकारी !

बंदूकों से बना खिलौने
खेलें, कूदें, गाएँ,
बम गोलों को गेंद बनाकर
सबको यह बतलाएँ !

ये बंदूकें हम बच्चों को
दे दो दुनिया वालों !
नफरत, जंग मिटा देंगे हम
सुन लो दुनिया वालों !

बाँकी बाँकी धूप

(एकलव्य प्रकाशन, मूल्य 16/-)

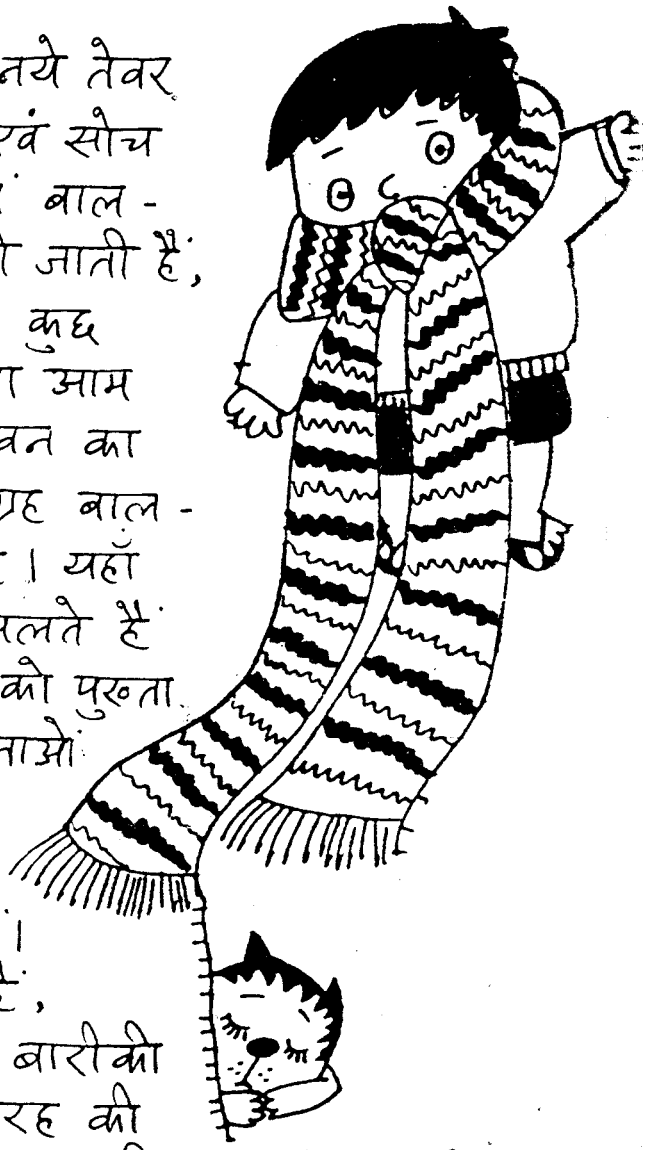

बच्चों का यह कविता संग्रह बाल कविता के नये तेवर लिए हुए है। इन कविताओं में हमें कल्पना एवं सोच के नये बिम्ब दिखाई पड़ते हैं। हमारे देश में बाल-कवितायें एक पूर्व नियोजित उद्देश्य से लिखी जाती हैं, और इनका मुख्य उद्देश्य बच्चों को कुछ न कुछ नैतिक उपदेश देना ही रहता है। इसके अलावा आम बाल कविताओं में बच्चों के रोजमर्रा के जीवन का कोई रंग दिखाई नहीं पड़ता। यह कविता संग्रह बाल-कविताओं के इन सभी मिथकों को तोड़ता है। यहाँ हमें बच्चों की कविताओं के विभिन्न रंग मिलते हैं और यह रंग हमारी बाल-साहित्य की समझ को पुख्ता करते हैं। इस किताब में हम बच्चों की कविताओं को संरचना, रूप-विधान, बिम्ब व सोच को नये संदर्भों में देख सकते हैं।

संग्रह में 16 रचनाकारों की 21 कवितायें हैं। सारी कवितायें मोहक चित्रों से सजी हुई हैं, और इन चित्रों ने कविताओं के भावों को बारीकी से उभारा है। इन चित्रों में हमें विभिन्न तरह की धारायें मिलती हैं। जिनमें लोक-कलाओं व आदिवासी कलाओं के नमूने भी हैं। इन चित्रों के कारण हम कविताओं को देख कर ही समझ सकते हैं। चित्रों ने अपना काल्पनिक संसार बुना है, बिल्कुल बच्चों की दृष्टि से। इसके अलावा पुस्तक के चित्र नितान्त मौलिक हैं और इनमें कृत्रिमता दिखाई नहीं देती।

पुस्तक की यह सारी कवितायें चकमक (बाल विज्ञान पत्रिका) के विभिन्न अंकों में प्रकाशित हो चुकी हैं। 'चकमक' से इन कविताओं को छाँट कर एक किताब का आकार दे दिया गया है।

(पुस्तक समीक्षा श्री कमलेश जोशी)

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर-4

फुलझड़ी सितम्बर 1998, अंक 33

स्कूल से बाहर की दुनिया

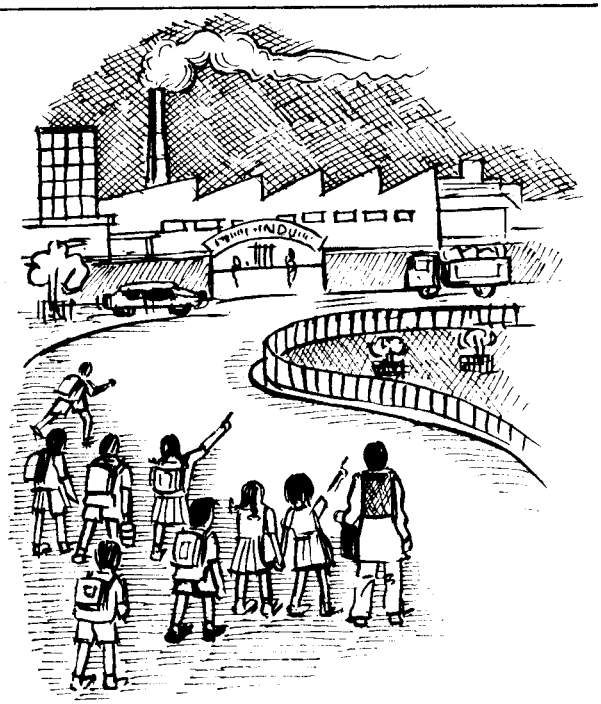

गरवारे बाल-भवन, पुणे के बच्चे महीने में दो बार तो कहीं दूर पिकनिक पर जाते ही हैं। इस दौरान वह अलग-अलग बगीचों, मंदिरों, किलों, संग्रहालयों, कारखानों और अन्य दर्शनीय स्थलों की सैर करते हैं।

अलग-अलग कारखानों में जाकर वहाँ के काम को देखने पर खास बल दिया जाता है। इससे दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाली चीजों के उत्पादन की विधि बच्चों को समझ में आती है। बड़े होकर बच्चे खुद क्या करना चाहेंगे, वह कौन सा व्यवसाय चुनेंगे, इसके बारे में भी उन्हे पता चलता है।

राजा बहादुर मिल में बच्चे कपास से कपड़ा तैयार होते हुए देखते हैं, तो वह साठे बिस्किट कारखाने में आटे के बिस्किट बनते हुए देखते हैं। वह पूना बाटलिंग प्लांट में ठंडे-पेय की बोतलों को भरता हुआ देखते हैं। पूना के पास चाकण नाम का एक गाँव है। वहाँ बच्चों ने ऑइल-मिल और मशरूम की खेती देखी। ऑइल-मिल में बच्चों को मूमफली के ढेर पर खेलने की अनुमति मिल गई। फिर तो बच्चे घंटों तक मूमफली के पहाड़ पर चढ़ कर नीचे फिसलते रहे। इसमें उन्हे बड़ा मज़ा आया।

चीनी-मिल में बच्चे गन्नों के पहाड़ों को देख कर आश्चर्यचकित रह गए। चीनी का ढेर देखकर एक छोटी बच्ची ने कहा "यहाँ पर तो बहुत सारी चीटिंयाँ होंगी।"

बर्तन का कारखाना और चॉकलेट फैक्ट्री का भी बच्चों ने भ्रमण किया। टूटी-फ्रूटी की फैक्ट्री भी बच्चे देखने गए। वहाँ उन्होंने कच्चे पपीते के टुकड़ों को शक्कर की रंगीन चाशनी में से निकलते हुए देखा। वहाँ इतनी बदबू आ रही थी कि बच्चों को खड़े रहना मुश्किल हो गया। उन्होने टूटी-फ्रूटी कभी न खाने का निश्चय किया।

अंगूरों की खेती, आटा-चक्की, आरा-मशीन, रेल्वे स्टेशन और डाकघर देखकर बच्चे बिना बताए ही बहुत कुछ सीखते हैं।

ब्लैक बोर्ड पर चित्र

बच्चे हमेशा चित्रों में सोचते हैं, शब्दों में नहीं। इसीलिए यह एकदम जरूरी है कि प्रत्येक प्राइमरी स्कूल के शिक्षक को ब्लैकबोर्ड पर सरल चित्र बनाना आयें। यह काम कोई कठिन नहीं है, बस थोड़ी सी कोशिश करनी पड़ेगी। क्योंकि सीखने के हरेक पहलू के साथ लोग जुड़े होते हैं, इसलिए लोगों के चित्र बनाना अवश्य सीखें।

खड़े हुए लोग

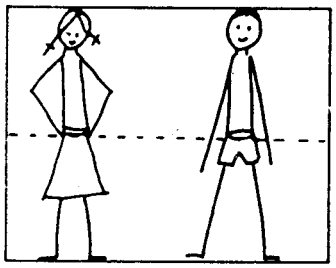

सिर और शरीर की मिलीजुली लम्बाई पैरों जितनी होगी। दोनों बाजुओं को नीचे की ओर सीधा करें तो वे पैरों के ऊपर तक आयेंगे।
हाथ, नाक और कान बनाए बिना भी काम चल जायेगा।

चलते हुए लोग

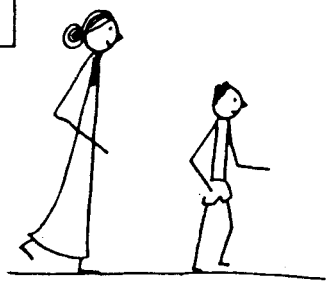

नाक आगे की ओर सीध में होगी। पैर भी आगे की ओर होंगे। कोहनी पीछे की ओर और घुटने आगे को होंगे। एक पाँव सीधा जमीन पर होगा।

दौड़ते हुए लोग

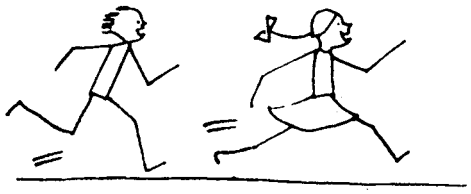

उनके दोनों हाथ आगे-पीछे झूल रहे होंगे। शरीर थोड़ा आगे की ओर झुका होगा। दोनों पाँव जमीन के ऊपर भी हो सकते हैं। अगर आप चाहें तो शरीर के पीछे वेग-रेखायें भी बना सकते हैं। बाल पीछे की ओर लहराते हों और मुँह खुला हो सकता है।

बैठे हुए लोग

अगर व्यक्ति को कुर्सी पर बैठा हुआ दिखाना हो, तो उसका चित्र सामने की अपेक्षा एक ओर से बनाना ज़्यादा आसान होगा।
अगर व्यक्ति को ज़मीन पर बैठा दिखाना हो तो उसका चित्र सामने से ही बनाना सरल पड़ेगा। दोनों पैरों की आपस में पालथी बनाने की कोशिश न करें। ऐसा करने से कुछ गड़बड़ हो सकती है।

लोगों के चित्र बनाने के लिए कुछ सुझाव

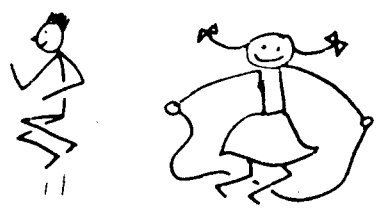

हाथ-पैर आगे हैं यह दिखाने के लिए चित्र में कुछ खाली जगह छोड़ें।

आपको जो भी एक्शन दिखाना हो उसे ज़रा बढ़ा-चढ़ा कर दिखायें। इससे चित्र कार्टून जैसा दिखेगा।

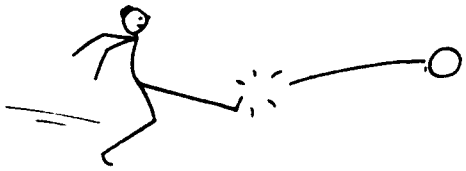

क्रिया या चाल को छोटी-छोटी, गति-रेखाओं से दिखायें।

* जो आपने बनाया है उसे मिटायें नहीं। आपके पास बहुत कम समय है। आप कोई महान कलाकृति तो बना नहीं रहे हैं। क्लास खत्म होते ही आप पूरे चित्र को मिटा ही देंगे।
* बहुत बारीकियाँ दिखाने के चक्कर में न पड़ें। अगर आप बहुत देर तक बच्चों की ओर पीठ करके चित्र बनाते रहे तो बच्चे ऊब जायेंगे और शोर मचाने लगेंगे।

सरल फिरकी

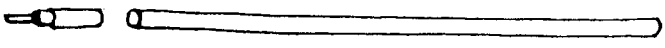

एक पुरानी रीफिल का 2.5 सें.मी. लम्बा टुकड़ा काटो और उसके बीच में डिवाइडर से छेद करो चित्र (1)। अब 9 सें.मी. लम्बे तार को 'U' के आकार में मोड़ो चित्र (2)। रीफिल के टुकड़े को 'U' में पिरो दो चित्र (3)। तार के दोनों सिरों को एक दूसरी रीफिल के टुकड़े पर लपेट दो।

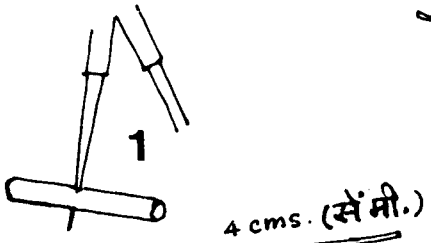

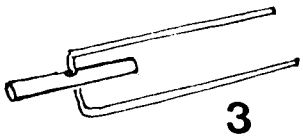

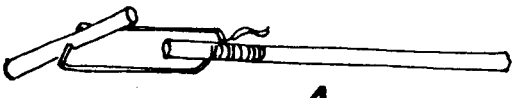

फिरकी के घूमने के लिए दोनों रीफिलों के बीच में पर्याप्त जगह अवश्य छोड़ना चित्र (4)। लम्बी रीफिल में से फूंकने पर फिरकी तेजी से घूमेगी चित्र (5)। जब हवा फिरकी के सिरों से टकरायेगी तब फिरकी सबसे तेज़ घूमेगी।

एक असाधारण रेस

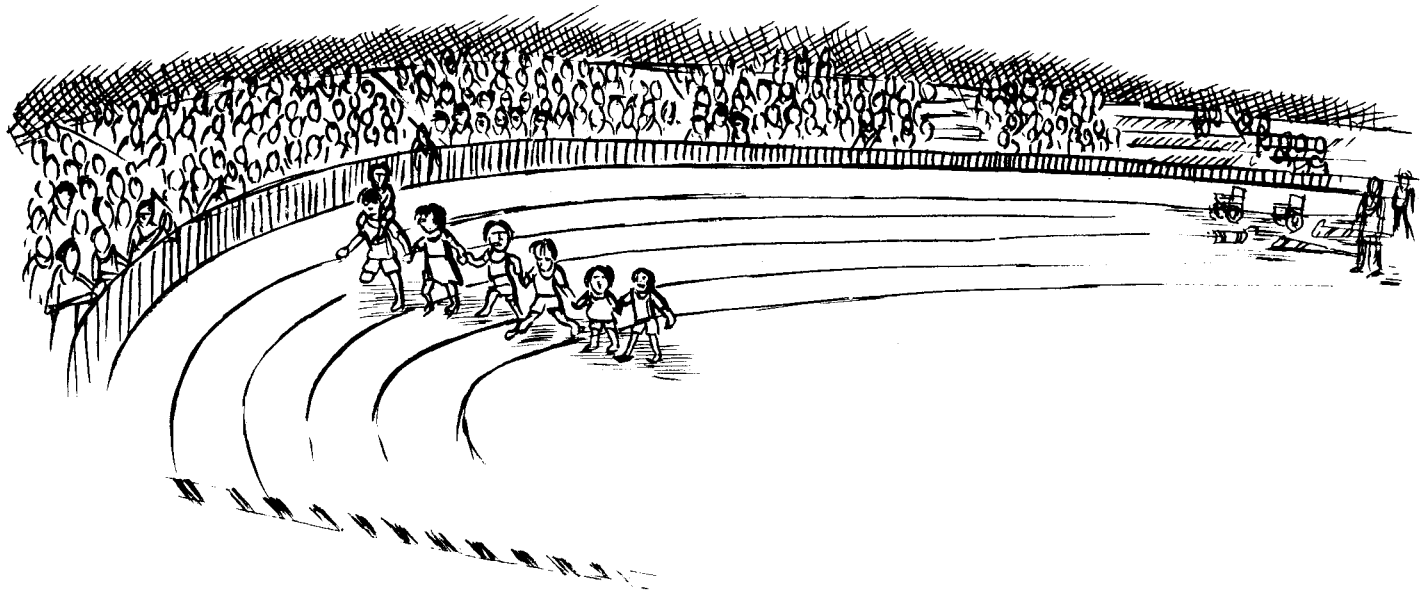

कुछ साल पहले सियेटल, अमरीका में विकलांग बच्चों के लिए विशेष ओलम्पिक खेलों का आयोजन किया गया।

सात खिलाड़ी - सभी शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग, सौ मीटर की दौड़ के लिए एकदम तैयार थे। सीटी बजते ही सबने दौड़ना आरम्भ किया। सभी के दिल में रेस को जीतने की तमन्ना थी। सभी के दिल में मेडल पाने का अरमान था।

सभी तेज़ी से दौड़े, परंतु एक लड़का शुरू में ही गिर गया। उसने दो-तीन पटकियाँ खायीं और फिर वह रोने लगा। बाकी खिलाड़ियों ने उस लड़के के रोने की आवाज़ सुनी। उन्होंने दौड़ना धीमे किया और रुक गए। फिर वह सभी मुड़े और उस लड़के के पास लौटे।

एक लड़की जिसे डाउंस-सिंड्रोम (एक मानसिक विकलांगता) था, उसने उस लड़के को झुक कर चूमा और कहा "इससे वह जल्दी ठीक हो जायेगा।" उसके बाद उन सभी सात खिलाड़ियों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और फिर वह आराम से साथ-साथ चलते हुए, 100 मीटर की अंतिम लाइन तक गए।

यह दृश्य देख कर पूरे स्टेडियम के लोग खड़े हो गए और अगले दस मिनट तक केवल तालियाँ ही बजती रहीं।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी अक्टूबर 1998, अंक 34

आनंदालय

जैसा कि इसके नाम से विदित है, यह एक ऐसा स्कूल है जहाँ बच्चों को सीखने में आनंद आए।

दस वर्ष पहले इसकी स्थापना गुजरात के आनंद नाम के शहर में हुई। आनंद वह जगह है जहाँ से देश में दूध-गंगा का अभियान शुरू हुआ। इसके तहत सैकड़ों गाँवों के हजारों ग्रामीण परिवार मवेशी पालते हैं और उनका दूध बेचते हैं। इस दूध को एकत्रित कर बड़े शहरों में सप्लाई किया जाता है। लाखों गरीब लोग अमूल सहकारी समिति के माध्यम से अपना जीवन यापन करते हैं।

नेशनल डेयरी डेवलप्मेंट बोर्ड (एन.डी.डी.बी.) के चेयरमैन डा. वी. कुरियन के अथक प्रयासों द्वारा इस स्कूल की स्थापना हुई। वह चाहते थे कि देश के सबसे कर्मठ लोग एन.डी.डी.बी में आकर काम करें। अच्छे वेतन के बावजूद भी अच्छे लोग आनंद में काम करने को राज़ी नहीं होते थे। इसका कारण था कि वहाँ उनके बच्चों के पढ़ने के लिए कोई अच्छा स्कूल नहीं था। इसीलिए आनंदालय खोला गया। आनंदालय की प्रमुख सलाहकार प्रसिद्ध शिक्षाविद विभा पार्थसार्थी थीं। विभा बेन के पिता गिजुभाई के शिष्य थे। शायद इस वजह से आनंदालय एक बाल-केंद्रित स्कूल के रूप में विकसित हुआ।

आनंदालय की इमारत का डिज़ाइन प्रसिद्ध आरकीटेक्ट ए.पी. कनविंदे ने किया। सामान्य स्कूलों के कमरे चौकोर होते हैं, परंतु यहाँ पर षटभुज के आकार के कमरे बनाए गए हैं। दो दीवारें अधिक होने के कारण उन पर चार्ट-पोस्टर आदि चिपकाए जा सकते हैं। एक दीवार के शेल्फ में कक्षा का अपना पुस्तकालय होता है। शेल्फों में विभिन्न शैक्षिक साधन भी रखे जाते हैं।

स्कूल का कुछ डिज़ायन ही ऐसा है जो बच्चों के आपसी मेल-जोल को बढ़ावा देता है। चाहे एन.डी.डी.बी का मैनेजर हो, या चपरासी, सभी के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ते हैं। आनंदालय एक साधन-सम्पन्न स्कूल है। परंतु वहाँ की शैक्षिक गतिविधियों से बहुत कुछ सीखने को है।

व्यायाम के आयाम

पूना के बालभवन में बच्चे शुरू में 15-20 मिनट व्यायाम करते हैं। पहले वह साधारण पी. टी. वाली कवायदे करते थे। बाद में उसमें योगासन भी जुड़ गया। अब तो जूडो, कराटे, जिम्नास्टिक और अन्य खेल भी व्यायाम में शामिल हो गए हैं। कसरत करते समय बच्चों को आनंद का अनुभव होता है। हमारा शरीर क्या-क्या कर सकता है और कितनी अलग-अलग तरह से मुड़ सकता है, इस बात की समझ आती है।

बच्चे जब खुद कुछ नया खोजते हैं तब उन्हे उसमें बड़ा मज़ा आता है। व्यायाम जैसी नीरस गतिविधि में भी हमें इसकी झलक मिलती है। एक बच्चे ने कहा "हम ऐसा व्यायाम करें जिसे देख कर अन्य लोगों को हँसी आए।" व्यायाम के समय हम अक्सर एक, दो, तीन की गिनती गिनते हैं, और अपने हाथों को और पैरों को सैनिकों की तरह आगे-पीछे चलाते हैं। यह व्यायाम का कितना हिंसक और उबाऊ तरीका है। क्या इसमें बच्चों को मज़ा आयेगा? इस नीरस फौजी कार्यवाही से बच्चे ऊबेंगे ही।

एक टीचर ने सुझाव दिया "क्यों न हम सा, रे, गा, म... की लय पर व्यायाम करें।" संगीत के सुर कानों को अच्छे लगेंगे। वह कम से कम लेफ्ट-राईट जैसे कानों पर चोट तो नहीं करेंगे। संगीत के मधुर सुरों को आप गुस्से में तो बोल नहीं पायेंगे।

इसके बाद बच्चों ने दिनों के वार, और महीनों के नामों के साथ व्यायाम किया। बच्चों को इसमें आनंद भी आया और वह खेल-खेल में बहुत सी बातें सीख भी गए। छोटे बच्चों का अधिक देर तक व्यायाम में मन नहीं लगता है। इसे ध्यान में रख कर एक नया प्रयोग किया गया। इसमें गिनती की जगह बच्चों के नाम बोलते थे, जैसे सुरीम, वैभव, शीतल, अनिल आदि नाम बोलते-बोलते व्यायाम करना था। बच्चे अपना नाम आने का इंतजार करते और उनका मन कुछ रम जाता है। संगीत की लय पर व्यायाम करने का कुछ मज़ा ही और है। बच्चों की व्यायाम में रुचि पैदा करनी है तो इसमें जबरदस्ती, सख्ती, अनुशासन के नाम पर सजा किसी काम की नहीं है।

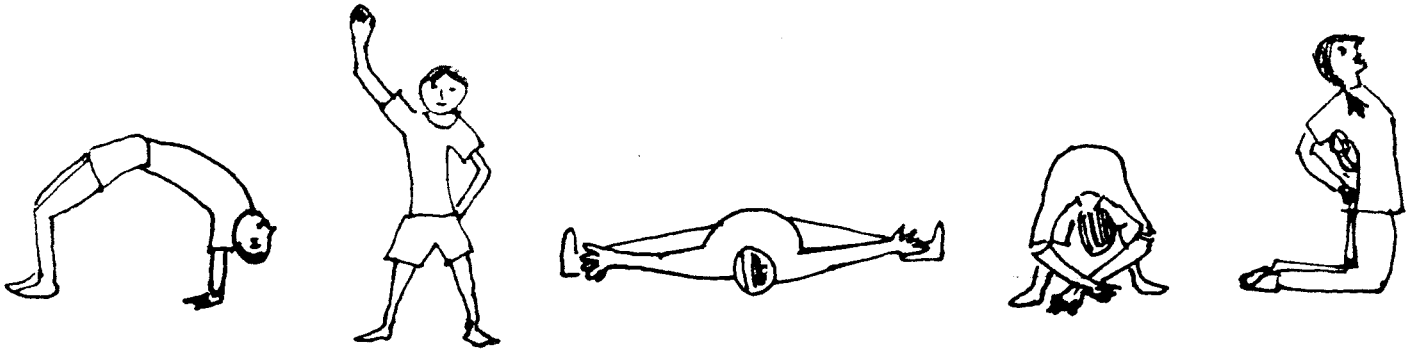

उनकी बातें

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

यह कौन सी दी जा रही है शिक्षा
जो हमें काट रही है जड़ों से
देखिए न
मेरा प्रदेश है गाँवों में
वहाँ पढ़ाया जा रहा है
A फार एप्पल
B फार बॉल
अ से अनार
आ से आम
न मेरे गाँव के बच्चों ने
सेब देखा है, न अनार और आम
वह नहीं जानता डैफोडिल और रोज़ को
वह जानता है
खेजड़ा, बेर, रोहिड़ा, फोग
आक, गूंदी और जाल
नीम और पीपल।
उसे नहीं पता कम्पयूटर का
उसे तो पता है बैल-गाड़ी, ऊँट-गाड़ी का।
वह शायद अपने मन में करता होगा प्रश्न
शैक्षणिक अजनबी दुनिया से
कदाचित
उसकी गहरी दृष्टि ढूंढती होगी
अपना देश, अपना गाँव, ढाणी और घर
अपनी संस्कृति, परिवेश, सरोकार
जिन्हें वह समझ सके सरलता से
आत्मसात कर सके गम्भीरता से
विषय, भाषा, परिवेश, प्रकृति, जीवन
वह प्रतीक्षारत है
कब आयेंगी उसकी अपनी बातें
किताबों में।

कागज की सीटी

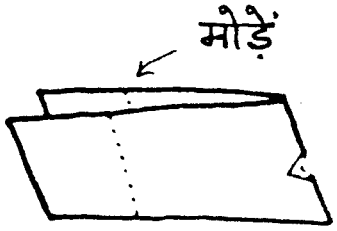

एक कागज की पट्टी लें और उसे बीच में मोड़ें। इस मोड़ में कैंची से एक 'V' आकृति का खाँचा काटें। फिर पट्टी को बिन्दी वाली रेखाओं पर मोड़ दें।

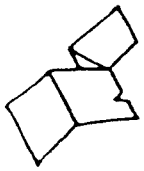

अब मुड़े हिस्सों को मुँह पर रख कर कटे हिस्से में जोर से फूंकें। इससे कागज का कटा हिस्सा ज़ोर से कम्पन करेगा और सीटी जैसी आवाज़ निकलेगी।

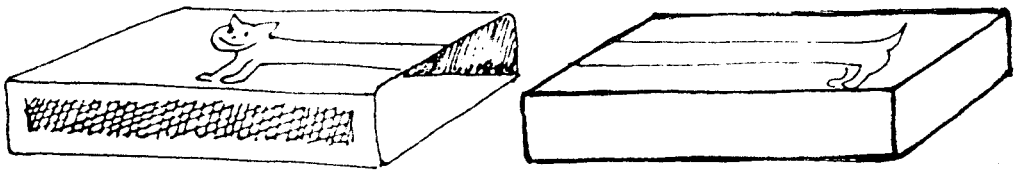

लचीला पेट

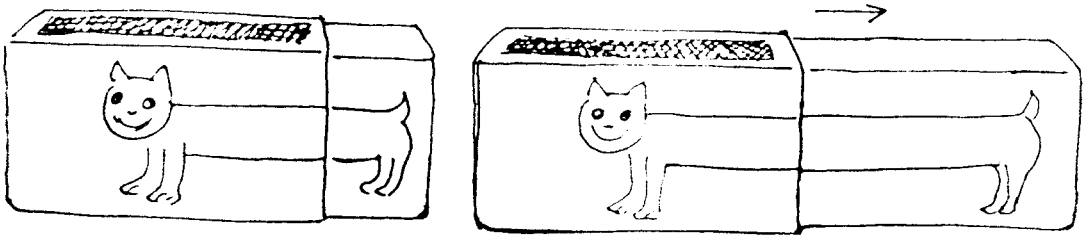

इस सरल खिलौने में छोटे बच्चों को खास तौर पर मज़ा आता है। एक खाली माचिस लें और उसके बाहरी खोखे और दराज में सफेद कागज़ चिपकायें। अब माचिस के दोनों हिस्सों पर बिल्ली का चित्र बनायें। जब दराज खोखे में थोड़ी बंद होती है तो वह सामान्य आकार की लगती है। परंतु दराज बाहर खींचने से ऐसा लगता है जैसे बिल्ली का पेट लचीला हो।

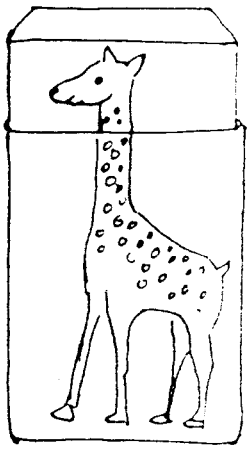

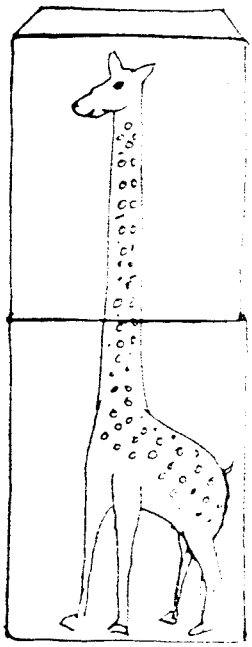

दूसरे खिलौने में इसी प्रकार जिराफ़ की गर्दन खींचने से लम्बी हो जाती है।

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्था क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी नवम्बर 1998, अंक 35

विज्ञान की पढ़ाई

अक्सर विज्ञान की पढ़ाई कुछ परिभाषाओं और सूत्रों को रटने और इम्तहान पास करने तक ही सीमित रह जाती है। विज्ञान का जब लोगों की जिन्दगी से संबंध होगा, तभी वह सार्थक विज्ञान होगा।

आंध्र-प्रदेश के माध्यमिक स्कूल की एक शिक्षिका ने विज्ञान का एक अनूठा प्रयोग किया। उन्हे कहीं से एक पुरानी मच्छरदानी मिल गई। बच्चों की मदद से उन्होंने तार को मोड़-मोड़ कर छल्ले बनाए और उन पर मच्छरदानी के कपड़े को थैली जैसे मढ़ दिया। छल्ले में बाँस का एक हत्था लगा देने से वह एकदम बटर-फ्लाई नेट यानि कीटों को पकड़ने वाली जाली बन गई। प्रत्येक बच्चे के लिए एक-एक नेट बनाया गया।

हर बच्चे को धान के खेतों का एक टुकड़ा अलाट किया गया। बच्चों को रोजाना एक काम करना था। सुबह स्कूल आते समय उन्हे अपने धान के खेत में एक बार जाली को फिराना था और फिर उसमें पकड़े गए कीड़ों को स्कूल में लाना था।

स्कूल में बच्चे कीड़ों को अलग-अलग समूहों में बाँटते थे। वह उनका नाम जानने और उन्हे पहचानने का प्रयास करते। कौन से कीड़े फसलों के मित्र हैं और कौन से दुश्मन इस बात पर चर्चा होती और इस विषय पर अनुभवी किसानों से जानकारी इकट्ठी की जाती। बच्चे हर दिन कीड़ों की संख्या गिनते और उनका ग्राफ बनाते। इससे कीड़ों की बढ़ोत्तरी का एक सही अनुमान पता चलता। सबसे अधिक कीड़े कब हुए? कीट-नाशक दवा छिड़कने का सबसे उपयुक्त समय कब होगा। क्या रासायनिक दवा से मित्र कीड़े भी मर जायेंगे। क्या नीम के पत्तों का रस या तम्बाकू का घोल छिड़काव के लिए ठीक रहेगा?

बच्चे इन सब प्रश्नों पर चर्चा करते, नए प्रयोग करते और जानकारी हासिल करते। यह एक आनंददायी और उपयोगी विज्ञान था।

पार्क स्कूल

कुछ दशक पहले तक बच्चों की स्कूल में बहुत पिटाई होती थी। पर अब इसमें कुछ बदलाव आया है, और शिक्षा कुछ बाल-केंद्रित हुई है। कई प्रगतिशील स्कूल खुले हैं। यहाँ पर शिक्षकों का रोल बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान देना है, न कि उनके दिमाग में सिर्फ ज्ञान ठूसना है।

कोई भी शिक्षक बच्चों को कभी बोलना नहीं सिखाता है। फिर भी सभी बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने आप बोलना सीख जाते हैं। शायद अन्य कुशलतायें भी बच्चे इसी तरह स्वाभाविक रूप में सीख सकते हैं। इंग्लैन्ड में एक इसी प्रकार का स्कूल है - नाम है पार्क स्कूल। यहाँ 11 साल उम्र तक के बच्चे पढ़ते हैं। यहाँ बच्चे खुश रहते हैं और उनके जिज्ञासू दिमाग असंख्यों सम्भावनाओं को खोजते हैं। स्कूल में कुशल और निष्ठावान शिक्षकों की एक टीम है, जो बच्चों को अपने दिल से चाहते हैं। टीम के लीडर हैं क्रिस निकोल। उनका कहना है "सब बच्चों को एक खुशहाल बचपन मिलना चाहिए। यहाँ बच्चों को खोजने की पूरी आज़ादी है। मुक्त बच्चे हमेशा ही नई जानकारियाँ खोजते हैं। वह दुनिया को जानने और समझने के लिए तत्पर होते हैं। वह इस बदलते संसार में अपना स्वंय का रोल ढूढने का लगातार प्रयास करते हैं।" शिक्षक को एक संवेदनशील मार्गदर्शक होना चाहिए। शिक्षक को ऐसी अड़चनें नहीं खड़ी करनी चाहिए, जिनसे बच्चों के सीखने की ललक ही खत्म हो जाए। स्कूल के नकारात्मक अनुभवों के कारण न जाने कितने ही लोगों को गणित और पी.टी. से सारी जिन्दगी के लिए नफरत हो गई है।

बाल-केंद्रित शिक्षा देने के लिए पार्क स्कूल में सामान्य स्कूलों की तमाम स्थापित मान्यताओं को त्याग दिया गया है। स्कूल का माहौल एक दम सहज है जिसमें बच्चे खुश रह सकें। बच्चे शिक्षकों को उनके नाम से बुलाते हैं। स्कूल की कोई यूनीफार्म (गणवेश) नहीं है। हर समय यहाँ पर छोटे और बड़े बच्चों को एक साथ खेलते हुए देखा जा सकता है। खेलने का बहुत सा सामान है। एक सब्जी का बगीचा है, जिसकी देखभाल बच्चे ही करते हैं।

बच्चे खाना पकाने, परोसने, बर्तन धोने और सफाई में पूरी मदद करते हैं। कक्षाओं में पर्याप्त प्रकाश है और ऐसा लगता है जैसे लोग दिल लगा कर काम कर रहे हों।

सबसे अनूठी बात तो यह है कि स्कूल में हमेशा ही कुछ बच्चों के पालकों को देखा जा सकता है। स्कूल में दाखिले की पहली शर्त यह है कि माता-पिता अपनी क्षमताओं और कुशलताओं के अनुसार स्कूल में सहयोग दें। उनमें से कुछ पढ़ाते हैं, कुछ सफाई करते हैं और कुछ व्यवस्था बनाए रखने में मदद करते हैं। समुदाय का इस प्रकार का सहयोग अच्छी शिक्षा के लिए एकदम अनिवार्य है।

हर सप्ताह स्कूल में एक मीटिंग होती है जिसमें सब बच्चे भाग लेते हैं और रोजमर्रा होने वाली समस्याओं पर चर्चा करते हैं। वे पाठ्यक्रम, लोगों के व्यवहार और नैतिकता के मुद्दों पर बहस करते हैं। क्रिस को इन बैठकों में सबसे अधिक आनंद आता है। इस प्रकार, निर्णय की प्रक्रिया में भाग लेकर बच्चे प्रजातंत्र का असली मतलब समझते हैं।

क्रिस बच्चों को किस्से-कहानियों और चुटकलों के जरिए बहुत सी नई जानकारी देते हैं। बच्चों को इसमें बहुत मज़ा आता है। बच्चे अपनी पढ़ाई की गति खुद तय करते हैं।

क्या पार्क स्कूल बच्चों को दुनिया की कठिन वास्तविकता के लिए तैयार करता है?

क्रिस के अनुसार "असली दुनिया में लोगों को सबसे अधिक दिक्कत इंसानी रिश्तों में आती है। हमारे बच्चे इस मामले में बहुत अच्छे हैं। हम इस बात का भरसक प्रयास करते हैं कि शुरू से ही बच्चों का आत्म-स्वाभिमान विकसित हो, उन्हें अपने काम में खुशी मिले और उस पर गर्व हो। हमारे बच्चों को बचपन से ही मानवीय सम्बंध बनाने और समझने का भरपूर मौका मिलता है। इसलिए वह बाद में जिस स्कूल में भी जाते हैं, अच्छा करते हैं। बाहरी दुनिया के साथ अच्छे रिश्ते बनाने में बच्चे निपुण हो जाते हैं।"

पत्तों के जानवर

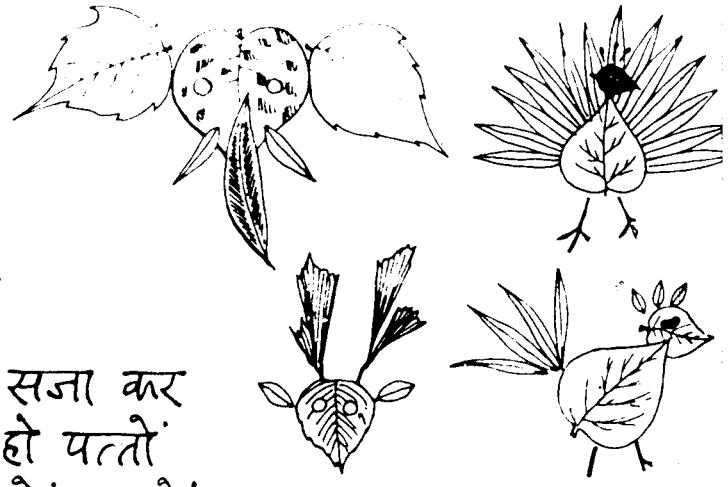

बच्चों से कुछ दिन पहले कहें कि वह अलग-अलग आकार और नाप के पत्ते चुनें और उन्हें पुराने अखबारों में दबा कर रख दें। कुछ दिनों में पत्ते सूख जायेंगे और सीधे हो जायेंगे।
अब बच्चे पत्तों को कागज़ पर सजा-सजा कर अलग-अलग जानवर बनायें। जहाँ तक हो पत्तों के प्राकृतिक आकार को ही इस्तेमाल करें। पत्तों को कम-से-कम काटें। पत्ता खुद ही कहे कि मैं 'पाँव' बनूंगा या 'पेट'। इन पत्तों के जानवरों को कागज पर चिपका दें।

(साभार - कल्पवृक्ष)

यह एक बेहद सृजनात्मक गतिविधि है। यह बहुत सस्ती भी है क्योंकि इसमें रंग-रोगन, ब्रश कुछ नहीं लगता है। बच्चे अपनी कल्पना से पत्तों की एक-से-एक अनूठी कलाकृतियाँ बना सकते हैं।
पत्तों के बाद वह अलग-अलग फूलों को सुखा कर उनके भी बड़े मनमोहक चित्र और कार्ड बना सकते हैं।

कागज़ की पुंगी

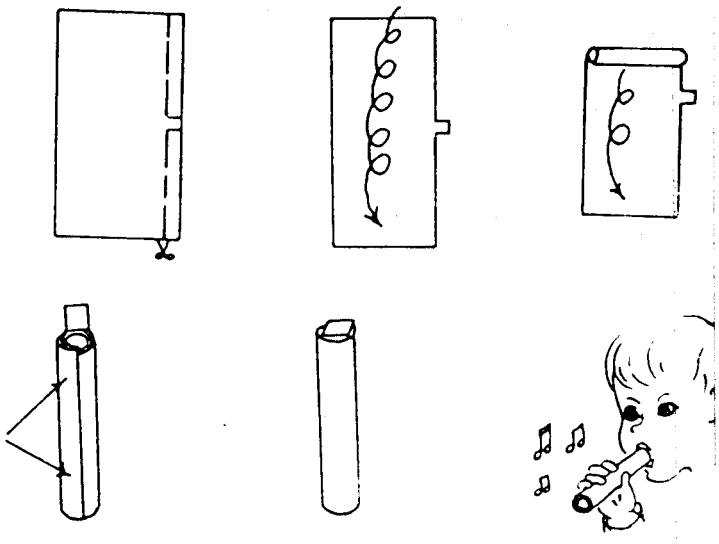

यह बनाने में आसान और खेलने में एक मजेदार खिलौना है। कागज का 10 सें मी x 15 सें मी नाप का टुकड़ा लें। 2 सें मी चौड़ी पट्टियों को चित्र में दिखाए अनुसार काट दें। कागज को गोल-गोल मोड़ कर रील बनायें और सिरे को चिपका दें। कागज के वर्ग को रील के ऊपर ढक्कन जैसे मोड़ दें।

अब अगर आप रील में से हवा फूकेंगे तो कागज़ का 'फ्लैप' कम्पन करेगा 'फ्लैप' रील के सिरे से टकरायेगा और आवाज़ करेगा।

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी

दिसम्बर 1998, अंक 36

तोते की पढ़ाई

एक जंगली तोता था। एक दिन उसने राजा के बाग में जाकर एक फल कुतरा। राजा को देख कर तोता टें-टें करने लगा। राजा को बहुत गुस्सा आया। राजा ने मंत्री को आदेश दिया "इस पक्षी को शिक्षा दो।"

तोते की पढ़ाई का ठेका राजा के भानजों को मिला। पंडितों की सभा बुलाई गई। जम कर बहस हुई। विद्या तो भारी-भरकम चीज़ है। तोते के घोंसले में उसे रखने की जगह ही कहाँ होगी। विद्या को रखने के लिए सोने का एक शानदार पिंजड़ा बनवाया गया। सुनार को बड़ा ईनाम मिला। भला तोते को सिखाना कोई मामूली बात है? थोड़ी सी किताबों से काम नहीं चलेगा। इसलिए बड़ी मोटी पोथियों की नकल का काम शुरू हुआ। नकल-नवीसों को अशरफियाँ मिलीं। तोता यह सब देख अपने पंख फड़फड़ाने लगा। भानजों को लगा कि कहीं तोता पिंजड़ा तोड़ कर भाग न जाए। इसलिए पहरेदारों की बड़ी फौज तैनात कर दी गई। वह दिन-रात जाग कर तोते की रखवाली करते। इन सिपाहियों को थैली भर-भर कर ईनाम मिलता।

पंडितों ने तो तोते की पढ़ाई में अपना सारा जी-जान लगा दिया। वह पोथियों को फाड़-फाड़ कर उनके पन्नों को तोते के मुँह में ठूसने लगे। तोता बचने के लिए अपने पंख फड़फड़ाने लगा। तब तोते के पंख काट दिए गए।

रात को तोता मरा हुआ मिला।

राजा के भानजों ने जश्न मनाया। तोते की शिक्षा सम्पूर्ण हुई।

आज से साठ वर्ष पूर्व महान शिक्षाविद रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा की दयनीय हालत पर यह व्यंग लिखा था। तब से स्थिति में कुछ खास सुधार नहीं हुआ है। किताबों का बोझ बढ़ा है और बच्चों की खुशी छिनी है।

अंगूठे के छाप

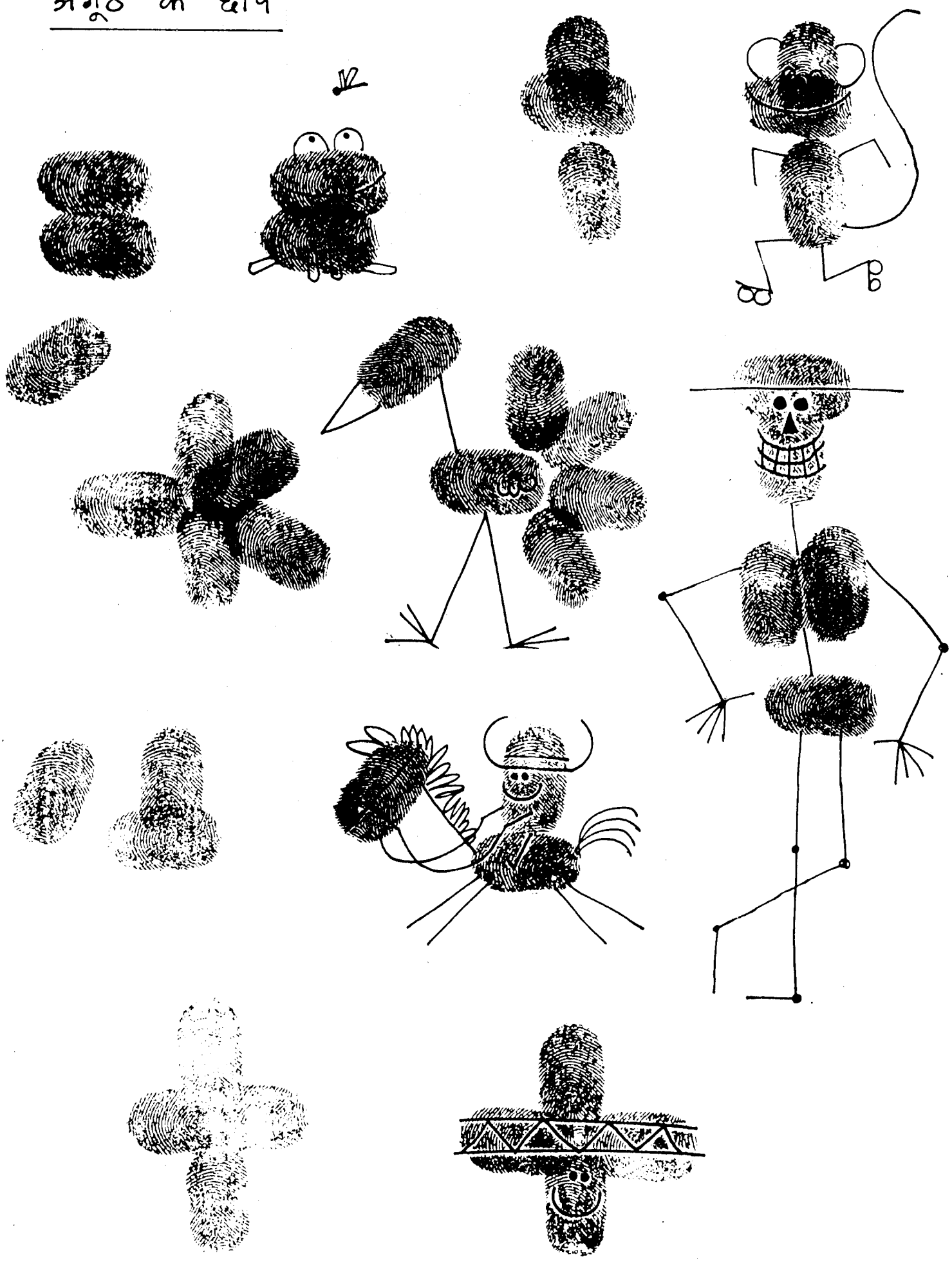

भागते चूहे

दो मीटर लम्बी डोरी के सिरों में गाँठ लगा कर एक घल्ला बनायें :

1

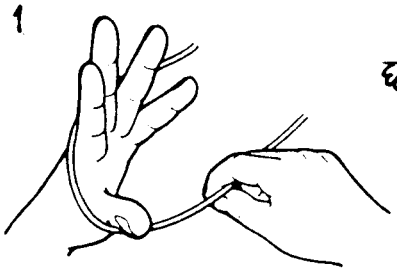

घल्ले को अपने बायें हाथ पर रखें।

2

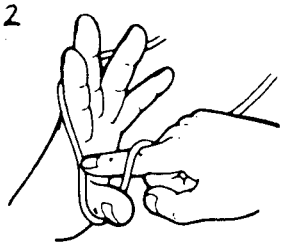

दायीं तर्जनी उंगली को ऊपरी डोर के नीचे से डालें

3

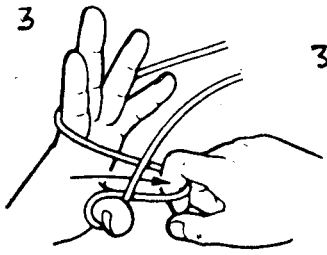

और उंगली का हुक बनाकर डोर को नीचे से खींचें।

4

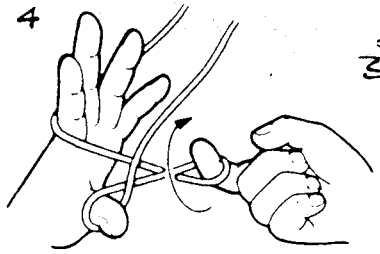

डोर को आधा चक्कर घुमायें जिससे एक छोटा घल्ला बन जाए।

5

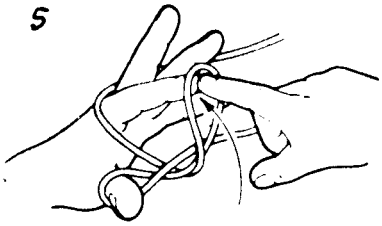

इस घल्ले को बायीं तर्जनी उंगली में डाल दें।

6

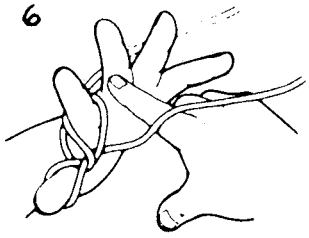

अब इसी क्रिया को मध्य उंगली के साथ दोहरायें।

7

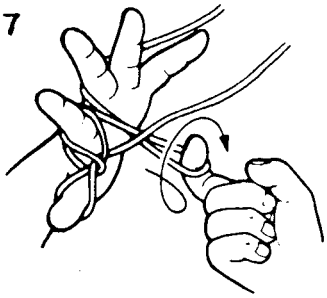

घल्ले को घुमाकर मध्य उंगली में डालें।

8

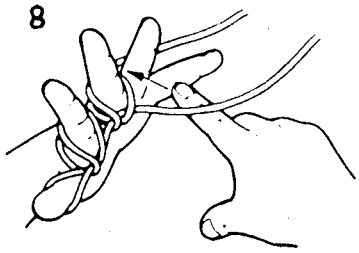

बाकी दोनों उंगलियों में भी इसी प्रकार घल्ले डालें।

9

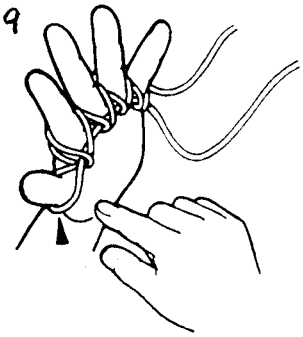

अंत में बायें हाथ में डोर इस प्रकार दिखेगी। हरेक घल्ला एक चूहा है। आपने खूब चूहे पकड़े हैं।

10

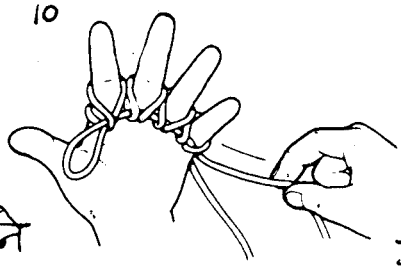

अब अंगूठे वाला घल्ला निकाल दें। लटकती हुई ऊपर वाली डोर को खींचें।

11

आप सभी चूहों को अपनी उंगलियों में से भागते हुए देखेंगे। आप इस प्रकार किसान की कहानी भी सुना सकते हैं। पहले किसान ने खेत जोता (पहला घल्ला), फिर बीज बोए (मध्य उंगली में घल्ला), फिर सिंचाई की (तीसरा घल्ला), फिर खाद डाली (छोटी उंगली में घल्ला)। जब फसल तैयार हुई (अंगूठे का घल्ला निकालें और डोर खींचे) तब एक मोटा चूहा फसल काट कर ले गया।

कैसे-कैसे पैर, देखो करते हैं सैर

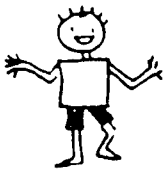

बायाँ पैर, दायाँ पैर
बायें-दायें, दायें-बायें
पैर ही पैर
बड़े पैर, छोटे पैर
पतले पैर, मोटे पैर
दो पैर, चार पैर
छः पैर, आठ पैर
अरे रे रे रे रे रे रे
एक सौ साठ पैर!
और, भैया खोजना तो
साँप के कितने पैर?
कीचड़ में सने पैर
साफ-साफ धुले पैर
सुबह को दौड़ लगाते
रात को सोते पैर
धीमे पैर, तेज पैर
चढ़ते पैर, उतरते पैर
अरे भैया, देखो-देखो
चिड़िया के सिर पर पैर
कैसे-कैसे पैर
देखो करते हैं सैर
डाल-डाल उछलते पैर
पात-पात फुदकते पैर
हवा में उड़ रहे
पानी में रहे तैर
ऊपर-पैर, नीचे-पैर
आगे-पैर, पीछे-पैर
घर में, बाज़ार में
पैर ही पैर
कैसे-कैसे पैर
देखो करते हैं सैर।

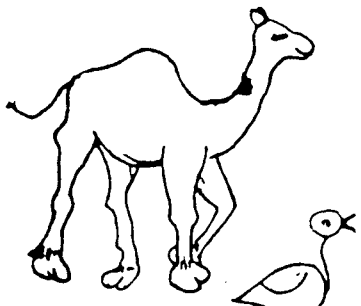

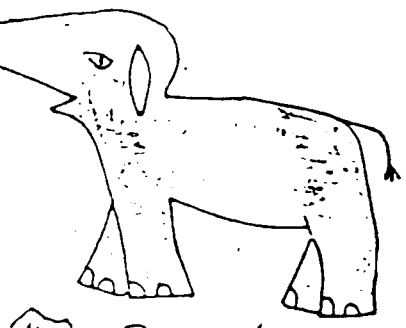

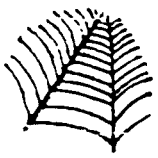

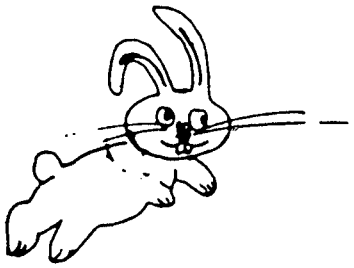

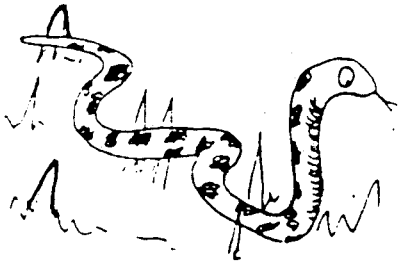

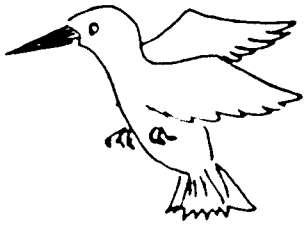

- स्मिता अग्रवाल

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थागत क्षेत्र, जयपुर-4

फुलझड़ी जनवरी 1999, अंक 37

नई वर्णमाला

अपने देश में दुनिया के सबसे अधिक अनपढ़ लोग क्यों हैं? सरकार अपनी ओर से प्रयास करती है। गाँव-गाँव में प्रौढ़ शिक्षा केंद्र खोलती है। मुफ्त शिक्षा देने की घोषणा करती है। उसके बाद भी बहुत कम लोग ही इन प्रौढ़ शिक्षा केंद्रों में आते हैं। इसका एक मुख्य कारण यह है - जो कुछ भी इन केंद्रों में पढ़ाया जाता है, वह गरीब निरक्षर इंसान को किसी फायदे का नहीं लगता।

पौलो फ्रेरे ब्राजील के एक शिक्षाविद थे। उन्होंने गरीब मजदूर-किसानों के बीच बहुत काम किया। उन्होंने गरीबों की जिंदगी और उनकी समस्याओं को गहराई से समझा और फिर शिक्षा की एक क्रांतिकारी पद्धति खोजी। इससे निरक्षर मज़दूर-किसान न केवल छह हफ्तों में लिखना-पढ़ना सीख गए परंतु उनकी सामाजिक जागरूकता और राजनैतिक चेतना में भी विकास हुआ। इससे ब्राजील की सरकार घबराई और उसने फ्रेरे को देश से निकाल दिया।

फ्रेरे की पद्धति के आधार पर अपने देश में भी कई जगह काम हुआ और उनके नतीजे भी अभूतपूर्व निकले। पद्धति का पहला नियम है कि लोगों पर ऊपर से कोई पाठ्यक्रम मत थोपो। लोगों के दुख-दर्द, उनकी समस्याओं, उनके अपने शब्दों, सपनों और आकांक्षाओं का ताना-बाना बुन कर ही सार्थक पाठ्यक्रम बनेगा।

क से कमल, ख से खरगोश, जैसी नीरस वर्णमाला भला किसी शोषित गरीब को किस तरह आकर्षित कर सकती है? गरीबों के लिए क से कर्ज, ख से खेत, स से सूद जैसी वर्णमाला ही अधिक उपयुक्त होगी। ऐसी वर्णमाला उनके जीवन की असलियत के ज्यादा करीब होगी।

यही बात दुनिया के सबसे पुराने सर्वहारा - यानि बच्चों पर भी लागू होती है। ऊपर से थोपा गया, जीवन से कटा, नीरस पाठ्यक्रम कभी भी बच्चों का मन नहीं जीत पायेगा। अगर हम बच्चों के अनुभवों, उनके खेलों, खुशियों, उनकी आँखों की चमक को अपने पाठ्यक्रम का आधार बनायेंगे तो बच्चे हँसते-खेलते स्कूलों में खिंचे चले आयेंगे।

ममता का मोल

एक छोटा लड़का चौके में दौड़ा-दौड़ा आया। उस समय उसकी माँ खाना बना रही थी। लड़के ने अपने हाथ से लिखा एक पर्चा अपनी माँ को दिया। माँ ने धोती के पल्ले से हाथ पोंछने के बाद पर्चे को पढ़ा। उसमें लिखा था :

पेड़ों में पानी देने के लिए	रुपए	5 = 00
घर में झाड़ू लगाने के लिए	रुपए	3 = 00
बाज़ार से आलू लाने के लिए	रुपए	0 = 50
छोटी बहन की देखभाल के लिए	रुपए	1 = 00
कचरा फेंक कर आने के लिए	रुपए	2 = 00
परीक्षा में अच्छे नम्बर लाने के लिए	रुपए	6 = 00
घड़ी-बनियान धोने के लिए	रुपए	0 = 25
कुल देनदारी	रुपए	17 = 25

पढ़ने के बाद माँ कुछ देर तो अपने लड़के को बस टकटकी लगाए देखती रही। कितनी ही पुरानी स्मृतियाँ माँ को याद आने लगीं। माँ ने पर्चे को उल्टा और उस पर पीछे यह लिखा :

तुम्हें नौ महीने अपने पेट में पालने की - कोई कीमत नहीं।
उन सारी रातों को जब मैं जागती रही और तुम्हारे लिए प्रार्थना करती रही - कोई कीमत नहीं।
मेरे आँसुओं की, ममता की - कोई कीमत नहीं।
अगर तुम इस सब का हिसाब जोड़ोगे तो तुम पाओगे कि मेरे प्यार की - कोई कीमत नहीं है।
तुम्हारे खिलौनों, कपड़ों, भोजन और सालों तक तुम्हारी नाक पोंछने की - कोई कीमत नहीं है।
यह सब कुछ जोड़ने के बाद तुम पाओगे कि माँ का सच्चा प्यार बेशकीमती है - उसकी कुछ भी कीमत नहीं है।

माँ ने जो कुछ भी लिखा था, उसे लड़के ने बड़े ध्यान से पढ़ा।
पढ़ने के बाद उसकी आँखों में बड़े-बड़े आँसू भर आए।
उसने अपनी माँ के सौम्य चेहरे को देख कर कहा:
"माँ, मैं तुम्हें बहुत-बहुत प्यार करता हूँ।"
फिर उसने पेन लेकर कागज पर बड़े-बड़े शब्दों में लिखा :

पूरा हिसाब चुकता

कागज़ के झरोंखे

इन्हे बनाने के लिए आपको केवल कागज़ और कैंची की आवश्यकता पड़ेगी।

1. पहले कागज़ के एक वर्ग को आधे में मोड़ें। फिर ऊपर वाली तह को आधे में मोड़ें। उसी प्रकार नीचे वाली तह को भी आधे में मोड़ें।

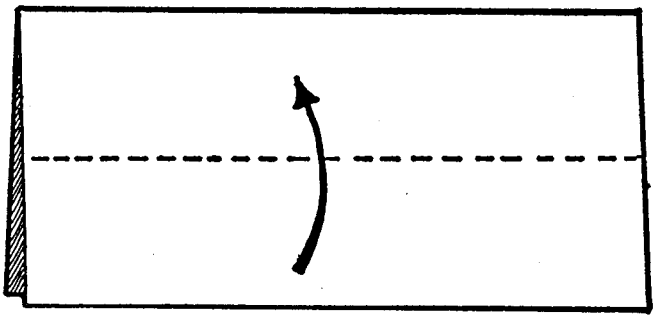

2. कागज़ में अब चार तहे होंगी। अब दायें सिरे को बायें से मिलायें। अब कागज़ में आठ तहें बन जायेंगी।

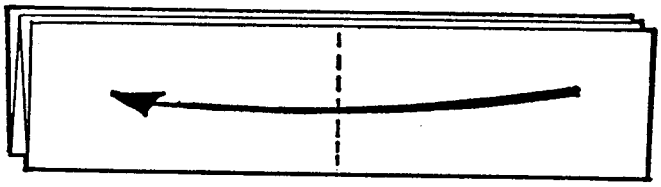

3. अब बायीं ओर वाली ऊपरी तहों को दायें तक मोड़ें। कागज़ को पलट कर पीछे की ओर भी ऐसा ही करें। इस प्रकार आपको 16 तहों वाला एक छोटा वर्ग मिलेगा।

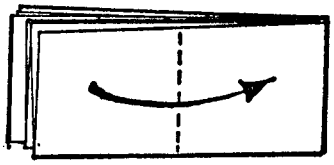

4. छोटे वर्ग के चारों कोनों को काट देने से एक सुंदर जालीदार नमूना मिलेगा।

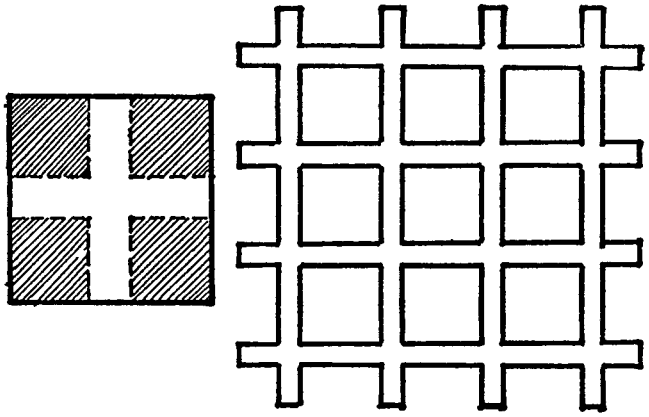

5. इस नमूने को काटने पर एक अद्भुत झरोंखा मिलेगा।

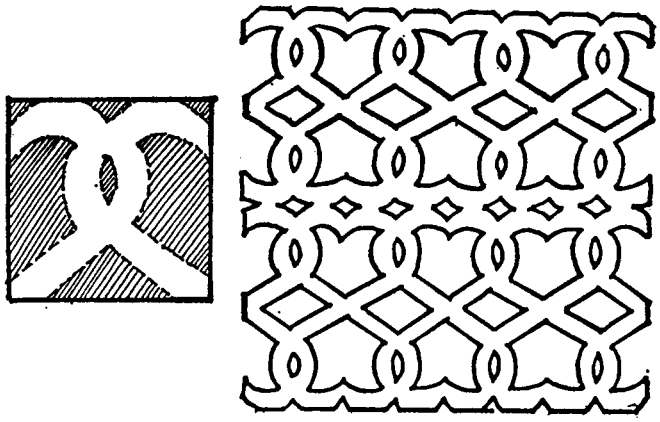

पासे का खेल

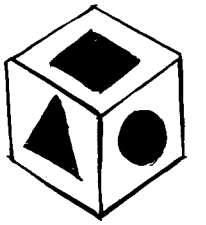

एक पासा लें। उसकी सतहों पर अंकों की जगह छह अलग आकृतियों के चित्र चिपकायें। अब गत्ते से उसी प्रकार की आकृतियाँ काटें। हरेक आकृति के दस-दस टुकड़े हों। इन्हे एक थैली में डाल दें। अब पासा लुढ़कायें। जो भी आकृति उस पर आए उसे थैली में हाथ डाल कर खोजने की कोशिश करें। सही आकृति निकलने पर उसे अपने पास रखें। अब दूसरे साथी की बारी आयेगी।

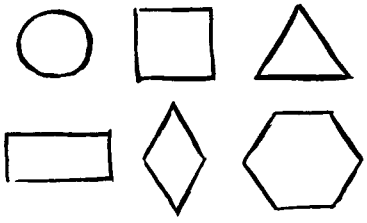

जो खिलाड़ी पहले पाँच आकृतियाँ इकट्ठी करेगा, वही जीतेगा।

कागज का फटाका

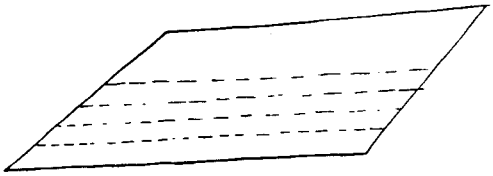

दीवाली के फटाके महँगे होते हैं और उनसे निकलने वाली गैसें हवा को दूषित करती हैं। इसी लिए इस साल बहुत कम बच्चों ने दीवाली पर फटाके बजाए। कागज़ का बना यह फटाका जोरदार आवाज़ करता है। आप इसे बड़ी आसानी से खुद बना सकते हैं।

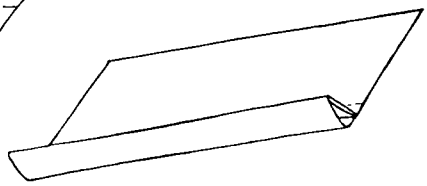

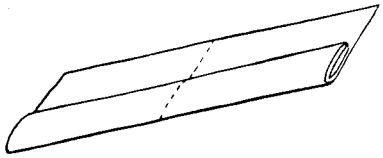

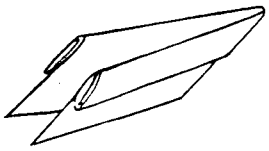

कागज़ का 20 सें.मी x 30 सें.मी नाप का टुकड़ा लें। उसकी चौड़ाई में छह बराबर खंडो के लिए निशान लगायें। कागज़ को तब तक मोड़ें जब तक उसमें दो खंड रह जायें। अब कागज़ को आधे में मोड़ें जिससे मुड़ा हुआ भाग बाहर को हो। इसके बाद दायें निचले कोने को इस प्रकार सरकायें जिससे कागज़ में दो शंकुनुमा भोंपू बन जायें। अब माडल के बायें निचले हिस्से को पकड़ कर भोंपुओं को कस कर हवा में झटकें।

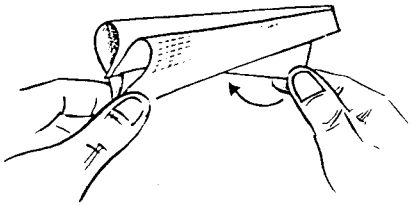

फटाके में से ज़ोरदार आवाज़ आयेगी और कागज़ खुल जायेगा।

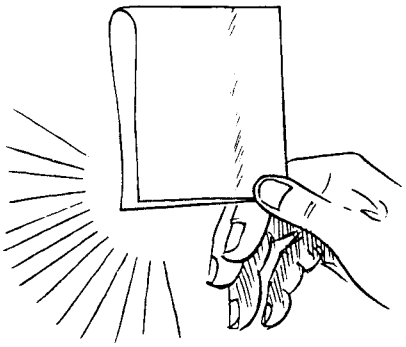

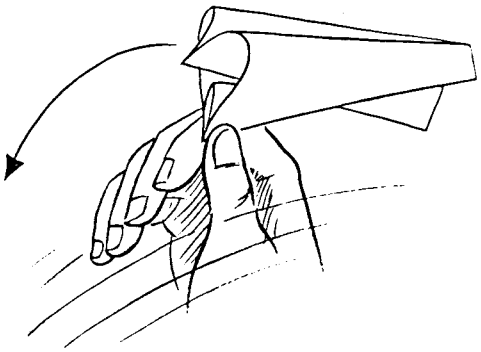

अलग - अलग नमूने

एक कागज़ के वर्ग के अंदर छोटा वर्ग बनायें। अब अंदर वाले वर्ग को रंग दे। फिर बड़े वर्ग को चार छोटे वर्गाकार टुकड़ों में काटें। अब इन टुकड़ों को जोड़ कर दुबारा एक वर्ग बनायें।

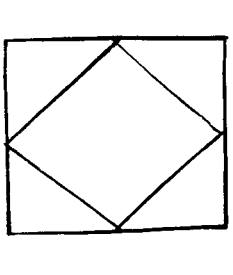

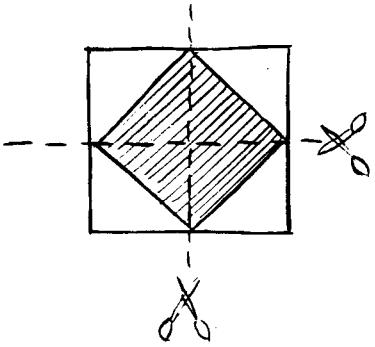

आप इन चौथाई टुकड़ों को आपस में अलग-अलग तरह से जोड़ कर कितने भिन्न नमूने बना सकते हैं ?

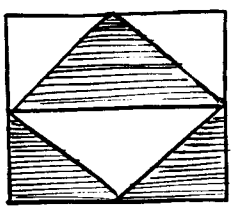

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्था क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी फरवरी 1999, अंक 38

एक टीचर की डायरी

शोभा भागवत

छोटे बच्चों का मन सच्चा और निष्पाप होता है। उनके साथ रह कर हम बहुत सी बातें सीख सकते हैं।

कभी-कभी मुझे सच में ऐसा लगता है कि कहीं हम सिखाने, संस्कार-निर्माण के नाम पर बच्चों के निर्मल झरने जैसे मन के जल प्रवाह को कहीं दूषित तो नहीं कर रहे हैं? उन्हे मुक्त करने की जगह उन्हे कहीं बंधनों में तो नहीं जकड़ रहे हैं।

जो बच्चों के कोमल हृदय को पहचानता है वही सच्चा शिक्षक है। हमें बच्चों की जिज्ञासा और उनके प्रश्नों से डर लगता है। बच्चों को एक 'साँचे' में ढाल कर हम उन पर राज करना चाहते हैं। इसी व्यवस्था का नाम है-'स्कूल'। स्कूल रूपी संस्था इतनी मजबूत है कि उसका विरोध कर पाना और उसे तोड़ पाना बच्चों के लिए सम्भव नहीं है। इसीलिए बच्चों को एक सीधी लाइन में खड़ा होना पड़ता है। उन्हे मुँह को बंद रखने के लिए उंगली रखनी पड़ती है और घंटों तक नीरस भाषणों को सुनना पड़ता है। इस तरह के अत्याचारों से न जाने कितने सारे बच्चों का बचपना ही छिन जाता है।

बच्चों में सीखने की अद्भुत क्षमता होती है। वह हमेशा कुछ न कुछ नया करने और सीखने के इच्छुक होते हैं। कुछ नया करते वक्त उनकी आँखों में एक चमक आ जाती है। परंतु जब मैं बच्चों को ऊबता देखती हूँ, तो खुद को एक अपराधी जैसा मानती हूँ। इस कारण बच्चों और हमारे बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है। ऊबते बच्चों को भाषण देने में कोई बड़प्पन नहीं है। इससे मैं बेचैन हो जाती हूँ।

स्कूल में अक्सर टीचर ही बोलती है। बच्चे अपने कानों से केवल सुनते हैं। प्रसिद्ध शिक्षाविद् जान होल्ट ने तो यहाँ तक कहा था "गनीमत है कि स्कूल केवल 5-6 घंटों का ही होता है। अगर 24 घंटों का स्कूल होता तो हमारे अधिकांश बच्चे गूंगे बनते। वह कभी बोलना भी नहीं सीख पाते। बोलने की क्षमता, अपनी बात को कह पाने की कला बच्चे अक्सर बच्चे स्कूल के बाहर ही सीखते हैं, स्कूल के अंदर नहीं।"

करामाती घल्ले

अगर हम सादा कागज की एक पट्टी लें तो हम उसमें ऊपर और नीचे की केवल दो ही सतहें पायेंगे। परंतु मोबियस की पट्टी की केवल एक ही सतह होती है। पिछली शताब्दी में जर्मन गणितज्ञ अगस्तस मोबियस ने इसकी खोज की थी।

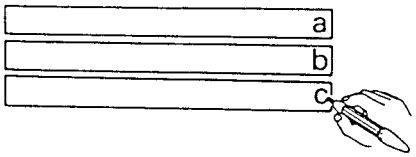

पुराने अखबार की तीन पट्टियाँ काटें। पट्टियाँ 5 सेंमी चौड़ी और 80 सेंमी लम्बी हों। उन पर a, b, c लिखें।

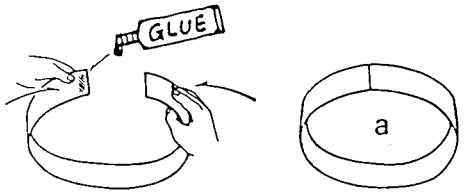

पट्टी a के दोनों सिरों को गोंद से जोड़ कर एक गोल घल्ला बनायें।

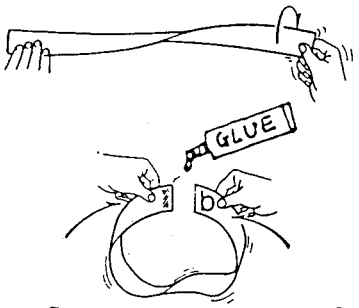

पट्टी b के सिरों को जोड़ने से पहले उनमें आधी (180°) अलबेट दें।

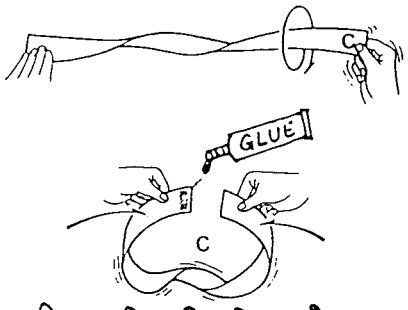

पट्टी c के सिरों को जोड़ने से पहले उनमें एक पूरी अलबेट (360°) दें।

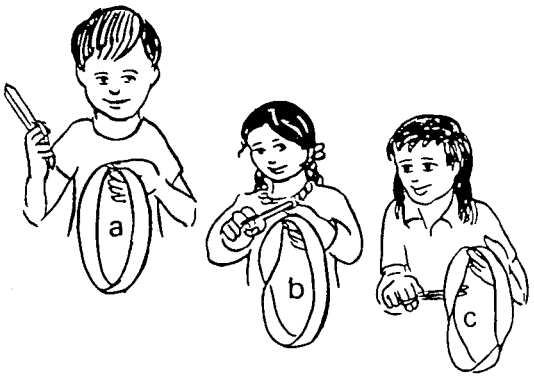

अब यह पट्टियाँ तीन अलग-अलग मित्रों को दें। उनसे पट्टियों को मध्य-रेखा पर काटने को कहें। पट्टियाँ काटने पर उन्हे एक दम आश्चर्यजनक नतीजे मिलेंगे।

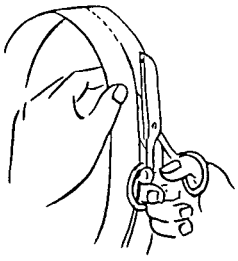

पट्टी a को बीच से काटने पर दो अलग गोल घल्ले मिलेंगे।

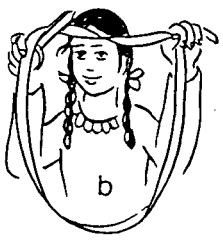

पट्टी b को काटने पर एक बड़ा घल्ला मिलेगा जिसकी लम्बाई पहले घल्ले से दुगनी होगी।

पट्टी c को काटने पर आपस में जुड़े दो घल्ले मिलेंगे। यह है न आश्चर्य की बात!

बाजा

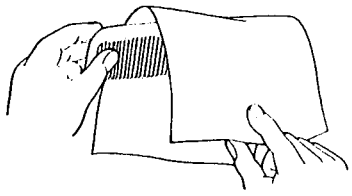

इस बाजे को बनाने के लिए आपको एक प्लास्टिक के कंघे और एक पतले कागज (टिश्यू पेपर) की जरूरत पड़ेगी।
पहले कागज को हल्के से कंघे के ऊपर लपेटें। फिर अपने होठों को कागज के ऊपर रख कर फूंके। आप हल्की और तेज फूंक से अलग-अलग धुनें भी निकाल सकते हैं।

सीटी

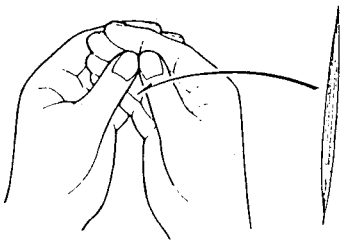

इस सरल सी सीटी से बहुत तेज़ आवाज़ निकलती है।
इसके लिए आपको केवल घास के एक पत्ते की आवश्यकता पड़ेगी।
अपने दोनों हाथों को आपस में इस प्रकार जोड़ें जिससे कि अंगूठे आप की ओर हों।
अंगूठों के बीच की जगह में घास के एक पत्ते को फंसायें। घास का पत्ता हथेली और अंगूठों के बीच कस कर तना हो।
अब हाथों को मुँह के पास लायें और कस कर फूंकें जिससे घास तेजी से कम्पन करने लगे।
कम्पन करती हुई घास से तेज सीटी की आवाज़ निकलेगी।

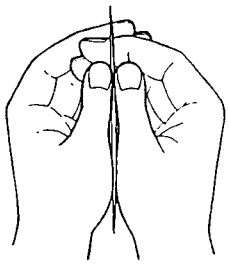

जोड़ो पहेली

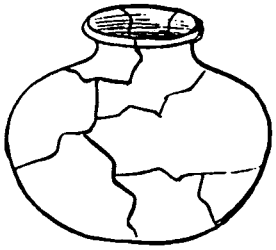

जब कोई मिट्टी का कुल्हड़, प्याला या मटका टूट जाता है, तो बच्चे उसके सभी टुकड़ों को काली मिट्टी से जोड़ सकते हैं। इसी प्रकार नारियल की नट्टी के सभी टुकड़ों को दुबारा जोड़ कर पूरा नारियल बनाया जा सकता है। बच्चों को इन सस्ती पहेलियों में मज़ा आयेगा।

तीन किताबें

प्रकाशक एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल - 16)

खेल - खिलौने (मूल्य 15 रुपए)

इस पुस्तक में 19 अलग-अलग खिलौनें बनाने की विधि बताई गई है। इन खेलों का उद्देश्य बच्चों की कल्पनाशीलता और कौशल को विकसित करना है। यह सभी खिलौने 'चकमक' बाल-विज्ञान पत्रिका में समय-समय पर प्रकाशित हो चुके हैं। बहुत से बच्चों ने उन्हे बनाया है। यह खिलौने कागज, गत्ते, कार्डशीट, कैंची, गोंद, रबर, पेंसिल जैसी सामान्य चीजों से बन जाते हैं। इन्हे बच्चे अपनी मनमर्जी से रंग सकते हैं और उनसे खेल सकते हैं।

बाजार से खरीदे खिलौने मँहगे होते हैं और उनके टूटने का डर रहता है। बच्चे जो खिलौनें खुद बनाते हैं उनकी कुछ बात ही निराली होती है।

रूसी और पूसी लेखक वी. सुटेयेव (मूल्य 5 रुपए)

रूसी एक छोटी लड़की है। उसकी एक प्यारी सी बिल्ली है जिसका नाम पूसी है। रूसी एक दिन पूसी के लिए एक घर का चित्र बनाती है। पूसी की इच्छानुसार वह उसमें खिड़की, तालाब, क्यारी, फूल, गाजर, गोभी, मछली, चूजे, भूहे सभी कुछ बनाती है। जब वह पूसी की रखवाली के लिए कुत्ता बनाती है तो पूसी शायद डर कर सहम जाती है और रूठ कर वहाँ से चली जाती है।

चूहे को मिली पेंसिल लेखक वी. सुटेयेव (मूल्य 5 रुपए)

चूहे को जम कर भूख लगी है। पेंसिल उसके लिए एक छोटा गोला बनाती है जो चूहे को पनीर जैसा लगता है। फिर पेंसिल एक बड़ा गोला बनाती है जो चूहे को सेब जैसा लगता है। अब तो चूहे महाशय की लार टपकने लगती है। तभी पेंसिल दोनों गोलों को आपस में जोड़ कर एक बिल्ली बना देती है। बिल्ली को देख चूहा डर जाता है और अपने बिल में घुस जाता है। पुस्तक में सुंदर आकर्षक चित्र। बच्चों का मन हरने वाली पुस्तक।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे

प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर 302004.

फुलझड़ी

मार्च 1999, अंक 39

बच्चों का दिमाग, सबसे अनमोल उपकरण

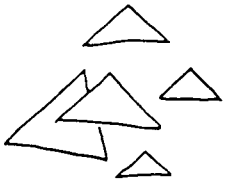

हर पीढ़ी विज्ञान के भंडार में कुछ नए आयाम जोड़ती है। हम लोग इसीलिए इतना जानते हैं, क्योंकि हम असंख्यों पीढ़ियों के ऊँचे कंधों पर खड़े हैं। इसका ही परिणाम है कि आज हाई-स्कूल का एक साधारण छात्र भी, विज्ञान के महान दिग्गज सर आइज़ैक न्यूटन से कहीं अधिक गणित जानता है।

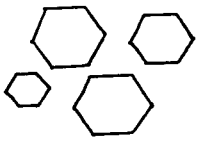

1910 में, स्टोक्स नाम का एक अमरीकी, भारत आया और हिमाचल प्रदेश में स्थाई रूप से बस गया। उसने वहाँ एक स्थानीय महिला से शादी की और सेबों की उन्नत खेती में लग गया। स्टोक्स ने स्थानीय बच्चों के लिए कोटगढ़ में एक स्कूल भी खोला। 1920 में, गांधी जी से प्रेरित हो कर एक अमरीकी अर्थशास्त्री रिचर्ड ग्रेग्स भारत आए। दो साल तक उन्होंने ग्रेग्स के स्कूल में बच्चों को विज्ञान पढ़ाया। अपने ठोस अनुभवों के आधार पर 1928 में उन्होंने एक पुस्तक लिखी 'प्रेपरेशन फॉर साइंस' (यानि विज्ञान की तैयारी)। विज्ञान शिक्षण पर यह एक अनूठी पुस्तक है। 1928 में ग्रेग्स ने लिखा

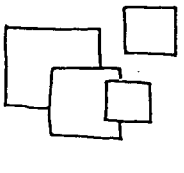

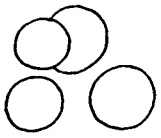

" बच्चों ने गाँव में मिलने वाली सरल और साधारण चीजों से प्रयोग किए। विज्ञान के सारे उपकरणों को भी गाँव के कारीगरों - कुम्हार, बढ़ई और लोहार ने ही बनाया। बच्चों को यह कतई नहीं लगे कि विज्ञान जीवन से कोई अलग विषय है। विज्ञान के बड़े-बड़े महारथियों ने अपनी खोजें बेहद सरल उपकरणों से की थीं। कम-से-कम हम उनके कदमों पर चल कर, सरल उपकरणों से विज्ञान के सोच को आगे बढ़ा सकते हैं। आखिर इस पढ़ाई में अनूठा, सबसे मँहगा और अनमोल उपकरण तो बच्चों का दिमाग है।"

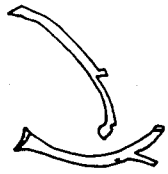

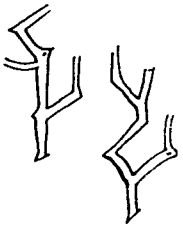

इसी पुस्तक के आधार पर 1975 में कीथ वॉरेन ने 'समझ के लिए तैयारी' लिखी जिसे नेशनल बुक ट्रस्ट ने छापा है। इस पुस्तक का उद्देश्य है कि बच्चे अपने हाथों, अपनी इंद्रियों और दिमाग से अपने आसपास के संसार में क्रम और नमूनें खोजें।

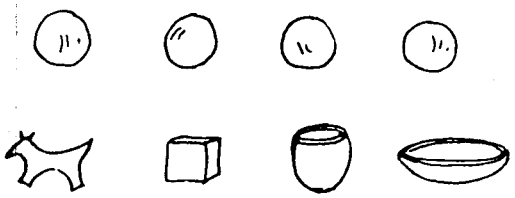

मिट्टी की एक जैसी चार गोलियाँ बनायें। फिर उनसे चार अलग-अलग चीजें बनायें। अब बच्चों से पूछें कि उनमें से कौन सी चीज़ भारी है?

घर

अशोक चक्रधर

दरवाजों से न दीवालों से
घर बनता है घरवालों से

अच्छा कोई मकां बनाएगा
पैसा भी खूब लगाएगा
पर रहने को नहीं आएगा
तो घर उसका भर जाएगा
सारा मकड़ी के जालों से
दरवाजों से न दीवालों से...

घर में जब कोई न होता है
दादी है और न पोता है
घर अपने नैन भिगोता है
अंदर ही अंदर रोता है
घर हँसता बाल-गोपालों से
दरवाजों से न दीवारों से...

और घर में अगर लड़ाई हो
भाई का दुश्मन भाई हो
ननदी से तनी भौजाई हो
ऐसे में तो राम दुहाई हो
घर घिरा रहेगा सवालों से
दरवाज़ों से न दीवालों से...

ग़र प्रेम का ईंट और गारा हो
हर नींव में भाई-चारा हो
कंधों का छतों को सहारा हो
दिल खिड़की में उजियारा हो
घर गिरे नहीं भूचालों से
दरवाज़ों से न दीवालों से
घर बनता है घरवालों से

उष्मा के कुछ प्रयोग

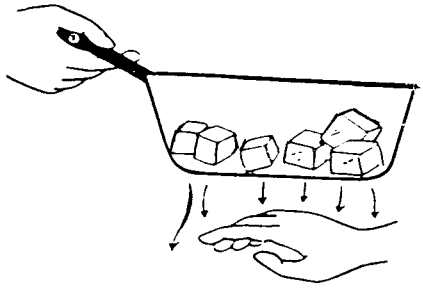

एक धातु के बर्तन में बर्फ के कुछ टुकड़े डालें। बर्तन के नीचे हाथ रखने पर आपको ठंडा महसूस होगा। इसका कारण है कि ठंडी हवा भारी होती है और वह नीचे की ओर गिरती है।

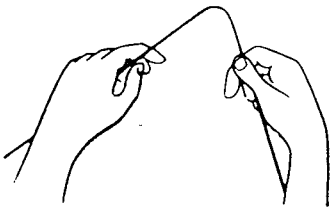

तार को एक ही जगह पर बार-बार मोड़ने से वह टूट जाता है। टूटी जगह के परमाणु बहुत तेजी से कम्पन करते हैं, इसलिए वह हिस्सा बहुत गर्म हो जाता है।

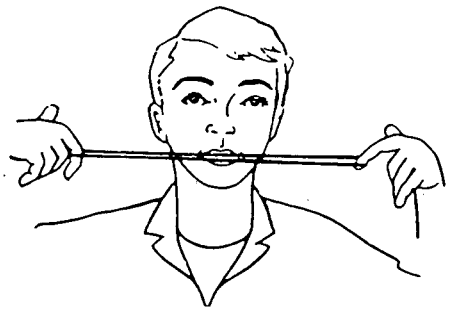

एक रबर-बैंड को अपने होठों से घुमाते हुए, जल्दी से खींचिए। आपको बैंड गर्म महसूस होगा। खींचने से उसके परमाणु तेज़ी से कम्पन करने लगते हैं।

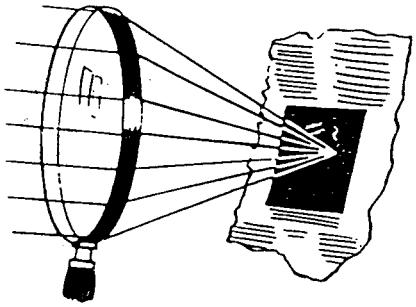

अखबार के काले छपे भाग को आप आतशी-शीशे से आसानी से जला सकते हैं। लेंस में से गुज़र कर सूर्य की किरणें एक बिंदु पर केंद्रित हो जाती हैं। सफेद कागज अच्छी तरह नहीं जलता है क्योंकि वह प्रकाश को सोखता नहीं है।

आप कागज़ की एक डिब्बी बनाकर उसमें पानी उबाल सकते हैं। काग़ज का तापमान कभी भी 100 डिग्री सेंटीग्रेड के ऊपर नहीं बढ़ेगा, इसलिए कागज जलेगा नहीं।

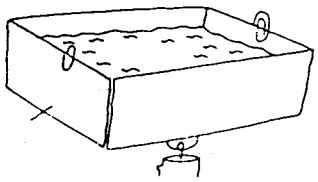

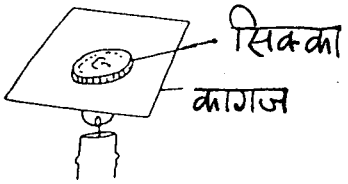

कागज पर रखा सिक्का मोमबत्ती की लौ की गर्मी को सोख लेता है।
इसलिए कागज जलता नहीं है।

एक रुमाल में सिक्के को रखें और फिर रुमाल को कस कर मरोड़ें। अब रुमाल को पकड़ कर सिक्के को कुछ देर के लिए जलती लौ पर रखें। कपड़े के जलने से पहले सिक्का गर्मी को सोख लेगा।

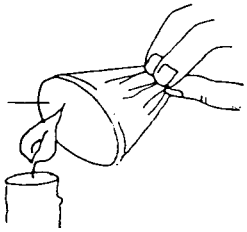

किताबों का काफिला

भारत ज्ञान-विज्ञान समिति ने पिछले एक साल में, बच्चों के लिए, पुस्तकों का एक सुंदर सेट छापा है। इस सीरीज़ का नाम है बाल-पुस्तकमाला। प्रत्येक पुस्तक की कीमत मात्र पाँच रुपए है। पुस्तकें 24 से 40 पन्नों की हैं और उनमें अच्छी पाठ्य-सामग्री के साथ-साथ आकर्षक चित्र भी हैं।

कई किताबें विश्व-प्रसिद्ध कहानियों का हिन्दी अनुवाद हैं। इसमें ऑस्कर वाइल्ड की 'स्वार्थी राक्षस' ओ. हेनरी की 'आखिरी पत्ता', रूस के प्रसिद्ध बाल-साहित्यकार निकोलाई नोसोव की 'मीश्का का दलिया' और वैंडा गैग की 1928 में छपी नायाब पुस्तक 'बिल्लियों की बारात' शामिल है।

विज्ञान पर पाँच अनूठी किताबें हैं - जिनमें से चार तो यूनेस्को सोर्स बुक फॉर साइंस टीचर्स इन दी प्राइमरी स्कूल पर आधारित हैं। यह हैं - 'बच्चे और पर्यावरण' 'बच्चे और पानी' 'बच्चे और तराज़ू' और 'बच्चे और दर्पण'। इसके अलावा इसमें 'समझ के लिए तैयारी' के लेखक कीथ वॉरेन की पुस्तक 'विज्ञान के प्रयोग' भी छपी है।

बिना उपदेश दिए पेड़ों की महिमा से परिचय कराती हैं दो पुस्तकें 'दानी पेड़' और ज्यां गियोनो की अमर कृति 'जिसने उम्मीद के बीज बोए'।

इसके अलावा विष्णु चिंचालकर की 'अक्षरों से चित्र' और 'खेल-खेल में शिक्षा' भी बच्चों को बेहद पसंद आयेंगी।

हरेक संजीदा शिक्षक को और माता-पिता को यह पुस्तकें बच्चों को देना चाहिए। इस प्रकार की सुंदर और सस्ती किताबों का आजकल अभाव है। मात्र 150 रुपए में उपलब्ध 30 किताबों का यह सेट हरेक स्कूल के पुस्तकालय के लिए उपयुक्त होगा। पुस्तकें इस पते से मंगाई जा सकती हैं:

भारत ज्ञान-विज्ञान समिति
ब्लाक 2, विंग 6, सेक्टर 1, आर. के पुरम
नई दिल्ली 110066 (टेलीफोन 6107318, 6107911)

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर 302004.

फुलझड़ी अप्रैल 1999, अंक 40

दायें दिमाग से चित्रकारी

उल्टा चित्र बनाना आसान है।

मैं बचपन से ही अच्छे चित्र बना लेती थी। बाद में जब मैंने पाया कि अधिकतर छात्रों को चित्र बनाने में बेहद कठिनाई होती है, तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। कुछ लोग क्यों अच्छी चित्रकारी कर लेते हैं और अन्य क्यों नहीं, इस प्रश्न पर मैं गहराई से शोध करने लगी। ट्रेनिंग के दौरान मैंने पाया कि कुछ लोग पहले हफ्ते तो एकदम बच्चों जैसे चित्र बनाते, परंतु अगले ही हफ्ते वह सुंदर चित्र बनाने लगते। उनमें एकदम अभूतपूर्व परिवर्तन होता। इसका क्या कारण हो सकता था?

चित्रकारी करते समय मैं उसका वर्णन करती - जैसे मैं क्या कर रही हूँ, कैसे कर रही हूँ। परंतु चित्र बनाते समय मैं बीच में ही अपनी बात भूल जाती थी। मैं पहले क्या कह रही थी यह मुझे याद ही नहीं रहता था। इससे मुझे एक बात समझ में आई। मैं या तो बात कर सकती थी, या फिर चित्र बना सकती थी। पर मैं दोनों कामों को एक साथ नहीं कर सकती थी।

एक दिन एक अजीब घटना घटी। छात्रों को एक चित्र की नकल करने में बहुत दिक्कत हो रही थी। वह जिस चित्र को बना रहे थे उसे मैंने उल्टा करके रख दिया। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब हमने पाया कि उल्टे रखे चित्र को सबने अपने हिसाब से बहुत सुंदर बनाया। उल्टा चित्र अच्छा क्यों बना?

जब छात्र आकृति को न देख कर, उसके चारों ओर के स्थान को देखते हैं, और बनाते हैं, तब वह अच्छे चित्र बना पाते हैं। ऐसा क्यों?

हमारे मस्तिष्क के दो भाग हैं - बायें और दायें। बायाँ भाग शब्द, तर्क, गणित सम्बंधी कुशलताओं को नियंत्रित करता है। दायाँ भाग स्थान, रेखाओं, सम्बंधों, चित्रकारी की कुशलताओं को नियंत्रित करता है। स्कूल में बायें मस्तिष्क के विकास पर अधिक बल दिया जाता है। इसीलिए बायाँ भाग, दायें पर हावी रहता है। इसलिए हम किसी वस्तु की रेखाओं को देखने की बजाए अपने दिमाग में पहले से ही अंकित छवि को उतार देते हैं।

जब चित्र को उल्टा कर दिया जाता है तो बायाँ दिमाग दखलंदाजी बंद कर देता है। अब रेखाओं के परस्पर सम्बंधों को देख कर अच्छा चित्र बनता है।

(ड्राइंग आन दी राईट साइड आफ दी ब्रेन लेखिका बैटी एडवर्डस)

बच्ची का विवेक -लियो टॉल्स्टाय

अमीन - टैक्स वसूल करने वाला अफसर
ग्रुश्का - सात वर्ष की एक लड़की

(अमीन एक टूटी-फूटी झोपड़ी में प्रवेश करता है।)

अमीन : क्या अंदर कोई नहीं है?

ग्रुश्का : माँ गाय को लेकर गई है और पिताजी मालिक की चौपाल पर होंगे।

अमीन : अच्छा अपनी माँ से कहना कि अमीन साहब तीसरी बार आए थे। अगर वह रविवार तक टैक्स नहीं चुकाती हैं तो मैं आकर गाय ले जाऊँगा।

ग्रुश्का : तुम हमारी गाय ले लोगे! क्या तुम चोर हो? हम तुम्हे उसे लेने न देंगे!

अमीन : तुम एक होशियार लड़की लगती हो। लेकिन मेरी बात सुनो। अपनी माँ से कह देना कि मैं गाय ले जाऊँगा - यद्यपि मैं चोर नहीं हूँ।

ग्रुश्का : जब तुम चोर नहीं हो तो हमारी गाय क्यों ले जाओगे?

अमीन : कानून जो कहता है उसे चुकाना ही पड़ेगा। मैं टैक्स के बदले गाय ले लूंगा।

ग्रुश्का : किसे अदा करोगे तुम यह टैक्स?

अमीन : ज़ार (राजा) को। और वह तय करेंगे कि उसका खर्चा कैसे हो।

ग्रुश्का : पर क्या ज़ार ग़रीब है? हम गरीब हैं और वह मालदार है। तब फिर वह हमसे टैक्स क्यों लेते हैं?

अमीन : अरी मूर्ख! वह अपने लिए यह रकम नहीं लेते। उन्हे हमारे लिए, हमारी आवश्यकताओं के लिए, अफसरों के लिए, फौज के लिए, शिक्षा के लिए - हमारी ही भलाई के लिए इसकी ज़रूरत पड़ती है।

ग्रुश्का : अगर तुम हमारी गांय ले जाओगे तो हमारा क्या भला होगा? हमारा तो कोई भला न होगा।

अमीन : जब तुम बड़ी हो जाओगी, तब इसे समझोगी। अच्छा, जो कुछ मैंने कहा है, अपनी माँ से कह देना। भूलना नहीं।

ग्रुश्का : ऐसी वाहियात बात मैं उनसे नहीं कहूंगी। अगर तुम्हे या ज़ार को किसी चीज़ की ज़रूरत है तो तुम लोग उसे खुद काम करके पैदा करो। हमें जिस चीज़ की जरूरत होती है उसे हम खुद पैदा करते हैं। दूसरों की चीज़ें तुम्हे या ज़ार को छीनने का कोई हक नहीं है।

अमीन : आह, यह लड़की बड़ी होकर ज़हर में बुझी निकलेगी।

फूंक से उठाना

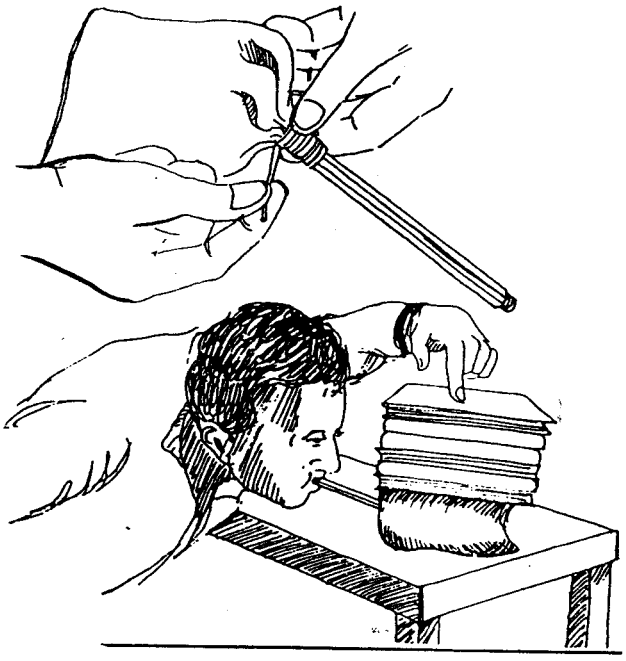

इस हवा के जैक को बनाने के लिए आपको एक प्लास्टिक की दूध की थैली, एक बॉल-पेन की नली और कुछ मोटा डोरा चाहिए होगा। पहले बॉल-पेन की नली को थैली में डाल कर कस कर डोरी से बाँध दें। अब थैली पर 5-6 मोटी किताबें रखें और नली को मुँह में रख कर थैली में हवा भरें। जैसे-जैसे थैली हवा से भरेगी, वैसे-वैसे किताबें ऊपर उठेंगी।

गेयर

सोडा-वाटर की बोतलों के ढक्कनों, यानि क्राउन कैप्स से अच्छे गेयर बन सकते हैं। कुछ ढक्कन लें और उनके केंद्र में कील को हथौड़े से ठोक कर छेद करें।

फिर एक लकड़ी की पटिया पर दो ढक्कनों को रखें और उनके दाँत आपस में फंसायें। एक ढक्कन को घुमायें और देखें कि दूसरा ढक्कन कौन सी दिशा में घूमता है। उसके बाद तीसरा ढक्कन लगायें। तीनों ढक्कनों के घूमने की दिशा को नोट करें।

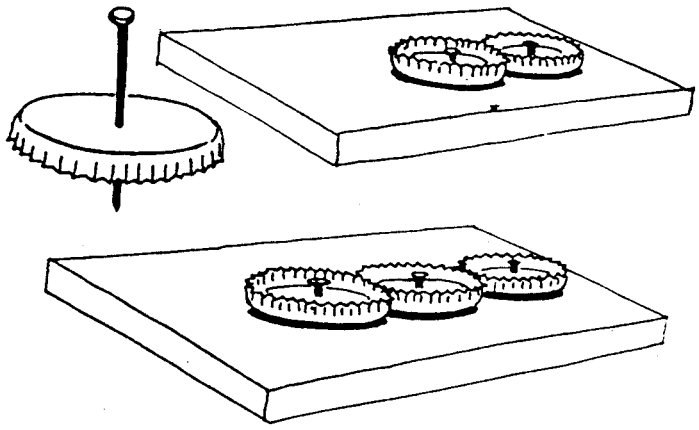

ढक्कन की फिरकी

एक प्लास्टिक की फिल्म रील की डिब्बी का ढक्कन लें। उसके केंद्र में डिवाइडर की नोक से छेद करें। इस छेद में 5 सेंटीमीटर लम्बी, पुरानी रीफिल की नोक को डालें।

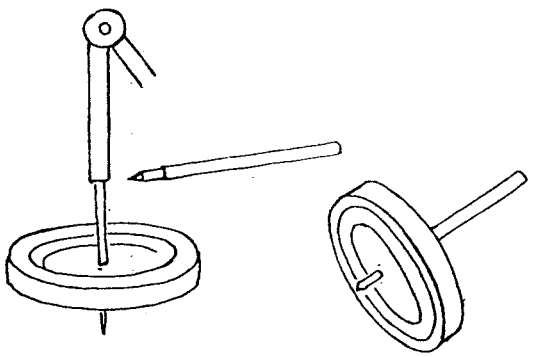

अब रीफिल को पकड़ कर ढक्कन को घुमायें। फिरकी तेज़ी से गोल-गोल घूमेगा। इसके लिए पान मसाले के डिब्बे का ढक्कन भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

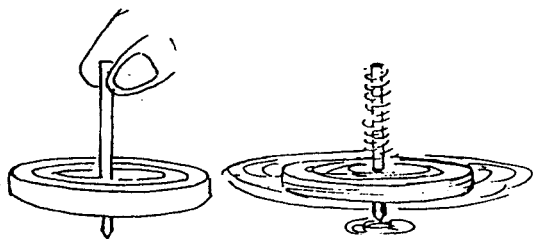

बच्चों के लिए खेल-क्रियाएं - मीना स्वामीनाथन (प्रकाशक यूनीसेफ)

छोटे बच्चों के खेलों, गतिविधियों और क्रियाओं पर बहुत कम किताबें हैं। इसका ही नतीजा है कि हज़ारों बालवाड़ियों, आंगनवाड़ियों और पूर्व-प्राथमिक स्कूलों में बच्चों को आते ही वर्णमाला का क, ख, ग अथवा A, B, C रटवाना शुरू कर दिया जाता है। यह एक दुखभरी बात है। छोटे बच्चों को वर्णमाला रटने की बजाए पानी, रेत और मिट्टी से खेलना चाहिए। कहानियों की रोचक दुनिया में उन्हें कितना आनंद आयेगा। बच्चों को विभिन्न प्रकार के अलग-अलग पदार्थों के साथ खेलना चाहिए। बीजों को अलग-अलग नमूनों में सजाना, रंगोली बनाना, चित्रकारी करना, कागज के खिलौने बनाना, बीजों की ढेरी को गिनना, पपीते की पोली डंठल को काट कर मोती बनाना और उन्हें माला में पिरोना।

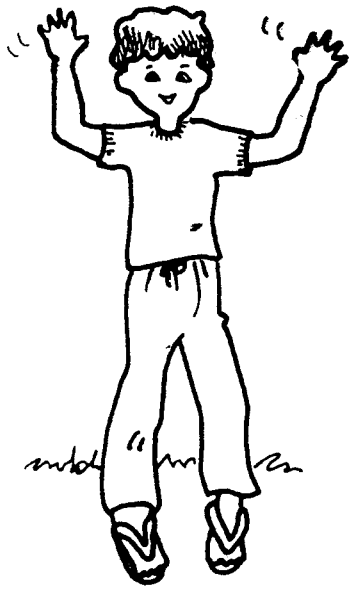

इस प्रकार जब बच्चे अपनी सभी इंद्रियों का प्रयोग करेंगे तभी उन्हें दुनिया को समझने में मदद मिलेगी।

यह पुस्तक अपने जैसी एक अनूठी पुस्तक है। इसकी भाषा काफी सरल और पठनीय है। इसमें स्थानीय, सस्ती चीजों से इसमें अनेक वस्तुओं को बनाने की विधि बताई गई है। इसमें सुझाई लगभग सभी गतिविधियों को गाँव के स्तर पर करना सम्भव होगा।

दस वर्ष पहले इस पुस्तक को यूनीसेफ ने छापा था। पुस्तक उस समय निशुल्क वितरण के लिए थी। अब कई सालों से यह किताब अनउपलब्ध है। यूनीसेफ 'समझ के लिए तैयारी' की भांति ही इस पुस्तक को भी नेशनल बुक ट्रस्ट को छापने को दे सकती है। इससे यह पुस्तक आम शिक्षकों को वाजिब कीमत पर मिल पायेगी और अंततः इसका लाभ देश के करोड़ों नन्हे नागरिकों तक पहुँच पायेगा।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्थानिक क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी मई 1999, अंक 41

भाषा की पढ़ाई

भाषा की पढ़ाई को कभी क, ख, ग से शुरू न करें। वर्णमाला नीरस होती है और बच्चों के लिए कोई खास आकर्षण नहीं रखती है।

भाषा की शुरूवात कहानियों से करें। कहानियों में बच्चों को बेहद आनंद आयेगा और वह भाषा के महत्व को भी समझेंगे। यह देखा गया है कि जिन कहानियों में बच्चों को मज़ा आता है, उन्हे वह बार-बार सुनना चाहते हैं।

स्कूल के बाहर भी बच्चों के बहुत सारे खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। कई अनुभव बच्चों की भावनाओं के साथ गहराई से जुड़े होते हैं। बच्चों से कुछ ऐसे ही भावनात्मक अनुभव सुनाने को कहें। आप बच्चों के ही शब्दों में उन्हे ब्लैक-बोर्ड, या किसी कागज़ पर लिख दें। क्योंकि बच्चों ने ही उन्हे सुनाया है, इसलिए वह जल्दी ही उन्हे पढ़ने लगेंगे। इससे बच्चों को भाषा की ताकत का पता चलेगा। वह यह समझेंगे - कि अक्षरों और शब्दों के माध्यम से वह अपनी बात को कह सकते हैं।

आप बच्चों के द्वारा सुनाई गई कहानियों पर बच्चों से ही चित्र बनाने को कह सकते हैं। इससे बच्चों की कल्पना को उड़ान मिलेगी और वह कुछ मौलिक चित्रण करेंगे।

एक बड़े-बड़े अक्षरों वाली कहानी की किताब लें। एक बच्चा उसे खोल कर खड़ा रहे, जिससे बाकी बच्चे उसे देख सकें। अब आप किताब में से कहानी पढ़ कर सुनायें। जो वाक्य पढ़ रहे हों उसे अपनी उंगली से इंगित करें। कहानी सुनते-सुनते बच्चों की आँखें लिखित शब्दों और वाक्यों पर दौड़ेंगी और वह अचेतन रूप में पढ़ाई के बहुत से तत्वों को सहजता से ग्रहण कर लेंगे।

इससे बच्चों का लिखित शब्दों के प्रति प्रेम बढ़ेगा। आप पायेंगे कि एक दिन बच्चे आसानी से खुद कहानियाँ पढ़ने लगेंगे।

पासों के खेल

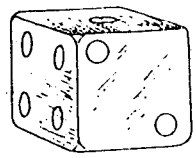

इस खेल के लिए आपको कुछ बीज और एक पासा चाहिए होगा।
पहले हरेक खिलाड़ी इस प्रकार के चार खाने बनाए।

□□ > □□

अब पासे को फेंकें। पासे पर जो भी अंक आए उसे किसी भी एक खाने में लिखें। खाने में एक बार लिखा गया नम्बर बदला नहीं जा सकता है। पासा तब तक फेंकें जब तक सब खाने भर न जायें।
क्या बायीं संख्या, दायीं संख्या से बड़ी है? अगर ऐसा है तो आपको एक बीज मिलेगा। जो खिलाड़ी पहले 5 बीज जमा करेगा, वही जीतेगा।

जोड़ का खेल

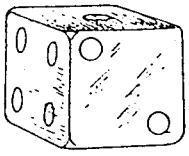
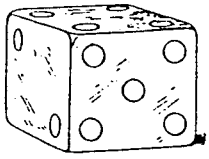
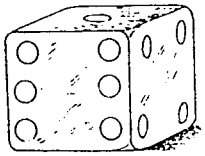

इस खेल में तीन पासे, और हिसाब लिखने के लिए कागज़ और पेंसिल की ज़रूरत होगी। पहले तीनों पासों को एक-साथ फेंकें। फिर तीनों की ऊपरी सतहों की बिन्दियाँ गिनें।
जिसका स्कोर सबसे पहले 100 पहुँचेगा, वही जीतेगा।

फव्वारा

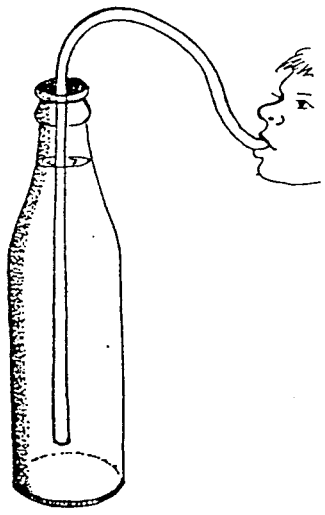
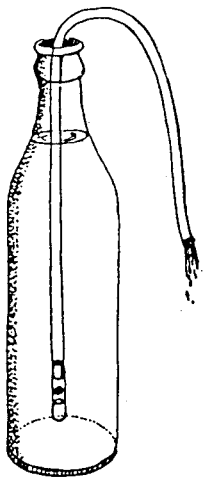
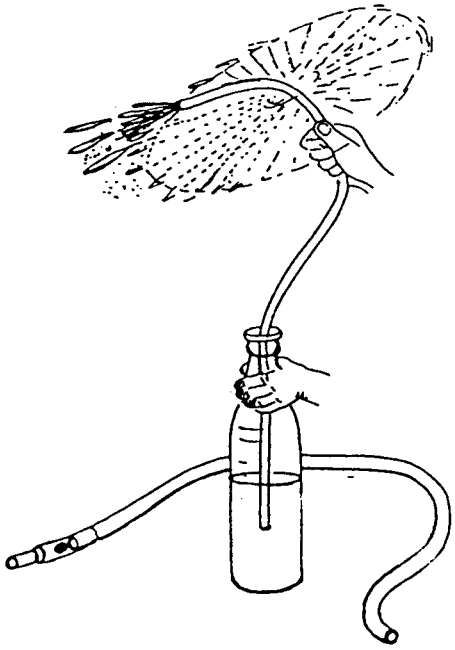

फव्वारे को बनाने के लिए एक मीटर लम्बी प्लास्टिक की नली लें। ऐसी नली पेट्रोल-पाइप में और राज-मिस्त्रियों द्वारा तल नापने के काम में आती है। नली को पानी से भरी बोतल में डुबो कर दूसरे सिरे से पानी खींचें। जब पानी निकलने लगे तो नली को गोल-गोल घुमायें और धीरे-धीरे ऊपर उठायें। घुमाते समय नली के फव्वारे में से पानी का छिड़काव होता रहेगा।

चिड़ियाघर की पहेली

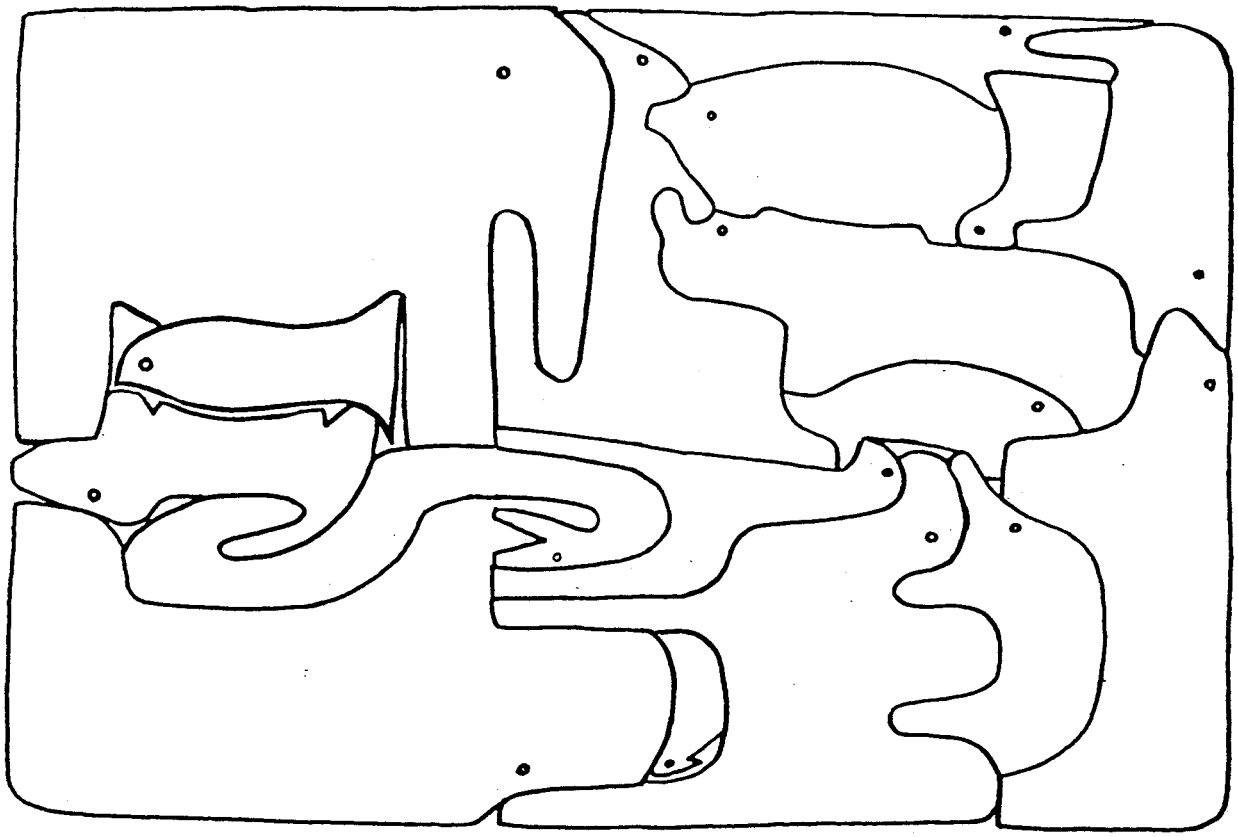

यह एक बहुत ही मज़ेदार पहेली है। इस आयताकार नमूने को किसी जूते की रबड़ शीट, लकड़ी के बोर्ड (प्लाईवुड) या गत्ते पर उतार लें। फिर सभी आकृतियों को किसी चाकू या आरी से काट लें। इसमें एक पूरा चिड़ियाघर यानि 17 जानवर हैं। बच्चे इन जानवरों के साथ अलग-अलग तरीकों से खेल सकते हैं।
सबसे मज़ेदार बात तो यह है कि इन सभी 17 जानवरों को दुबारा आयत के आकार में जोड़ा जा सकता है।

सूंघो और पहचानो

पुराने बेकार कपड़ों को लेकर छोटे-छोटे थैले सी लें, या कुछ डिब्बों के ढक्कनों में छोटे-छोटे छेद कर लें। इन थैलों या डिब्बों में अलग-अलग गंध के पदार्थ डालें जैसे प्याज, धनिया, फूलों की पंखुड़ी, मसाले, चमड़ा आदि। बच्चों की आँखों पर पट्टी बाँध दें और सूंघ कर चीज़ों का नाम बताने को कहें। उनसे यह भी पूछें 'क्या आप इससे मिलती-जुलती गंध के किसी अन्य पदार्थ को भी जानते हैं?' या फिर 'किस पदार्थ की गंध मीठी होती है?' 'किस पदार्थ की गंध तीखी होती है?'

पनचक्की

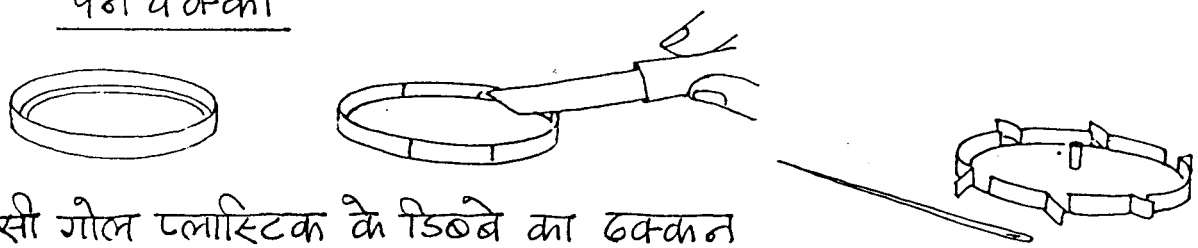

किसी गोल प्लास्टिक के डिब्बे का ढक्कन लें। वैसे पान मसाले के डिब्बे का प्लास्टिक ढक्कन बहुत अच्छा काम करेगा। ढक्कन की किनार पर बराबर दूरी पर यह निशान लगाओ और काटो।

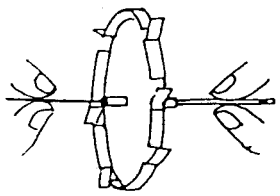

इन कटे हुए हिस्सों को थोड़ा बाहर की ओर खोल कर पनचक्की के ब्लेड या पंखे बनायें। ढक्कन के मध्य में एक छेद बनायें और उसमें 2 सेंमी लम्बा रीफिल का टुकड़ा धंसा दें। रीफिल के टुकड़े के अंदर एक लम्बी सुई डालें। अब पनचक्की, या टरबाईन को एक पानी की धार के नीचे रखें और उसे गोल-गोल घूमते हुए देखें।

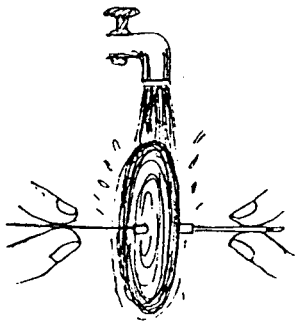

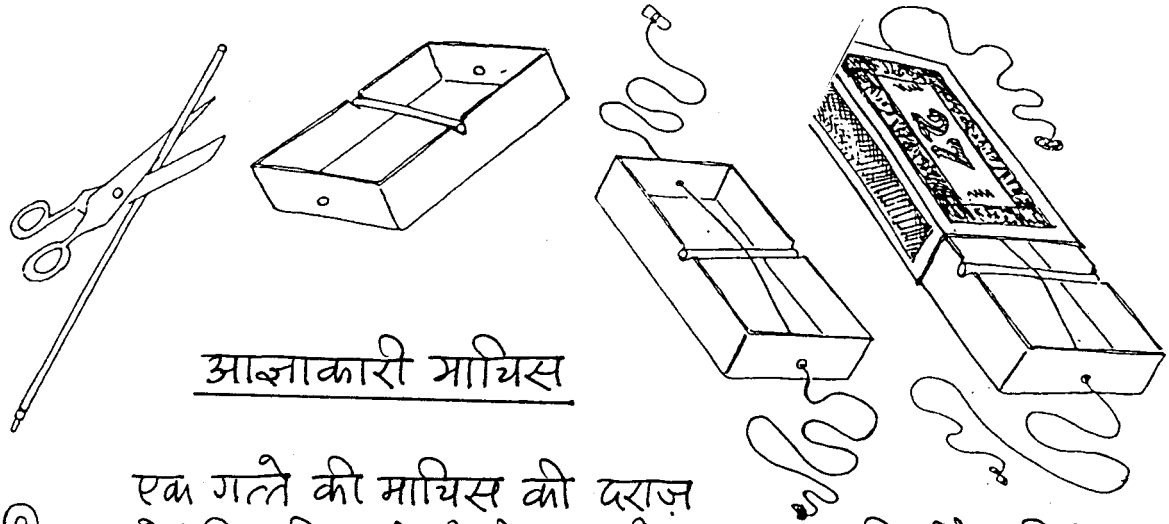

आज्ञाकारी माचिस

एक गत्ते की माचिस की दराज़ में डिवाईडर से दो छेद करो। दराज़ की चौड़ाई के नाप का पुरानी रीफिल का टुकड़ा काटो। दराज़ की लम्बी किनारों में खाँचे काट कर उसमें रीफिल फँसा दो। अब 70 सेंटीमीटर लम्बे धागे को दराज़ के छेदों में से पिरो दो। धागा रीफिल के ऊपर से होकर गुज़रे। धागे के सिरों पर मुड़े कागज़ के हैंडिल बाँध दें। अब माचिस का खोखा चढ़ायें।

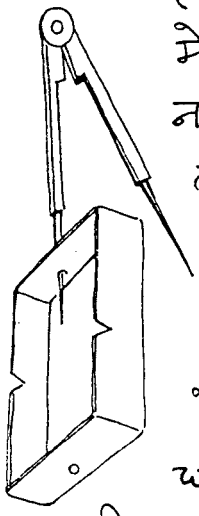

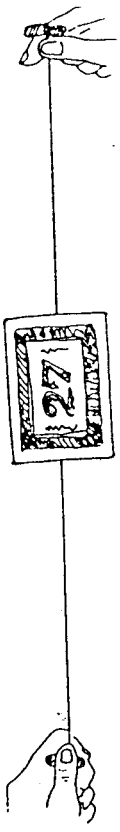

धागे को तानो। रीफिल और धागे की रगड़ के कारण माचिस रुकी रहेगी। धागे को ढील देते ही माचिस अपने भार से नीचे आयेगी।

संकलन : अरविन्द गुप्ता चित्रकार : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्था क्षेत्र, जयपुर 302004

फुलझड़ी अंक 42, जून 1999

चमकदार चतुराई

बच्चे बिना सिखाए ही बहुत कुछ सीख जाते हैं। यह दुख की बात है कि स्कूलों में बच्चों को खुद करने का और सीखने का बहुत कम मौका मिलता है। यह अनुभव इंग्लैंड में चल रहे नफील्ड विज्ञान कार्यक्रम का है।

छोटे बच्चों को विज्ञान करने के लिए बहुत से बल्ब, टार्च-सेल, तार, प्रतिरोध आदि दिए गए थे। प्रयोग का उद्देश्य बच्चों को विद्युत के सरल पुर्जों से अवगत कराना था। बच्चों को सरल विद्युत परिपथ (सर्किट) भी बनाने थे। जब बच्चे इनसे कुछ दिन खेल चुके और एक सरल टार्च बना चुके तब शिक्षिका ने बच्चों की समझ और सीख को परखने के लिए एक टेस्ट दिया।

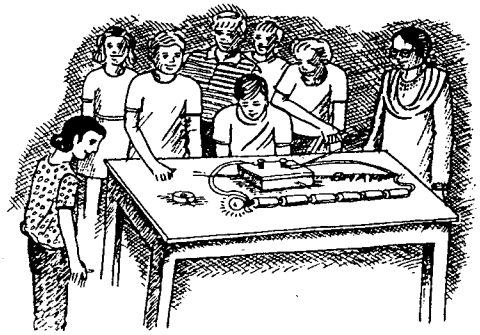

उसने बच्चों को चार एक-जैसे लकड़ी के डिब्बे दिए। प्रत्येक में केवल दो तार बाहर निकल रहे थे। डिब्बे के अंदर यह तार या तो किसी बैटरी, बल्ब, प्रतिरोध से जुड़े थे या फिर यह दोनों अलग-अलग थे (यानि ओपन-सर्किट था)। बच्चे न तो डिब्बों को खोल सकते थे और न ही उनके अंदर झाँक सकते थे। सिर्फ बाहर के तारों से अलग-अलग पुर्जे जोड़ कर ही उन्हें जाँच-पड़ताल करनी थी। अगर डिब्बे के अंदर बैटरी छिपी थी तो उसे ढूंढना आसान था। बस बाहर से एक बल्ब जोड़ो। अगर वह जले तो अंदर बैटरी है। अंदर के दोनों तार खुले हैं यह भी मालूम करना आसान था। परंतु अंदर बल्ब छिपा है या प्रतिरोध यह ढूंढ पाना एक टेढ़ी खीर थी। बाहर से एक बैटरी और बल्ब जोड़ने पर दोनों ही बार बल्ब जलेगा। जिस शिक्षिका ने यह पहेली रची थी उसे भी इसके सही हल का कोई अंदाज़ न था।

परंतु एक लड़के ने हल खोज निकाला। बाहर से एक सेल और बल्ब जोड़ने पर उसका बल्ब थोड़ा सा जला। क्योंकि बल्ब टिमटिमा रहा था इसका मतलब डिब्बे के अंदर कोई अन्य बल्ब या प्रतिरोध छिपा था। बाहर से दो बैटरी जोड़ने पर बल्ब कुछ तेज़ जला। इस तरह वह हर बार एक और बैटरी जोड़ता गया। परंतु छह सेल जोड़ने पर अंदर कुछ हुआ और परिपथ टूट गया - यानि अंदर कुछ फ्यूज़ हो गया - जो केवल बल्ब ही हो सकता था।

लड़का क्या है ?
लड़की क्या है ?

लेखिका कमला भसीन
चित्र बिंदिया थापर

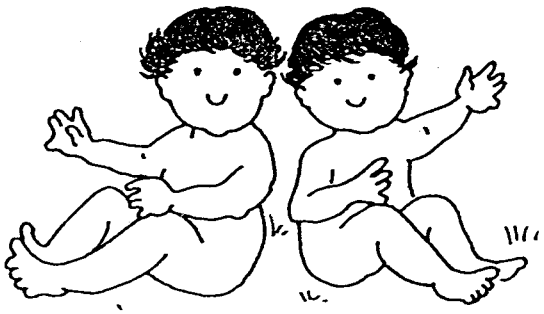

आज़ादी के पचास बरस बाद भी हमारे देश में लड़कियों और औरतों को दूसरे दर्जे का इंसान माना जाता है । बेटी पैदा होने पर खुशी नहीं होती है, उन्हे पूरा प्यार, देखरेख, खाना-पाना, दवा दारु नहीं दिया जाता है । कहते हैं न बेटे को मक्खन, बेटी को छाछ । कहीं-कहीं तो बेटी को पैदा होने से पहले या पैदा होते ही मार दिया जाता है ।

परिवार के अंदर इस तरह का भेदभाव, अन्याय हो यह बहुत अजीब बात है क्योंकि इस तरह के भेदभाव से सिर्फ लड़कियों और औरतों को ही नुकसान नहीं होता, पूरे परिवार और समाज को नुकसान होता है । घर के आधे लोग सेहतमंद, पढ़े-लिखे व खुशहाल हों और आधे कमज़ोर, अध-पढ़े व बुझे-बुझे हों तो ये वैसा ही है जैसे किसी किसान का आधा खेत लहलहाता हो और आधे की फ़सल मुरझाई हो, खराब हो ।

इन हालातों को बदलना ज़रुरी है । कुछ लोगों का मानना है कि कुदरत ने ही औरत-मर्द में असमानता पैदा की है । क्या यह सच है, या यह सच है कि से फ़र्क और भेदभाव समाज के बनाए हैं ? क्या लड़के-लड़की के तौर-तरीके, पसंद-नापसंद, उनके हुनर और उनके रास्ते कुदरत के रचे हैं या हमारे रचे हैं ?

इस छोटी सी किताब में इन्हीं सवालों पर चर्चा छेड़ने की कोशिश की है ताकि हमारी बेटियों की ज़िन्दगी में भेदभाव और नाइन्साफ़ी खत्म हो, हमारे बेटों पर कुछ खास गुण, व्यवहार, तौर-तरीके थोपे न जायें और हमारे परिवारों में प्यार सद्भाव और शान्ति हो । लड़के-लड़कियाँ, औरतें और मर्द बराबरी के माहौल में मिल-जुल कर आगे बढ़ सकें ।

लड़की क्या है ?
लड़का क्या है ?
बच्चा जब पैदा होता है तो वह या लड़की होता है या लड़का ।

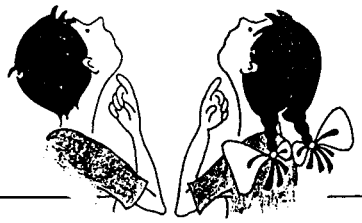

लड़की क्या होती है ?

कुछ लोग कहते हैं जिसके लम्बे बाल हों वह लड़की है । कुलदीप के लम्बे बाल हैं पर वह तो लड़का है ।

कुछ लोग कहते हैं जो जेवर पहने हो वह लड़की है । मेघराज माला पहनता है और कानों में मुरकियाँ भी पहनता है और वह लड़का है ।

लड़का क्या होता है ?

कुछ लोग कहते हैं जो नेकर पहने और पेड़ों पर चढ़ पाये वह लड़का है ।
शान्ति नेकर पहनती है झट से पेड़ पर चढ़ पाती है और वह लड़की है ।

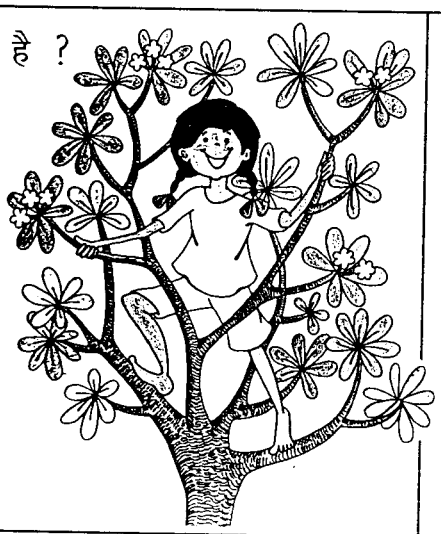

कुछ लोग कहते हैं जो ताक़तवर हों और भारी बोझ उठा पायें वे लड़के हैं ।
सईदा और नफ़ीसा दो-दो मटके या लकड़ी के गट्ठर उठाती हैं और वे लड़कियाँ हैं ।

कुछ लोग कहते हैं जो घर के कामों में मदद करती है वह लड़की है ।
जोसेफ़ खाना पकाने, सफाई करने में मदद करता है वह लड़का है ।

कुछ लोग कहते हैं खेतों पर काम करने वाले लड़के होते हैं ।
बलजीत और उसकी माँ खेत पर काम करती हैं, वे लड़की और औरत हैं ।

कुछ लोग कहते हैं जो हाट-बाज़ार करते हैं वे मर्द हैं ।
वल्ली मछली बेचने बाज़ार जाती है वह लड़की है ।

कुछ लोग कहते हैं जो कोमल है, जिसमें ममता है वह लड़की है ।
कबीर कोमलता और ममता से भरा है, वह दिन भर छोटी बहन को सम्भालता है और वह लड़का है ।

कुछ लोग कहते हैं जो समाज में अच्छी तरह बन्दोबस्त का काम कर सके वह मर्द है ।
अरुणा जिले की कलैक्टर होने के नाते पूरे जिले का बन्दोबस्त करती है और वह औरत है ।

तो फिर, लड़का क्या है ? लड़की क्या है ? आप ही सोचकर बतायें । आगे की कहानी पढ़ने के लिए पुस्तक के प्रकाशक को इस पते पर लिखें - जागोरी, सी - 54, साउथ ऐक्सटैंशन, भाग 2, नई दिल्ली 110049, मूल्य 45 रुपये ।

दर्पण दौड़

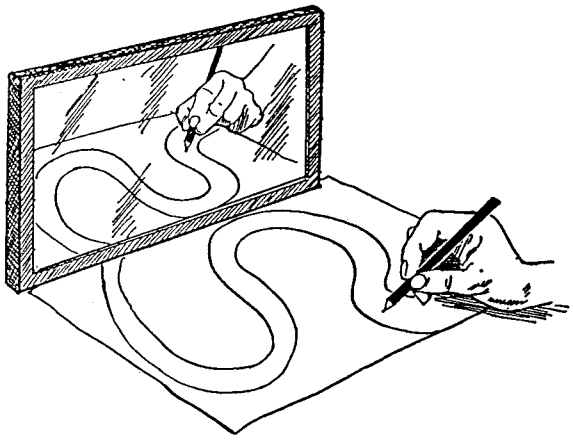

इस प्रयोग को करने के लिए आपको एक बड़े कागज़, पेंसिल, दर्पण और स्केचपेन की आवश्यकता होगी।
सड़क के लिए आप कागज़ पर बड़ी सी 'S' आकार की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा बनायें। इसे मेज़ पर एक समतल दर्पण के सामने रखें।
अपनी पेंसिल की नोक को सड़क की शुरूवात के बिंदु पर रखें और उसके प्रतिबिम्ब को दर्पण में देखें। अब केवल आइने में प्रतिबिम्ब को देख कर, आप पेंसिल को सड़क पर आगे बढ़ायें। इस बात का ध्यान रखें कि पेंसिल किसी भी हालत में सड़क के किनारों से न छुए।

उछलता मेंढक

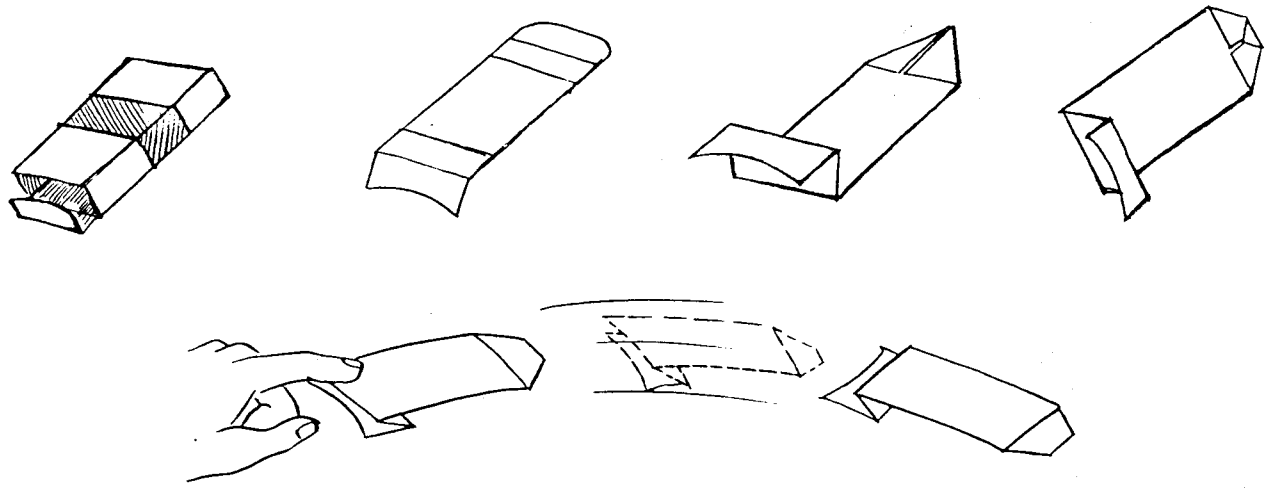

एक पुराना सिगरेट का पैकिट लें। उसकी अंदर वाली दराज़ निकालें। दराज़ के ऊपर के दोनों कोनों को बीच तक मोड़ें। इस तरह एक तिकोना सिर बन जायेगा। सिर की नोक को अंदर की ओर मोड़ें।
दराज़ का बायीं ओर वाला मोड़ एक बहुत अच्छी स्प्रिंग का काम करता है। मेंढक को ज़मीन पर रख कर तर्जनी उंगली से स्प्रिंग को दबायें और छोड़ें। मेंढक तेज़ी से आगे को कूदेगा।

संकलन : अरविन्द गुप्ता
चित्रांकन : अविनाश देशपांडे
प्रकाशक : लोक जुम्बिश परिषद, बी-10 झालाना संस्था क्षेत्र, जयपुर 302004

जहाँ चाह, वहाँ राह — जॉन होल्ट

MY COUNTRY SCHOOL DIARY BY JULIA WEBER GORDON

1930 में लिखी यह किताब आज भी हमारे लिए बहुत मायने रखती है। हम गरीब, ग्रामीण और अल्पसंख्यक बच्चों की शिक्षा के नाम पर बहुत पैसा खर्च कर रहे हैं। मंशा अच्छी होने के बावजूद हम कुछ खास भला नहीं कर पा रहे हैं। अच्छे की जगह कुछ बुरा न हो जाए इस बात की सम्भावना अधिक है। मिस वेबर के अनुभवों से तो यही नज़र आता है।

समय-समय पर शिक्षा विभाग नवाचार के नाम पर एक नया शगूफा छोड़ता है। पुराने कार्यक्रम क्यों ठप्प हुए इसकी किसको परवाह। नया कार्यक्रम वैसे तो काफी वैज्ञानिक और समझ बूझ से बना दिखता है। इसमें शिक्षाविद अलग-अलग तरीकों से प्रयोग करेंगे। वह शिक्षा और विकास की अलग-अलग प्रणालियाँ अपनायेंगे। कुछ समय बाद इन कार्यक्रमों का मूल्यांकन होगा और उनमें से एक कार्यक्रम को सरकारी तौर पर 'सफल' घोषित किया जाएगा। इसके बाद सैकड़ों स्कूलों के हजारों शिक्षकों को इस कार्यक्रम को लागू करने के आदेश दिए जायेंगे।

सब कुछ ठीक-ठाक होगा इस बात की सम्भावना बहुत कम है। हो सकता है कि हमें फिर से एक मँहगी निराशा का शिकार होना पड़े। ऐसा पहले कई बार हो चुका है। क्यों? ऐसी निराशाओं से बचने का क्या कोई तरीका है?

अगर हम ईमानदारी से पिछले कार्यक्रमों की जाँच करें तो हम पायेंगे कि कुछ छोटी-छोटी बातें कार्यक्रम के नतीजे पर बड़ा असर डालती हैं। कार्यक्रम की सफलता कुछ ऐसे घटकों पर निर्भर है जिन्हे बिलकुल नजरंदाज किया गया है - प्रिंसिपल का रवैया, माता-पिता की अपेक्षायें, एक-दो महत्वपूर्ण व्यक्तियों की कमजोरी या ताकत, बच्चों की सीखने की क्षमता का अनुपात, यह घटक अकेले, अथवा मिल कर कार्यक्रम के परिणामों पर बड़ा असर डाल सकते हैं। नए कार्यक्रम, नवीन पाठ्यक्रम और नई व्यवस्था का शिक्षा पर कुछ लाभकारी असर हो ही, यह जरूरी नहीं। एक गतिशील

शैक्षणिक माहौल तभी पैदा होगा जब हम स्वप्रेरित शिक्षकों की मदद कर पायेंगे। जो शिक्षक आगे बढ़ने को तैयार हैं उन्हें नवाचार करने की छूट मिले और उसे अमल में लाने के लिए सहायता दी जाए। अंत में हमें ऐसे शिक्षकों की पहल और क्षमताओं पर ही विश्वास करना चाहिए। ऊपर से थोपे गए सरकारी आदेशों द्वारा शिक्षकों को कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया जा सकता है।

प्राथमिक विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम में हमारे यहाँ विविध प्रकार की सामिग्री है। इसमें कुछ उपकरण तो काफी अच्छे और मँहगे हैं। इस सब के बावजूद स्कूलों में तब तक विज्ञान की अच्छी पढ़ाई नहीं होगी, जब तक कुछ बुनियादी परिवर्तन न होंगे। इसके लिए हमें बच्चों की स्वयं स्फूर्ति और उनकी क्षमताओं को प्रोत्साहित करना होगा। डंडे के डर से काम करने वाले आज्ञाकारी बच्चों से अधिक उम्मीद नहीं की जा सकती है।

स्कूल में स्थाई और महत्वपूर्ण बदल तभी आएगी जब वह कक्षा में शिक्षकों के अपने प्रयासों द्वारा उपजी हो। जो शिक्षक स्वयं सृजनात्मक होते हैं और अपनी जिन्दगी को सम्पूर्णता से जीते हैं, वही अपने बच्चों को मौलिकता और सृजनता का सबक सिखा सकते हैं। बड़े पैमाने पर बदल लाने का एक ही अच्छा तरीका है। इसमें हम केवल उन शिक्षकों की सहायता करें जो आगे बढ़ने को खुद तैयार हैं। जो शिक्षक निठल्ले हैं उन पर उर्जा व्यय करने से कुछ लाभ न होगा। इस तरह के बदलाव के प्रसार में वह अड़चने नहीं आती हैं जो सरकारी आदेशों द्वारा लागू कार्यक्रमों में आती हैं।

किसी भी सही और स्थाई शैक्षणिक बदल का केन्द्र-बिन्दु शिक्षक ही हो सकता है। 'ग्रामीण स्कूल की डायरी' नामक दस्तावेज इस बात का सच्चा प्रमाण है। मिस वेबर को जब मौका मिला और थोड़ी मदद मिली तो वह क्या कुछ कर पायीं, यह उसी की दास्तां है। सचमुच मिस वेबर की परिस्थिति काफी कठिन और निराशाजनक थी। वह 1930 में अमरीका के एक दूर-दराज के गाँव में काम करती थीं। उनका स्कूल एक छोटे कमरे का ग्रामीण स्कूल था। गाँव की

हालत भी काफी ढली और खस्ता थी। धन के अभाव में अधिकतर शैक्षणिक साधन या तो बच्चों ने खुद बनाए थे, या फिर उन्हें अलग-अलग संस्थाओं से माँग कर लाया गया था।

मिस वेबर एक कमरे में कक्षा एक से लेकर कक्षा आठवीं के बच्चों को पढ़ाती थीं। उनकी क्लास में 5 साल से लेकर 16 वर्ष तक की उम्र के करीब 30 बच्चे थे। तीसरी कक्षा का एक बच्चा न केवल पढ़ाई में कमज़ोर था बल्कि मानसिक रूप से भी पिछड़ा हुआ था। मिस वेबर ने उसकी मदद का भरसक प्रयास किया। बहुत कम शिक्षक अपनी क्लास में इतनी अलग-अलग उम्र के बच्चों के पारिवले की इज़ाजत देंगे। मिस वेबर ने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकारा। ध्यान देने योग्य बात यह है कि वह एक कक्षा नहीं आठ कक्षाओं को अकेले पढ़ाती थीं। मिस वेबर के लिए स्कूल का प्रत्येक बच्चा महत्वपूर्ण था। उनकी कक्षा में हरेक बच्चा सीखता और आगे बढ़ता।

मिस वेबर का अनुभव हमें कुछ और भी सिखाता है। अच्छी शिक्षा के लिए बड़े-विशाल और केन्द्रीय स्कूलों की जरूरत नहीं है। ऐसे मँहगे स्कूलों का फार्मूला हमें बड़े सटीक तरीके से बेचा गया है। पूरे देश में छोटे-छोटे स्थानीय स्कूलों का लगभग खात्मा हो गया है। यही वह स्कूल थे जहाँ मिस वेबर जैसे शिक्षक अपने प्रयोग कर सकते थे। इन छोटे स्कूलों के बदले हमने विशालकाय फैक्ट्रियों जैसे स्कूल बनाए हैं। इन बड़े स्कूलों को केवल फौज या जेल के नियम-कानूनों के हिसाब से ही चलाया जा सकता है। स्कूलों के केंद्रिकरण के पीछे दलील यह थी कि मँहगे और उन्नत तकनीक के बने शैक्षणिक साधन और वैज्ञानिक उपकरण छोटे-छोटे स्कूलों को देना सम्भव नहीं है। छोटे स्कूलों में विशेषज्ञ टीचरों को नियुक्त करना भी सम्भव नहीं है। मिस वेबर ने हमें दिखाया कि पढ़ाई में रोचकता और गहराई लाने के लिए अधिक धन और विशालकाय इमारतों की आवश्यकता नहीं है। एक महीने में ही मिस वेबर और उनके छात्रों ने अपने गरीब ग्रामीण स्कूल को एक सुन्दर, सम्पन्न सीखने के केन्द्र में बदल डाला।

आज तो हम मिस वेबर से कहीं अधिक बेहतर करने की परिस्थिति में हैं। हम विभिन्न प्रकार के उपकरणों को बिना पैसे खर्च किए कबाड़ में से जुगाड़ सकते हैं। भौतिक विज्ञान समिति ने हमें संवेदनशील उपकरण / मीटर भी सस्ते और स्थानीय सामान से बनाना सिखाया है। विज्ञान के प्रयोगों में लगने वाले सामान की एक बीस पन्ने की सूची तैयार की गई थी। इस सूची में दर्ज लगभग आधे सामान को मुफ्त में इकट्ठा किया जा सकता है। एक बड़े शहर की सबसे गरीब बस्ती में मैंने 'लर्निंग लेबोरेटरी' देखी। यहाँ कूड़े-करकट के ढेर में से तमाम रोचक सामान इकट्ठा किया गया था। अगर हमें कुछ मँहगे सामान और उपकरणों की जरूरत हो भी तो उनके लिए हम ऐसा केन्द्र खोल सकते हैं जहाँ से बच्चे उन्हें उधार ला सकें। जिस तरह से कुछ सचल पुस्तकालय स्कूल-दर-स्कूल जाते हैं, उसी तरह से सचल प्रयोगशालायें भी अलग-अलग छोटे स्कूलों में भेजी जा सकती हैं।

मिस वेबर ने एक रोचक सीखने का माहौल रचा। यह सब उन्होंने बहुत विषम परिस्थितियों में किया। आज हमें ऐसा करने के लिए बहुत सहायता मिल सकती है। जब उन्हें या उनके बच्चों को किसी पुस्तक अथवा किसी उपकरण की आवश्यकता पड़ती, तो सबसे पहले वह यह मालूम करते कि वह वस्तु किस व्यक्ति के पास है, और फिर उससे उधार माँग लाते। उन्होंने अन्य स्कूल-कालेजों के साथ-साथ, कृषि प्रायोगिक केन्द्र और अन्य स्थानीय संस्थाओं से भी चीजें माँगी। गाँव के एक अनुभवी बढ़ई ने बच्चों को गुड्डे-गुड़ियों के घर बनाना सिखाए। एक वर्ष में मिस वेबर के लगभग 30 बच्चों ने स्थानीय पुस्तकालय से 700 किताबें लेकर पढ़ीं। फैन्सी स्कूलों के पुस्तकालयों को इस तरह के पाठक कम ही मिलते होंगे। अधिकतर पुस्तकालयों में इतने नियम-कानून और इतनी रोक-टोक होती है कि बच्चे उनका उपयोग ही नहीं कर पाते।

शिक्षा में हम हमेशा पैसे के अभाव का रोना ही रोते रहते हैं। कुछ और पैसा मिलने से हमें अवश्य कुछ आसानी होती। परन्तु मिस वेबर के जैसे अच्छे स्कूलों में औसत स्कूल से कहीं कम खर्चा आता है। पैसों

का दुरुपयोग हम कब रोकेंगे? हम आलीशान इमारतों और अनुत्पादक शिक्षा व्यवस्था पर पैसा फूंकते हैं। हम विशेषज्ञों और मँहगे उपकरणों पर - जिनकी आवश्यकता ही नहीं है, पर पैसा खर्च करते हैं। उबाऊ पुस्तकों की छपाई पर सैकड़ों टन कागज और पैसा बरबाद होता है। अगर हम लोग समझदारी से खर्च करें तो हम भी मिस वेबर की तरह अपनी कक्षाओं में सीखने का माहौल कहीं बेहतर बना सकते हैं। अगर हम पैसों का समुचित उपयोग करेंगे तो स्थानीय लोग भी हमारी सहायता करेंगे।

'माय कंट्री स्कूल डायरी' में एक और महत्वपूर्ण सबक है। बच्चों का सही विकास तभी होता है जब वह सभी उम्र के लोगों के साथ मिलते-जुलते हैं। इस तरह बच्चों को अपने समुदाय के बारे में सोचने-समझने का मौका मिलता है। जब स्कूल की पढ़ाई समुदाय की जिन्दगी को छूती है और स्कूल के बाहर लोगों की समस्याओं को सुलझाती है तभी वह असली सीख बनती है। मिस वेबर का स्कूल वास्तविक दुनिया का एक अभिन्न अंग था। वहाँ बच्चे एक कृत्रिम पाठ्यक्रम की बजाए जिन्दगी की असली उलझनों से जूझते। मिस वेबर ने यह सब खुद कहाँ से सीखा? क्या वह उन मुट्ठी भर लोगों में से एक थीं जिन्होंने सही मायने में अमरीकी शिक्षाविद् जॉन डुई को समझा था? क्या यह सब मिस वेबर के अपने सोच पर आधारित था? फिलहाल, उनके स्कूल में बहुत से बच्चे आए और हरेक के दिल में स्कूल ने एक अमिट छाप छोड़ी।

मिस वेबर के स्कूल का बच्चों के जीवन और उनके समुदाय पर क्या असर पड़ा इसका हम सिर्फ अनुमान ही लगा सकते हैं। इस पुस्तक को पढ़कर मुझे इलियट शैपिरो की याद आती है। उन्होंने इसके कई वर्ष बाद हारलेम नाम की एक गरीब बस्ती में काम किया। उन्होंने हारलेम के प्राथमिक स्कूल को बस्ती का सामुदायिक केन्द्र बना कर उसमें नई जान फूंकी। यहाँ पर बस्ती की तमाम समस्याओं पर चर्चा होती और उनके हल खोजे जाते।

समुदाय उजड़ी स्कूलों और शिक्षकों के कम होने के साथ-साथ स्कूलों के केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसके परिणाम स्वरूप स्कूल और समुदाय के बीच का रिश्ता टूटा है। उजड़े गाँवों में समुदाय का पुर्ननिर्माण आज का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य है। इससे लोगों का आत्म विश्वास जागेगा। लोग सोचेंगे 'मैं हूँ। यह मेरी जगह है। यहाँ जो कुछ होगा मेरी राय से होगा। मैं इसमें मदद दे सकता हूँ और अन्य लोगों की सहायता ले सकता हूँ। मैं इसे जिन्दगी जीने की एक बेहतर जगह बनाऊंगा।' इस प्रकार की सामुदायिक भावना जगाने के लिए मिस वेबर जैसे स्कूलों का होना अनिवार्य होगा।

मिस वेबर की पुस्तक में टीचर ट्रेनिंग को लेकर भी कुछ महत्वपूर्ण संदेश हैं। कुछ लोगों का कहना है 'पढ़ाना एक कला है जिसमें तमाम तकनीकें हैं। विषय-वस्तु जानने के बावजूद जब तक शिक्षक को पढ़ाने की कुशलता नहीं आती, तब तक वह पढ़ा नहीं सकता। अन्य लोगों के अनुसार 'तकनीकों में क्या धरा है। कोई भी समझदार व्यक्ति इन्हें जल्द ही सीख सकता है। जरूरी यह है कि शिक्षक को अपने विषय का अच्छा ज्ञान हो। इस तरह 'तकनीक' समर्थक और 'ज्ञान' समर्थक आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं। मेरी राय में दोनों ही असली बिन्दु को खो बैठे हैं। दक्षता - चीजों को कर पाने की क्षमता ही बच्चों को बड़ों की ओर आकर्षित करती है। मिस वेबर असाधारण गुणों से लैस थीं। वह बहुत सारे गुर और हुनर जानती थीं। वह तरह-तरह की चीजें बनाने में बच्चों की मदद करतीं। वह किसी एक विषय की विशेषज्ञ न थीं। परन्तु वह हर विषय में बच्चों की रुचि जगाने लायक जानकारी अवश्य रखती थीं। जब बच्चों का किसी विषय में कौतुहल जाग उठता और वह काम में लग जाते तो वह उनकी भरसक मदद करतीं।

जो कुछ मिस वेबर जानती थीं अगर उसकी सूची बनाई जाए तो वह बहुत लम्बी होगी। वह हारमोनिका और पियानो जैसे वाद्य-यंत्र बजातीं, लोक-नृत्य करतीं, गाने गातीं, बच्चों के खेलघर डिज़ायन करतीं, कठपुतलियाँ बनातीं-नचातीं, तरह-तरह के खेल खेलतीं -

खास कर ऐसे सस्ते खेल जिन्हें सभी उम्र के बच्चे सीमित जगह में खेल सकें। वह कागज की फिरकी बनातीं और चित्रकारी करतीं। वह विभिन्न पेड़-पौधों को पहचान सकती थीं। वह क्यारियों में फूल उगातीं और 'रॉक' गार्डन बनातीं। वह भू-विज्ञान की कुछ जानकारी रखती थीं और आस-पास के पत्थरों की पहचान कर सकती थीं। वह पौराणिक किस्से कहानियाँ जानती थीं। वह सिलाई-कढ़ाई और खाना तो पकाती ही थीं, साथ-साथ नमक के क्रिस्टल भी बनाती। वह पुराने चिथड़ों को बुनकर गमलों के हैंगर बनातीं। वह गुड़िया घर का फर्नीचर, मिट्टी के बर्तन और खिलौने बनातीं। वह जानवरों के पद चिन्हों के प्लास्टर-कास्ट बनातीं। वह तकली पर सूत कातती और खड्डी पर कपड़ा बुनतीं। इसके अलावा भी वह और बहुत कुछ कर सकती थीं।

बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों को इस तरह की तमाम कुशलतायें आनी चाहिए। यह ज़रूरी नहीं कि सभी लोगों को एक जैसे हुनर आयें। मेरी अपनी सूची, जो मिस वेबर की तुलना में कहीं छोटी है, एक दम भिन्न है। पर अच्छी बात यह है कि मैं जो पहले कर पाता था अब उससे कुछ अधिक कर पाता हूँ। समय के साथ-साथ मेरी कुशलताओं की सूची भी बढ़ेगी। महत्व की बात यह है कि मैं बच्चों के साथ-साथ नई चीजों को सीखने का इच्छुक हूँ। मैं किसी भी कुशल व्यक्ति से नए हुनर सीखने को आतुर हूँ। अगर मैं किसी काम को बहुत अच्छी तरह नहीं भी कर पाता हूँ तो भी मुझे उससे डर नहीं लगता। अहम बात तो यह है कि व्यक्ति काम में लगा रहे।

कल ही मुझे एक नौजवान युवक मिला जो बास्टन के एक स्कूल में पढ़ाना चाहता है। यह प्रगतिशील स्कूल बच्चों को सीखने की अधिक छूट प्रदान करता है। मैंने उससे पूछा : तुम्हारी विशेष रुचियाँ क्या हैं? तुम बच्चों को क्या हुनर सिखा सकते हो? क्या तुम चित्रकारी और क्राफ्ट की कुछ चीजें बना सकते हो? क्या तुम कोई खिलौना बना सकते हो?"

मेरे प्रश्न से वह नवयुवक थोड़ी उलझन में पड़ गया। मैंने कहा "क्या तुम गाने गा सकते हो, कोई बाजा बजा सकते हो, अथवा कोई विदेशी भाषा सिखा सकते हो?" उसका उत्तर 'न' में था। मैंने उसे आश्वास्त किया कि उसका किसी खास कुशलता में विशेषज्ञ होना आवश्यक नहीं है। परन्तु उसका पक्का मानना था कि वह कुछ नहीं कर पायेगा। उसकी मंशा अच्छी थी परन्तु उसके पास केवल कुछ किताबी ज्ञान था। यह बहुत दुख की बात है कि टीचरी के पेशे में लगे तमाम लोग पढ़ाने के अलावा कुछ और नहीं कर सकते हैं। मिस वेबर बहुत सी कुशलताओं से सम्पन्न थीं। साथ-साथ दुनिया की तमाम बातों को समझने में उनकी रूचि थी। जो शिक्षक केवल स्कूल और कक्षा को ही जानते हैं वह भला बच्चों को दुनिया के बारे में कैसे पढ़ा पायेंगे?

मिस वेबर ने पाया कि बच्चों को जंगल में पिकनिक, समुद्र तट की सैर में क्लास की अपेक्षा कहीं अधिक मज़ा आता है। मिस वेबर के स्कूल में बच्चे जो प्रश्न पूछते, उन्हीं पर आगे खोजबीन और पढ़ाई होती थी। बच्चे अपने आस-पास की दुनिया को समझना चाहते थे। यही चाह उन्हें उत्तर और हल खोजने के लिए प्रेरित करती। मिस वेबर बच्चों की रूचियों और सोच के अनुरूप ही पाठ्यक्रम बनातीं। वह बच्चों को अनेकों सुझाव और विकल्प देतीं। अधिकतर सुझावों को बच्चे 'रिजेक्ट' कर देते। परन्तु कुछ बच्चों को पसन्द आ जाते और उन्हें वह अपना लेते। इस कारण मिस वेबर साल-दर-साल वही उबाऊ पाठ्यक्रम पढ़ाने से बच जातीं।

भावानुवाद : अरविन्द गुप्ता
C7-167, एस. डी. ए.
नई दिल्ली 110016.